सच्ची और खरी खरी बातें

हफ़वातुल् मुस्लिमीन

अर्थात्

हज़रत मुहम्मद और उनकी बीबियों की
निन्दा के सम्बन्ध में इस्लाम के
गण्य मान्य विद्वानों की
भारी आक्षेप

लेखक—

इस्लामी मत मार्तण्ड, इस्लाम शोधक
शिरोमणि-शाहज़ादा मिर्ज़ा अहमद
सुल्तान मुस्तफ़वी चिश्ती 'ख़ावर'
गुड़गांवा निवासी

प्रकाशक—

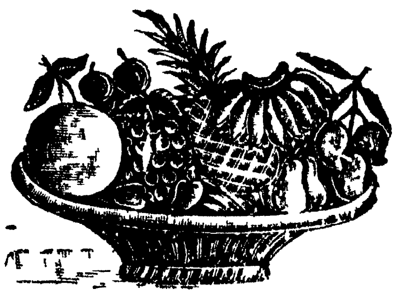
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा,
श्रद्धानन्द बाज़ार दिल्ली।

दिसम्बर १९२८ ई० } मूल्य १)

प्रकाशकः—

भारतीय हिंदु शुद्धि सभा,

श्रद्धानन्द बाज़ार दिल्ली ।



मुद्रकः—

श्रद्धानन्द प्रेस, श्रद्धानन्द बाज़ार,

देहली में छप [illegible] प्रकाशित हुई

सच्ची और खरी खरी बातें

हफ़वातुल् मुस्लिमीन

अर्थात्

हज़रत मुहम्मद और उनकी बीबियों की निन्दा के सम्बन्ध में इस्लाम के गण्य मान्य विद्वानों की भारी भ्रान्तियें

लेखक—

इस्लामी मत मार्तण्ड, इस्लाम शोधक शिरोमणि-शाहज़ादा मिर्ज़ा अहमद सुल्तान मुस्तफ़वी चिश्ती 'ख़ावर' गुड़गांवा निवासी

प्रकाशक—

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा,

श्रद्धानन्द बाज़ार दिल्ली।

प्रथम वार २००० | दिसम्बर १९२८ ई० | मूल्य १)

ॐ

अनुभूमिका

प्रिय पाठक वृन्द ! 'हक़वातुल् मुस्लिमीन' नामक पुस्तक ऐसी क्लिष्ट उर्दू में लिखी गई थी कि साधारण उर्दू पढ़ा लिखा ही नहीं अपितु जिसने फार्सी तथा अरबी भाषा का समुचित अध्ययन न किया हो वह भी इसे समझ तो क्या अच्छी तरह पढ़ भी न सकता था। हमने पुस्तक के लेखक मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब से कई बार कहा कि आप इसे हिन्दी भाषा में अनुवादित करा देवें जिससे हिन्दी पढ़े लिखे सज्जन भी इससे लाभ उठा सकें। उन्होंने हिन्दी भाषा से अनभिज्ञ होने के कारण "भारतीय हिंदू शुद्धि सभा" को इसका आर्य भाषा में अनुवादित करने और प्रकाशित करने का इस शर्त पर कापी राइट देदिया कि "अनुवादित पुस्तक मेरे ही नाम से छापी जावे तथा 'भारतीय हिंदू शुद्धि सभा' के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति या संस्था इसे न छपा सके"। इन शर्तों के साथ उन्होंने एतत्सम्बन्धी उचित काग़ज़ात-कार्यवाही की लिखा पढ़ी सभा के नाम करदी।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ने इस पुस्तक को जो कि बड़ी छान बीन के साथ-प्रामाणिक पुस्तकों के आधार पर-जिन्हें हर मुसलमान फ़िर्क़ा प्रमाण मानता है और जो एक बड़े आलिम फ़ाज़िल प्रसिद्ध मौलवी की लिखी हुई है, अपने सुयोग्य कार्य कर्त्ता श्री पं० जगदीशचन्द्र वाचस्पति जी द्वारा शुद्ध और सरल हिन्दी भाषा में अनुवादित करा कर प्रकाशित किया है। इस

पुस्तक की क्या आवश्यकता है यह पुस्तक लेखक ने स्वयं ही अपनी भूमिका में लिख दिया है ।

इस सम्बन्ध में यहाँ हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि इस पुस्तक का प्रकाशन केवल सुधार की दृष्टि से किया गया है, न कि किसी के मन को दुःख पहुँचाने या चिढ़ाने की इच्छा से। हम चाहते हैं कि हमारे मुसलमान भाई, रसूल, हदीस और कुरान के सम्बन्ध में जो किसी समय और किसी कारण से अनुचित गड़बड़ होगई है उसे ठीक कर लें और सर्व साधारण को यह आक्षेप करने का अवकाश न दें कि इस्लाम गन्दगियों की खान है–या इस में सच्चाई है ही नहीं। यदि इसे हमारे भाइयों ने पढ़ कर कुछ इस्लामियत का संशोधन कर लिया तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे ।

हिंदी अनुवाद में मूल पुस्तक का आशय ज्यों का त्यों रख दिया गया है । उसमें किसी प्रकार का भी न्यूनाधिक्य (सिवाय कहीं २ आवश्यक टिप्पणियों के) नहीं किया गया है । इसलिये इस पुस्तक में जो २ विषय लिखे गये हैं उनके उत्तरदाता पुस्तक लेखक स्वयं हैं । शुद्धि सभा का केवल हिन्दी अनुवाद का ही उत्तरदाता समझना चाहिये । यदि हिंदी अनुवाद में पाठकों को मूल पुस्तक से कहीं भी भिन्नता प्रतीत हो तो लिखने पर द्वितीयावृत्ति में ठीक कर दी जावेगी ।

सबका मंगलाभिलाषी—

—चिदानन्द सरस्वती,

प्रधान-मन्त्री,

भारतीय, हिन्दू-शुद्धि-सभा, दिल्ली ।

भूमिका

प्रारम्भिक शब्द

—:*:—

इस्लामी विद्वान् महानुभावों की सेवा में सविनय निवेदन है कि अहले सुन्नत की कोई किताब और माननीय प्रामाणिक पुस्तक ऐसी नहीं है जिसमें खुदा, नबीयों और रसूलों की निन्दा न की गई हो। सबसे अधिक निन्दा हमारे माननीय रसूल (हज़रत मुहम्मद) और उनकी पाक बीबियों की जो कि हमारी मातायें हैं की गई है और इस्लामी किताबों में बराबर लिखी और छपती चली आरही है इन किताबों में रसूल और उनकी बीबियों की निन्दा ऐसे असभ्य तथा अश्लील शब्दों में की गई है कि जिनको पढ़ने से बड़ी घृणा उत्पन्न होती और इस्लाम से विश्वास उठ जाता है। इसलिये मेरी इच्छा है कि इस प्रकार की हदीसों और कथाओं के थोड़े २ रंग बिरंगे नमूने पेश करके सभ्य जनता के सामने रखूं कि उन झूठी हदीसों तथा प्रक्षिप्त कथाओं को इस्लाम की प्रामाणिक पुस्तकों से निकाल दिया जावे अथवा उनके साथ यह लिख दिया जावे कि "यह हदीसें और कथायें यहूदियों और ईसाइयों ने कपट से मिला दी हैं" यदि ऐसा कर दिया जावे तो मेरा विश्वास है कि इस इस्लाम सेवा के बदले (उपलक्ष) में खुदा और रसूल की प्रसन्नता का प्रमाण पत्र (पर्वाना) अवश्य ही मिलेगा।

बनावटी हदीसों और गढ़ी हुई कथाओं का इस्लाम के प्रसिद्ध विद्वानों तथा अनन्य श्रद्धालुओं के नाम से वर्णन किया गया है ताकि पढ़ने सुनने वाले को उनके यथार्थ होने में किसी प्रकार

का संदेह न हो सके। हमने इस प्रकार की मिथ्या कथाओं और बनावटी हदीसों पर पुस्तक के तीसरे प्रकरण में अच्छी तरह विचार किया है, और युक्ति प्रमाण पूर्वक यह सिद्ध किया है कि ऐसी कथायें सर्वथा मिथ्या और प्रक्षिप्त है और उनके लिखने वाले वह लोग हैं जिनके दिल में न रसूल का प्रेम है और न उनकी बीबियों की इज्जत। वास्तव में हदीस लेखकों ने ऐसी हदीसों को अज्ञान वश इस्लाम के विश्वस्त विद्वानों का नाम देख या सुनकर अपनी २ पुस्तकों में सम्मिलित कर लिया है यही कारण है कि इस्लाम की मान्य पुस्तकें जामअ मसानीद, सिहाह और सुनन आदि में ऐसी हदीसों और कथाओं की कमी नहीं है। इसलिये उनके निकाल डालने का पवित्र कार्य किया जावे तो बड़ा भारी लाभ होगा और इस्लाम की सेवा भी होगी। मैंने इसी भाव को मन में रखकर उन तमाम हदीसों के संग्रह का नाम हफवातुल् मुस्लमीन रखा और पुस्तकाकार में छपा देना उचित समझा जिससे सर्व साधारण को पता लगजाय कि रसूल, उनकी बीबियों और खुदा के विषय में इस्लाम की प्रसिद्ध पुस्तकों इतिहासों हदीसों और तफसीरों में इस्लाम के ही धुरंधर विद्वानों ने क्या २ अनर्थ लिखे हैं। परमात्मा करे कि वर्तमान मुसलमान और उनकी सन्ताने मेरे इस परिश्रम से धार्मिक लाभ प्राप्त करें।

प्रकरण परिचय

इस पुस्तक में तीन प्रकरण रखे गये है। पहले प्रकरण रसूल पर जो बुराई लगाई गई है उनका दिग्दर्शन है। दूसरे प्रकरण में रसूल की बीवियों पर जो गन्द फेंका गया है उसका नमूना है। तीसरे प्रकरण में खुदा और अन्य नबीयों आदि

पर जो लांछन लगाये गये हैं उनका वर्णन किया है। इस प्रकरण में इमाम बुखारी और उनकी हदीस सहीह बुखारी* की असली हालत उनके अपने वास्तविक रूप में दिखाई गई है जिससे स्पष्ट है कि खुदा और नबी भी उनके आक्षेप से नहीं बच सके। इसके सिवाय प्रत्येक प्रकरण में विशेष हदीस आदि के साथ व्याख्या के विचार से समालोचना भी करदी गई है। प्रथम संस्करण में रसूल की निन्दा के दुःख में उद्विग्न होने के कारण ऐसे वाक्य लेखनी के मुख से निकल गये थे कि जो इस्लामी जोश के अनुसार ठीक थे, पर कटु होने से इस द्वितीय संस्करण में सर्वथा निकाल दिये हैं ताकि किसी पाठक को बुरा न लगे। इस प्रकार यह संस्करण नई पुस्तक के रूप में जनता के सामने रखा गया है। पुस्तक के अन्त में एक परिशिष्ट भी दिया गया है जिसमें इमाम बुखारी की हार्दिक, धार्मिक और विद्वता परक योग्यता की विस्तार से समालोचना की गई है।

आवश्यक सूचना

यद्यपि यह सम्भव था कि हम उसूले हदीस वर्रिजाल और उसूले अकायद † की पुस्तकों से मिथ्या कथाओं और झूठी

---

* सहीह बुखारी एक बड़ी भारी पुस्तक है और हदीसों में गिनी जाती है इमाम बुखारी इस्लाम के प्रमाणिक विद्वान थे जो कि इस बृहत् ग्रन्थ के कर्ता हैं (अनुवादक)

† जिन पुस्तकों में हदीसों के सत्यासत्य और उचितानुचित की परीक्षा के नियम हों उनको उसूले हदीस कहते हैं और जिनमें सिद्धान्तों के निर्णय करने के नियम हों उनको उसूले अकायद कहते हैं। इस्लाम की ऐसी पुस्तकें बहुत सी हैं। (अनुवादक)

हदीसों को प्रक्षिप्त और बनावटी तथा सिद्धान्त विरुद्ध सिद्ध करते और स्थान २ पर उपरोक्त ग्रंथों के प्रमाण पेश करते तथापि यह मार्ग हमने पसन्द नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से पुस्तक का आकार बहुत बढ़ जाता। दूसरे यह सिद्धान्त है कि किसी भी हदीस के प्रामाणिक या यथार्थ होने के लिये यह आवश्यक नहीं कि उसका वर्णन करने वाला कोई प्रसिद्ध व्यक्ति या विश्वस्त विद्वान है अन्यथा यदि इस स्वीकार कर लिया जावे तो कुरान की आयतों के विरुद्ध कई एक प्रसिद्ध व्यक्तियों की हदीसें प्रामाणिक माननी होंगी। इसलिये जो हदीस कुरान के विरुद्ध है वह मान्य नहीं हो सकती चाहे उसका लिखने वाला या सुनने वाला कोई हो। यही कारण है कि ऐसे प्रसिद्ध और सर्वसम्मति सिद्धान्त के उपस्थित होने हुये हम ने यही उचित समझा है कि दूसरे साधन एकत्रित करने का वृथा प्रयास न किया जावे बल्कि इसी सिद्धान्त के द्वारा अपना पक्ष सिद्ध किया जावे (यही बात सखावी ने अपनी पुस्तक फ़तुहल्मग़ीस और सियूती ने तद्रीबुलरावी में वर्णन की है)

यह पुस्तक जामेअ आदि की नकल नहीं है जिसमें हदीसें पूरी २ लिखी जातीं बल्कि रसूल की निन्दा पर जितने वाक्य उचित समझे वहां दर्ज कर दिये गये हैं और उसके सामने उर्दू में अनुवाद कर दिया गया है। अक्षरों का क्रमानुसार अर्थ नहीं किया गया, क्योंकि ऐसे अनुवाद से जिज्ञासु पाठकों को प्रायः कष्ट का सामना हुआ करता है और पाठक को वास्तविक बात का बोध नहीं हो पाता जिससे यथार्थ लाभ नहीं होता। सारी हदीस न लिखकर उसका कोई भाग या अंश लिखना अनुचित नहीं है क्योंकि प्रतिज्ञा सिद्धी के लिये जितने भाग का उद्धरण आवश्यक होकर देना चाहिये। पर जो लोग ऐसा नहीं मानते उनको यह

स्मरण रखना चाहिये कि—बड़े २ इस्लामी विद्वान् भी जिस समय अपने पक्ष की पुष्टि में कुरान की आयतों के अंशों का प्रमाण दिया करते हैं तो सर्व साधारण और प्रतिपक्षी विद्वान भी उनकी इस चेष्टा को बुरा नहीं कहते। जब कुरान की आयतों का कतर ब्योंत करना और उनके किसी अंश का प्रमाण पेश करना दोष या आक्षेप जनक नहीं समझा जाता तो उन हदीसों का जो कि कुरान से कहीं नीची हैं और रसूल की कही हुई भी नहीं हैं कोई भाग पेश करना आक्षेप जनक कैसे हो सकता है ? इसलिये किसी हदीस के किसी भाग का मान करना या किसी अंश का त्याग करना हमारी सम्मति में न तो धार्मिक पाप है और ना ही जातीय दोष। इतिशुभम्

इस्लाम का सेवक—

मिर्ज़ा अहमद सुलतान*

मुस्तफ़वी चिश्ती

* मिर्ज़ा अहमद सुलतान मिर्ज़ा मुज़फ़्फ़र बख्त बहादुर के पत्र हैं और मिर्ज़ा मुहम्मद शाहरुख बहादुर के पोते हैं तथा हज़रत अबू जाफ़र सिराजुद्दीन बहादुर शाह बादशाह गाज़ी के प्रपौत्र हैं। [अनुवादक]

❋ हफ़्वातुल् मुस्लिमीन ❋

पहिला प्रकरण

रसूल की निन्दा

संसार के मतमतान्तरों में चाहे वह ईश्वरकृत व्यवस्था को मानने हों या मनुष्यकृत विचारों के अनुयायी हों, ऐसा एक भी मत दिखाई नहीं देता। जिसका कोई अनुयायी अपने धर्म-गुरु या मत प्रवर्त्तक की निन्दा को उचित समझता हो। परन्तु इस्लाम का सम्प्रदाय अहले सुन्नत और उसके अनुयायी बड़े २ विद्वान् ऐसे विचित्र मस्तिष्क वाले थे कि उन्होंने बिना सोचे समझे अपने पूजनीय रसूल और उनकी पाक बीवियों के सम्बन्ध में दोष और आक्षेपयुक्त हदीसों को केवल सुनाने वाले के विश्वास पर ही ठीक समझ लिया। और बिना झिझक के अपनी २ पुस्तकों में उद्धृत कर दिया, जिससे कि—जामेअ, मसानीद, मोता और सुनन तथा मुआजम आदि ग्रन्थ रसूल और बीवियों की घृणायुक्त निन्दा से भरे पड़े हैं। हम उपरोक्त पुस्तकों के आधार पर निन्दा सूचक हदीसों के कुछ नमूने अपने विचारवान् पाठकों के सन्मुख रखने का यत्न करते हैं। आशा है कि हमारे विचारशील मुसल्मान भाई इस प्रकार की अनर्गल और अश्लील हदीसों को यदि अपनी मान्य पुस्तकों में लिखा पायें तो उदारतापूर्वक निकाल डालने में प्रबल प्रयत्न करेंगे। तथा जिन प्रसिद्ध इस्लामी व्यक्तियों के नामों का कथा से सम्बन्ध बताया गया है, उसे मिथ्या प्रकरण समझ कर उपेक्षा करेंगे और

साथ ही अपने हृदय में यह दृढ़ धारणा करते हुए अपने आप से पूछेंगे कि क्या पैगम्बर या रसूल ऐसा ही होना चाहिये जैसा कि इन हदीसों में लिखा है अथवा किसी और प्रकार का ?

सभी धार्मिक नियम मनुष्य के विचाराधीन हैं और इस विषय में यदि मनुष्य के शुद्ध मनको सच्चा और पहला रसूल कह दिया जावे तो यथार्थ ही होगा इसलिये जो न्याय शुद्ध मन के द्वारा प्राप्त होगा वही सत्य होगा और ऐसा निर्णय किसी भी प्रकार से दोषयुक्त नहीं कहला सकता। इसका परिणाम यह होगा कि आप धर्म पुस्तकों की मिथ्या कथाओं और कपटी मुसलमानों तथा धोखे से मौलवियों की ऐसी बातों के चक्र में न आवेंगे जो सच्चाई को छिपाने के लिये लम्बे चौड़े वाक्यों की आड़ में कहा करते हैं।

आक्षेप नं०—१

रसूल को स्त्रियों की लालसा लगी रहती थी

अन्स बिन मालिक ने कहा कि हज़रत रसूल ने फर्माया कि—"मुझे दुनियां की चीजों में से औरत और अतर फुलेल से बड़ा प्रेम है तथा नमाज़ मेरी आंखों की ठंडक है"। इत्यादि। नसाई—जिल्द दूसरी किताब इश्रतुन्निसा। अनुवादक—नवाब वकार नवाज़ जंगबहादुर।

अतर फुलेल या सुगन्धित पदार्थों से प्रेम करना प्रत्येक नासिका रखने तथा सूंघने की शक्ति रखने वाले के लिये साधारण बात है। जब सुगन्ध सूंघने के लिये हरएक स्वभावतः उत्सुक रहता है तो ऐसी साधारण बात में प्रवृत्त होने से रसूल में क्या विशेषता हुई ? पैगम्बर जैसे विचारशील व्यक्ति के लिये यह शोभा नहीं देता कि साधारण जनप्रिय सुगन्धी को अपने लिये अधिक

प्यारी वस्तु कहें। इसीलिये हम यह कहने से नहीं रुक सकते कि ऐसी मामूली बात पैग़म्बर की शान के अनुकूल नहीं है। दूसरे यह कि हदीस कहने वाला ऐसी मोटी बुद्धि का आदमी है कि उसने पैग़म्बर के "आना बशरुन् मिस्लिकुम्" * इस कथन पर विचार करके "हुन्न लिबासुन् लकुम् व अन्तुम् लिबासुन लहुन्न" † और "‡ जुय्यिन लिन्नासे हुब्बुश्शहवाते मिनन्निसाए" इत्यादि कुरान की आयतों को जो कि साधारण मनुष्यों के स्वभाव से सम्बन्ध रखती हैं पैग़म्बर के लिये भी समझ लिया है। तभी तो साधारण मनुष्यों के समान रसूल को भी स्त्रियों का चाहने वाला कह रहा है। परन्तु यदि हदीस लेखक की दृष्टि "यूहा इलय्या" इस आयत पर पड जाती तो उसे अपनी भ्रान्ति का सहज ही में ज्ञान हो जाता और रसूल की विशेषता को समझ लेता जिससे उसे मालूम हो जाता कि नबी और रसूलों के पवित्र जीवन परमात्मा की एकता के प्रतिपादन करने और ईश्वराज्ञा को संसार में फैलाने के लिये ही हुआ है करते हैं तथा उनको लोकोपकार और परमात्मा की भक्ति से ही प्रसन्नता हुआ करती है क्योंकि उन महानुभावों के उत्पन्न होने का प्रधान उद्देश्य भी यही होता है कि जैसे हो सृष्टि में ईश्वराज्ञा और लोकहित की साधना करें। हां मनुष्य शरीर

---

* निस्सन्देह मैं तुम्हारे जैसा ही एक आदमी हूं। कुरान।

† स्त्रियें तुम्हारा वस्त्र हैं और तुम उनके वस्त्र हो। कुरान–सूरत आल इमरान। रुकूअ-७।

‡ औरतों से प्रेम की इच्छा आदमियों में भरी हुई है। आल इमरान रुकूअ-२।

वही या इलहाम दिया गया मेरी तरफ़। कुरान।

होने के कारण साधारण लोगों के समान यदि कभी आवश्यकतानुसार स्त्री और सुगन्धि आदि की तरफ भी दिल को झुका देंता सम्भव है। परंतु उनका ऐसा करना भी किसी असाधारण निमित्त के लिये माना जा सकता है। जैसे शरीर का स्वाथ्य बनाये रखने या किसी रोग विशेष से बचने के लिये सुगन्धित द्रव्यों का सेवन करना अथवा वंश परम्परा जारी रखने के लिये संतान की इच्छा से स्त्री के पास जाना इत्यादि। परंतु हदीस लेखक ने ऐसा विचार न कर केवल साधारण बुद्धि से काम लिया और यह लिख डाला कि पैगम्बर को स्त्रियों की लालसा लगी रहती थी और सुगंधि से प्रेम करा करते थे। पैगम्बर के साथ ऐसी विशेषता देनी मेरे विचार में बड़ा भारी अपराध करना है, इसी लिये मैं यह कहता हूं कि उसने बहुत भूल की है।

वर्णन करने वाले की चालाकी देखिये कि रसूल को औरतों का बहुत चाहने वाला भी कह गया और नमाज़ का पर्दा डाल कर रसूल का मान भी रख गया। हदीस घड़ते समय उसको खटका था कि केवल दोष ही नहीं लगाना चाहिये बल्कि कुछ तारीफ़ भी कर देनी चाहिये तभी वह स्त्रियों के प्रेम का दोष लगा कर अन्त में कहता है कि नमाज़ आंखों की ठंडक है। यह चाल इस वास्ते चली गई है कि किसी श्रद्धालु भक्तकी दृष्टि पैगम्बर की निन्दा की ओर न जा सके।

कुरान के भाष्य, हदीसों की पुस्तकों और फ़िका की किताबों का निरन्तर स्वाध्याय करने से हमें पूरा पूरा विश्वास हो गया है कि बहुत सी कथायें ऐसी पाई जाती हैं जो पैग़म्बर की शत्रुता और निन्दा से भरी हुई हैं इसी लिए हम ऐसी तमाम हदीसों को बीबी आयशा के इश्क का मूल और रसूल के मनोमालिन्य का

आधार शिला समझते हैं जैसा कि बिज्ञ पाठकों को अभी मालूम हो जायगा। हमारी सम्मति में यह सब हदीसें माननीय पुस्तकों से निकाल डालने के योग्य हैं यथा—

आक्षेप नं० २

हज़रत मुहम्मद आयशा के प्रेम पाश में फंसे हुए थे।

इमाम मालिक के गुरु इमाम जुहरी ने कहा कि:--"इस्लाम में सब से पहिले इश्क ने जो कदम रक्खा तो वह हज़रत मुहम्मद रसूलल्लाह का हज़रत आयशा से है। इसी लिए इमाम मसूरूक़ बीबी आयशा को रसूल की प्यारी कहा करते थे। इब्ने उमर का सेवक अबू अलकीम कहता है कि इब्ने उमर ने उम्मे सलमा* की सेवा में मुझे इस लिए भेजा कि उन से यह पूछ आऊं कि हजरत मुहम्मद रसूलल्लाह रोजे के दिनों में अपनी स्त्रियों का बोसा लेते थे कि नहीं? उम्मेसलमा ने उत्तर दिया, नहीं। तब मैंने कहा कि धर्म माता आयशा तो कहती हैं कि रोजे में हज़रत मेरे बोसे लेते थे। यह सुनकर उम्मे सलमा बोली कि रसूलल्लाह की यह हालत थी कि जब आयशा को देख लेते थे तो उनका अपने दिल पर अधिकार नहीं रहता था. इत्यादि" अल् जवाबुलकाफी इब्ने अल्कीम। पृ० १६४.

हदीस लेखक ने श्रीमान् इब्ने उमर को अपनी समझ में निर्बुद्धि सिद्ध किया है। परन्तु सच यह है कि वह सहा-

* उम्मे सलमा हजरत मुहम्मद की स्त्रीयों में से एक स्त्री थी। [अनुवादक]

वह * के समय के बड़े प्रसिद्ध विद्वान् और धर्मव्यवस्थापक थे, हदीस वर्णन करने वाले की सम्मति में वह इस्लामी धर्म शास्त्र के सिद्धान्तों से ऐसे अनभिज्ञ थे और उनको इतना भी ज्ञान न था कि "बोसा" स्वाभाविक या अस्वाभाविक तौर पर शरीर के अन्दर घुसनेवाली या बाहिर निकलने वाली वस्तु नहीं है। जिससे रोजा बिगड़ने का दोष आ सके। दूसरे यह, कि उनको यह पता न था कि बोसे से स्त्री पुरुष का दिल मैथुन की ओर अग्रसर होता है और बोसा मैथुन का प्रारम्भिक प्रधान अङ्ग है। जिस से मैथुन करने की लालसा जाग्रत हो उठती है। तीसरे यह कि उनको व्यावहारिक सभ्यता का भी ज्ञान न था। देखो, बात भी पुछवाई तो जवान सेवक से? किसी दासी से पुछवाते तब भी कोई बात होती। और देखो, पूछा भी किस से? मुसलमानों की मां से! इसी को तो कहते हैं 'मां छोड़ मौसी टूठा।

इसी तरह यह सब बातें रसूल की तरफ भी घट सकती हैं। और मालूम होता है कि वह भी सभ्यता और व्यवहार से अनभिज्ञ थे (बात घड़ने वाले के मुंह में मिट्टी)

हदीस लेखक ने धर्म माता आयशा पर ऐसा घृणित और लज्जाजनक आक्षेप लगाया है कि जो औरतें औरतों से नहीं कहा करतीं अर्थात् रसूल रोज़े में मेरे बोसे लेते थे।

कई पुस्तकों में लिखा है कि हजरत कहा करते थे कि "जो स्त्री अपने पति की संसर्ग सम्बन्धी बातों को किसी दूसरे से प्रकट करती है वह धिक्कार के योग्य है। परंतु धर्म माता आयशा निश्चय से धर्म के तत्व को भली प्रकार जानती थी इस लिए

---

* सहाबह हजरत मुहम्मद के मित्रों को कहते हैं यथा-अबू-बकर, उमर, उस्मान और अली इत्यादि। [अनुवादक]

उनसे यह आशा रखना कि उन्होंने अपनी ज़बान से ऐसे वाक्य कहे होंगे सर्वथा असम्भव है और उन पर मिथ्या आक्षेप है।

इस हदीस में यह बात और तमाशे की है कि पूछने वालों की घड़न्त से पता चलता है कि अरब देश के बुतपरस्त, यहूदी और ईसाई आदि रोज़ों में बोसा लेना अनुचित समझते थे लेकिन इस्लाम के पैग़म्बर साहिब रोज़े में यह कृत्य करना उचित समझते थे, और स्वयं करते थे, और वह भी डंके की चोट से अर्थात् दूसरी औरतों के सामने ! ताकि उनमें भी इच्छा जागृत हो जाय। लाहौल वलाकुव्वत।

आपने देखा रसूल पर कैसा अनर्थ हो रहा है और किन किन युक्तियों से रिसालत को मिटाया जा रहा है ? इन सब पर तुर्रा यह कि रसूलल्लाह आयशा को देखते ही बेक़ाबू हो जाते थे, हम पूछते हैं जब बीबी आयशा पर हज़रत ऐसे ही आसक्त थे तो उनके निकाह के बाद और निकाह कैसे हो गये। तथा इस बेक़ाबूपने की हालत और आयशा की उपस्थिति में दूसरी स्त्रियों की बारियां कैसे निश्चत होगईं ? और फिर उन बारियों की व्यवस्था पर दृढ़ कैसे रहे ? इन प्रसिद्ध स्त्रियों के सिवाय मौहूबा मुस्तईज़ा और मल्के यमीन आदि स्त्रियें अलग हैं, जिनसे हज़रत का प्रेम सम्बन्ध था। इस लिये इन अवस्थाओं के होते हुए हदीस लेखक का यह कहना कि हज़रत रसूल आयशा पर आसक्त थे ठीक नहीं बल्कि हम तो यह कहते हैं कि हदीसवक्ता रसूल का शत्रु था।

"इब्ने अब्बास कहते हैं कि साल भर तक मैं इस सोच में फिरता रहा कि हज़रत उमर से एक आयत के बारे में

पूछूं कि वह किस की शान में प्रकट हुई है परन्तु उन के डर के मारे न पूछ सका। एक बार वह और मैं एक साथ हज्ज करने गये जब हज्ज से वापिस आ रहे थे तो मैंने समय पाकर पूछा कि हे धर्मावतार ? वह कौन सी दो औरतें हैं जिन की शान में सूरत तहरीम की "अन् ततूबा इलल्लाहे फ़क़द् सगत् क़ुलूबुकुमा व इन् तज़ाहरा अलैहे फ़ इन्नल्लाह हुव मौलाहो व जिब्रीलो वसालिहुल् मूमिनीन" यह आयत प्रकट हुई है ? हज़रत उमर ने फ़र्माया कि एक दिन ऐसा हुआ मैं किसी विषय में बातें कर रहा था कि मेरी स्त्री ने कहा कि तुम अमुक काम करो, मैंने कहा—अरी तुझे क्या मतलब ? वह बोली, हे खत्ताब के बेटे तुम पर आश्चर्य है। अगर तुम से मैंने दो २ बातें करलीं तो क्या हुआ, तुम्हारी पुत्री तो रसूल्लाह से ऐसी २ कठोर बातें करती है कि रसूल का क्रोध और शोक सारा दिन शांत नहीं होता। मैंने कहा ओहो, यह बात है ! बस मैंने अपनी चादर संभाली और सीधा हफ़सा के पास पहुंचा और उस से कहा—बेटी, यह क्या बात है कि तू रसूलल्लाह से बढ़ २ कर बातें बनाती है जिस से हज़रत सारा दिन क्रोध और शोक से दुःखी रहते है। हफ़्सा ने कहा--निस्सन्देह हम तो ऐसा ही किया करते हैं ! मैंने कहा देख, याद रख मैं तुझे अल्लाह के अज़ाब और रसूल के क्रोध से डराता हूं अगर तू ऐसा करेगी, तो तबाह होजायगी। हे बेटी, तू उस औरत के कारण धोखे में न रहना जो अपने सौन्दर्य और प्रेम-भाव पर हज़रत के आसक्त होने का अभिमान रखती है। उस औरत का संकेत श्रीमती आयशा से है इत्यादि।"

बुख़ारी--किताबुत्तफ़सीर बाब तब्तग़ी मर्ज़ात अज़्वाजेक

हमको इस हदीस के सारे झगड़ों से तो मतलब नहीं है हाँ, इसके उस भाग पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये जिससे धर्ममाता हफ्सा पर कुफ्र और हज़रत उमर पर आक्षेप आता है (१) जिस का परिणाम रसूलल्लाह की निन्दा होती है अतएव ऐसी हदीसों को यदि हम सच भी मान लें तब भी यह इस योग्य है कि इनका निकाल दिया जावे क्योंकि इनसे दीने इस्लाम और उसके प्रवर्त्तक रसूल की निन्दा होती है। बुख़ारी मे एक और स्थान पर लिखा है कि--

"हज़रत उमर ने कहा--हे रसूलल्लाह ध्यान दीजिये ! मैं तो हफ्सा के पास पहले ही गया था और उसको समझा दिया था कि देख तू इस गोरी चिट्टी पड़ोसिन के धोखे में न आ जाना क्योंकि हज़रत रसूल उससे बहुत प्रेम करते हैं-- अर्थात् आयशा को। इसपर हज़रत दो बार हंसे, इत्यादि।"

बुख़ारी किताबुन्निकाह, बाब मुवज़्ज़तुर्रजल।

प्रेम और आसक्ति की झूठी कहानी बुखारी में और भी कई स्थानों में आई है और बुखारी की किताबुल मज़ालिम में भी इन्हीं बातों का वर्णन है। परन्तु वहां बीबी आयशा से रसूल का असन्तुष्ट होना पाया जाता है अर्थात् जब एक मास तक स्त्रियों के पास न जाने की रसूल ने कसम खाई और हर एक स्त्री को तलाक़ (त्यागपत्र) देने का अधिकार दे दिया तो उस समय सबसे पहले आयशा से ही कहा था--कि "तुम यदि

[१] रसूल की आज्ञा न माननेमे हफ्सा ने कुफ्र किया और 'रसूल आयशा पर आसक्त थे' यह कहने से हज़रत उमर पर रसूल निन्दा का आक्षेप आता है। । अनुवादक ।

यहां रहना चाहती हो तो रहो अन्यथा अपना हक़ [२] लो और चली जावो।"

इस हदीस को इमाम नसाई ने भी अपनी पुस्तक की दूसरी जिल्द में उद्धृत किया है और नवाब साहिब ने जो कि नसाई के अनुवादक हैं उस हदीस की व्याख्या में लिखा है कि बहुत से विद्वानों के मत में तलाक़ का अधिकार देना भी तलाक़ दे देने के समान है।

वास्तव में स्त्रियों में से यदि किसी स्त्री के साथ रसूल को प्रेम हुआ था भी तो वह खदीजतुल् कुब्रा से, क्योंकि उन के मरने के पश्चात् भी रसूलल्लाह उन को उत्तम और प्यारे शब्दों से याद किया करते थे। बल्कि "एक बार जब बीबी आयशा से खदीजा के बारे में अपमानसूचक शब्द सुने तो रसूलल्लाह आग बबूला हो गये और क़सम खाकर कहा कि खदीजा से बढ़ कर मुझे कोई औरत नहीं मिली। वह मुझ पर उस समय ईमान लाईं जब हर कोई मुझे झूठा कहता था और अपने धन से मेरी उस समय सहायता की, जब—कोई भी मेरे पास तक न फटकता था और परमात्मा की कृपा से उन से सन्तान भी प्राप्त हुई।"

जमालुद्दीन कृत रौज़तुल् अहबाब बाब फ़ज़ीलत हज़रत खदीजा पृ० ४—७।

यह हदीस शब्दों और वाक्यों के हेर फेर से सिहाह की पुस्तकों में भी लिखी हुई है। इसके अतिरिक्त इब्न माजह जिल्द तीसरी बाब हुस्नेआज़म अनुवाद नवाब वक़ार नवाज़ जंग

[२] मुसलमानों में निकाह के समय स्त्री के लिये कुछ धन निश्चित किया जाता है जो तलाक़ देते समय दे दिया जाता है। [अनुवादक]

में लिखा है कि "बीबी आयशा ने रसूल से दो बार प्रार्थना की कि कृपा करके मुझे इस्मेआज़म सिखाइये, परन्तु रसूल ने सिखाना स्वीकार न किया,, ।

एक और हदीस है जो सिद्ध करती है कि रसूल को आयशा से विशेप प्रेम न था—

"अव्वाम बिन् हौशब और उनके चचेरे भाई का प्रसिद्ध व्याख्यान है--वह कहते है कि, मैं एक बार हज़रत आयशा के पास गया और उनसे अली के विषय में पूछा उन्होंने उत्तर दिया कि ऐसे व्यक्ति के विपय में तू क्या पूछता है जो रसूल को सब से अधिक प्यारे थे और उनकी प्यारी पुत्री जिन को स्त्री थी।

निस्सन्देह मैंने देखा कि रसूलल्लाह ने अली, फ़ातमा और हसन वा हुसैन को बुलाया और उन पर एक कपड़ा डाल कर कहा कि 'हे ईश्वर! मेरे घर वाले यही हैं तू इन से बुराई दूर रख और इनको शुद्ध पवित्र बना, यह सुन कर मैं रसूल के पास गई और निवेदन किया कि हे रसूलल्लाह! मैं भी तो आपके ही घर की हूं। रसूल ने यह सुनते ही आँखे लाल पीली कर लीं और क्रोध से कहने लगे कि 'चल दूर हो, तू अपने स्थान पर ही ठीक है'' इत्यादि। मौलवी हसनुज्ज़मान हैदराबादीकृत क़ौलेमुस्तहसन पृष्ठ ४०२।

इस प्रकार की उपरोक्त हदीसों से सिद्ध है कि रसूल को हज़रत ख़दीजा और अपने अली परिवार से प्रेम था, परन्तु यदि अपनी स्त्रियों से अथवा किसी अन्य व्यक्ति से भी प्रेम हो तो हम इसके विरुद्ध नहीं हैं क्योंकि धर्ममाताओं से रसूल का प्रेम होना ही चाहिये। हाँ, यह अवश्य मिथ्या है कि ह० आयशा को देख कर रसूल के होश ठिकाने नहीं रहते

थे और उनके प्रेम पाश में बुरी तरह फंसे हुये थे जैसा कि अल्जवाबुल्काफ़ी और बुख़ारी में वर्णन किया गया है। वास्तव में यह सब सर्वथा मिथ्या और रसूल की निन्दा है। कथा लेखकों का इनके लिखने से केवल यही उद्देश्य है कि सर्व साधारण के दिल में जो रसूल के लिये श्रद्धा है वह किसी तरह दूर हो जावे और लोगों को अच्छी तरह पता लग जावे कि रसूल भी साधारण मनुष्यों के समान विषयलम्पट थे। जिसका परिणाम यह होता है कि हज़रत मुहम्मद रसूल नहीं थे इसी लिये हम यह कहते हैं कि ऐसी हदीसें प्रक्षिप्त हैं और उन्हें निकाल डालना चाहिये।

आक्षेप नं०—३

पराई सुन्दर स्त्रियों को भी हज़रत पकड़वा मंगाते थे।

"सुहल बिन सअ़द ने कहा कि रसूलल्लाह के सामने एक दिन किसी अरबी स्त्री के सौन्दर्य की चर्चा चली। हज़रत ने अबू सैद साअ़दी से कहा कि उस स्त्री को मंगवावो। यह सुन अबू सैद ने अपने एक ख़ास आदमी को भेज कर उस स्त्री को बुलवा लिया और अपने बनी साअदा नामी क़िले में उतारा। जब रसूलल्लाह उस के पास तशरीफ़ ले गये तो देखा कि वह सिर झुकाये छुपी बैठी है, रसूल ने उस से कुछ कहा परन्तु उस ने कहा—परमात्मा तुझ से बचावे, दुहाई भगवान् की!,, इत्यादि। बुख़ारी किताबुल् अश्रबह बाबुश्शर्ब मिन् क़दहन्नबी।

क्यों मुसलमानों! क्या खुदा के रसूल ऐसे भी हुआ करते हैं जो लोगों की बहू-बेटियों के रूप लावण्य की चर्चा सुन कर उनको अपनी आँखें तृप्त करने के लिये बुला लिया करते थे

और वह भी कहां मदीने से तीन कोस परे जंगल में ? हाय ग़ज़ब !!!

क्या अपरिचित स्त्री से धर्म शास्त्र के विरुद्ध भी रसूलल्लाह ऐसी बात कहा करते थे जिसे सुन कर वह चीख़ उठे और ईश्वरकी दुहाई दे। परमात्मा ऐसे गपोडी को इसका फल देवे।

हदीस के भाव से यह नहीं प्रतीत होता कि देखने से पहले या देखने के समय उस स्त्री से हज़रत का निकाह हुआ हो, ना ही यह मालूम होता है कि निकाह की प्रार्थना की गई हो, ना ही कुरान की शिक्षानुसार स्त्री की अपने आपको रसूल के लिये प्रसन्नता पूर्वक आत्मदान की इच्छा पाई जाती है। जब इन आवश्यक बातों में से एक भी नहीं हुई तो क्यों न इस हदीस को मिथ्या कहा जावे और धर्म रक्षा के विचार से इस्लामी पुस्तकों से निकाल बाहिर किया जावे जिस से रसूल की प्रतिष्ठा भंग न हो। या यूं कीजिये कि यदि किसी स्थान पर इस स्त्री से हजरत के निकाह होने की कोई हदीस मिले तो उस हदीस को इस अश्लील कथा के स्थान पर लिख कर बुख़ारी में भरती कर दिया जाय तो बड़ी कृपा होगी और धन्यवाद भी होगा।

(नोट)—झूठे मुसलमानों ने हमारी इस किताब को पढ़ कर यह समझ लिया कि हम ने रसूलल्लाह का अपमान और उनकी निन्दा करने का दुःसाहस किया है लेकिन मूर्खों ने यह न सोचा कि लेखक ने तो स्वयं यह लिखा है कि यह हदीसें रसूल पर घृणित आक्षेप हैं और इनको प्रामाणिक पुस्तकों से निकाल डालना चाहिये। पुस्तक लिखने का उद्देश्य ही उसका यह है कि सर्वसाधारण इन निकम्मी हदीसों को निकालने का प्रयत्न करें और रसूल पर आक्षेप न आने दें।

आक्षेप नं०–४

हज़रत ने जौनिया से व्यभिचार करने के लिये हाथ बढ़ाया

"अबू उसीद सहाबी ने कहा कि हम हज़रत के साथ मदीने शहर से निकले और अहाते वाले बागके पास पहुंचे जिस का नाम शवात था। वहाँ जाकर हम लोग दो बागों के बीच गए तब हज़रत ने कहा कि तुम लोग यहां ही ठहरो। तब हम वहाँ बैठ गये और हज़रत बाग के अन्दर चले गए जहाँ जौनिया को ठहराया गया था जो कि अपनी दासी के साथ वहां बैठी हुई थी। यह वह बाग था जो अमीमा बिन्तुन्नेअमान् बिन् शराहील का का खजूरों वाला बाग कहलाता है। जब हज़रत जौनियाके पास गए तो उस से कहने लगे कि "हबी नफ़्सेक ली" अर्थात् मुझे अपना आत्मदान दे! जौनिया ने कहा कि अच्छे घरानेकी शाह-ज़ादियां कहीं बाजारी आदमियों को भी आत्मदान दिया करती हैं? जौनिया के इस प्रबल प्रतिरोध पर हज़रत ने कुछ ध्यान न दिया और अपना हाथ उस के पकड़ने के लिये बढ़ाया। परन्तु जौनिया अपनी मान प्रतिष्ठा भंग होते देख परे, हट गई और कहने लगी—परमात्मा की दुहाई है। यह देख हज़रत ने कहा कि तूने उसकी दुहाई मांगी जो सब का रक्षक है। फिर हज़रत वहाँ से निकल कर हमारे पास आये और कहने लगे कि हे उसीद! जौनिया को कुछ वस्त्रादि देकर उस के घर पहुंचा आवो" इत्यादि। बुखारी--किताबुत्तलाक़ बाब मनूतलक़

(नोट) — हम ने इस पुस्तक के प्रथम संस्करण में रसूलल्लाह और उनकी बीवियों पर घृणित दोष लगाने वाली हदीसों को इस लिये विस्तारपूर्वक नहीं लिखा था कि वह

बहुत ही लज्जित करने वाली हैं बल्कि हमारा तो पहिले से ही यह विचार है कि ऐसी बातों को प्रभावशाली शब्दों में सार-रूप से दिखाना चाहिये और हम ने किया भी वैसा ही! वास्तव में बुद्धिमान् के लिये संकेत ही पर्याप्त होता है। हमें आशा थी कि विचार शील मुसलमान भाई अपनी धार्मिक पुस्तकों में ऐसे दोष देख कर स्वयं विचार करेंगे और यह निश्चित करके कि 'किसी दीनके दुश्मन ने मिलावट कर दी है, अपनी पुस्तकों से निकालने में उत्साह दिखायेंगे। परन्तु धिक्कार (खुदा की लानत) है उन मौलवियों पर जो इस्लाम का तत्व नहीं समझते और हम पर ही दोषारोपण कर रहे हैं। परमात्मा उन से आप निपटे !

उपरोक्त हदीस को उद्धृत करने के बाद इमाम बुख़ारी ने एक और हदीस लिखी है जिस का उपयोगी भाग यह है कि— "सुहल के बेटे अब्बास और अबू उसैद ने कहा कि हज़रत ने शराहील की बेटी अमीमा से निकाह किया परन्तु जब हज़रत एकान्त में उस के पास गये तो उस ने बहुत बुरा मनाया और कहने लगी—अऊज़ो बिल्लाहे मिन्क—अर्थात् तेरे इस दुष्ट कर्म से खुदा बचाये" इत्यादि बुख़ारी-किताबुत्तलाक़

प्रथम तो-यही समझ में नहीं आता कि जब अमीमा निकाह के समय जवान थी तो हज़रत का पास आना उसे बुरा क्यों लगा और फिर खुदा की दुहाई क्यों दी ? दूसरे यह कि-इस हदीस में भी स्त्री का नाम अमीमा है जौनिया नहीं और ना ही अमीमा का दूसरा नाम जौनिया होना पाया जाता है क्यों कि अमीमा जौन के परिवार से सम्बन्ध ही न रखती थी। हां, यह तो कह जा सकता है कि जिस के घर पर जौनिया को

उतारा गया था उस स्त्री का नाम अमीमा बिन्तुन्नेअमान बिन् शराहील था। परन्तु दूसरी हदीस में यह भूल पाई जाती है कि इसी अमीमा को रसूल की स्त्री कहा गया है और बैत (घर) को बिन्त (लड़की) और बिन्तुन्नेअमान (नेअमान की बेटी) को बिन्त शराहील (शराहील की बेटी) बता कर भ्रम फैला दिया गया है तथापि इतने से भी जौनिया और अमीमा दो जुदा जुदा स्त्रियें सिद्ध होती हैं। चाहे अमीमा वाली दूसरी हदीस कितनी ही अविश्वस्त हो तो भी हमारा उस पर आक्षेप नहीं। हमारा दोष तो जौनिया वाली पहिली हदीस पर है जिस में पत्नी भाव और निकाह तक का शब्द भी नहीं और व्यभिचार करने के भाव स्पष्ट सिद्ध हो रहे हैं। लेखक ने मूर्ख समझावनी के लिये चालाकी से ऐसी हदीस को बाबुत्तलाक़ में डाल दिया है ताकि शत्रुता सिद्ध न हो।

अब हम हदीस विद्या के प्रकाण्ड विद्वानोंसे यह पूछते हैं? कि—जौनिया वाली हदीस के शब्दों पर विचारपूर्वक सोचकर बतलावो कि जौनिया को किस कार्य के लिये बुलाया गया था? और जौनिया क्या समझ कर वहां आई थी? और रसूलल्लाह उस के पास क्या समझ कर गए थे? क्या रसूलल्लाह ने जौनिया को अपनी विवाहिता स्त्री समझा था या अपरिचित पराई स्त्री? यदि कहो कि विवाहिता—तो रसूल को इस विवाह का पता होना चाहिये था परन्तु रसूलल्लाह के "मुझे आत्मदान दो" इन शब्दों से सिद्ध है कि निकाह नहीं हुआ था बलिक मालूम होता है कि रसूल उस को आत्मदान के लिये राजी करना चाहते थे। ऐसी अवस्था में जौनिया वाली

हदीस को तलाक़ के प्रकरण में लिखना मिथ्या होगया। यह भी बतावो कि जौनिया अपनी दासी के साथ अपने पति की इच्छा से आई थी या किसी के बुलाने से आई थी? यदि बुलाने से आई थी तो उस के "शाहज़ादियां कभी बाज़ारी आदमी को भी आत्मदान देती हैं" इन शब्दों का क्या भाव है? बल्कि जौनिया के कथन से तो यह सिद्ध होता है कि वह जवान भी थी और हज़रत के साथ निकाह का भी उसे पता था। अतः हदीस के शब्दों पर गहरा विचार करने से तो कुछ और ही बात मालूम होती है जिस के कारण आक्षेप और भी प्रबल हो जाता है। हमने जान बूझ कर वह आक्षेप लिखना उचित नहीं समझा।

प्रत्यक्ष और अनुमान से यह बात सिद्ध है कि जब कोई स्त्री अपने पति के पास जाती है तो उस को अपने पति के घर जाने का ज्ञान हुआ करता है तथा जो बड़ी बूढ़ी औरतें साथ होती हैं वह पति के संग व्यवहार के नियमों को समय समय पर बताती ही रहती हैं। अच्छा, जब रसूल का जौनिया के संग निकाह हो चुका था तो जौनिया के बुरा मानने पर रसूल ने क्यों न कहा कि तुम्हारा मेरे संग निकाह हुआ २ है? और उस धाया या दासी से क्यों न पुछवाया? फिर जौनिया की तरफ़ पुचकारने के लिये हाथ भी बढ़ाया तो ऐसी विचित्रता से कि उस को अपनी मान प्रतिष्ठा के भंग होने का भय हो गया और विश्वास होगया कि बिना परमात्मा की रक्षा के मेरी लाज नहीं बच सकती, तभी तो उस ने खुदा की दुहाई मचाई। परन्तु उस समय भी हज़रत ने न तो स्वयं कहा कि मेरा तेरे साथ निकाह हो चुका है और ना ही दाई से पुछवाया।

आप ने देखा, इमाम बुख़ारी साहिब ने अपने पूज्य गुरू-इ-स्लाम के प्रवर्तक का कैसा उत्तम सत्कार किया है और जौनिया से व्यभिचार करने का कलंक का टीका लगा कर किस प्रकार रसूल की प्रतिष्ठा रखली ! शाबाश !!! ऐसा टीका लगाया कि किसी प्रकार दूर ही नहीं हो सकता।

यह भी विचारने योग्य बात है कि सात लाख हदीसों में से इमाम बुख़ारी ने अगर हदीसों को छांटा और अपनी पुस्तक में बड़े अभिमान से लिखा भी तो ऐसी हदीसों को कि हज़रत के व्यभिचार करने के समाचार दुनिया से कहीं गुम न हो जावें तथा ईसाई मुसलमान और हिन्दू--आर्य इस-रसूल के महत्व या उत्कर्ष से वञ्चित न रह जावें। मुल्ला जामी साहिब ने (खुदा उन का भला करे) क्या ही अच्छा कहा है—ख़ुदा के लिये सजदा करने और नबी के लिये दरूद भेजने वाली क़ौम से बचना ! इस में बड़े २ छलिया और कपटी हैं।

इमाम बुख़ारी पर सर्वस्व न्योछावर करने वालों का शब्दाडम्बर और जादुबयानी भी देखने योग्य है। अहले हदीस के सम्पादक मौलवी फ़ाज़िल सनाउल्लाह साहिब को जब हम ने अपनी पुस्तक भेजी और साथ ही यह प्रार्थना की थी कि एक साल के लिये अपने ग्राहकों में मेरा नाम लिख लीजिये और 'अहले हदीस' भेजते रहिये। पुस्तक को पढ़ कर अनुकूल हो या प्रतिकूल, अपनी सम्मति अवश्य प्रकट कीजिये। परन्तु आप ने अनुकूलता तो क्या दिखानी थी क्योंकि ऐसा करते तो हुक़्क़ा पानी बन्द हो जाता। दूसरे आप पंजाब के बहादुर ही नहीं वरन् शेरे पंजाब है, भला सच्ची बात मुख से कैसे निकालते !—देखिये, इस हदीस के

विषय में क्या लिखते हैं-'कितावुल्अश्रबह के बाबुश्शर्ब की 'पराई स्त्रियों को पकड़वा मंगवाने' वाली हदीस और यह जौनिया वाली हदीस-दोनों एक ही औरत के बारे में हैं और इस औरत का नाम अमीमा बिन्त शराहील था'।

बहुत ख़ूब! परन्तु 'बाब मन् तलक़' वाली हदीस में तो उस स्त्री का नाम जौनिया है। न इस हदीस में अमीमा और जौनिया एक मालूम होती हैं और ना ही अमीमा का जौन के परिवार से सम्बन्ध दिखाई देता है। हां, यदि हदीसों को ऐसी उलझन में मिर्ज़ा क़ादयानी साहिब की तरह आप को भी इलहाम होने लगा है तो मैं ऐसे इलहाम का इनकार नहीं करता क्योंकि इलहाम तो पशु, पक्षी, आदमी और शैतान सभी को हुआ करता है, जैसा कि कुरान में कहा है कि--इन्नश्शयातीन लयूहून इला औलेयाएहिम् (१) हाँ, जब मैं आप का शिष्य हो जाऊंगा तो उस समय श्रद्धा पूर्वक आप पर विश्वास कर लूंगा, परन्तु इस समय आप क्षमा ही कीजिये।

दूसरा वाक्य यह लिखा है कि-- कितावुत्तलाक़ के बाब मन्तलक़ में यह हदीस इसी लिये लाई गई है कि पहिले निकाह हो चुका था।

अच्छा, तो यह बात आप ने इमाम बुख़ारी की रूह को बुला कर पूछी होगी या स्वयं उन के पास जा पहुंचे थे? हमें तो उन की सेवा का सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका और ना ही हमारी उन पर श्रद्धा है। हां, जो कुछ उन की सहीह बुख़ारी में लिखा है उसी के आधार पर कहूंगा। यह याद

[१] शैतानों को इल्हाम इस लिये दिया गया है कि अपने अनुयायियों को भड़का २ कर लड़ावें। सूरत अनआम रुकूअ् १४।

रहे कि इमाम साहिब किताब और बाब की सुर्खी (शीर्षक) के अनुसार हदीस निकालने के पक्ष में नहीं हैं इस लिये आप का यह कहना भी मिथ्या है, जैसा कि सहीह बुख़ारी की किताबुस्सलात में पहिले बाब की सुर्खी 'नमाज़ में नंगे होने के दोष, रक्खी गई है, परन्तु नमाज़ में नंगे होने के दोष हदीस के शब्दों से सिद्ध नहीं होते। बुख़ारी के बाबों (प्रकरणों) की सुर्ख़ियां ऐसी निर्मूल सी हैं कि जिन से बुख़ारी बहुत भरी पड़ी है ईश्वर ने चाहा तो तीसरे प्रकरण में पाठकों को भली प्रकार दिग्दर्शन करावेंगे। आगे लिखते हैं कि--रसूलल्लाह ने 'मुझे अपना आप दान करो, यह शब्द सभ्यतावश हो कर कहे थे क्योंकि इस से उसकी खातिरदारी और स्वागत दिखलाना अभिप्रेत था। इस लिये यह वाक्य अपने असली अर्थों में प्रयुक्त नहीं हुआ। (वह मारा !)

यहाँ मौलवी फ़ाज़िल के सेवकों को यह निश्चय हो जाना चाहिये कि सत्य के सामने बड़े २ शूरवीर भी चित्त हो जाया करते हैं। कहाँ मैं साधारण-उर्दू का लेखक और कहां अर्बी का परीक्षोत्तीर्ण मौलाना ?

खुदा की कुदरत देखिये, किस शान से अकड़े हुए हैं कि रसूलल्लाह पर से दोष और आक्षेप हटने ही नहीं देते और फ़ाज़िलपने (विद्वत्ता, महत्ता) को ठिकाने रख कर इमाम बुख़ारी की मदद किये जा रहे हैं। देखिये, यह कथन भी इलहामी ही है और बुख़ारी का भाष्य करने वाले को भी ऐसा विचित्र अर्थ नहीं सूझा परन्तु यह आप का ही भाग है ! 'इस के विषय में यह निवेदन है कि विश्वास या सिद्धान्त के तौर पर तो मानने के लिये तैयार हूं क्योंकि

हमारा ईमान है कि नबियों में पाप का भाव ही .खुदा पैदा नहीं करता जैसा कि शरह अक़ायद जलालुद्दीन दवानी के पृष्ठ ६७ पर लिखा है।' बेशक !

निस्सन्देह पैग़म्बर की शान ही यह है कि वह किसी पराई स्त्री से एकान्त सेवन न करे बल्कि सिवाय धार्मिक विषय के उस से किसी भी प्रकार की अनर्गल बात न करे क्योंकि हम को अच्छी तरह पैग़म्बर की यह आदत मालूम है कि वह जिस तरह पुरुषों से हाथ मिला कर उन्हें अपना अनुयायी बनाते थे उस तरह स्त्रियों से न करके अपनी चादर का एक किनारा ही पकड़वाना काफ़ी समझते थे। परन्तु आपके इमाम बुख़ारी ने ऐसे निन्दनीय और इस्लामनाशक शब्दों में यह हदीस लिखी है कि जिस से मुसलमानों को दुनिया में मुंह दिखाने की जगह नहीं रही।

यदि आपके कथनानुसार जौनिया का निकाह स्वीकार करलिया जावे और जौनिया का न पहिचानना मान लिया जावे तथा रसूलल्लाह का यह कहना कि 'मुझे आप आत्मदान दो, स्वागतपरक या ख़ातिरदारी के विचार से कहा गया मान लें तो भी जौनिया के निर्भीक शब्दों के सामने रसूल का उसको निकाह याद न कराने से आप की बनी बनाई तीनों इमारतें अड़ा-डाडा धडम हो जाती हैं।

विचार कीजिये ! रसूलल्लाह की ऐसी ख़ातिरदारी की आदत किसी और स्त्री से निकाह होने के बाद नहीं दिखाई देती, ना ही कोई आयत या हदीस ही ऐसी है जो इस आदत को सिद्ध करे। रसूल के सहाबह (अबूबकर आदि मित्र लोग) में भी यह आचरण देखने में नहीं आता कि वह लोग निकाह

के बाद स्त्री को यह कहा करते हों कि ' मुझे अपना आत्मदान दो। जब न तो पैग़म्बर की यह आदत थी न अब के किसी अहले फ़िक़ा या अहले हदीस ने निकाह के बाद आत्मदान देना कहीं धर्म लिखा है और नाही किसी अहले हदीस का इस धर्म पर आचरण करना पाया जाता है जैसा कि वह कहा करते हैं --मा आताकुमुर्रसूल फ़ख़ुज़ूहो अर्थात् जो कुछ रसूल करते थे सो तुम करो। यदि आपको हमारे कथन पर विश्वास न हो तो आप अपने किसी प्रसिद्ध अहले हदीस यथा-नवाब सिद्दीक़ हसन खां भूपाली, शाह वलीअल्लाह देहलवी, सैयद नज़ीरहसन मुहद्दिस देहलवी और सैयद इर्शादहुसैन देहलवी की किसी प्रसिद्ध पुस्तक में " हबी नफ़्सेक ली,, (मुझे अपना आप दो) निकाह के बाद अपनी स्त्री से कहना और ऐसा करना धर्म है-ऐसा लिखा दिखादें, तो-हम आपके हाथ पर तोबह करेंगे या आप ही क़सम खाकर अख़बार में लिख दें कि मैंने अपनी स्त्री से निकाह के बाद ' हबी नफ़्सेक ली, कहा है तो भी हम आपको सच्चा समझ लेंगे और अपनी भूल स्वीकार कर लेंगे।

देखिये, वह सहीह बुखारी जिसके पाठ मात्र से आस्मानी बलायें दूर और अकाल भाग जाता तथा आशायें पूर्ण होजाती हैं-ऐसा कहा जाता है। यदि उसी बुख़ारी की हां में हां मिलावो तो यह लाभ होता है जो आपको अच्छी तरह मालूम ही हो चुका है। और जो हदीस फ़तहुलबारी से ' जौन के परिवार की स्त्री से निकाह हुआ था, ऐसी वर्णन की गई है उसको बुखारी के बनने से पहले किसी प्राचीन ग्रन्थ में दिखाईये तब तो हम जानें कि आप

ठीक सच्चे हैं। दूसरे यह कि फ़तहुल्बारी बुखारी से अधिक प्रमाण योग्य भी नहीं है इस लिये विश्वास के सर्वथा अ-योग्य बात का मानना भी मिथ्या और अनुचित ही है।

आर्यों और ईसाइयों के आक्षेपप्रहारों को अहले हदीस के सम्पादक ने व्यर्थ जान कर हमें खुश करने के लिये दो मस्अले "सत्यार्थ प्रकाश,, के प्रमाणसे उद्धृत किये हैं ईश्वर ने चाहा तो उन को याथातथ्य लिख कर उत्तर सहित– तादीबुल् मारक़ीन फ़ी रद्दे ज़रबातिल् मोमिनीन, नामा पुस्तक में लिखेंगे। यह तो जब होगा तब देखा जावेगा। पर इस समय मैं आप से यह पूछता हूं कि यदि आर्यों ने आप की फ़िक़ा की बहारे ऐश, हिदायतुल् अय्याश, लज़्ज़तुन्निसा सिरातुल्मजानीन आदि किताबों के आधार पर पराई स्त्रियों के साथ और जिन को किसी प्रकार हलाल नहीं कहा गया ऐसी स्त्रियों के साथ निकाह करना या बिना निकाह के ही उन को अपने काम में लाना और अपनी ही कन्या से पिता का निकाह होना ठीक है, ऐसा लिखा दिखा दिया और आप के ही अखबार (अहले हदीस १३२८ हिजरी रमजान ।'।) में से 'दादी के साथ भी ....ठीक है, लिखा दिखा दिया तो उस समय मैं किस गुफा में छिपूं और हज़रवाला किस चूहे के बिल मे समायेंगे। शरम! शरम! शरम!

इस हदीस में लेखक ने एक कृपा भी की है जिस पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिये। वह यह कि कुरान में लिखा है कि --

इंव्वहबत नफ्सहा लिन्नबिय्ये इन् अरदन्नबिय्यो अंय्यस्तन् किहाहा खा़लिसतन् लक मिन् दूनिल्मूमिनीन ० १

(१) अर्थात्–अगर कोई औरत नबी को 'अपना आत्मदान, कर दे और नबी भी उस के संग निकाह करना चाहे तो ऐसा करना नबी के लिये ठीक है परन्तु ऐसा और किसी मुसलमान के लिये करना ठीक नहीं है। अब विचार करो कि कुरान में तो औरत अगर अपना आत्मदान करे और रसूल उससे निकाह करना स्वीकार करे तो रसूलको उस औरत की इच्छा का पूरा करना उचित लिखा है। पर यहां मामला ही उलटा है—हदीस में लिखा है कि जौनिया से रसूल ने कहा कि तुम अपने आप को मेरे अर्पण करो लेकिन जब उस पराई स्त्री ने रसूल की प्रार्थना स्वीकार न की किन्तु प्रबल प्रतिरोध किया तो रसूल ने उस पर ध्यान न देकर स्त्री पर हाथ भी डाल दिया तब ऐसी अवस्था में सोचिये कि हदीस कहने वाले ने रसूलल्लाह को कुरान के विरुद्ध आचरण करने वाला सिद्ध कर दिया है या नहीं? (उस के मुंह में मिट्टी)

एक आर्य महाशय ने शास्त्रार्थ में इसी हदीस को लेकर रसूलल्लाह पर प्रबल आक्षेप किया था जिस का प्रहार भुलाया नहीं जा सकता। ऐसे समय में उसका लिख देना भी ठीक मालूम होता है देखें, मुसलमानों की ग़ैरते इस्लामी हमारे दर्द का क्या इलाज करती है -

जौनिया से व्यभिचार की इच्छा वाली हदीस पर आर्य महाशय का आक्षेप !

जनाब चिश्ती साहिब !

आप ने हदीस देख ली। मैं ने अपनी ओर से तो अरबी के वाक्य नहीं बना लिये ! यह तो आपकी उस प्रामाणिक पुस्तक की हदीस है जिस को पुराने और नये सभी मुसलमान मान रहे हैं

(१) सूरत अहज़ाब रुकूअ् ६।

और इस से बढ़ कर किसी किताब को सहीह (शुद्ध) नहीं कहते। अब मैं आप से क्षमा माँगता हुआ उन २ विचारों का प्रकट करता हूं जो इस के शब्दों से ध्वनित होते हैं। आशा है कि आप यथार्थ बात का निर्णय करेंगे और सच्चाई को प्रकाशित करेंगे।

जिस प्रकार धूर्त्त कामी लोग एकान्त निर्जन स्थानों में मनमानी मौज उड़ाने के लिये पराई स्त्रियों को बहका कर या लालच आदि में फंसा कर बुलवा लेते है उसी तरह जौनिया के साथ भी चाल चली गई है कि, उसको बस्ती से अलग दूर बाग़ में बुलवाया गया है और अत्यन्त घनिष्ट मित्रों को लेकर मुहम्मद साहिब वहां पधारे हैं।

यदि मुहम्मद साहिब निकाह की प्रार्थना करते तो स्यात् जौनिया स्वीकार भी कर लेती परन्तु हज़रत ने तो उस से हिबानफ़्स (आत्मदान) --- बिना पैसे टके के काम निकालना चाहा तब, उस ने भी कटुवाक्य से काम लिया और कहा कि, कहीं शाहज़ादियां भी बाज़ारियों को अपना नफ़्स (अपना आप) हिबा (दान) किया करती है? जौनिया के इस कहने से मालूम हुआ कि उस को यह भी पता न था कि मुझे किस ने किस काम के लिये बुलाया है, क्यों कि यदि वह यह जानती कि अरब के महाराज या हमारे धर्म के गुरू ने बुलाया है तो वह रसूल के लिये कभी 'बाज़ारी, न कहती। फिर जौनिया के कटुवाक्य पर दृष्टि न देते हुये हज़रत ने हाथ बढ़ाया अर्थात् बिना उस की इच्छा के हाथापाई—ज़बरदस्ती की तो उस ने दुहाई मचा दी जिसे अरब के लोग अपनी भाषा में 'अऊज़ो बिल्लाहे मिनक, बोलते हैं, इसके बाद मनोहर सौन्दर्य

के दर्शन करने और पराई स्त्री का रूप देखने मे आनन्द लूटने का यह पुरस्कार दिया गया कि मुसलमानों के धार्मिक फंड में जमा हुये धन से जौनिया की पोशाक के लिये रुपया खर्च किया गया। यद्यपि इस हदीस में नहीं लिखा तथापि ज़रूरी है कि जौनिया के लाने वाले को भी कुछ न कुछ भेंट की गई होगी ताकि लासे पर लगा रहे और आगे भी काम आवे। हमारे विचार में आप के मुहम्मद साहिब से तो पहले दूसरे और तीसरे ख़लीफ़े (अबू बकर, उमर, उस्मान) बल्कि मुआवियह और यज़ीद ही अच्छे थे, क्यों कि इन लोगों के सम्बन्ध में कोई बुरे आचरण (दुराचारादि) की शीम नहीं पाई जाती। और आप के मुहम्मद साहिब से तो रसूल और नबी कहलाते हुये एसे २ पाप हुये कि जिसकी प्रामाणिक पुस्तकों मे साक्षी पाई जाती है और आप लोग उससे इनकार नहीं कर सकते। तिस पर भी आप अपने मत को आर्यधर्म मे अच्छा बताते हो। बड़ा आश्चर्य है !

जनाब चिश्ती साहिब ! अपनी प्रामाणिक पुस्तकों से बाहिर न जाइये और विश्वास कीजिये कि आप के मन में जो ख़राबियाँ इस्लाम प्रवर्तक (मुहम्मद साहिब) ने डाल दी हैं आज उन को दूर नहीं किया जा सकता और ना ही किसी प्रकार उन का संशोधन हो सकता है ! जैसा कि किसीने कहा है— ख़िश्तेअव्वल चूं निहद मेअमार कज,

ता सुरैया मेरवद दीवार कज, (१)

आप का सदा शुभचिंतक मित्र रामसिंह बी, ए, आर्य मुसाफ़िर

(१) जब पहिली ईंट ही टेढ़ी लगाई जावे तो दीवार ने ज़रूर ही टेढ़ा होना है (अनुवादक)

क्यों भाइयो! राम सिह साहिब बी, ए, आर्यमुसाफ़िर का कहना मान लें और इस्लाम को तर्क कर (छोड़) दें या इस अडंगे (जोनिया वाली हदीस) को ही उखेड़ फैंकें? बोलो क्या इच्छा है!

खुदा का शुक्र है कि मुस्तफ़वी का मत और इस्नाये अश्रीया (२) के इस्लामी सम्प्रदाय ऐसी झूठी और बुद्धि के विरुद्ध तथा लज्जापरक हदीसों और कथाओं का प्रमाण नहीं मानते किन्तु इन से परे है और इन की अपवित्रता से सर्वथा बेलाग है। यदि पैग़म्बर सच मुच ऐसे ही होते तो इन सम्प्रदायों में भी ऐसा ऊटपटांग बातों का समावेश पाया जाता परन्तु नहीं है, इस से सिद्ध हुआ कि रसूल इन लांछनों से रहित थे और इस्लाम भी इन दोषों से रहित है। इस लिये बुखारी की जोनिया वाली हदीस बिलकुल झूठी है।

(नोट)- इस्लाम के इस प्रसिद्ध हदीसकार की इन वाही तबाही कहानियों पर और भी कई एक मौलवियों ने अपने २ विचार प्रकट किये है, यथा=दिल्ली निवासी मौलवी अब्दुल्रब्ब साहिब हन्फ़ी कुरैशी क़ादिरी- जिन्हों ने कि एक विद्यालय 'मदरसा आसीयह' के नाम से दिल्ली मे खोला हुआ है और आज तक बराबर चल रहा है। उन्हों ने अपनी जवान बेटी आसीयह बेगम का स्मारक 'फ़िरदौसे आसीयह, नामक ग्रन्थ लिखा था। चूंकि लेखक भी अपने बाल्यकाल में उक्त मौलवी साहिब से प्रेम और श्रद्धा रखता था तथा उनकी स्वरमधुरता की हृदय से सराहना किया करता था। उस पुरानी जान पहचान और श्रद्धाभक्ति से प्रेरित होकर उनकी पुस्तक को

(२) शीआ लोगों के सम्प्रदाय को इस्नाये अश्अरया कहते है (अनुवादक)

बड़े प्रेम से पढ़ा और पढ़ने से जो २ पैग़म्बर के सम्बन्ध में उत्तमोत्तम भाव प्राप्त हुए उनमें से कुछ एक पवित्र विचार आप सज्जनों की सेवा में उपस्थित करता हूं। प्रेम से पढ़िये !

आक्षेप नं० ५

खुदा आयशा के रूप में प्रकट हुआ।

"अच्छे लोग अच्छी बातें करते हैं और ये लोग (सफ़्वान, आयशा और सिद्दीक़) निर्दोष हैं तथा जो विरोधी लोग कहते हैं उस अपराध से भी अलग हैं। खुदा के पास उन सब के लिये क्षमा और सत्कार के पुरस्कार हैं। शोक का कारण यह था कि अल्लाह ने अपने प्यारे (मुहम्मद) को अपना सौंदर्य पहिले हज़रत आयशा के पर्दे में दिखाया और मुहम्मद की आत्मा को अपना प्रेमी बनाया। फिर इक दम से उस पर्दे को बीच में से उठा दिया और अपने प्यारे को स्वरूप में लीन कर लिया"।

फ़िरदौसे आसियह-चमन '१। मस्बाहुज्ज़ त बाब १० । क़िस्सा अफ़्क आयशा सफ़ा २६६ ।

देखिये, लिखने में मौलवी साहिब का यह हाल है मिंबर (मञ्च) पर तो खुदा जाने क्या से क्या बेतुकी हाँका करते होंगे। संसार जानता है और कुरान के भाष्य साक्षी देते हैं कि विरोधी दल ने हज़रत आयशा को सफ़्वान इब्ने मुअत्तल से बदनाम किया था, परन्तु मौलवी साहिब ने इस अपराध में हज़रत सिद्दीक़ (१) का क्या दोष देखा जो उनका इसी प्रकरण में नाम ले दिया। शोक !

(१) आयशा के पिता हजरत अबूबकर [सिद्दीक़] सत्यवादी कहाते थे (अनुवादक)

विरोधियों के शोक और दुःख का कारण या तो खुदा जाने या मौलवी साहिब ! यदि विरोधियों को हज़रत आयशा के सतीत्व और पवित्रता की खुदाई शहादत पर दुःख हुआ तो वह अनुचित न था क्योंकि इससे वह झूठे सिद्ध हो गए, परन्तु मौलवी साहिब के कथन से यह मालूम होता है कि विरोधियों को खुदा की वादाखिलाफ़ी (प्रतिज्ञातोड़ने) का दुःख था अर्थात् खुदाने विरोधियों को अपने मनोरम सौंदर्य दिखाने की प्रतिज्ञा की होगी। परन्तु रसूलल्लाह को हज़रत आयशा के रूप मे (ज़नाना भेस में) मिस्सी काजल लगा कर दर्शन दे दिया। वास्तव में खुदा ने विरोधियों को बड़ा धोखा दिया जैसा कि वह धोखा दिया करते थे, परन्तु खुदा का धोखा देना खुदा की शान के विरुद्ध था। बस, विरोधियों के दुःखी होने का कारण अनुचित न था।

(३) खुदा ने हज़रत मुहम्मद को हज़रत आयशा का अनन्य प्रेमी जान कर अपने आपको आयशा के रूप में प्रकट किया क्यों कि मुहम्मद की आत्मा और किसी प्रकार से दाँब मे न आती थी। परन्तु इस तरह जब खुदा के काबू में आगई तो अब क्या था ! अपना शैदा - भक्त बना लिया। नऊज़-बिल्लाह ! (खुदा बचाये)।

देखिये, यह हुलूल (प्रवेश) नई सायंस के नियमों के अनुसार घड़ा हुआ और किसी नये अमरीका के कारखाने का ढला हुआ है जिसमें हुलूले खुदा (खुदा का घुसना) भी और औरत का मज़ा भी ! आहा, क्या विचित्र अन्वेषण है कि किसी दूसरे के हाथ नहीं पड़ा। कृपा करके इस मिथ्यात्व को निकालिये !

आक्षेप नं० — ९

मृत्यु के समय रसूल ने आयशा की झूंठी दाँतुन चबाई।

" हज़रत आयशा ने कहा---अल्लाह ने मेरे मुंह का थूक रसूल के मुंह के थूक के साथ जमा किया, दुनिया से जाने के आखिरी दिन और परलोक में पहुंचने के पहले दिन। और हज़रत ने मुझसे कहा कि अपने मुंह मे मसवाक (दांतुन) चबा कर मुझे दो ताकि मुझ पर मौत आसान हो" फिर्दौसे आसियह चमन ५, मस्बाहुज्ज़ तक़िस्सा रसूल की मृत्यु। बाब १० सफ़ा २०३।

नहीं मालूम, किमैराज (१) के कौनसे पडाव पर रसूलल्लाह को हज़रत आयशाके थूकका यह प्रभाव मालूम हुआ था? क्या हजरत जिब्राईल ने बतलाया था या किसी भारी हकीम से सुना था? कुछ पता नहीं चलता! ईश्वर दया कर और इस उम्मतकी अक़्लों को ठीक कर। देखिये! शीआ लोग जो हज़रत अली को और नबियों की अपेक्षा अच्छा मानते हैं वे तो निन्दनीय कहे जाते हैं और उनके खण्डन में कहा जाता है कि नबी से वह आदमी अच्छा नहीं हो सकता जो नबी नहीं है (नबी से गैर नबी अच्छा नहीं) परन्तु ऐसा कहने वाले इस हदीस के आधार पर हज़रत आयशा के थूक से रसूल को मृत्यु के कष्ट से छूटना स्वीकार कर रहे है। जिससे सिद्ध हुआ कि हज़रत आयशा अहले सुन्नत (सुन्नी) के मतानुसार दोषयुक्त होने पर भी मान्या थीं और पैग़म्बर उनसे भी बढ़ कर दोषयुक्त थे,

(१) मुसलमान हदीस आदि के आधार पर मानते है कि मुहम्मद साहिब एक बार खुदा से मिलने के लिये आस्मान पर गये थे। आस्मानी यात्रा का नाम ही मैराज है। (अनुवादक)

परन्तु मान्य भी रहे। परमात्मा बचाये! कृपया इस झूठी बात को भी परे हटाईये।

आक्षेप नं० ७

बहिश्त में भी रसूल को आयशा के हाथों की हथेलियां दिखाई गई

"नबीयों के लिये और अपने प्रेमी मित्रों के लिए कष्टदायक मृत्यु को खुदा आसान कर देता है और अपने दर्शन भी देता है। साद बिन अबीदह से यह हदीस पहुंची है कि हज़रत रसूल ने कहा है कि निश्चय से मैंने (आयशा) की दोनों हथेलियाँ बहिश्त में देखीं ताकि मौत आसान हो जावे" मदारिजुन्न-बुव्वत अन् मवाहिब लुदनिया वा कश्फुल्ग़म्मह। (अब्दुल् वहाब शेरानी)

फ़िर्दौसे आसियह-चमन ५ मस्बाहुज्ज़ैत फ़ज़ीलतें मस-वाक (दाँतुन की महिमा) सफ़ा २५२।

शुकर है कि पैग़म्बर को दोज़ख न दिखाई, अन्यथा हज़रत आयशा की अन्धभक्ति के आवेश में अगर दोज़ख ही दिखा देते तो उनका कोई क्या कर सकता था। मालूम होता है कि हज़रत आयशा के हाथों की विद्युच्छक्ति यमदूत का काम देने लगी थी। लज्जा! शरम! शरम! दया करो। इस तरह की हदीसों को निकाल बाहिर करो।

आक्षेप नं० ८

हज़रत आयशा की कोकशास्त्र वाली तसवीर

हज़रत आयशा ने कहा कि जब रसूलल्लाह मेरे घर पर आते तो अपने दोनों घुटने मेरी दोनों जांघो पर रख देते और अपने दोनों हाथ मेरे दोनों कन्धों पर रख कर मुझ पर औंधे हो

जाते और साँस चढ़ जाता था।"

फ़िर्दौसे आसियह कश्फ़ुल् ग़म्मह, सफ़ा २४०।

(बात घड़ने वाले के मुंह में मिट्टी)। क्यों मुसलमानों ? किसी भी मत के प्रवर्तक की उसी मत के अनुयायी लोगों की पुस्तक में ऐसी सुन्दर तसवीर दिखा सकते हो ? इस निर्लज्जता से (क़सम ख़ुदा की) रसूल की आत्मा कांप गई होगी। हमने जो आक्षेप नं० १ (रसूल को स्त्रियों की लालसा लगी रहती थी) में हदीस लिखकर उसपर नोट लिखा है कि कई एक हदीस कहने वालों को रसूल से शत्रुता थी वह झूठ नहीं है। आप ने देखा, बड़े २ इस्लामी विद्वान् भी इस रोग के रोगी हैं और उनमें शेरानी जैसे विद्वान् मौलवी भी शामिल हैं। इसलिये जिन २ लोगों को हमारी पुस्तक हफ़वातुल् मुस्लिमीन के खण्डन करने का शौक हो वह शर्म करें और मुसलमानों को धोखा देकर रसूल की निन्दा करने वाली हदीसों को निकाल डालने से न रोकें, अन्यथा क़बर और क़यामत में जो बुरा परिणाम होगा वह सब को भली भांति विदित ही है।

(नोट) कहां हैं वह इस्लामी प्रचारक जो लोगों को झूठी बातें सुना कर और धोखा देकर परस्पर लड़ाते हैं और स्थान २ पर कहते फिरते हैं कि राफ़ज़ी लोग धर्ममाता आयशा को गालियाँ देते और काफ़िर समझते हैं ! ऐसे लोग शेरानी और मौलवी अब्दुल्रब्ब की इस गंदी कथा को पढ़कर अपनी गर्दनें नीची करें ! यदि इस्लाम की लाज है तो राफ़िज़ियों की पुस्तकों में से धर्ममाता आयशा का अपमान तो क्या उन की किसी दासी के विषय में ही कोई लज्जाजनक

बात दिखादें, तब हम जानेंगे कि आप सत्यवादी हैं और आप का सिद्धान्त सच्चा है और यदि इस पुस्तक के पढ़नेके छह मास बाद तक भी न दिखा सके तो आप अपने आप को और अपने सिद्धान्त तथा अपने मत को भी झूठों की सूची में लिख लीजिये और अपने इस भ्रान्तिजनक विचार को छोड़ कर पश्चात्ताप कीजिये !

अब रहा हज़रत आयशा को बुरा जानना ! सो यह यथार्थ ही है, परन्तु यह भी वहां तक जहां तक कि आप की किताबों में लिखा है ! अपनी तरफ़ से बात बना कर नहीं, ना ही किसी और भाव से ! १ रसूलल्लाह के मना करने पर भी आयशा का उन्हें ज़हरीली दवा पिला देना (१) रसूलल्लाह का आयशा जी को हज़रत अबूबकर के इमामसलात बनाने पर आयशा जी को 'कन सवाहिबाते यूसुफ़' की उपाधि देना अथवा ऐला के दिनों में तंग आकर सब से पहिले हज़रत आयशा को तलाक़ देने का अधिकार देना या हज़रत अली से आयशा जी की शत्रुता (देखो बुख़ारी किताबुलवज़ू) अथवा पहिले हज़रत उस्मान के घातकों की सहायक बन कर उस के बाद फिर स्वयं ही उस्मान की हत्या करने के विरोधियों के साथ जमल का युद्ध छेड़ देना, (जिस के बारे में आप की पुस्तकों में सामयिक इमाम के साथ विरोध करने वाले को काफ़िर लिखा है) या अलीकी मृत्यु पर प्रसन्न होना, या इमाम हसन की मृतक लाश को रसूलल्लाह के पास दबाने न देना,

[१] इसी पुस्तक के दूसरे प्रकरण में बुख़ारी के आधार पर सिद्ध किया गया है कि रसूल को मृत्यु के समय आयशा ने ज़हरीली दवा पिलाई थी । [अनुवादक]

बल्कि जनाज़े पर तीर मारना (देखो अबुल् फ़िदा, रौज़तुल् अहबाब, रौज़तुस्सफ़ा आदि आदि) और अपने बाप तथा चचा के मृतक शवों को वहां दबवाना इत्यादि २। ये सब बातें ऐसी हैं कि जिस के साथ की जायेंगी वह और उस के मित्र ज़रूर बुरा जानेंगे और ऐसा करने वाले को अपना शत्रु ही समझेंगे।

इन सब बातों के सिवाय कुरान की सूरत तहरीम की आयतों का शाने नज़ूल अर्थात् आयतें उतरने का कारण तथा सारी सूरत का अनुवाद देख जावो, जिससे सिद्ध हो जायगा कि अल्लाह भी धर्ममाताओं (रसूल की औरतों) से दुःखी है और पैगम्बर भी तथा घर के लोग भी दुःखी हैं। इस लिए ऐसे किसी व्यक्ति को (जिससे खुदा रसूल और मोमिन सभी नाराज हों) बुरा कहा या माना जावे तो यह इस्लाम ही होगा न कि कुफ़! और यदि उन (आयशा आदि) को बुरा जानना वास्तव में कुफ़ (पाप) है तो इस कुफ़ में आप के बड़े छोटे और राफ़ज़ी तथा खुदा, पैग़म्बर आदि २ सभी सम्मिलित हैं, अतः यदि उनको बुरा जानते हो तो रसूल और खुदा को भी बुरा जानो।

आक्षेप नं० ६

आयशा की खातिर रसूल ने शिर्क की मदद की।

"जब रसूल लड़ाईसे वापिस आये तो हज़रत आयशा की गुड़ियों का पर्दा हवा से उड़ गया। तब रसूल ने पूछा यह क्या ? तो हज़रत आयशा ने उत्तर दिया कि यह मेरी बेटियां हैं। गुड़ियों में एक परदार घोड़ा भी था उस को देख कर पैगम्बर ने कहा – क्या घोड़े के

पर भी होते हैं ? धर्ममाता आयशा ने कहा कि—क्या हज़रत सुलैमान के घोड़े के पर नहीं थे ? बस, हज़रत यह सुनकर हंस पड़े और चुप हो गये" इत्यादि ।

यह हदीस मदारिजुन्नबुव्वत के प्रमाण से सुनन अबू दाऊद तथा फ़िरदौसे आसियह के मस्बाहुज़्ज़ैत में सफ़ा २४६ पर लिखी हुई है ।

देखिये ! कथा कहने वाले ने प्रेम प्रकट करने की धुन में रिसाल्त को ग़ारत कर डाला क्योंकि जीवधारी की छाया वाली तसवीर (मूर्ति) को देख कर भी पैग़म्बर का हंस कर चुप रह जाना रसूल न होने का द्योतक है । चाहिये तो यह था कि ऐसी मूर्तियों (गुड़ियों) को घर से निकाल बाहर करते और तोड़ फोड़ डालते, परन्तु शोक है कि ऐसा न हुआ । इस लिये पैग़म्बर आदर्श पुरुष न रहे । क्योंकि उनसे वह काम होगया जो मुनक़िर या काफ़िर लोग करते हैं और जिनका छोड़ना आदर्श कहलाने वाले व्यक्ति के लिये परमावश्यक है । इसलिये ऐसे समय यह मानना होगा कि यहाँ (ख़ुदा मुआफ़ करे) यह आयत उपस्थित है कि 'जिसने शिर्क किया निश्चय है कि उसने घोर अपराध किया ।'

और फिर यह इस्लाम का निश्चित सिद्धान्त है कि सभी नबियों ने तौहीद अर्थात् ईश्वर की एकता का प्रचार किया और पैग़म्बर मुहम्मद साहिब तो शिर्क और नास्तिकतादि के प्रबल विरोधी थे इसी कारण उनमें सब नबियों से विशेषता थी और कुरैश लोग भी उनके इसी कारण शत्रु हो गए थे तथा उनके मार डालने पर उतारू होगए थे, जिससे हज़रत को हिजरत (परदेश यात्रा) करनी पड़ी और अरब देश के काफ़िरों

के साथ इसी कारण से लड़ाइयां लड़ने और मुक़ाबिले करने पड़े। इसके सिवाय यह भी है कि—

"जब रसूल ने अबूबकर सिद्दीक़ में शिर्क पाया तो साफ़ ही कह दिया कि हे सच्चे मित्र ! तुम में शिर्क है और च्यूंटी की चाल से भी अधिक बे मालूम है"

इज़ालतुल् ख़फ़ा मक़सद २-सफ़ा २४।

बस, जब रसूलल्लाह ने हज़रत आयशा के बाप को मुंह पर सुना दिया और साफ़ साफ़ कह दिया कि तुम शिर्क करते हो, तो यह कैसे हो सकता है कि सर्वथा आधीन अपनी--औरत का शिर्क चुपचाप हंस कर सह लिया हो ! इसलिए यह हदीस रसूलल्लाह पर झूठा आक्षेप है और निकालने के योग्य है।

(नोट)—सब ऐतिहासिक इस विषय में सहमत है कि गुड़ियों वाली बात हिजरी सन् ६ में उस समय हुई थी जब हज़रत तबौक का युद्ध करके वापिस आए थे। उस साल हज़रत आयशा की आयु १७ साल कुछ महीने की थी परन्तु इतनी आयु वाली विवाहित लड़कियां इस आयु में गुड़ियां नहीं खेला करतीं ! इस विचार से भी यह हदीस झूठी ही मालूम होती है।

अहले हदीस के सम्पादक ने हमारे नोट पर ध्यान न देते हुए आयशा के प्रेम में रसूलल्लाह के शिर्क की सहायता करने का आक्षेप वैसे ही रहने दिया और उसको उपेक्षा की दृष्टि से देखा है, बल्कि गुड़ियों की मूर्ति का शिर्क की सीमा में न आना सिद्ध किया है। परन्तु अपने सिद्धान्त की पुष्टि में कोई प्रमाण पेश नहीं किया जिससे निश्चय हो, कि गुड़ियों का रखना और उनसे खेलना रसूल या खुदा को अच्छा लगता है

और ऐसा करना धर्म है। सम्भव है कि किसी सीधे सादे मुसलमान मौलवी ने वंश परम्परा की मुसलमान लड़कियों के वास्ते यह खेल खेलना ठीक समझा हो, परन्तु जिन लड़कियों के माता पिता वंश परम्परा या १६-१७ वर्ष से मुसलमान हो कर भी शिर्क से बाज नहीं आए—जैसा कि इज़ालतुल् खना से अभी २ मालूम होचुका है, तो उनकी सन्तान के लिए कदापि यह कर्म धर्मानुकूल नहीं कहा जा सकता।

जनाबे वाला! विचार कीजिए कि-जो पैग़म्बर काबे के बुत (मूर्तियें) तुड़वा कर बिना छाया वाली इब्राहीम और इस्माईल की तस्वीरों के मिटा डालने की हज़रत फ़ारूक़ को आज्ञा करे और जब वह न मिटायें तो पानी मंगा कर स्वयं अपने हाथ से मिटादे (रौज़तुल अहबाब) बल्कि न मिटाने वालों को मूर्तिपूजक कहे, उसके व्यक्तित्व से यह आशा कैसे की जा सकती है, कि उसने अपने घर में छाया वाली मूर्तियों को रहने दिया होगा। जनाब ऐडीटर साहिब! रसूलल्लाह पर दया कीजिए और उनके घर को बुतख़ाना—मूर्तियों का स्थान न सिद्ध कीजिये!

आक्षेप नं० १०

> रोज़े में आयशा का मुंह चूमते और ज़बान चूसते थे।

"हज़रत आयशा ने कहा कि–रसूलल्लाह रोज़े में मेरे बोसे लेते और मेरी ज़बान चूसते थे।"

सुनन अबू दाऊद किताबुस्सौम–प्रकरण रोज़े वाले की राल निगलना।

ईसाई मूसाई और हिन्दु आदि सभी जातियें रोज़ा (व्रत) रखती हैं परन्तु उन में से किसी के धार्मिक नेता रोज़े में

अपनी स्त्री की ज़बान नहीं चूसते लेकिन इस्लाम के प्रवर्तक (हज़रत मुहम्मद) चूसते हैं। इलाही तौबह !

बड़े अन्धेर की बात है कि कमीना मुसलमान भी थूक और धूएं तक से बचे और हमारा पैग़म्बर रोज़े मे औरत की ज़बान चूसे ! बड़ा भारी आक्षेप है ! कृपा करके इसे निकाल डालिये !

अहले हदीस के सम्पादक ने अपने लेख में उत्तर नम्बर पांच देते हुए यह लिखा है कि 'जब आप के मत मे भी यह कर्म पाप (हराम) नहीं तो फिर आप को पैग़म्बर के करने पर आक्षेप क्यों ?'–ऐसा कहने से हदीस लेखक और मौलवी सनाउल्ला एक ही सिद्धान्त के मानने वाले मालूम होते हैं अर्थात् जिस दृष्टिकोण से हदीस वाले ने पैग़म्बर को समझा था उसी दृष्टि से मौलवी साहिब ने भी काम लिया परन्तु "ला तबाशरू हुन्न" (१) की कुरानी आज्ञा भूल गये। भला सोचो तो ! यदि रोज़े में औरत के बोसे लेना निषिद्ध है तो यह आज्ञा किस के लिये है ? अजी ! यह आज्ञा सर्व साधारण के लिये है, परन्तु जो वृद्ध या निर्बल है या जवान बली है उन के लिये हराम है क्योंकि बोसा मैथुन का उपक्रम है, जिस के करने से स्त्री पुरुषों का मैथुन मे प्रवृत्त हो जाना सम्भव है और इस का प्रायश्चित्त भी बड़ा कठिन है। सभी मानते हैं कि–खुदा के यहाँ हमारे कर्मों की पकड़ है और नबियों के विचारों की। इस लिये यह बात इसी से निश्चय हो गई कि जो काम साधारण मुसलमान के लिये निषिद्ध है वह पैग़म्बर के लिये भी हराम है और दूर क्यों जावो ! जब कि रोज़ा

[१] जब मस्जिद में जा कर रोज़ा रख लो तो फिर औरतों से मैथुन न करो। कुरान-सूरत-बक़र रुकूअ २३। (अनुवादक)

रखने वाले को अपने ही मुंह का थूक या राल बार २ मुंह में जमा करके निगल जाना निषिद्ध कहा है तो दूसरे के मुंह की राल निगलना तो क्यों न रोज़े का सत्यानाश करेगा? इस लिये खुदा के पैग़म्बर के लिये ऐसा कहना (कि वह आयशा की राल निगल गये) मौलवीपने की ही ख़राबी है।

सम्पादक अहले हदीस जी! रसूलल्लाह से हदीसवाचकों की शत्रुता पर ध्यान दीजिये !-कन्ज़ल् अम्माल का किताबु-स्सौम के पृष्ठ ३३१ और ३६१ में हदीस लिखी है कि "जब हज़रत उमर रोज़ा रखते थे तो उन की स्त्री 'आतका' उन के बोसे लेती थी परन्तु वह उस के बोसे न लेते थे क्योंकि स्त्रियों के बोसे लेने को रसूल ने मना किया था" और रसूल-ल्लाह के विषय में 'रोज़े में ज़बान चूसना! हाय, ग़ज़ब! (मुंह में मिट्टी डाल)।

अहले हदीस सम्प्रदाय का कर्तव्य है कि ऐसी २ निकम्मी हदीसों को हदीस की किताबों से निकाल डालें या रसूल के क्रियात्मिक अनुयायी होने का अभिमान छोड़ दें। जैसा कि वह कहा करते हैं कि जो रसूल ने किया सो तुम करो।

आक्षेप नं० ११

> हज़रत आयशा की अदाओं पर रसूल का मस्त होजाते थे।

"उर्वह बिन ज़बीरने कहा है कि मुझ से हज़रत आयशा ने कहा कि एक दिन अचानक ही मेरे घर बिना किसी सूचना के हजश की बेटी ज़ैनब आ गई और मुझे मालूम भी न हुआ। उस समय रसूलल्लाह भी वहीं थे। बस, हज़रत से कहने लगी कि अगर अबूबकर की लड़की अपनी कुर्ती उलट

(अंगिया खोल) दे तो आप के लिये काफ़ी है अर्थात् आपकी बुद्धि नष्ट करने के लिये हज़रत आयशा के अङ्गों पर दृष्टि पड़ना ही काफ़ी है।"

इब्ने माजह, अन्नाबुन्निकाह, बाब मुआशिरतुन्निसा।

देखिये! यह हदीस और 'जवाबुल् काफी इब्ने अल्क़ीम' वाली हदीस एक ही ढंग की हैं और उद्देश्य भी एक सा ही है—वही बात इस में भी पाई जाती है कि हज़रत आयशा को देख कर रसूलल्लाह का दिल क़ाबू से निकल जाता था। खुदा बचाये!

वास्तव में हदीस कहने वाले ने इन आक्षेपों के द्वारा बदर, उहद, खन्दक़, ख़ैबर, हनीन और तबौक के युद्ध जीतने का बदला लिया है। किस पेंच से पुराने लोग धोखा खा गये और यह भी न समझे कि भानजे ने मौसी की क्या महिमा की कि उस की मनोहरता और सुन्दरता को सब के सामने खोल कर कह दिया और मौसिया का बुरी तरह अपमान कर दिया। भला नबी की चर्चा और ऐसी साफ़ गुस्ताखी, जिसे नीच से नीच व्यक्ति भी अच्छा नहीं कह सकता! लाहौल वलाकुव्वत्!

आक्षेप नं० १२

आयशा को गाना और नाचना दिखाया करते और आप भी देख कर खुश होते थे।

"ह० आयशाने फ़र्माया कि हबशी लोग हथियारों से खेल रहे थे और पैग़म्बर साहिब मुझ को अपनी चादर से छिपाये हुए थे और मैं उन का नाच देख रही थी०"। बुखारी—किताबुस्सलात बाब अस्हाबुल् हरबो फ़िल् मस्जिदे।

"दो लड़कियां गाना गा रही थीं और हज़रत मुंह ढाँपे पड़े थे तब अकस्मात् ह० अबूबकर आ गये और लड़कियों को धमकाने लगे। रसूल ने कहा हे अबूबकर! रहने दे आज ईद का दिन है। ह० आयशा कहती हैं कि इसी तरह एक दिन मैं नाच देख रही थी और हज़रत मेरी आड किये हुए थे कि इतने में ह० उमर आगये और उन्होंने नाचने वालों को डांटा। इस पर रसूलल्लाह ने फ़रमाया कि तुम निश्चिन्त होकर नाचे जाओ।" बुखारी-किताबुल् ईदैन बाब-इज़ाफ़तुल् ईद०।

" ह० आयशा ने फ़र्माया कि एक दिन कुछ लड़कियां बआस की लड़ाई के कुछ गीत गा रही थीं उनमे ह० अबूबकर ने कहा कि रसूलल्लाह के पास शैतानी आवाज़ का क्या काम? इसपर रसूलल्लाह बोले। हे अबूबकर! गाने दे।,, "ईद का दिन था कि बनी अर्फ़दा के लोग तीरों और बर्छियों से खेल रहे थे मैंने उसे देखने की इच्छा की। हज़रत ने मुझसे पूछा, क्या तू यह तमाशा देखना चाहती है? मैंने कहा, जी हाँ! बस, हज़रत ने मुझको अपने पीछे खड़ा कर लिया और मेरा मुंह हज़रत के मुंह के साथ था—गालों से गाल मिले थे। हज़रत उन हबशियों से कहते थे कि हाँ, नाचे जावो! फिर मैं तमाशा देखते देखते थक गई और हज़रत ने कहा—बस? मैंने कहा, जी हाँ, बस!" बुखारी-किताबुल् जिहाद बाबुद्दरक़, (मिस्र का छपा हुआ) सफ़ा ६६।

पहिली हदीस से मालूम होता है कि रसूलल्लाह का आयशा को नाच दिखाना पर्दे की आयत उतरने के बाद था क्योंकि चादर से छुपाए हुए थे। ऐसा मालूम होता है कि

अल् जवाबुल् काफ़ी की हदीस के अनुसार आयशा जी को देख कर रसूलल्लाह बेक़ाबू होजाते थे और बुखारी की हदीस मे यह सिद्ध होता है कि ह० आयशा के लावण्य और सौंदर्य ने रसूल को लट्टू बना रखा था। इसी लिये तो ह० आयशा की खातिर खुदा के हुक्म के विरुद्ध भी आचरण कर बैठते थे। खुदा बचाए !

दूसरी हदीस मे मालूम होता है कि हज़रत अबूबकर और ह० उमर ने रसूलल्लाह को खुदा के हुक्म के अनुकूल चलाना चाहा परन्तु रसूल ने स्वीकार नहीं किया बल्कि हबशियों को और भी नाचने को कहा। इसमे मालूम होता है कि ह० अबूबकर और उमर भी नबी या रसूल होने मे साथी थे। तीसरा किताबुल् जिहाद वाली हदीस से सिद्ध होता है कि ह० अबूबकर को शैतानी और खुदाई आवाज़ों का अच्छी तरह पता था। परन्तु रसूलल्लाह को ज्ञान न था। परिणाम यह निकला कि (१) रसूल की सम्मति में (पर्दे की आयत के विरुद्ध) हज़रत आयशा को अपरिचित लोगों का दिखाना अनुचित न था। खुदा बचाये !

(२) यदि कोई रसूलल्लाह को खुदा की आज्ञा के विरुद्ध आचरण करने से रोकना भी चाहता था तो वह उसका घोर विरोध करते थे। जैसा कि ह० उमर के रोकने पर 'बनी अफ़्दा, का और भी नाच दिखाने का हुक्म दिया और कहा- 'हां नाचे जावो,। इस पर तुर्रा यह कि-दूसरे आदमियों के सामने गाल पर गाल रखवा कर अपनी लाज को अपरिचित व्यक्तियों का नाच दिखाया और स्वयं भी तमाशे में मस्त रहे। फलतः ह० आयशा के प्रेम पाश में फंसे होने के कारण अच्छे बुरे कर्मों की भी पहचान न रही थी और कर्त्तव्या

कर्तव्य विमूढ़ होजाते थे और जब आयशा को देखलेते थे तो काबू से बाहर होजाते थे तथा औरतों को ही चाहा करते थे।

यह सच ही था कि जिसके कारण लज्जा और शर्म बाकी न रहे थे। (हदीस वाले के मुंह में मिट्टी डाल) खुदा इन हदीस वालों से अच्छी तरह निपटे। कृपा करके इन झूठी बातों को निकाल डालिये।

(नोट)—रसूल पर किये गए इन मखौलों और निन्दित आक्षेपों से जो परिणाम निकलता है वह यही कि-पहले अमीरों और ख़लीफ़ों से पुरस्कार प्राप्त करने के लोभ ने बहुत से दुनिया के लालची पैदा कर दिये, जो हदीसें घढ़ २ कर पेट पालने लगे। इन लोगों ने रसूलल्लाहके बाद न उनके साथियों को छोड़ा न पुराने विद्वानों को और न धर्म की व्यवस्था देने वालों को। इन तीनों प्रकार की खराबियों के एक मात्र अधिकारी सूफ़िया लोग पैदा होगये जिन्होंने पूर्वजों के चरणचिह्नों पर चलते २ रसूल की निन्दा करने में बड़ी भारी उन्नति की। जिसके कारण रसूल की निन्दा, इस्लाम का प्रधान अङ्ग बनी और फिर धीरे २ ईमान का स्वरूप होगई। हाय!—जो काम काफ़िर न कर सके वह मुसलमानों ने किया। अब अमर हम मुसलमानों से प्रार्थना करते हैं कि भाई जान! रसूलल्लाह की निन्दा की यह हदीसें अपनी पुस्तकों से निकाल डालो, तो यह मुसलमान जान लेने और देने को तैयार होजाते हैं। शोक!

इस्लाम के बडे बडे विद्वान गाने को अच्छा समझते थे।

सिहाह सित्ता और विशेष कर बुख़ारी जैसी प्रामाणिक पुस्तक की जब हम समालोचना करते चले आरहे हैं और उसको झूठा सिद्ध करते आरहे हैं तो

भला उससे कम दर्जे की पुस्तकों के ऊट पटाँग प्रमाण हम कब मानने वाले हैं ! परन्तु झूठी हदीसें और बनावटी कहानियां भी उपरोक्त हदीसों की पृष्टपोषक ही हैं, इस लिए उनको भी समूलनष्ट करना चाहिए जिससे सहाबह और दूसरे विद्वान् लोग भी इन आक्षेपों से बच सकें । परन्तु बुखारी जैसी सहीह शुद्ध पुस्तकों के संशोधन कर चुकने के बाद मुहम्मद बिन ग़िज़ाली और मुहम्मद ग़िज़ाली तथा इमाम शौकाफ़ी जैसे लेखकों की किताबों का भी संशोधन होना चाहिए । जैसे-

फ़र्हुल् अस्माअ्—(इमाम मुहम्मद बिन ग़िज़ाली रचित) बवारिकुल् अस्माअ् फ़ी तकफ़ीरे मन यह्मस्समाअ्—(शेख़ अहमद ग़िज़ाली रचित)। रिस'लह अबीअल्रूह—(इमाम शौकाफ़ी रचित)। रिसालह दूम--(इमाम शौकाफ़ी रचित)

यह सब प्रकाशित हो चुके हैं। इन में इस्लाम के मूल पर प्रहार करने वाली और विरोध बढ़ाने वाली हदीसों की भरमार है। परन्तु हम उनका संक्षिप्त सार आपके आगे रखते हैं।

ख़लीफ़ा उमर फ़ारूक़	अबू सऊद अल् अंसारी
ख़लीफ़ा उस्मान ग़नी	बलाल व अब्दुल्लाह बिन अर्क़म
अबू अबीदह अल्जर्राह	असमा बिन ज़ैद
सअ़द बिन अबी विक़ास	हम्ज़ह बिन अब्दुल् मतलब
अब्दुर्रहमान बिन औफ़	अब्दुल्लाह बिन अम्रू
बराअ बिन मालिक	क़र्त बिन कअ़ब
अहसान बिन साबित	ख़वात बिन जबीर बदरी
मुग़ीरह बिन शअ़बह	ज़म्रह व अबद बिन जअ़फ़र

रबीअ् और रियाह इत्यादि इत्यादि जो कि रसल के अनन्य भक्त और उनके साथ मिल कर काम करने वाले थे, यह सब गाना सुना करते थे।

इनके पश्चात् के विद्वान् और उनके भी बाद के विद्वानों और कार्य कर्त्ताओं में से निम्न लिखित लोग भी गाना सुनते और गाने वाले तथा सुनने वाले को अच्छा जानते थे बल्कि गाने के धर्मानुकूल होने की व्यवस्थायें भी दिया करते थे।

नामावलि—

ख़लीफ़ा उमर के बेटे अ़ब्दुल्लाह का बेटा सालिम, हस्सान का बेटा अ़ब्दुर्रहमान, ज़ेद का बेटा ख़ारजह, क़ाज़ी शरीह, ज़ीर का बेटा सईद, आ़मर शअ़बी, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक़, अ़ता बिन अबी रियाह, उमर बिन अ़ब्दुल्अ़ज़ीज़ मरवानी।

उपरोक्त सभी नाम उन महान् व्यक्तियों के है जिनके विचारों, वाक्यों और आचरणों तथा निर्णयों और व्यवस्थाओं पर इस्लाम के प्रकाण्ड विद्वान् तथा धर्म निर्णायकों ने अहले सुन्नत के सम्प्रदाय की आधार शिला रक्खी है, परन्तु पापियों ने रसूलल्लाह के साथ इन बेचारों को भी न छोड़ा। शोक!

उच्च कोटि के इमामों में से 'इमाम मालिक, भी गाना सुनते थे और स्वयं गाना गा कर खुश होते थे। इमाम आज़म इस्लाम के प्रधान नेता) अबू हनीफ़ह भी बड़े प्रेम से गाना सुनते थे। प्रसिद्ध है कि जब आपका पड़ोसी डूम जो कि क़व्वाल (गायक) था किसी अदालती काम में पकड़ा गया तो

आपने उसको बरी कराया और कहा कि हां, अपना काम शुरू करो और किसी से मत डरो। इमाम शाफ़ई केवल स्त्रियों को बुलाकर उनका गाना सुना करते थे। इमाम अहमद हम्बल भी गाने के प्रेमी थे।

धर्म की व्यवस्था देने वालों में से इब्ने जरीह, अम्बरी, सफ़ियान बिन ऐनीयह, क़ाज़ी अबुत्तय्यब, अबूबकर इब्ने मुजाहिद, अबू मन्सूर बग़दादी, अबुल्क़सम क़शीरी, दारकी, हलीमी, इमामुल् हर्मैन, इमाम मावराई और इमाम महली आदि भी गान विद्या से प्रेम रखते थे और गाना सुनना अच्छा समझते थे तथा गाने के उचित और धर्मानुकूल होने के लिये व्यवस्था भी दिया करते थे।

उपरोक्त पुस्तकों में यह भी लिखा है कि इमाम गिज़ाली ने गानेके धर्मानुकूल होने पर मुसलमान मात्रका सहमत होना प्रकट किया है। इमाम इब्ने हजमने लिखा है कि सबसे पहले चारों खलीफ़े और उनके समय में अन्य अनुयायी भी गाने को उचित समझने में एक ही सम्मति रखते थे। शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी ने लिखा है कि—गाने के कई प्रकार सर्वथा धर्मानुकूल हैं और जो 'गाना सुनना हराम, कहता है वह रसूल और सहाबह के आचार व्यवहार से निपट मूर्ख है, या अनुचित पक्षपात के कारण अन्धा होगया है, या स्वभाव से ही अज्ञानी है कि शुद्ध विचार की समझ नहीं रखता।

इमाम शाज़ली ने गाने को धर्मानुकूल सिद्ध करने मे जो पुस्तक लिखी है उसके आरम्भ में ही यह कहा है कि—"ईश्वर का धन्यवाद है कि जिसने गान विद्या को सृष्टि में दूर २ तक

फैलाया और उसको उचित कर्म जितलाया ताकि गाने के प्रेमी सज्जन, अभिमानी मूर्खों को अच्छी तरह नाक रगड़ें,, इत्यादि• ।

इन ही पुस्तकों में यह भी लिखा है कि कई सहाबह आदि सारंगी और दूसरे बाजों के साथ गाना बजाना धर्मानुकूल (हलाल) जानते थे और इसके उचित होने की व्यवस्थायें भी दिया करते थे जैसे कि कई एक के नाम नीचे लिखे जाते हैं–
ह० उमर का बेटा अब्दुल्लाह, अबू सफ़ियान का बेटा मुआवियह जफ़र का बेटा अब्दुल्लाह, सअद का बेटा उमर, ज़बीर का बेटा अब्दुल्लाह और इमाम मालिक।
परन्तु मालिकी सम्प्रदायके लोग ऐसा नहीं मानते क्योंकि उनका कहना है कि इमाम मालिक सारंगी के साथ गाने को बुरा जानते थे ।

उपरोक्त पुस्तकों में यह भी लिखा है कि–हज़रत उस्मान ग़नी के दरबार में दो लौंडियां गाने पर नौकर थीं जो कि प्रतिदिन सबेरे तक गाया करती थीं। अधिक क्या, हदीस, चरित्र और इतिहास की पुस्तकों से यह स्पष्ट है कि कई एक शौक़ीन मनचले लोगों ने पहले तो रसूलल्लाह के गाना सुनने और नाच देखने की हदीसें बनवाईं—जिस की आड लेकर खूब गाना सुनते और नाच देखते रहे, फिर उन के पिछलों ने उनको प्रमाण मान कर उन के सहारे पर गाना सुनना और नाच देखना धर्मानुकूल कर्म मान लिया। इसी तरह जो पीछे आते गये वही पहलों को प्रमाण मान गाना सुनते और नाच देखते रहे। परिणाम यह हुआ कि दो सौ वर्ष के अन्दर अन्दर इस्लामी प्रदेशों में ऐसी २ हदीसें प्रख्यात हो गईं और इन आडों और सहारों के धोखे में आकर बड़े २ इमाम और

व्यवस्थापक भी चूक गये। इस के बाद अब्बासी ख़लीफ़ों के समय में इस शौक़ में इतनी बढ़ती और होगई कि व्याख्यान और उपदेश सभाओं का ढंग हिन्दुओं की कथा का सा होगया और हदीसों का उपदेश देने वाले मौलाना लोग हाथ में सारंगी लेकर उसे बजा २ कर हदीसों को सुनाने लगे। जैसा कि उपरोक्त पुस्तकों में ही लिखा है कि:—

"इमाम इब्राहीम जोकि सअ़द ज़ुहरी के बेटे थे एक दिन बग़दाद पहुंचे और ख़लीफ़ा हारूनरशीद के दरबार में चले गए। इमाम साहिब को उपस्थित देख कर ख़लीफ़े ने कहा—'कुछ हदीस सुनाइये' उन्होंने कहा 'बाजा मंगाइये तो हदीसें सुनावूं ! जब बजाने का बाजा आगया तो इमाम ने ताल सुर ठीक किया—समां बंध गया। तब हदीसें सुनाईं और ख़ूब सुनाईं, जिस से दरबार में बैठे हुए सज्जन बहुत ही आनन्दित हुए।"

इत्यादि हदीसें इन ही झूठी और बनावटी हदीसों के आधार पर घड़ी गई हैं और यदि इन को शुद्ध या ठीक मान लिया जावे तो निश्चय से मानना होगा कि—हज़रत मुहम्मद ख़ुदा के रसूल न थे और ना ही अबूबकर आदि सहाबह प्रतिष्ठा के योग्य थे तथा 'अल् ग़िना अशद्दो मिनज़्ज़िना' अर्थात् गाना ज़िना (व्यभिचार) से भी बहुत बुरा है, यह कथन भी सिर से पैर तक झूठ है और किसी ने मनमाना वाक्य बना लिया है।

हमने इस समालोचना का सारा विषय मासिक पत्र 'इस्लाह' नम्बर १० जिल्द २५ हिजरी १३५० से अक्षरशः उद्धृत किया है ताकि इस्लाम का संशोधन करने वाले तथा

धर्मपरायण विद्वान् लोग जहाँ बुखारी आदि सहीह किताबों को शुद्ध करें वहाँ इन सुलगती हुई छपटियों को बुझाने का भी ध्यान रखें।

क़व्वाली और सूफ़ियों की वास्तविकता पर विचार

विद्वानों की प्रामाणिक पुस्तकों के अध्ययन से मालूम होता है कि हिजरी तीसरी सदी के अन्त और चौथी के आरम्भ में कुछ एक गायन प्रिय लोगों ने क़व्वाली (गीत) बनाने की चेष्टायें कीं और अपने २ गानों की आधारशिला उन ही हदीसों के सिर पर रखी, जिन को हम झूठी और प्रक्षिप्त कह चुके हैं तथा जिनको पहिले लिखा भी जा चुका है। जब बहुत सी हदीसों का सहारा मिलगया तो उन को ही गानविद्या का आदि मूल मानने लगे। जब गाना गाया जाने लगा तो सुन कर आनन्द भी अवश्य ही आना था और उस आनन्द में मग्न होकर हाथ पैर और सिर भी हिलाना था क्योंकि सुन कर मानसिक प्रभाव का अंग प्रत्यंग से प्रकट होना स्वाभाविक ही है। इस लिये जब अंग भी हिलने लग पड़े तो इसी नाचने का नाम 'वजद या हाल' रख दिया गया।

यद्यपि नाचने और गाने के बारे में अनेक हदीसों का प्रमाण उपस्थित था तथापि नृत्यकला के दूसरे अंग-कूदना थरकना और मटकना इत्यादि जो कि क़व्वाली के प्रधान तथा आवश्यक अंग हैं इन को कुरान की आयत से सिद्ध करने की चेष्ठा आरम्भ हुई। अन्ततः क़व्वालीप्रियों ने कुरान में से एक आयत निकाल ही ली जिस के अनुसार कूदने आदि का

यह प्रमाण मिल गया-उर्कुज़् बिरिज्लिक (१)

नाचने में शरीर को टेढ़ा करना, सीधा करना, आड़ा और तिरछा करना तथा उछल कूद करना पड़ता है जो कि कई एक सांसारिक तथा धार्मिक (नमाज़ आदिक) कामों में हर एक को करना ही होता है इस लिये सूफ़ी लोगों ने अपने उद्देश्य पूर्ति के लिये इस को बुरा नहीं जाना। सूफ़ी लोगों ने अपना सम्बन्ध हज़रत अली से स्वीकार किया और उन को ही अपना आदर्श माना है। सभी लोग जानते हैं कि सब सहाबह में से हज़रत अली हो ज्ञानी और ध्यानी प्रसिद्ध थे। इस लिये जब सूफ़ी लोगों ने अपना सम्बन्ध हज़रत अली से बताया, तो साधारण लोग उनके धोखे में आगये। पर वास्तव में सूफ़ियों के सभी खानबादों के प्रवर्तक हज़राते शेखैन अथवा उन के अनुयायी हैं जैसा कि शाह वलीउल्लाह ने लिखा है कि —"सूफिया लोगों का सम्बन्ध शेखैन के साथ लिखा हुआ है और हसन बसरी का ह० अली से मिलना या उन से दीक्षा लेनी, ये दोनों बातें ऐसी हैं जिन को असत्य कहा जा सकता है और अहले शीआ तथा अहले सुन्नत भी हसन-बसरी को ह० अली का शिष्य मानने से इनकार करते है।,,

क़िर्अतुल् ऐनैन (मुजतबाई प्रेस) सफ़ा १८७

हसन बसरी का कोई ऐतिहासिक कथन भी इस प्रकार का नहीं मिलता जिस से सिद्ध हो कि वह ह० अली के उत्तराधिकारी या आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिये शिष्य हुये थे 'और हाथ कंगन को आरसी क्या', सूफियों के प्रसिद्ध ग्रन्थ

[१]—(हज़रत अय्यूब से कहा कि) अपने पैर को धरती पर मारो कुरान सूरत-स्वाद। रुकू ४।

मलफ़ूज़ात और तज़करात आदि भी स्पष्ट कह रहे हैं कि अली के अनुयायी होने की इन लोगों में गन्ध भी नहीं है, बल्कि यह सब सुन्नी थे और सुन्नियों में से ही इन का वर्तमान सम्प्रदाय भी है। नाचने और गाने का धर्मानुकूल होना न तो अली के अनुयायियों का सिद्धान्त है और ना ही शीओं की किताबों में कहीं लिखा है। वास्तव में सूफ़ियों का अपने मत को ह० अली से कहते फिरना सर्व साधारण को धोखे में डालना है और इसी लिये यह बड़ा आक्षेप जनक है। जिस का सबूत यह है कि ह० अली और अपने सम्प्रदाय में जो सम्बन्ध माना है वह हसन बसरी का ह० अली का शिष्य होना है, परन्तु हसन बसरी और ह० अली का मिलाप किसी भी प्रकार सिद्ध नहीं होता जैसा कि क़िर्‌अतुल् ऐनैन के सफ़ा ३१० पर शाह वलीउल्लाह ने लिखा है कि—

"सूफ़ी लोग अपने सम्प्रदाय का सम्बन्ध हसन बसरी के द्वारा ह० अली से कहते हैं। यह विचारणीय बात है क्योंकि हसन बसरी ने कहीं नहीं कहा कि मैं ने ह० अली मुर्तज़ा का शिष्यत्व स्वीकार किया, या उन से मेरा मिलाप हुआ। जब मिलाप ही नहीं हुआ तो अली मुर्तज़ा से सम्बन्ध बताना कैसे ठीक होगया।"

इस से सिद्ध हुआ कि जब दर्शन ही नहीं हुये तो ह० अली के उत्तराधिकारी भी नहीं हो सकते हैं। दूसरी बात यह है कि यदि हसन बसरी ह० अली के अनुयायी होते तो ह० उमर फ़ारूक़ के वचनोंको क्यों कण्ठस्थ करते? क्योंकि उन वचनों में से बहुत सा भाग ऐसा है जो ह० अली के विरुद्ध है परन्तु उन ही वचनों के कारण उन की प्रतिष्ठा हुई और वह इमाम माने गये। बल्कि सुना जाता है कि शीआ लोगों की किताबों में

लिखा है कि इमाम हसन बसरीने कई विषयों में ह० अली की व्यवस्थाओंका विरोध किया है। तीसरे यह कि जब रसलुाह के दोर बेटे (हसन, हुसैन) शुद्ध पैग़म्बरी वंश से मौजूद थे और रसूलल्लाह भी उनको सब का इमाम बनाने को कह गये थे, तो हज़रत अली, रसूलल्लाह की आज्ञा के विरुद्ध हसन बसरी को इमाम क्यों बनाते और रसूल के प्यारे बेटों का भी नेता कैसे स्वीकार करते ? इस लिये इन तीनों युक्तियों से सिद्ध होगया कि फ़िर्क़ा सूफ़िया का निकास ह० अली से नहीं और ना ही यह लोग उनके अनुगामी हैं। और क़व्वाली आदि का धर्मानुकूल होना उन हीं हदीसों से निकाला जो सर्वथा मिथ्या हैं और ऊपर वर्णन की जा चुकी हैं। इस लिये ऐसी कहानियों को निकाल डालना चाहिए।

आक्षेप नं०—१४

हज़रत ने अली के मोह में सत्य को त्याग दिया था।

"हज़रत अब्दुलल्लाह इब्ने अब्बास ने कहा कि मैं हज़रत उमर के पास गया जब कि वह ख़लीफ़ा हुये ही थे। देखा, तो वह एक बोरिये पर बैठे हैं और तीन सेर पक्की खजूरें उनके पास धरी हैं और वह खा रहे हैं। मुझसे भी कहा खावो, मैंने एक खजूर उठाली। ह० उमर खजूरें खा और ठलिया भर पानी पी कर ईश्वर का धन्यवाद करने लगे। फिर मुझसे पूछा-कहां से आते हो ? मैंने कहा मसजिद से। तब ह० उमर ने पूछा तुम्हारे चचेरे भाई क्या करते हैं ? (मैंने समझा अब्दुल्लाह इब्ने जअफ़र तैयार के बारेमें कहते हैं) मैंने कहा अपने साथी संगियों के साथ खेलते होंगे। उनहोंने कहा-नहीं, मैं तुम्हारे माननीय अर्थात् अली को पूछता हूं ! मैंने कहा वह एक बाग में उजरत पर पानी भरते हैं और

कुरान का पाठ करने जाते हैं। हज़रत उमर ने कहा- हे अब्दु-ल्लाह ! तुमको ऊंट कुर्बान करने पड़ें यदि झूठ बोलो ! सच २ कहो कि क्या अली के मन में अब भी खिलाफ़त पाने की इच्छा है ? मैंने कहा-हां ! बल्कि मैं इससेभी अधिक बतावुं कि मैंनेयही बात अपने पिता से पूछी तो उनहोंने कहा कि अली का कहना सच्चा है (१) तब ह० उमर ने कहा कि अली के सम्बन्ध में पैगम्बर के मुंहसे ऐसे२ वाक्यभी कई बार निकले हैंकि जोसच्चे सिद्ध नहीं होते जो कि उनहोंने अली के प्रेम में कहे थे। और हज़रत ने मृत्यु के समय सत्य को त्याग कर झूठ की तरफ़ जाना चाहा था कि अली का नाम लेकर वसीयत करदें परन्तु खुदा की कसम ! मैंने इस्लाम के प्रेम और मुसलमानों पर दया के विचार से हज़रत को मना किया क्योंकि कुरैश लोग अली की खिलाफत पर सहमत न थे, अगर कहीं वह खलीफा होजाते तो अरब के लोग उनके विरोध में खड़े होजाते। बस हज़रत ने इशारा समझ लिया और इस भेद को वह जान गए कि यह सब कुछ जानता है। बस, वह चुप होगए और अली के बारे में कुछ न कह सके। फिर ईश्वर को जो मंजूर था वही पक्का हुक्म हुआ,, इत्यादि. । तारीखें बग़दाद व शरह नहजुल्बलाग़त इब्ने अबी अल् हदीद मुअतज़ली० भाग १ सफ़ा ५१ (छापा तोंहरान)

क्यों मुसलमानों ! रसूलल्लाह ऐसे थे कि अली के मोह में सत्य छोड़ झूठ की तरफ़ फिर जाते थे (खुदा बचाए !) क्या रसूलल्लाह ऐसे मति मन्द और निर्बुद्धि थे कि जो बात ह० उमर

[१] अली कहते थे कि खिलाफ़त पर मेरा अधिकार है क्योंकि मैं हज़रत का दामाद होने से उन के पुत्रके समान हूं इस लिए मुझे खलीफ़ा बनाया जावे। (अनुवादक)

को सूझती थी, वह रसूलल्लाह को न सूझती थी ? क्या ह० उमर का धर्म प्रेम रसूलल्लाह के धर्म प्रेम से अधिक था ? क्या ह० उमर ऐसे उद्दण्ड थे कि रसूलल्लाह पर अनुचित आक्षेप कर दिया करतेथे, जिससे स्वयं उनका धर्म पर अविश्वास सिद्ध हो ? (खुदा बचाये)

वह सारे दोष और आक्षेप जो कि शीआ लोग ह० उमर पर लगाते हैं केवल इसी एक बात से प्रकट हाजाते हैं, कि ह० अली ही खिलाफ़त के सच्चे अधिकारी थे और ह०उमर, रसूलल्लाह को रसूल न समझते थे बल्कि खलीफा बनने के लिये अरब के काफिरों से मेल जोल करते फिरना और जो खिलाफ़त न मिले तो कुल बनीहाशिम को नष्ट भ्रष्ट करदिया जाय इत्यादि विचार रखते थे। हमारे विचारमें यह हर्दास नहीं-डायनामेट बम्ब का गोला है। इसको सब से पहले निकालना चाहिए।

आक्षेप नं०—१५

हज़रत उमर ने रसूल की बुद्धि पर दोष लगाया।

ह० अबू हुरैरह ने कहा कि एक दिन रसूलल्लाह बनी नज्जारके बाग में बैठे थे। मुझे बाग में जाने का मार्ग न मिला तो बाग की एक नाली के किनारे २ जाकर हज़रत के पास पहुंचा। जब हज़रत ने रास्ता छोड़ कुरास्ते आने का कारण पूछा तो मैंने सब निवेदन कर दिया। फिर हज़रत ने अपनी जूतियां मुझे दीं और कहा कि जो कोई बाग के बाहिर मिले उसे कहते जावो कि—मन क़ाला ला इलाह इलल्लाहो दख़लल् जन्नते—अर्थात् जो स्वीकार करे कि सिवाय परमात्मा के और कोई उपासना के योग्य नहीं है वह बहिश्त में जायगा। (मतलब यह है कि जो ईश्वर की एकता को मान ले उसे भी शान्ति

मिल सकती है और किसी प्रकार से उसकी जान माल को हानि न पहुंचायी जावे) जब मैं इस बात की मनादी पीटने निकला ही था तो ह० उमर मिले और मुझ से रसूल की जूतियें लिये जाने का कारण पूछो मैंने ठीक २ जो रसूलल्लाह ने सिखाया था कह दिया। बस, यह सुनते ही ह० उमर ने मेरी छाती में इस ज़ोर से घूसा मारा कि मैं लोटनी खा कर चूतरों के बल धरती पर गिर पड़ा, फिर ह० उमर ने कहा कि जा वापिस चला जा! मैं वापिस आया और रसूलल्लाह से निवेदन किया कि ऐसा २ मामला है। इतने में ह० उमर भी आ पहुंचे, जब हज़रत ने पूछा कि तुम ने अबू हुरैरह को क्यों मारा, तो उन्होंने कहा कि क्या आपने अबूहुरैरह को मनक़ाला लाइलाहा० के ढंडोरा देने को भेजा था? हज़रत ने कहा, हाँ! तब ह० उमर ने विनीत भाव से कहा कि ऐसा हुक्म न दीजिये क्योंकि मुझे भय है कि कहीं ईश्वर की उपासना ही लोग न त्याग दें! हज़रत ने कहा, अच्छा जाने दो।" सहीह मुस्लिम किताबुल् ईमान, जिल्द पहली, सफ़ा ४४–४५।

क्यों मुसलमानो! क्या सहाबह ऐसे थे कि जो बात रसूल नहीं कहते थे वह बात उनकीकही कह देते थे, जिससे बचने के लिये रसूलल्लाह को अपनी ख़ास निशानी देनी पड़ी ताकि अबू हुरैरह आदि पर झूठ का सन्देह न हो सके। क्या ह० उमर ऐसे असभ्य और उद्दण्ड थे कि रसूलल्लाह के नियुक्त किये हुए व्यक्ति को मार कर उस की दुर्गति करते थे और 'सेवक के अपमान से स्वामी का अपमान होता है' इस उक्ति के अनुसार रसूल का अपमान किया करते थे! हमारी सम्मति में तो वह अत्यन्त नम्र और आज्ञाकारी थे। उन से इस पाजीपन की आशंका करनी सचमुच एक भयंकर अपराध है।

हम पूछते हैं—क्या हज़रत उमर रसूल की रिसालत को बनावटी और झूठा समझते थे जो उन्होंने तौहीद की आज्ञा को रोकने की मुनादी करने वाले को पीटा ? (इलाही तोबह) क्या ह० उमरकी सम्मतिके विरुद्ध रसूलल्लाह दोबारा फिर अपनी आज्ञा को सर्व साधारण के कानों तक नहीं पहुंचा सकते थे ? क्या रसूलल्लाह वीरता में ह० उमर से घटिया या निर्बल थे ? (खुदा बचाये) इन सब प्रश्नों के उत्तर तुम्हारी पुस्तकें " नहीं ,, कह कर दे रही हैं किन्तु रसूल की वीरतादि को प्रशंसा पाई जाती है। जैसा कि लिखा है —

" जब हज़रत उमर गले में तलवार डाले हुए रसूल के दरबार में पहुंचे और ह० हम्ज़ा के धमकाने की ललकार और ह० उमर की आवाज सुनाई दी जिसे सुन कर रसूलल्लाह बाहिर निकल आए और ह० उमर की इस ज़ोर से कलाई मरोड़ी कि उमर कांप कर पृथ्वी पर गिर पड़े। तब हज़रत रसूलल्लाह ने खालिद के पिता वलीद बिन मुग़ीरह की दुर्दशा और दुर्गति की कथा याद कराई। तब खुदा से डर कर हज़रत उमर ने झट कलमा शहादत पढ़ लिया और मुसलमान होगए,,। तारीखे खमीस (दयार बकरी) जिल्द अव्वल, (मिस्र की छपा) उमर के मुसलमान होने का कारण सफ़ा ३३४।

देखा आपने! हज़रत कैसे शूर वीर और पराक्रमी थे कि उनके सामने हज़रत उमर चूं तक न कर सके।

कुरान की सूरते बकर और सूरते मायदा की उन आयतों का भाष्य करते हुए कि जिनमें शराब का हराम होना कहा गया है कुरान के प्रसिद्ध भाष्य 'तफ़सीरे हुसैनी' में तथा प्रख्यात-हदीस विद्या निधान तिरमज़ी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक

'तिरमज़ी' में किताबुत्तफ़सीरे सूरते मायदा में शराब के खण्डन वाली आयतों पर विस्तृत विचार किया है और लिखा है कि—

"जब इस प्रकार की आयतें उतरती थीं तो उस समय विशेष कर हज़रत उमर और मुआज़ बिन जबल बुलाये जाया करते थे और उनको खुदा का हुक्म सुनाया जाता था, परन्तु हज़रत उमर यही कहते रहते कि--हे खुदा! शराब के निषेध में और भी विस्तार पूवक वर्णन कर,,।

आपको मालूम है कि जब वह न माने तो क्या हुआ? वह सब ईश्वर ने चाहा तो 'हम रसूल के उत्कर्ष की आलोचना' में लिखेंगे। बस, क्या मजाल थी कि हज़रत फ़ारूक़, रसूलल्लाह के नियुक्त किये हुए व्यक्ति को मार सकते या उनकी आज्ञा में रोड़ा अटकाते (खुदा मुआफ़ करे)। इस लिये इन युक्तियों से सिद्ध है कि यह हदीस बिल्कुल झूठी और आदि से अन्त तक मिथ्या है क्योंकि इसमें रसूल की निन्दा और ह० उमर का अपमान भरा हुआ है तथा इस बारे में यह पहले दरजे की हदीस है। कृपा करके इस हदीस को सब से पहले और शीघ्राति शीघ्र अवश्य बाहिर निकालिए।

(नोट)—अहले सुन्नत ने शीआ लोगों को चुप कराने के लिये यह सिद्धान्त बनाया कि "उच्च कोटि के व्यक्ति के होते हुए निकृष्ट कोटि के व्यक्ति को खलीफ़ा मानना और उसका अनुसरण करना सर्वथा उचित है,,। चलो, छुट्टी हुई! बुद्धि के विरुद्ध है, तो भी झंझट तो कटा! परन्तु इस हदीस से तो यह मानना आवश्यक होगया कि उच्च कोटि के व्यक्ति के होने पर भी निकृष्ट कोटि का व्यक्ति रसूल कहला सकता है (खुदा बचाए) सार यह है कि रसूलल्लाह बुद्धिहीन और मतिमन्द

थे और इसी कारण वह निकृष्ट कोटि के व्यक्ति थे परन्तु ह० उमर उनकी अपेक्षा उच्च कोटि के बुद्धिमान् थे, रसूल से अधिक विचारवान् और दरजे में बहुत ऊंचे थे, क्योंकि रसूल को यह भी पता न था कि प्रत्येक सामान्य या साधारण के लिए विशेष की आवश्यकता होती है, परन्तु ह० उमर को ज्ञान था कि बिना मुहम्मदी आचार व्यवहार के धारण किए—अर्थात् मुहम्मद पर ईमान लाए बिना केवल 'ला इलाहा इल्लल्लाह,—सिवाय ईश्वर के और कोई उपास्यदेव नहीं, इतना कह देने या मान लेने से स्वर्ग में घुसने का अधिकार प्राप्त नहीं हो सकता। इसी लिए अबू हुरैरह को उन्होंने मार कर-'मन क़ाला ला इलाहा इल्लल्लाह दख़लल् जन्नते,—जिसने कहा, सिवाय ईश्वर के और कोई उपास्यदेव नहीं वह स्वर्ग में जायगा, इस रसूल के हुक्म को बन्द करा दिया था। परिणाम स्वयं यह निकल आया कि—रसूलल्लाह इस्लामी सिद्धान्तों के समझने में भी भूलें करते थे इस लिए रसूल नहीं थे और ख़ुदा भी परले दरजे का मूर्ख था जिसने ह० उमर जैसे विद्वान् के होते हुए मुहम्मद साहिब को रसूल बना दिया इस लिए ख़ुदा भी ख़ुदाई से ख़ारिज! परन्तु हज़रत उमर, ख़ुदा और रसूल दोनों से विद्या तथा बुद्धि में बड़े हैं इस लिए रसूल और ख़ुदा बनने के अधिकारी हैं। नऊज़ो बिल्लाहे—ख़ुदा की पनाह। लाहौल वला कुव्वत।

क्यों मुसलमानों! क्या सलाह है इस हदीस को कलेजे से लगाकर रखोगे या रसूल की मान मर्यादा बचाओगे? देखिए! आपका आक्षेप शीआ लोगों पर इसी लिए है कि वह

हजरत अली को रसूलल्लाह से उत्तम समझते है। परन्तु हमने आपको ताना इस लिए दिया कि यदि उन (शीआ) से इस विषय मे भूल होगई थी तो आप (सुन्नी) पराए शकुन के लिए अपनी नाक क्यों कटवाते है ? आप तो अपनी किताबें से इन झूठी बातों को निकलवा डालिए फिर हम भी आपके साथ है।

आक्षेप नं०—१६

[illegible] और जावन का आवश्यकता-ओं क समझने [illegible] अज्ञानी [illegible]

"हजरत तलहह बिन अबीदुल्लाह ने कहा कि हम रसूलल्लाहके साथ खजूर के वृक्षो मे से गुजरे तो देखा कि लोग खजूर के वृक्षो मे गाबा लगा रहे हैं रसूलल्लाह ने पूछा कि ये लोग क्या कर रहे है ? लोगों ने कहा कि नर खजूर का सार मादीन खजूर पर डाल रहे है, ताकि खजूर पर फल खूब आवें। यह सुन कर हजरत ने कहा कि मेरे विचार मैं यह काम व्यर्थ है। तब सब लोगों ने गाबा लगाना छोड़ दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि उस साल फल बहुत कम लगे और खजूरें भी अच्छी तरह न लगीं। जब लोगों ने हज़रत से कहा कि गाबा लगाने का पुराना रिवाज छोड़ देने से फल कम लगा है तो हज़रत ने कहा कि मना करना मेरा भ्रम ही था—अर्थात् खुदा का हुक्म न था। यदि इस काम मे तुमको भलाई मालूम होती है तो करो क्यों कि मैं भी तुम्हारे जैसा आदमी ही हूं और आदमी के सोचने मे भूल हो ही जाती हैं परन्तु जब मैं यह कहूं कि खुदा ऐसा कहता है तो वह कथन मेरा भ्रान्ति शून्य होगा क्योकि मैं खुदा के नाम पर झूठ कदापि न बोलूंगा,, इत्यादि।

इब्ने माजह, (तर्जुमा नवाब विक़ार नवाज़ जंग) बाब तल्क़ीउल् नख़ल, सफ़ा २३३।

मक्के मदीने में खजूरें देश और जीवन के लिए आवश्यक वस्तु मानी जाती हैं और पैगम्बर साहिब जो कि सब के आदि गुरु माने जाते हैं उनका गाबा लगाने का काम देख कर भी पता न लगा। कि यह क्या कर रहे है और इन लोगों के ऐसा करने का क्या फल होगा, इससे पता चलता है कि रसूलल्लाह किसी और देश के रहने वाले थे अथवा उनकी बुद्धि ठीक न थी। (खुदा बचाए)

दूसरी बात यह है कि हिजरत के कुछ दिन बाद तक रसूलल्लाह ने अपने कथनके सत्यासत्य होनेका निर्णय कराने वाला नियम न बनाया था, परन्तु जब गरीबों की हानि करादी तो अब कहने लगे--" अना बशरुन् मिन् मिस्लेकुम,, (१) अर्थात् मैं तो तुम्हारे जैसा ही भूल चूक करने वाला आदमी हूं। यह बहाना बना कर बचना चाहा (खुदा मुआफ़ करे)।

तीसरी बात यह है कि जब गाबा लगाने का पता न था और उसे किस लिए पुराने समय से करते आ रहे हैं इस बात का भी पता न था तो आयत आने की प्रतीक्षा क्यों न की ताकि गरीब किसान हानि उठाने से बच जाते। शोक! रसूलल्लाह के लिए इस हदीस लेखक की बकवास से क्या २ बुरे से बुरे परिणाम निकले हैं।

हदीस घड़ने वाला यह नहीं समझा कि नबी या रसूलों का रंग रूप और अंग प्रत्यंग तो निस्सन्देह साधारण मनुष्यों जैसे ही होते हैं परन्तु उनके आभ्यन्तरिक साधन सामान्य

(१)--यह कुरान की आयत है। (अनुवादक)

मनुष्यों जैसे नहीं हुआ करते। यही कारण था कि ह० याकूब ने यूसूफ़ की बू ४० पड़ाव की दूरी से ही सूंघ ली थी, ह० सुलेमान ने चींटियों की बात सुनली थी, ह० ख़लीलुल्लाह पर आग का कुछ भी असर न पड़ा और ह० यूनस मछली के पेट में चिरकाल तक पड़े रहे और जीते बाहिर निकले तथा ह० अल्यास और ह० ईसा जीते जी अमर होगए और ह० मुहम्मद ने भी ख़न्दक़ युद्ध के समय शाम और रूम के धन जन पर मुसलमानों का पूरा २ अधिकार देख लिया जो कि उनकी मृत्यु के बहुत देर बाद हुआ (१) और मैराज की रात में जैरोसलीम और वहां से सातों आस्मानों पर जाकर अर्श, (कुर्सी) लौहे महफ़ूज़, क़लम और दोज़ख़ जन्नत की सैर करके क्षण भर मे वापिस आगए। इस लिए अना बशरुन मिस्लिकुम्, कह कर रंग रूप में ही मनुष्यों जैसा कहा गया है न कि आन्तरिक साधनों और ज्ञानादि की अपेक्षा से। बुद्धि के और मन के गुप्त रहस्य खुलने और फ़रिश्तों से भी ऊपर होने से साक्षात्कार के कुल दर्जे पार कर लिए जाते हैं तो नबी और रसूलों की उत्पत्ति होती है और बिना जिब्राईल की सहायता के अल्लाह का प्रत्यक्ष होकर उससे बातचीत होती हैं। इस लिए उनके सम्बन्ध में भूल चूक का सन्देह करना बड़ा भारी अपराध अर्थात् ' रसूल नहीं थे , ऐसा कहना है। वास्तव में हदीस वाले ने यह सिद्ध किया है कि पैगम्बर के सभी वाचिक और कायिक कर्म सामान्य मनुष्यों जैसे ही होते हैं, उनमें कोई २ बात तो मानने के योग्य होती है, परन्तु सभी बातें मानने के योग्य नहीं हुआ करतीं। (खुदा बचाए)

(१)—शाम देश को ख़लीफ़ा अबूबकर और ख़लीफ़ा उमर ने जीता था अर्थात् ह० मुहम्मद की मृत्यु के ४ वर्ष बाद। (अनुवादक)

इस हदीस के लेखक ने एक और सर्व साधारण से सहानुभूति दिखा कर अपने आप को धन्यवाद का पात्र बनाया है, वह यह कि शरीअत के कष्टों से बाल बाल बचा कर सैकड़ों शरई हुक्मों पर पानी फेर दिया। मतलब यह है कि ऐसी हदीसें बहुत ही थोडी हैं जिन में स्पष्टतया कहा गया हो कि 'यह मेरा कथन अल्लाह की तरफ़ से है, जैसा कि हदीसे गदीर के विषय में हारस फ़हरी को कहा गया था कि 'मन् कुन्तो मौलाहो फ़अली मौलाहो' अर्थात् यह मैंने खुदा के हुक्म से कहा है। या ऐसी ही एक आध कोई और हदीस होगी शेष सब की सब बे पते की हैं। न जाने पैग़म्बर ने अपनी सम्मति अनुमान से कही हैं अथवा खुदा के हुक्म से। यथा--नमाज़ के बारे में 'ला सलात इल्ला बिफ़ातहतुल् किताब' इत्यादि और व्यवहार आदि में भी बहुत सी। बस, परिणाम निकला कि जिन जिन हदीसों में यह शब्द हों कि 'मैं इसे खुदा के हुक्म से कहता हूं, उसी को मानना और सत्य जानना चाहिये तथा उसी पर आचरण करना चाहिये। इससे भिन्न अन्य किसी को भी प्रामाणिक नहीं मानना चाहिये और ना ही उन के अनुसार कार्य करना चाहिये। उन हदीसों को सर्वथा त्याग दो चाहे वह प्रसिद्ध और बार बार ही क्यों न कही गई हों।

अब मुसलमान सोचें और समझें कि ऐसी हदीसों से इस्लाम किधर जा रहा है। यदि उन की सम्मति में इन हदीसों से रसूल की मान मर्यादा पर आञ्च नहीं आती तो ख़ैर, अन्यथा इन सब को किताबों से निकाल बाहिर करें।

आक्षेप नं० १७

रसूल ने मूर्तियों पर चढाये हुए पशुओं का मांस खाया

"सालम ने अपने पिता अब्दुल्लाह इब्ने उमर से सुना कि अस्फ़ल बलदह के स्थान पर ज़ैद बिन अमरू बिन नफ़ील से हज़रत का मिलाप हुआ (यह उन दिनों की बात है जब कि हज़रत पर इलहाम नहीं होता था और विधि पूर्वक रसूल नहीं बने थे) हज़रत ने ज़ैद के आगे भोजन खाने का वस्त्र बिछाया और थालियों में माँस रखकर ज़ैद को भोजन करने के लिए कहा, परन्तु ज़ैद ने उसे खाने से इनकार कर दिया और कहने लगा कि मैं उन पशुओं का माँस नहीं खाता जिन को तुम लोग मूर्तियों पर चढ़ा कर कुर्बान करते हो, बल्कि मैं उस पशु का मांस खाता हूं जो अल्लाह के नाम पर ज़िबह किया जावे,, इत्यादि। बुखारी-किताबुज्ज़िबायह बाबुज़्ज़िबायह अलन्नस्बे वल् इस्नामे।

शोक का स्थान है कि निर्बुद्धि आदमी तो मूर्तियों पर चढाये पशुओं के मांस खाने से बचे और जो रसूल बनने वाले हैं और अन्तिम रसूल कहलाने वाले हैं वह अल्लाह से भिन्न चीज़ के नाम पर मारे गए पशु का मांस खायें और दूसरों को खिलावें। यह तो बड़ा भारी अनर्थ है।

और साहिब लौलाक का प्रसिद्ध वचन कि 'कान नबिय्यन् व आदम बैनल् माए वत्तीने, अर्थात् आदम जब पैदा भी न हुआ था उस वक्त भी मैं मौजूद था। यह बात सच है या झूठ? यदि सच है तो रसूल ने शिर्क किया क्योंकि आदम को उत्पत्ति से पहिले अपने आप को माना और खुदा का साथी

कहा, जो कि अहले सुन्नत के धार्मिक मन्तव्यों तथा सिद्धांतों से विरुद्ध है। यदि झूठ है तो भी शोक ही है कि अन्तिम रसूल बनने वाला अपने प्रारम्भिक काल में ईश्वरवादी भी नहीं था इस तरह से यह हदीस सर्वथा मिथ्या और दोष युक्त है अतः निकाल डालने के योग्य है।

(नोट)-८ दिसम्बर १६२२ ई० के अहले हदीसमें उसके सम्पादक ने ग़ज़ब की चोरी की है जिससे सिद्ध होता है कि आप इमाम बुखारी के चरण चिह्नों पर चलने वाले सच्चे अनुयायी हैं क्योंकि उन्होंने भी अली बिन मदीनी की किताब "अल् अलिल" चुराई थी और हदीसकारों में नाम लिखाया था तथा मन मानी कांट छांट कर डाली थी जिसके कारण इमाम मुस्लिम ने बुखारी को 'मुन्तहुल् हदीस' अर्थात् बनावटी हदीस लिखा है (देखो मुकद्दमा सहीह मुस्लिम)। ऐसे ही जनाब ने भी मौलवी फ़ाज़िल की उपाधि प्राप्त की होगी, अथवा इस फ़ाज़िल के माने फ़ज़ूल (व्यर्थ) के होंगे जिस से लोग धोखा खा रहे हैं।

हमने आक्षेप नम्बर १७ के नीचे जो बुखारी के बाबुज्ज़िबायह की हदीस लिख कर आक्षेप किया है कि इस हदीस से रसूलल्लाह का अपमान होता है और सम्पादक अहले हदीस ने किताबुल् मनाकब बाब हदीसे ज़ैद बिन अमरू के अनुसार अर्थ वाली हदीस लिख कर हमारा खन्डन किया है और चोरी यह कि न तो किताब का प्रमाण पेश किया और ना ही बाब का हवाला लिखा। अब हम पूछते हैं कि क्या आप इसी बात के उपाधि प्राप्त मौलवी फ़ाज़िल है ? सवाल आस्मान का और जवाब पाताल का देकर लोगों

पर अपनी फ़ाज़िलीयत--बड़ाई जिताया करे और सच्ची बात को मिटाया करें। जनाब आला ? अगर बाबु जिज़बायह वाली हदीस में "फ़क़द्दम अला रसूलल्लाहे अर्थात् उसने रसूलल्लाह के आगे (भोजन का वस्त्र) रखा, ऐसा होता तो हमको क्या भैंस ने काटा था कि हम इस हदीस को आक्षेपों में पेश करते। (१)

ख़ैर ! आपकी इन बे सिर पैर की बातों का उत्तर यदि ईश्वर ने चाहा तो 'तादीबुल् मारिक़ीन, मे देंगे परन्तु इस समय यह निवेदन है कि आप अपनी जायदाद—बुखारी में किताबु जिज़बायह की हदीस से 'इलैहे, काट कर 'इला, बना दें, यद्यपि ऐसा करने से हदीस बनाने वाले की इच्छा पूरी न हो सकेगी (बला से) तथापि रसूलल्लाह झूटे आक्षेप से बच जायेंगे। यदि इसके साथ ही साथ आप इस धोखे बाज़ी से तोबह भी लिखदें तो और भी अधिक उपकार तथा यश का साधन हो सकेगा।

आक्षेप नं०—१८

कुरैश लोगों के सामने रसूल नंगे हो गये थे

'जाबर बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने कहा कि काबा की मरम्मत के समय रसूलल्लाह भी कुरैश जाति के साथ पत्थर उठाने मे शामिल थे। हज़रत

(१) हदीस मे 'इलैहे, लिखा है जिससे अर्थ होता है कि ज़ैद की ख़ातिर कपड़ा बिछाया जिससे उन पर दोष लगा क्योंकि उनके पकाए मांस पर ज़ैद को आक्षेप करना पड़ा। यदि 'इला, होता तो रसूल के लिये बिछाया ऐसा अर्थ हो जाता जिससे दोष रसूल पर न आता बल्कि ज़ैद पर आता। (अनुवादक)

के चचा अब्बास ने हज़रत से कहा कि तुम भी पाजामे उतार कर अपने कन्धे पर रख कर पत्थर उठावो। बस, हज़रत ने ऐसा ही किया और मूर्च्छित होकर गिर पड़े। तब से फिर कभी नंगे नहीं हुए,,। बुखारी किताबुस्सलात, बाब-कराहियते नाअरा फ़िस्सलात।

इमाम बुखारी की योग्यता सराहनीय है कि आक्षेप के विषय में तो हदीस का कोई सम्बन्ध नहीं और इमाम साहिब लिखे जारहे हैं। दूसरी योग्यता यह है कि ऐसा हदीस कहने वाला विश्वासपात्र बनाया कि जिसकी हदीस से सर्व साधारण के सामने रसूल को नंगे खड़ा कर दिया। तीसरी योग्यता रसूल की निर्लज्जता कि सब के सामने नंगे होगए और परिणाम पर विचार न किया। इस भयानक दृश्य के समय हदीस वाले ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि खड़े रहने से जो पर्दा बाकी भी रह गया था बेहोश होकर गिरने से वह भी खुल गया। लाहौल बला कुव्वत इल्ला बिल्ला!

इतना कर चुकने के बाद हदीस वाले ने रसूल के साथ अपनी मित्रता भी जिता दी है कि--रसूलल्लाह फिर कभी नंगे न हुए। ऐसा कहने से हदीस वाले के दो अभिप्राय हैं, एक तो यह कि उस समय तो अवश्य नंगे होगए थे और दूसरा यह कि शत्रुता छिपी रहे। न्यायकारी परमात्मा इस्लाम को नंगे करने वाले ऐसे हदीसियों से आप निपटे। भक्त और मित्र बन कर रसूलल्लाह को हंसी उड़वाई! यह हदीस झूठी है निकालो इसको!

(नोट)--प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रन्थों में लिखा है कि जब मक्के के मन्दिर की मुरम्मत आरम्भ हुई तो उस समय रसूलल्लाह युवावस्था से भरपूर ३५ वर्ष के सोच समझ वाले

आदमी थे। जब कुरैश जाति के लोगो ने यह चाहा कि काबे की आधार शिला हमारे नेता के हाथ से रखवाई जावे तो इस पर बड़ा उपद्रव हुआ सम्भव था कि रक्तपात होकर सदा के लिए लड़ाई दंगेका मैदान बन जाता। ऐसी अवस्था मे हज़रत ने उस उपद्रव को ऐसी अच्छो तरह शान्त किया कि सब लोग राज़ी होगए और किसी की नकसीर तक न फूटी। आपने यह उपाय सोचा कि कुरैश जाति के सब पंच और नेता लोग एक चादर मे आधार शिला को उठावें और मंदर की आधार भूमि पर रखें। सब ने ऐसा ही किया और क्लेश कट गया। तारीखे इस्लाम (ज़ाकिर हुसैन देहलवी कृत)

बस, जिस उत्कृष्ट व्यक्ति,मे झगड़ा निपटाने की ऐसी अच्छी योग्यता हो वही सब के सामने नंगे होकर खड़ा हो जावे! यह हो नहीं सकता! बिल्कुल झूठ! यह तो बड़ा भारी अपराध है।

(नोट)--जनाब सम्पादक अहले हदीस! अपने फ़ाज़िलाना अडंग बडंग तूती ज़बरतंग का जवाब तादीबुल्मारिक़ीन मे देखिए!

आक्षेप नं०--१६

रसूल खड़े होकर पेशाब करते थे।

बहुत सी हदीसों की व्याख्या में ह० अली का यह कथन पाया जाता है कि---"क्या उस आदमी का कहा मान लें जो खड़ा होकर पेशाब करता है,,।

"मसनदे अहमद, और 'तिरमज़ी, में लिखा है कि "ह० आयशा ने कहा कि जो यह कहे कि हज़रत खड़े होकर पेशाब करते थे उसके कहने का विश्वास न किया जावे, वह झूठा है,, रसूलल्लाह ने हज़रत उमर को खड़े होकर पेशाब करने से

मना किया था जैसा कि मिश्कात के भाष्य में लिखा है कि--- " खड़े होकर पेशाब करना या तो मूर्खों के समय की यादगार है अथवा किसी रोग के कारण ह० उमर खड़े होकर पेशाब करते होंगे क्यों कि उन्होंने कहा है कि खड़े होकर पेशाब करने से गुदा भ्रंश नहीं होता,, । शअतुल् लिमआत (शरह मिश्कात) जिल्द १—बाब अद्बुल् ख़िला सफ़ा २२३। (नवलकिशोर प्रेस)

ह० उमर के सम्बन्ध में हदीस व्याख्याकार ने दो बातें कही हैं, एक तो ह० उमर का बीमारी के कारण खड़े होकर पेशाब करना, दूसरा उनका कथन। परन्तु रोग की आड़ लेना तो बहाना ही मालूम होता है क्योंकि हज़रत उमर बीमारी के कारण खड़े होकर पेशाब करते होते तो हदीस वाले की अपेक्षा रसूल को अधिक पता होता और बीमारी समझ कर स्वयं ही मना कर देते इस लिए यह पिछले लोगों की घड़न्त है---सच नहीं !

पैगम्बर के मना करने का दूसरा प्रमाण यह है कि---- " निस्सन्देह हमने दूसरी हदीसों में लिखा पाया है कि हज़रत उमर खड़े होकर पेशाब किया करते थे और कहा करते थे कि खड़े होकर मूत्र करने से गुदा की रक्षा होती है। इससे सिद्ध है कि उनका यह कार्य किसी रोग के कारण होगा क्यों कि वह भी तो रसूल के अनुयायी है। इस लिए उनसे कोई कार्य रसूल के आचरण के विरुद्ध नहीं हो सकता। अब हम अनुमान लगा सकते हैं कि उनको पेशाब करते समय पीछे से कुछ निकल पड़ने (गुदा भ्रंश) का भय रहता होगा जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा है कि ' अल्बोलो क़ायमन् अहसनद्दुबरे---

खड़े होकर मूत्र करना गुदा की रक्षा करता है" इत्यादि। शरह मसाबीह और तन्ज़ीहुल् अन्साब भाग १।

इन दोनों प्रमाणों से सिद्ध है कि रसूलल्लाह ने हज़रत उमर को खड़े होकर पेशाब करने से रोका था परन्तु बुखारी किताबुल् वजू क़ाइमन् व क़ाइदन् में ह० हज़ीफ़ह ने कहा है कि-"एक गांवकी रूडियोंकी जगह पहुंचे तो हज़रत रसूलल्लाह ने उस गन्दी जगहपर खड़े होकर पेशाब किया"। (हाय ग़ज़ब) जिस काम के करने से दूसरों को मना करें उसी को आप करें---निरा झूठ ! कृपया इसे निकाल डालिए।

(नोट)--मोता इमाम मालिक में लिखा है कि हज़रत अब्दुल्लाह भी जो कि ह० उमर के बेटे थे खड़े होकर मूत्र किया करते थे। कई एक ऐसे रोग होते हैं कि जो वंश परम्परा से सन्तान को मिलते हैं परन्तु हदीस में इसके बारे में कोई संकेत भी नहीं कि अब्दुल्लाह को कोई ऐसा रोग था। आश्चर्य है कि इसी किताब के भाष्य---शरह ज़रक़ानी में लिखा है कि ज़ैद बिन साबित जो कि कुरान लिखा करते थे वह भी खड़े होकर पेशाब किया करते थे परन्तु इनके नाम के साथ भी किसी रोग का सम्बन्ध नहीं। शोक ! शायद गुसलर्रजुलैन की हदीसे इब्ने उमर में---वैलुन् लिल् इक़ाब, की जो उपाधि है वह ऐसे ही व्यक्तियों के लिए होगी जो खड़े होकर पेशाब किया करते होंगे अन्यथा पैगम्बर का हुक्म कुरान के विरुद्ध मानना होगा जो कि असम्भव है।

आक्षेप नम्बर २०

रसूल ने कहा कि गुदा से मैथुन करना भी उचित है।

यह आक्षेप भी पराई स्त्रियों को मंगवाना और जौनिया से व्यभिचार की इच्छा तथा शराब पीने आदि लाञ्छनों से कम नहीं है परन्तु यह बहुत सी हदीसों से सिद्ध है कि रसूलल्लाह ने ऐसे आदमियों को मर्दूद और मलऊन अर्थात् महानीच और धिक्कार के योग्य कहा है तथा स्थान २ पर उन की निन्दा की है। हज़रत उमर के केवल औंधा लेट कर मैथुन करने से आपने बुरा भला कहा था और फरमाया था कि पीछे से बच! जैसा कि हदीस में लिखा है कि—

"इब्ने अब्बास ने कहा कि एक दिन ह० उमर रसूलल्लाह के पास आये और कहने लगे कि या रसूलल्लाह? मैं मारा गया। रसूल ने कहा कि तुझ को किस चीज़ ने मारा? तो उन्हों ने कहा कि रात मैंने अपनी सवारी (स्त्री) को औंधा कर लिया था। इतना सुन कर रसूलल्लाह चुप हो गये। बस, उसी समय अल्लाह ने आयत भेजी--' निसाओकुम् हर्सुन् लकुम् फ़ातू हर्सल्कुम् इन्नी शिअतुम् (१) अर्थात् औरतें तुम्हारी खेती हैं जिधर से चाहो आवो, हज़रत ने कहा मासिक धर्म और गुदा, से बचो" इत्यादि। तफ़्सीर ख़ाज़न जिल्द १। सफ़ा १५३ (छापा मिश्र)

जो धर्मात्मा, स्त्रियों से केवल औंधे मैथुन करने पर क्रुद्ध हो जावे और ऐसे साधारण परिवर्तन से भी प्रसन्न न हो

[१] कुरान की सूरत बक़र के २८ रुकू की एक आयत है।

उस से यह कैसे आशा की जा सकती है कि वह मल स्थान में मैथुन करने को धर्मानुकूल कहता है (खुदा बचाए) यह तो बड़ा निन्दनीय आक्षेप है।

परन्तु हदीसलेखक और उनका प्रचार करने वालों ने ऐसी २ हदीसें घड़ दी हैं कि उपरोक्त हदीसों के विरुद्ध ऊट पटांग हदीसें बना डालीं और लिख डाला कि रसूलल्लाह इस कुकर्म को सर्वथा उचित और धार्मिक कर्त्तव्य समझते थे। जैसा कि कुरान के प्रसिद्ध भाष्य तफ़सीरे कबीर और तफ़सीरे 'फ़तहुल् बयान' में लिखा है कि—

" खज़ीमह बिन साबित ने कहा कि एक आदमी ने रसूल से पूछा कि स्त्री की गुदा में मैथुन करना चाहिए या नहीं ? रसूलल्लाह बोले हां, करना चाहिए, हलाल-अर्थात् इस्लाम के अनुकूल है।,; तफ़सीरे कबीर जिल्द २ हुज्जतुस्सालिसा सफ़ा २३४ (छापा मिश्र)। और तफ़सीरे फ़तहुल् बयान जिल्द १ निसाउकुम् हर्सुन् लकुम की व्याख्या सफ़ा २८७।

(भरो उस के मुंह में मिट्टी !) ईमान से बोलो, क्या ऐसी असभ्यता और दुराचारों की शिक्षा देने वाला रसूल कहला सकता है ? क्या ऐसी आज्ञायें और व्यवस्थायें देने वाला पैगम्बर कहा जा सकता है ? जो मनुष्य सृष्टि क्रम का संहार करे उस को परोपकारी कैसे कहा जावे ! जो नामर्दी फैला कर लोगों को पुरुषत्व हीन कर डाले उसे कौन ' खुदा का भेजा हुआ रसूल मानेगा ? लाहौल बला कुव्वत, (खुदा बचाए)।

नोट—अहले हदीस के सम्पादक ने अपने अखबार नं० ८, २६ दिसम्बर १६२२ के पृष्ट २ पर यह लिख कर अपनी जीत मनाई है कि 'ऊपर वाली हदीसका भाग छोड़ दिया है।

जिससे कि गुदा मैथुनका अनुचित होना स्पष्ट है। इस भाग-त्याग को ही उन्हों ने हमारा अपराध माना है परन्तु सच यह है कि उन्हों ने हदीस की यूनिवर्सिटी में शिक्षा नहीं पाई, यही कारण है कि इतनी उछल कूद मचाई। इस बेचारे को क्या मालूम कि इमाम मालिक, इमाम अब्दुल्लाह इब्ने उमर और इमाम शाफ़ई जैसे प्रामाणिक नेता और तत्कालीन बहुत से प्रकांड विद्वान् मौलवी भी इस कुकर्म को उचित ही समझते थे तथा इस विचित्र कर्म के धर्मानुकूल होने में व्यवस्थायें दिया करते थे। कई एक लोग जो उस कर्म को उचित समझ कर किया करते थे रसूल के समय के ही थे। उनका विश्वास भी है कि वह लोग इस कर्म को खुदा का हुक्म समझते हैं जैसा कि उन की सहायता करने और साक्षी देने के लिये इमाम बुखारी भी मौजूद हैं। इन व्यवस्थायें देने वालों की व्यवस्थाओं और कई एक हदीसों की साक्षी से सिद्ध है कि पहले पहल जो हदीस की रचना की गई तो वह केवल उतनी ही थी जितनी कि हमने उद्धृत की है परन्तु कई एक सभ्यों तथा रसूल के भक्तों ने इस मामले को दबाने के लिये शब्द बढ़ा दिए। बढ़ाने वाले भिन्न २ देशों के रहने वाले हैं तथा हदीसें भी भिन्न२ छापेखानों मे छपी है इस लिए उन के शब्दों में बड़ा अन्तर पड़ गया है जिस का प्रमाण सहित ब्योरा ईश्वर ने चाहा तो 'ताद़ीबुल् मारिक़ीन' मे लिखा जायगा। और उसका खण्डन भी किया जावेगा। हाँ, पाठको! आप समझे भी कि रसूलल्लाह के सम्बन्ध में इस अनुचित कर्म को धर्मानुकूल कहने का अपराध क्यों किया गया है और किस वास्ते किया गया गया है? आइए, हम आप को सुनाते हैं।

गुदा मैथुन के धर्मानुकूल होने की आलोचना।

इस रोग के शीआ लोग भी रोगी हैं चाहे वह लज्जा और घृणा ही क्यों न करें। यदि अहले सुन्नत ने इस कर्म को रसूलल्लाह के हलाल कहने से उन को बदनाम किया है तो शीआ लोगों ने कई एक इमामों को बदनाम किया है। परन्तु भेद यही है कि शीओं की पुस्तकों में किसी विद्वान् या व्यवस्था देने वाले को ऐसा (गुदा मैथुन करने वाला) कहीं नहीं लिखा और अहल सुन्नत ने परले दरजे की निर्लज्जता से जहां इस कर्म का धर्मानुकूल लिख दिया वहां कई एक नेताओं के नाम भी लिख डाले जो इस कर्म को किया करते थे। बल्कि कई एक ख़लीफ़ों के नाम भी लिख डाले जैसा कि उनका आचरण और नाम आदि प्रमाण सहित नीचे लिखा गया है, तथापि यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि वह लोग कदापि ऐसे न थे और ना ही ऐसे हो सकते हैं। यदि तत्कालीन राजाओं और हाकिमों के भय से ऐसा कहने या लिखने का विवश होगए हों तो यह सम्भव होसकता है परन्तु उस काल के समाप्त होने पर भी वैसे ही कहे जाना कि "गुदा मैथुन उचित कर्म है,, सर्वथा शोचनीय ही है और सचमुच उन हदीस व्याख्याकारों पर शोक है कि जो अपनी मान प्रतिष्ठा की ख़ातिर इमामों और नेताओं का अपमान करके उस समय के अधिकारियों को प्रसन्न करते रहे। देखिए!—

"अस्बग़ बिनल् फ़रज ने कहा कि मुझ से क़ासिम के बेटे अब्दुल् रहमान ने कहा कि—मैंने आज तक कोई भी इस्लामी मत का ऐसा जानकार नहीं देखा जो 'गुदा मैथुन, को धर्म

विरुद्ध मानता हो। मैं कहता हूं ऐसा करना बेशक हलाल अर्थात् निस्सन्देह धर्मानुकूल है। 'औरतें तुम्हारी खेती हैं जिधर से चाहो आवो, इस आयत को पढ़ कर कहा कि इससे बढ़ कर और क्या कहा जावे--इससे सब बात स्पष्ट होजाती है,,। फ़तहुल् मबीन,मय तन्बीहुल् वहाबीन सफा ३५५ (छापाखाना असहुल् मताबा)।

आयत खुदा का हुक्म है जिससे प्रकट हुआ कि इस कर्म को हलाल कहने वाला खुदा है और रसूल उसको सुनाने वाला है। बस, इस कथा का फल यह निकला कि खुदा ने रसूल को इल्हाम--लड़कों से व्यभिचार करने की आज्ञा दी और रसूल ने अपने अनुयाइयों को ऐसा ही करने की सम्मति दी। (मुंह में मिट्टी उसके)।

इन अनुयायी लोगों ने अपने गुरुओं और पुराने मौलवियों के आचार व्यवहार देखे और अनगिनत प्रमाण पाए तो उन को इस दुष्कर्म के धर्मानुकूल होने में कुछ भी सन्देह न रहा और जब अन्वेषण किया तो एक भी ऐसा आदमी न मिला जो इस कर्म को धर्म विरुद्ध कहता! इलाही तोबह! तोबह!

फ़तहुल् मबीन के ३५५ सफ़े पर लिखा है कि---" सईद बिन् अल्मसीब, नाफ़अ, इब्ने उमर बिन् कअबल् करज़ी और अब्दुल् मलिक इब्ने माइबशून--ये सब लोग स्त्री की गुदा में मैथुन करने को हलाल---कर्तव्य समझते थे।,,

ये सब लोग इमाम मालिक के समकालीन हैं जो ' गुदा मैथुन, को उचित कर्म कह रहे हैं और हलाल हराम का हुक्म बिना खुदा और रसूल की इच्छा के हो नहीं सकता इस लिए इनके ऐसा मानने से रसूल और खुदा पर अवश्य दोष आता है।

इसी किताब में यह भी लिखा है कि उक्त हदीमें हन्फ़ियों

के नेता इमाम तुहावी की वर्णन की हुई हैं---यह इमाम तुहावी वही हैं जो बुखारी की व्याख्या-'शरह उम्दतुल्कारी' के लेखक ऐनी और फ़तहुल कदीर के रचयिता इब्नेहमाम के गुरु हैं। इन ही इमाम तुहावी ने अब्दुल रहमान इब्ने कासिम मालिकी के भरोसे पर जो हदीस लिखी है वह भी देखने योग्य है --

"इब्ने अरबी ने कहा कि इब्ने शअबान ने स्त्रियों से गुदा मैथुन करने को हलाल कहा है और इस विषय में सहाबह और उन के बाद के विद्वानों की बडी भारी मण्डली का प्रमाण पेश किया है। अपनी किताब 'जामे उल् नस्वां, वा 'अहकामुल् कुरआन, में लिखा है कि इमाम मालिक भी इस कर्म को धर्मानुकूल समझते थे इस विषय में भी उनहोंने कई एक हदीसें इकट्ठी की हैं। तुहावी ने कहा कि अस्बग़ बिनल्फ़रज ने अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम से यह वचन कहे हैं,,। फ़तहुल् मवीन-सफ़ा ३५६

इसी किताब के सफ़ा ३५७ पर लिखा है कि -हाकिम और दारक़तनी और ख़तीब बग़दादी ने कहा कि इमाम मालिक इस काम (गुदा मैथुन) को अच्छा समझते थे। तुहावी से 'मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह, ने कहा कि इमाम शाफ़ई ने स्त्रियों से गुदामैथुन के बारे में कहा कि इस के हराम हलाल होने में कोई सच्ची हदीस नहीं मिलती, परन्तु जो मिलती हैं उनसे यही निश्चय होता है कि यह काम हलाल अर्थात् करने योग्य ही है।

सैयूती ने अपनी व्याख्या 'दुर्रे मन्सूर, में "औरते खेती हैं जिधर से चाहो आवो,, इस आयत की व्याख्या करते हुए लिखा है कि इमाम शाफ़ई और इमाम मुहम्मद का इसी विषय में शास्त्रार्थ हुआ था। इस शास्त्रार्थ का भी पूरा २ वर्णन यदि ईश्वर ने चाहा तो 'तादीबुल् मारिक़ीन, में करेंगे जिस से यहां

सिद्ध होता है कि यह कर्म हलाल ही है।

"जिर्जानी ने कहा कि इमाम मालिक से गुदा मैथुन के हलाल होने में पूछा गया तो इमाम साहिब ने फर्माया कि--मैंने अभी इस कर्म को करके स्नान किया है,, इत्यादि ० दुर्रे मन्सूर सैय्यूती जिल्द अव्वल (छापामिश्र) सफ़ा २६६।

"मुहम्मद बिन सअद को 'अबी सुलैमान जिर्जानी ने कहा कि मैं स्वयं इमाम मालिक की सेवा में उपस्थित था कि उन से पूछा गया कि स्त्री से गुदामैथुन करना चाहिये या नहीं? आप इस बारेमें अपनी व्यवस्था (फ़तवा) दें तो इमाम साहिब ने अपने सिर पर हाथ मार कर कहा कि—मैंने अभी इस काम को करके स्नान किया है,इत्यादि। उमतुल् क़ारी शरह बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर।

इमाम महोदय के सिर पीटने से यह पाया जाता है कि आप ने इस से पूर्व भी कई बार इस कर्म के अच्छे होने की निस्सं-कोच घोषणाएं की होंगी, परन्तु जानकारों के आने जाने का तान्ता बँध गया होगा, इस कारण जल भुन कर उनका सिर पीटने की अपेक्षा अपना ही सिर पीट डाला।

और देखिये इमाम आज़म कौफ़ी-इब्ने अबी मलीकह क्या फ़रमाते हैं—" मुझ से एक बार स्त्रियों से गुदामैथुन करने के बारे में पूछा गया तो मैंने कहा कि मैंने एक कुंवारी लडकी से यह काम करने की इच्छा की परन्तु......मुश्किल हो गया तो तेल से काम लिया गया,,। इत्यादि। दुर्रे मन्सूर-तहत आयत निसाउकुम् ० सफ़ा २६६,---छापा मिश्र।

इमाम बुख़ारी के विश्वासी हदीस कहने वाले 'मुहम्मद बिन् इजलान अल् मदनी, के सम्बन्ध में एक कथा है जिसको

प्रमाणित मान कर अस्क़लानी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में उद्धृत किया है कि—

"जिस समय वह इस्कन्दर्या पहुंचे तो उनहों ने अपनी विवाहिता स्त्री से गुदा मैथुन किया जिससे वह बोल उठी "अऊज़ो बिल्लाहे मिन्क,,-अर्थात् दुहाई है खुदा की, यह वहां से भाग मदीना पहुंचे और वहीं १४८ हिजरी में मर गये"

तहज़ीबे इब्ने हजर अस्क़लानी जिल्द ६— सफा ३४२

बडे भारी व्यवस्था देने वाले पूर्ण विद्वान् अब्दुल्लाह इब्ने अल्मुबारिक जोकि ख़ानदानी अमीर और इमाम आज़म के प्रधान शिष्य थे उन के विषय में इमाम अबुल् क़ासिम राग़िब अस्फ़हानी ने मुहाज़िरात में लिखा है कि-

"जब तूरिस्तान के नासिर का हुक्म आया तो उस ने अब्दुल्लाह इब्ने मुबारिक को वहां का क़ाज़ी (जज) नियुक्त कर दिया जो कि............के प्रसिद्ध रोगी थे। एक दिन इब्ने मुबारिक ने कहा-हे मोमिनों के सरदार ! मुझे कुछ एक हृष्ट पुष्ट आदमियों की आवश्यकता है जो कि मेरी मदद करें। नासिर ने कहा-मुझे इस का कारण पहले ही मालूम हो चुका है इत्यादि" तअीगुल् अन्साब-हिस्सा २। उस्मान का बयान।

मामूनअल्रशीद ख़लीफ़ा के प्राईम मिनिस्टर और शैखुल् इस्लाम कहलाने वाले 'युहया बिन अक्सम, के बारे में ख़तीब बग़दादी ने अपने इतिहास में लिखा है कि 'अबूबकर बिन कसमुल् अम्बारी, ने कहा कि क़ाज़ी युहया ने अपने एक घनिष्ठ मित्र से पूछा कि लोग हमारे विषय में क्या कहते हैं ! उस ने कहा सब लोग आप को अच्छा ही कहते हैं। क़ाज़ी युहया ने कहा-कि मैं आप से इस लिये नहीं पूछता कि आप मेरी प्रशंसा

करें बल्कि आप सच २ कहिये कि लोगों की मेरे विषय में क्या धारणा है? तब उस मित्र ने कहा, लोग कहते हैं कि--क़ाज़ी साहिब गुदा मैथुन कराते हैं। क़ाज़ी साहिब मुस्करा कर बोले नहीं जी! बल्कि इस के उलट मशहूर है अर्थात् लौण्डे बाज़ी,, इत्यादि०। तन्ज़ीयुल् अन्साब। हिस्सा २। बयान उस्मान।

क़ाज़ी युहया के अनुवाद कर्ता प्रसिद्ध शास्त्रार्थी और धर्मप्रेमी अबुलवलीद 'मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अल्शहनह ने लिखा है कि"क़ाज़ी साहब दुराचार--दुर्व्यवहार लौण्डेबाजी में बड़ी ख्याति रखते थे। एक कविने उनके विषय में कविता भी लिखी है —

कज़ा नुर्जा अन्न नरल अद्ला ज़ाहिरन्।
फ़अक़्बन बअद् रिजाओ क़नूतन्॥
मना तस्ल हुद्दुनिया व मुस्लिहोअहलिहा।
व क़ाज़ि युल् क़ज़ातुल मुस्लमीन यलूता॥

अर्थात् हमें पूरी २ आशा थी कि संसार में न्याय के दर्शन करेंगे परंतु शाक के बाद निराश होना पड़ा। ऐसी अवस्था में संसार और संसार के रहने वालों को सदाचार से कैसे प्रेम हो सकता है जब कि मुसलमानों के शैखुल् इस्लाम-इस्लाम मत के प्रधान नेता और इस्लामी राज्य के एक मात्र न्यायाधीश गुदा मैथुन कराते और करते हों,,। तन्ज़ीयुल् अन्साब हिस्सा २--सफा ७१।

तन्ज़ीयुल्अन्साब के दूसरे भाग में ऊंचेसे ऊंचे प्रतिष्ठित धर्माचार्यों कावर्णन करतेहुए इन काज़ी साहबके विषयमें और भी कई पुस्तकों के प्रमाण दिये गये हैं जो कि किताब का कलेवर बढ ज़ाने के भय से छोड़ दिये गये हैं परन्तु इतना याद रहे कि यह"वायसराय,, की शक्ति के आदमी थे, ऐसे २ उच्च

व्यक्तियों केप्रभाव और अधिकार ने न जाने इस्लाम और इस्लामप्रवर्तक रसूल के बारे में क्या क्या बातें बनवादी होंगी!तथा किन २ सिद्धान्तों के विषय में क्या क्या षडन्त्र घडाये होंगे जिन के बाद् बुखारी आदि पुस्तकों के लेखक पैदा हुए और जैसे को तैसा लिख २ कर फैलाते रहे।

यह तो हुआ इस्लाम के इमामों और क़ाजियों का हाल! अब ज़रा इस्लाम के दो बादशाहों का भी चरित्र देख लीजिये कि उनके प्रभाव ने परमात्मा जाने इस्लाम पर क्या २ दोष लगवाये होंगे और ग़ज़ब ढाये होंगे! क्योंकि यथा राजा तथा प्रजा।

"ख़लीफ़ा वलीद बिन यज़ीद बिन अब्दुलमलिक बिन मरवान ने अपने सगे भाई सुलेमान से इग़लाम [गुदामैथुन] करने की इच्छा की थी। जब वलीद मरगया और सुलेमान ख़लीफ़ा बना तो उसने बलीद की इस नीचताभरी इच्छा को प्रगट किया"। इत्यादि० तारीखुलखुलफ़ा (सैय्यूती रचित) छापा मिश्र बयान सुलैमान बिनयज़ीद सफ़ा ६७।

इब्नेजरीर ने कहा--जब हारूनर्रशीद का बेटा अमीन ख़लीफ़ा हुआ तो उस ने दो हिजडे नपुसंक खरीदे और उनपर लट्टू होगया तथा अपने एकान्त सहवास के लिये नियुक्त कर दिया और दासियों व रानियों को त्याग दिया,,इत्यादि, तारीखुल खुलफ़ासैय्यूती। बयान अमीन बिन हारूनर्रशीद सफा १८।

देखिये! अमीन के बाप हारून ने अपने बाप मैहदी की दासी से व्यभिचार किया और इसकी व्यवस्था इमाम अबू यूसुफ से लेली थी,अमीन के बड़े भाई मामून ने अपने पिता की आज्ञा से उस की अर्थात् अपने पिता की दासी से मैथुन

किया (देखो सैयूती की तारीखुल खुलफा) अमीन ने अपनी छोटी फूफी से मैथुन किया तो उसे कुंवारी न पाया पूछने पर मालूम हुआ कि हारूनर्रशीद ने ही अपनी बहिन का कुंवारछल उतारा था (देखो रौज़तुसुफा का,बयान'हसन बिन सब्बाह हमीरी) और फिर अमीन लौण्डे बाज़ी में फंस गया। बस,अब तमाम कथाओं से इस आयत का सम्बन्ध जोड़ कर देख लो ।

अलम् नुह्लिकिल् अव्वलीन। सुम्म नुत्बे ओहुमुल् आखिरीन। कज़ालिक नफ् अलो बिल् मुज्रे मीन । वैलुन् यौमइज़िन् लिल् मुकज़्ज़िबीन । कुरान, सरतुल्मुसिलात ।

अर्थात्–क्या हमने उन से पहिलों को नष्ट नहीं किया ! फिर क्या हम ने उन के पिछलों को भी उनके चरण चिन्हों पर नहीं चलाया ! निस्सन्देह अपराधियों के साथ हम ऐसा ही किया करते हैं । क़यामत में विश्वास न करने वालों के लिये शोक है ।

उन विद्वानों और लेखकों पर शोक है कि जो इस प्रकार के दुराचारी नीच ख़लीफों को भी अमीरुल् मोमिनीन -धार्मिक शिरोमणि कहते हैं जो कि हज़रत अबूबकर और उमर जैसे महानुभावों के लिये प्रयुक्त किया जाता था । न जाने इस प्रकार के कितने और कहां २ पर लेखक थे कि जो अपने २ समयों में इसी प्रकार की उपाधियें वितरण करते रहे ।

फलतः ऐसी ही बातों के आधार पर रसूलल्लाह को 'गुदा-मैथुन की व्यवस्था देने वाला, कहा गया और कई एक और भी इस्लाम के आचार्यों को पापियों ने अपना साथी बनाया-जो कि सर्वथा बुद्धि विरुद्ध है ।

इस से अनुमान किया जा सकता है कि मरयानिया और

अब्बासिया ख़लीफ़ों तथा उन के समय में अधिकारी और कर्मचारियों में जो दुर्गुण और दुर्व्यसन थे उन की अपेक्षा ख़ुलफ़ा, अम्वीया और तत्कालीन अधिकारी लोग कहीं अधिक दुराचारी और दुर्व्यसनी होंगे, जैसा कि लिखा है--इमाम मालिक के गुरु इमाम ज़ुहरी ने हिजड़ों को इमाम मानना उचित ठहराया है तथा उन हीजड़ोंके पीछे नमाज़ पढ़ लेना अनुचित नहीं कहा,,। देखो-- बुख़ारी-किताबुल् इज़ान बाब इमामतुल् मफ़्तून।

बस, निश्चय जानलो कि हदीस --सल्लू ख़लफ़ कुल्लो-बर्रिन् व फ़ाजिरिन् अर्थात् नीच से नीच के पीछे भी नमाज़ पढ लो, यह बुख़ारी की हदीस इसी कारण से बनाई गई होगी कि इन ख़लीफ़ों के समय में दुराचारी अधिकारियों के बुरे प्रभाव से कोई सदाचारी आदमी मिलता ही न होगा जो नमाज़ पढ़ा सके। मूर्ख समझावनी के लिये यह हदीस घड़ लीगई ताकि इस्लामका लिफ़ाफ़ा न फट जावे, अन्यथा इसके क्या माने कि स्वयं रसूल तो ऐसे इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने को कहें जो सब से अधिक कुरान जानता हो और बड़ा भारी बुद्धिमान् हो, जैसा कि अबी कअब जिस की आयु ८ वर्ष की थी मदीने की कई मस्जिदों में नमाज़ के इमाम बनते थे और बडे २ बूढ़े आदमी बल्कि शैख़ भी उन के अनुयायी होते थे , इसी प्रकार उच्चाधिकारियों के पास अथवा अरब के बादशाहों के पास भी यदि इस्लाम के प्रचार के लिये किसी को भेजते थे तो उन ही लोगों को जो कि विद्या और बुद्धि में सब से अच्छे होते थे तथा कुरान के ख़ूब जानकार होते थे, जो ऐसे न होते उनको कभी भी कहीं नहीं भेजा। बस, जिस उत्कृष्ट व्यक्ति (मुहम्मद) का इस्लाम के प्रारम्भिक युग में ऐसा आचरण था उस के विषय में यह अनुमान नहीं किया जा सकता कि उस ने अपने समय में ख़ुदा

और लोगों का परस्पर सम्बन्ध ऐसा बताया हो और अपने अनुयायियों को यह कहा हो कि जिस किसी अच्छे या बुरे मूर्ख या विद्वान् के पीछे चाहो, नमाज़ पढ़ लिया करो और अपने तथा खुदा के बीच में ऐसे नीच को साक्षी बना लो। यह तो बड़ा भारी दोष है। कृपया ऐसी बातों को भी साथ ही साथ निकालते जाइये।

अक्षेप न०—२१

रसूल को कुरान भूल जाती थी।

"हज़रत आयशा ने कहा कि रसूलल्लाह ने एक आदमी-अब्दुल्लाह बिन यज़ीद अन्सारी की आवाज सुनी जो मस्जिद में किसी सूरत का उच्चारण कर रहा था तो आपने कहा कि अल्लाह उस पर रहम करे कि उस ने मुझे अमुक २ स्थान की अमुक २ आयतें स्मरण कराईं,, बुखारी—किताब फ़ज़ायलुल् कुरान। बाब निस्यानुल्कुरान।

ईमान से बोलो! क्या शरीअत के याद रखने वाले रसूल भी खुदा के अहकाम (आयतें) भूल जाया करते है? क्या खुदा के अहकाम के सिवाय शरीयत कोई और चीज़ भी है? अब सोचो कि जब रसूलल्लाह ऐसे भुलक्कड़ थे तो ख़बर नहीं कितनी सूरतें और आयतें जो खुदा ने भेजी होंगी भूल गये होंगे और इस कारण खुदा की इच्छा पूरी न कर सके होंगे! बस, इस अपराध मे अल्लाह साहिब भी नहीं बच सकते कि उन्होंने ऐसे भुलक्कड़ को रसूल बना कर भेजा जो उसके अभिप्राय को पूरा न कर सकता था और साधारण मनुष्यों के दोषों के कारण शरीअत को पूरी २ पहुचानें की योग्यता नहीं रखता था। यदि खुदा

भी पैग़म्बर की ऐसी भूल से अपरिचित था तो वह परोक्ष का जानने वाला और दिलों की बात जानने वाला नहीं होगा और यदि अल्लाह ने जान बूझ कर ऐसा भुलक्कड रसूल भेजा तो ऐसे गुण के गुणी ख़ुदा का नाम निश्चित करके हमें बता दो, बडी कृपा होगी।

विश्वास करो कि पुराने लोगों में जो २ दुर्गुण थे उनहों ने वह सब रसूलल्लाह पर डाल दिये और आप उनकी आड से बच निकले। अन्यथा इस के क्या माने कि जो ख़ुदा तमाम रसूलों और नबीयों को छोड उनकी ख़ातिर उनके माता पिता और भाइयों को सर्वोत्कृष्ट बनाये, जिस रसूल की मान मर्यादा को ख़राबियों से दूर रक्खें और जिस उद्देश्य से ज़मीन आसमान और उन के बीच की सृष्टि बनाये---उसीमें ही ऐसे २ दोष लगाये कि जो बुद्धि के विरुद्ध और शरीयत से दूर हों। ऐसा हो नहीं सकता! इस से तो खुदा पर मूर्ख, अज्ञानी और अनजान होने का आक्षेप आता है। इस लिये इस मिथ्या कथा से बचना ही कर्तव्य है-कृपा कर इसे भी निकालिये।

'अन्ना लहु लहाफ़िज़ून, की समालोचना

क्या कुरान की रक्षा खुदा करता है?

सूरह हजर की आयत-"इन्नानहनो नज्जलनज़िक्र व इन्नालहु लहाफ़िज़ून," का आश्रय लेकर मूर्खों ने बडा उपद्रव मचा रखा है परन्तु उनके भावों का न तो उनके पास कोई प्रमाण है और नाही युक्ति! इस आयत का मतलब तो केवल इतना है कि अल्लाह कहता है कि-हमने ज़िक्र उतारा और हम ही उस के रक्षक हैं।

पहली बात तो यही जानने योग्य है कि इस आयत में

ज़िक्र से अभिप्राय कुरान का है, यह बात पैग़म्बर ने कही है या जिन प्यारों को कुरान दे गये थे उनकी बताई हुई है? इन में से किसी बात की सत्यता में आप के पास स्पष्ट प्रमाण नहीं है जैसा कि पैग़म्बर का आचरण भी इस पक्ष की पुष्टि में नहीं मिलता क्योंकि कुरान की रक्षा का प्रबन्ध स्वयं अपने आप करते थे और वह ऐसे कि--वाणी से, बार २ उपदेश करते और कर्म से-ऐसे कि स्वयं कुरान को लिखाते थे और कई मित्रों को पढ़ाते थे तथा प्रेरणा के लिये ऐसा करते थे कि सेनापति और इमाम उसीको बनाते थे जो दूसरों की अपेक्षा अधिक अच्छा कुरान जानता था तथा झगड़ा निबेड़ने के लिये क़ाज़ी भी उसे ही बनाते थे जो कुरान का जानकार होता था जैसे मुआज़ बिन जबल को यमन का क़ाजी बना कर भेजा गया था जो कि कुरान का पूरा २ पण्डित था। हम कहते हैं जब खुदा कुरान का रक्षक था तो रसूल को इस लम्बे चौड़े प्रयत्न की क्या आवश्यकता थी? और वह भी ऐसे उत्साह के साथ कि कुरान के प्रचार में बहुत से मित्रों की जानें भी चली गई परन्तु इन कष्टों के सहने पर भी पैग़म्बर ने कुरान के प्रसार और प्रचार करने का त्याग न किया। बस, इस से सिद्ध हुआ कि आपके मतानुसार पैग़म्बर को खुदा पर। भरोसा न था। और ना ही रसूल के जीवन काल में सहाबह का यह विश्वास आप के घड़न्त मत के अनुसार था कि वह भी खुदा के कथन (हम ही कुरान की रक्षा करते हैं) पर भरोसा न करके कुरान के फैलाने में लगे रहते थे। यदि यह कहो कि पैग़म्बर और उनके मित्रों का कुरान की रक्षा करना, यह भी खुदा का ही रक्षा करना था तो भी ठीक नहीं क्योंकि अभी आप पढ़ चुके है कि कुरान का शिक्षक और उपदेशक (रसूल) ही किसी

सूरत की कई एक आयतें भूल गया था और सहाबह (मित्र लोग) भी प्रायः बहुत सी आयतें भूल जाया करते थे जैसा कि पैगम्बर के जीवन काल में ही हिजरत के समय के बाद किरअते मग़रिब में जब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने " कुल् या अय्युहल् काफ़िरून०,, जो पढ़ी तो उसके सारे " ला ,, छोड़ गये। जिसका मतलब यह हुआ कि कुरान परिवर्तन के आदि आचार्य यही अब्दुर्रहमान साहिब थे जिन्होंने आयतों की काट छांट का सब से पहिले सूत्रपात किया। परन्तु आपकी किसी किताब में उनको काफ़िर और धर्म भ्रष्ट नहीं कहा और ना ही उनको कोई बुरा ही कहता है चाहे उन्होंने यह गड़-बड़ जानबूझ कर ही की हो या भूल से होगई हो।

अब दूसरा समय ख़लीफ़ा बनने वालों का है देखो वह लोग भी आपके मनघड़न्त सिद्धान्त के अनुसार खुदा के रक्षा सम्बन्धी वाक्यों पर भरोसा न करके स्वयं कुरान के एकत्रित करने में जुट गए और तीनों ख़लीफ़ो ने अपने २ समय मे कुरान को एकत्रित करने और उसका क्रम निर्धारित करने का प्रयत्न जारी रक्खा चाहे उन्होंने कैसा ही अच्छा या बुरा तरीका बरता हो यह उनकी अपनी समझ की बात है, यह दोष न तो बेजान कुरान पर है और ना ही खुदा और रसूल पर!

* आईए, अब तफ़ासीर-कुरान के भाष्य और हदीसों की व्याख्याएं भी देख लीजिए! इनके लेखक भी आपके मनघड़न्त सिद्धान्त (खुदा ही कुरान की रक्षा करता है) से परिचित मालूम नहीं होते क्योंकि उन्होंने भी कुरान की आयतों का कम होना, शब्दों की काटछांट और वाक्यों तथा मात्राओं का बदलना इत्यादि स्वीकार करते हुए अपनी

पुष्टि में रसूल के मित्रों और अन्य विश्वस्त प्रामाणिक विद्वानों के प्रमाण उद्धृत किये हैं, जैसा कि तफ़सीर दुर्रेमन्सूर में लिखा है कि—

"हजरत हज़ीफ़ह ने कहा कि सूरत तोबह का नाम सूरत अज़ाब है। खुदा की कसम, इस सूरत ने किसी को डराये बिना नहीं छोड़ा। हम उतनी नहीं पढ़ते हैं जितनी कि रसूल के समय में पढ़ते थे बल्कि अब उसकी चौथाई रह गई है।,, तफ़सीर दुर्रे मन्सूर जिल्द ३—सूरत तोबह—सफा २०८।

"सूरत अहज़ाब, सूरत बक़र के बराबर थी अबउस में केवल ७३ ही आयतें रह गई है,, तफ़सीर दुर्रे मन्सूर, जिल्द ५—तफ़सीर सूरत अहज़ाब सफ़ा १७६—और फ़तहुल् बारी किताबुत्तफ़सार।

अब उपरोक्त दोनों पुस्तकों की पुष्टि में एक और विद्वान् की भी साक्षी उद्धृत करते हैं—

"इब्ने अब्बास ने कहा कि अल्लाह ने सत्तर मुनाफ़िक़ों—काफ़िरों के नाम और उनके बापों के नाम आयतों में वर्णन किए थे।,, मुआलिमुत्तञ्ज़ील। तफ़सीर सूरत तोबह। व्याख्या आयत यहज़रलमुनाफ़िक़ून।

परन्तु अब (आज कल की) कुरान में एक भी मुनाफ़िक़ का नाम नहीं मिलता और इसके आगे जो यह लिखा है कि—'अल्लाह ने दया करके उन मुनाफ़िक़ों के नाम मनसूख़ कर दिये अर्थात् मिटा डाले क्योंकि उनकी सन्तान मुसलमान हो चुकी थी और उन सब के माता पिता जीवित भी न थे,। यह भी ठीक नहीं है क्योंकि यदि मुनाफ़िक़ लोग काफ़िर थे और उनकी सन्तान मुसलमान होचुकी थी और वह लोग जीवित

भी न थे तो अबू लहबहाशिमो का नाम भी कुरान में नहीं रहना चाहिए था क्योंकि अबूलहब की सन्तान रसूल के जीते जी मुसलमान हो चुकी थी। बस, "तब्बत यदा अबीलहबः" इस आयत में अबूलहब का नाम मन्सूख नहीं किया। इससे सिद्ध हुआ कि दूसरे मुनाफ़िक़ों की सन्तान की खातिर उनके नाम मिटा डाले परन्तु पैगम्बर की शत्रुता के कारण अबूलहब की सन्तान को कयामत तक के लिये अपमानित किया जिससे मालूम होता है कि हाशिम की सन्तान से खुदा को असाधारण शत्रुता थी। इस बात की अधिक व्याख्या पुस्तक के उद्देश्य से सम्बन्ध नहीं रखती, इसलिये इसको यहीं रहने देते हैं।

(नोट)--पटने में 'खुदाबख्श खां के पुस्तकालय, में साढ़े तीन सौ वर्ष का हस्त लिखित कुरान रखा हुआ है जिसका क्रम आज कल के उपलब्ध होने वाले कुरान जैसा नहीं है और रूस के शाही पुस्तकालय में जिहाद की आयतें नहीं हैं। और हज़रत अबूबक्र की खिलाफ़त के समय इब्ने कबसह सहाबी चीन के राजा के पास जो कुरान लेकर गए थे उसका आरम्भ सूरत कहफ़ से होता है। जो कुरान जैद बिन साबित का अभी हाथ आया है और वह लण्डन से छप कर निकलने वाला है उसका अनुक्रम और कई शब्द आज कल के कुरान से बिल्कुल विरुद्ध हैं। इन बातों से सिद्ध है कि खुदा ने वर्तमान कुरान की रक्षा करने की प्रतिज्ञा नहीं की।

अब कुरान की ओर आईए और देखिए कि जहाँ २ कुरान में 'ज़िक्र,—यह शब्द आया है वहाँ २ पर इसका अर्थ 'कुरान, हो भी सकता है या नहीं! हमारा तो पूरा २ विश्वास है कि ज़िक्र का शब्द कई स्थानों पर आया है और किसी स्थान

पर कुछ अर्थ है किसी स्थान पर कुछ। किसी जगह ज़िक्र से अभिप्राय 'रसूल' का भी है जैसा कि सूरत तलाक़ की यह आयत है—क़द् अन्ज़लल्लाहो इलैकुम् ज़िक्रन् रसूलन् यत्लू अलैकुम् आयातिल्लाहे० अर्थात् हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजा जो कि अल्लाह की आयतें तुमको बताता है। इस आयत में ज़िक्र से अभिप्राय रसूल का ही हो सकता है और कुछ नहीं। बस, जब कि उपरोक्त आयत में ज़िक्र से मतलब रसूल का है तो आपका यह कहना कि ज़िक्र का अर्थ कुरान ही है मिथ्या हुआ और इस अर्थ के अनुसार पैगम्बर की रक्षा भी बदर, उहद, खन्दक, खैबर, हुनीन और तबूक आदि युद्ध क्षेत्रों में खुदा ने कर दिखाई और रसूल को सुरक्षित रक्खा और जीत भी दिलाई बल्कि इस्लाम के विरोधियों के जो प्रांत या देश उनके अधिकार में आये वह उनके जीवन काल और उसके सैकड़ों वर्ष बाद तक और आज तक सब के सब मुसलमानों के अधिकार में चले आरहे हैं इस रक्षा का प्रमाण यदि आपको जानना हो तो अपने प्रसिद्ध इमाम बग़वी की तफ़सीर मुआलिमुत्तन्ज़ील को पढ़ जाइए—उन्होंने अपनी तफ़सीर में इसी आयत पर भाष्य करते हुए लिखा है कि— 'इन्ना लहु लहाफ़िज़ून में 'लहु' (उसकी या उसके लिए) में 'हु' से मतलब रसूल का है कुरान का नहीं,,। इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने अपनी प्रसिद्ध तफ़सीर में तो यहां तक लिख दिया है कि "कुरान की रक्षा का सिद्धान्त कुरान की आयतों से निकालना अनधिकार चेष्टा है और झूठ भी है।।" चलिए, छुट्टी हुई।

अब आपको जो कुछ भी भला बुरा कहना हो इन विद्वानों के विषय में पहले कहिये-किसी अन्य सम्प्रदाय के मुसलमान को न कोसिए।

अब प्रत्यक्ष बातों पर भी विचार कीजिए कि ये कहां तक आपके मन घड़न्त सिद्धान्तों का साथ देती हैं :—

यन्त्रालयों मे कुरान का संशोधन करने के लिए कुरान को कण्ठस्थ रखने वाले बड़े २ हाफ़िज़ों और बहुत से कुरान के विद्वानों को नौकर रखा जाता है। बहुत से कुरान विक्रेता सुन्नी व्यापारी कुरान का शुद्ध संस्करण सिद्ध करने के लिए कुरान कण्ठस्थ रखने वाले हाफ़िज़ों और कुरान पाठियों की मुहरें लगा लगा और छपा छपा कर कुरान के शुद्ध होने का विश्वास दिलाते हैं। कई एक सुन्नियों को कुरान मोल लेते समय यह पूछते देखा कि यह कुरान सहीह भी है ? अब आप बताइए कि ऐसे लोग आप की समझ मे अधर्मी और अश्रद्धालु तो नहीं है ? क्योंकि उनको खुदा की रक्षा पर विश्वास नहीं है तभी तो वह मुहरें लगाते और हाफ़िज़ों से संशोधन कराते हैं। परन्तु इतनी बड़ी देख रेख के होते हुए भी कुरानों मे बहुत सी शब्दों, मात्राओं और लेखन प्रकारों की अशुद्धियें रह ही जाती है। जिनमे से कई एक को हमने भी शुद्ध करके दुरुस्त कर दिया है और विशेष कर लेखन प्रकार की कई एक भूलें तो ऐसी हैं कि जो परम्परा से चली आ रही है और संसार को कोई कुरान इस ग़लती (अशुद्धि) से खाली नहीं है। हमने इस प्रकार की गलतियों को अपनी पुस्तक "तसहीफ़े कातिबीन व नुक़्स आयाते किताबुम्मबीन".में एकत्रित कर संग्रह कर दिया है जिसकी थोड़ी सी प्रतियें 'कुतबखाना अख़बार असनाये अश्री दिल्ली, मे अभी तक मौजूद हैं। इन सब प्रमाणों और विचारों से सिद्ध है कि आपका सिद्धान्त झूठा और निकम्मा है।

तौरेत और इञ्जील में परिवतन का पाया जाना कुरान

मे लिखा है और जिन लोगों ने उन्हें परिवर्तित किया है वह अपने धर्म प्रवर्तक से आज तक सम्बद्ध कहलाते चले आ रहे हैं-अर्थात् यहूदी और नसारा पुकारे जाते है। इन दोनों किताबों को यहूदी, ईसाई और मुसलमान खुदा का कलाम-ईश्वरीय वाक्य मानते है। कुरान के परिवर्तित होने की सूचना 'युरीदून अन्यबिद्दलुल् कलाम (ल.हे.) इस कुरान की आयत मे स्पष्ट सिद्ध हो रही है। जब कुरान भी परिवर्तित हैं और खुदाई किताब कहलाती है बल्कि हम तो यह कहेंगे कि कुरान का परिवर्तित होना ही कुरान के खुदाई किताब होने का घातक है, इसलिए कुरान में परिवर्तन करने वाले भी इस्लाम के दायरे मे निकाले नहीं जा सकते। दूसरी बात यह है कि हज़रत मूसा के बाद तौरेत के प्रचार का काम बहुत से नबियों के द्वारा चिरकाल तक होता रहा, परन्तु परिवर्तन करने वालों ने परिवर्तन कर ही डाला। सुन्नियों के मतानुसार रसूलल्लाह के बाद कोई कुरान का प्रचार करने वाला पैदा नहीं हुआ। इसलिये यदि कुरान मे भी परिवर्तन हो गया तो कोई अचम्भे की बात नहीं है। इसके सिवाय खुदा ने हमारे पैग़म्बर (मुहम्मद) को हज़रत मूसा से उपमा दी है। इसलिये जो परिणाम तौरेत का हुआ; यदि वैसा ही परिणाम कुरान का भी हुआ तो वह खुदा और रसूल की इच्छानुसार ही हुआ है। याद रखो बल्कि किसी भी काम मे परिवर्तन करके देख लो कि परिवर्तन करने से मतलब बदल जाया करता है और जबतक परिवर्तन करने वाले की इच्छा शब्दों का अर्थ बदलने की न हो तबतक परिवर्तन नहीं किया जाता।

अब हम इस लम्बे विस्तृत विषय को बीच ही मे छोड़ कर एक ऐसा गुर बताये देते हैं कि भविष्य मे इस आयत-

'इन्ना नह्नो नज़्ज़लनज़्ज़िक्र व इन्ना लहु लहाफ़िज़ून, से खुदा के द्वारा .कुरान की रक्षा कहने वाले को हर एक व्यक्ति मूर्ख और बुद्धू कह सके। वह यह कि-हर एक वाक्य रक्षा के योग्य भी होता है और परिवर्तन के योग्य भी। कुरान भी वाक्यों का संग्रह है इस लिये वह भी रक्षण योग्य और परिवर्तनशील हो सकता है इस लिये उपरोक्त विवाद ग्रस्त आयत से कुरान की रक्षा का सिद्धान्त भ्रान्ति मूलक है अहले सुन्नत सम्प्रदाय वालों को उचित है कि इस झूंठे और अनर्थोत्पादक दोष से बचने का प्रयत्न करें। परन्तु यदि हमारी इस उचित प्रार्थना को न मानोगे तो हम बहुत से सुन्नी विद्वानों के ऐसे २ प्रमाण पेश करेंगे कि जिनसे कुरान .खुदा का कलाम ही सिद्ध न हो बल्कि कुरान में कलाम का लक्षण ही न घट सके तब क्या करोगे ?

आक्षेप नं० २२

नमाज़ में रसूल भूल करते थे।

क्या आप जानना चाहते हैं कि रसूलल्लाह पर नमाज़ में भूल करने का आक्षेप क्यों लगाया गया ? अनुमान से मालूम होता है कि जो यहूदी और ईसाई लोग इस्लाम की तलवार के भय से जान बचाने के लिए मुसलमान हो गए थे, उन लोगों ने पहिले तो उनको बदनाम किया, जिनके भय से कि वह मुसलमान हुये थे जैसे हज़रत उमर इत्यादि। यह इसलिए किया कि हमारी सन्तानें इस्लाम से घृणा करती रहें। उन निकम्मी और अनर्गल बातों का पूरा २ प्रभाव पड़ना न देख बाद में यह निश्चय किया कि इन भ्रान्तियों को पैग़म्बर की नमाज़

सम्बन्धी भूलों के साथ मिलाकर प्रभावशाली बनाया जावे ताकि सर्वसाधारण यह समझ कर विश्वास कर लें कि जब इस्लाम का प्रचारक पैग़म्बर ही ऐसा था तो ये भी ऐसे ही होने चाहियें। खुदा बचाये! बुखारी ने लिखा है कि—"एक दिन हज़रत अनस रो रहे थे। लोगों ने पूछा कि आप क्यों रोते है? उन्होंने कहा कि रसूलल्लाह के समय मे जो बातें थीं अब वह नहीं रहीं। लोगों ने कहा कि उसमे भी तुमने क्या कुछ नहीं किया। और कई एक हदीसों मे यहां तक लिखा है कि तुमने नमाज़ को भी नष्ट (छोड़ दिया या दूषित) कर दिया। इसी प्रकार के निबन्ध की हदीस की व्याख्या मे फ़तहुल् बारी के लेखक ने अपनी व्याख्या में लिखा है कि हज़रत मूसा अशअरी ने अली की नमाज़ देखकर यह कहा कि—हम या तो ऐसी नमाज़ भूल गये या जान बूझ कर ऐसी नमाज़ को त्याग दिया। लाहौल वला कुव्वत०।

इस विशिष्ट प्रकरण में हज़रत उमर को सब से अधिक बदनाम किया गया है जैसा कि बुखारी की कई एक हदीसों मे लिखा है कि हज़रत उमर ने चौथे पहर (मग़रिब) की नमाज़ में बहरीन की आमदनी का हिसाब कर लिया। कई एक हदीसों मे यह लिखा है कि नमाज़ पढ़ते २ हज़रत उमर ने अपनी विचार तरंग में सेनायें भी तैयार करके भिजवा दीं और कई एक में यह लिखा हैं कि दूसरा आदमी हज़रत उमर को नमाज़ के कर्त्तव्य बताता जाता था तो उनको नमाज़ अदा हो सकती थी। पढ़िये:—

"अबू सलमह बिन अब्दुर्रहमान ने कहा कि एक दिन हज़रत ने पच्छम की ऐसी नमाज़ पढ़ाई कि केवल उठने

बैठते ही रहे कुछ पढ़ा नहीं। लोगों ने कहा कि आप ने तो कुछ पढ़ा भी नहीं। ह० उमर ने कहा कि रुकू-सजूद (उठना बैठना और हाव भाव) कैसे थे ? लोगों ने कहा कि वह तो अच्छे थे तब ह० उमर ने कहा कि फिर कोई दोष नहीं अर्थात् नमाज़ अदा हो गई।" [खुदा बचाये !] कन्ज़ुल् अअ्माल जिल्द ४ सफ़ा २१३।

"इब्राहीम नहफ़ी ने कहा कि एकबार ह० उमर ने लोगों को मध्याह्न की नमाज़ पढ़ाई तो मुंह से कुछ नहीं पढ़ा यहां तक कि सलाम फेर दिया जब कृत्य समाप्त कर चुके तो, किसी ने कहा कि आप ने नमाज़ समाप्त कर दी परन्तु उसमें कुछ पढ़ा नहीं ? ह० उमर ने उत्तर दिया कि मैंने अपने विचार की धुन में एक क़ाफ़िला-यात्रियों का झुण्ड तैयार किया और अपनी धुन में ही इस क़ाफ़िले को पड़ाव २ पर ठहराता और चलाता रहा यहाँ तक कि शाम देश में जा पहुंचा और धुन ही धुन में माल सौदा बेच दिया और पालान और पर्दे भी बेच दिये सो अब निवृत्त हुआ हूं। इस के बाद ह० उमर ने दोबारा लोगों को नमाज़ पढ़ाई।" कन्ज़ुल अअ्माल जिल्द ४।

तोबह ! या तो इसी प्रकार सभी हदीसों को झूठी और बनावटी कह कर किताबों से निकाल बाहर करो नहीं तो ईमान से बोलो क्या सहाबह [ह० उमर आदि] ऐसे ही थे जैसा इन हदीसों से सिद्ध होता है ? क्या खुदा से इतने बेलाग रहने वाले लोग रसूल के प्रतिनिधि हो सकते हैं ? लाहौल बला०, झूठ ही झूठ। सहाबह की इस प्रकार की कथाएं विश्वस्त न मानी जा सकती थीं इसलिए रसूलल्लाह की भूल घड़ी गई। जैसा कि बुख़ारी में लिखा है कि—

"अबू हुरैरह ने कहा कि रसूलल्लाह ने दो रुकूअतें पढ़ा कर सलाम फेर दिया और एक इमारती लकड़ी देखने चले गये, उस समय ह. अबूबकर और ह. उमर भी उपस्थित थे परन्तु उनको हौसला न हुआ कि रसूलल्लाह से उस समय कुछ पूछें परन्तु जिनको रसूल साहिब "ज़ुल् यदैन" कह कर पुकारा करते थे उन्होंने प्रार्थना की तब हज़रत ने शेष दो रुकूअते पढ़ कर दो सजदे (भूल से बचे हुए) कर लिए। इत्यादि" बुख़ारी—किताबुल् ईमान वन्नज़र। बुख़ारी—किताबुल् अदब, बाब मायुजव्वज़ोमिन् ज़िक्रन्नासे०।

इस हदीस से लेखक का यह मतलब है कि रसूलल्लाह दिल लगा कर ख़ुदा को याद नहीं करते थे इसी कारण इतनी गड़बड़ कर डालते थे। इलाही तौबह ! तौबह ! बस, इसे निकाल बाहर कीजिये।

दूसरे यह कि इस हदीस मे यह भी प्रकट होता है कि रसूल के निमाज़ी अनुयायी दिल लगा कर नमाज पढ़ते थे। उनको मालूम हो जाता था कि रसूलल्लाह ने दो रुकूअतें पढ़ी हैं और दो बाकी है परन्तु रसूलल्लाह भ्रान्ति मे रहते थे। बड़ा आश्चर्य है कि भ्रान्तियुक्त सहाबह दिल लगा कर खुदा की नमाज पढ़ें और इलहाम और वही के अधिकारी (रसूलल्लाह) नमाज मे दिल न लगावें। जब नमाज़ का ही यह हाल है तो और कामों मे तो न जाने कितनी और क्या क्या भूलें करते होंगे! इसलिए रसूलल्लाह का दरजा इस योग्य नहीं कि उनका अनुसरण किया जावे बल्कि वह रसूल कहलाने के भी योग्य नहीं है। कृपा कर इसे निकाल बाहर कीजिये।

आक्षेप नं०—८३

रसूलने डाके डाले और लूट मचाई

"अब्दुल्ला बिन कअब बिन मालिक ने कहा कि रसूलल्लाह बद्र की तरफ़ लड़ाई के विचार से नहीं गये थे बल्कि कुरैश का काफ़िला लूटने गये थे परन्तु अल्लाहने मुसलमानोंको अचानक उनके शत्रुओंसे भिड़ा दिया-बिना किसी विशेष कारणके। इत्यादि" बुख़ारी-किताबुल् मग़ाज़ी, बाब क़िस्सह गुज़्वह बद्र। क़ौल अल्लाहो तआला--वलक़द् नसरकुमुल्लाह बबद्र॥

बहुत सी हदीसों तथा इतिहासों मे इसी प्रकार लिखा है कि "हज़रत मुहम्मद बद्र मे काफ़िला लूटने गये थे" इस हदीससे ख़ुदा पर जो दुर्व्यवहार तथा अनर्थ और अत्याचार का आक्षेप आ रहा है इस से सिद्ध है कि ख़ुदा इस्लाम से घृणा करता है और इस्लामके प्रवर्तक (मुहम्मद) से ख़ुदा नाराज़ है बल्कि उसका शत्रु है। ख़ुदा बचाये!

ईमान से बोलो, क्या इस्लाम के प्रवर्तक (मुहम्मद) डाकू और लुटेरे थे? क्या ख़ुदा ने लुटेरे को रसूल बना कर भेजा था? क्या किसी महापुरुष और विशेष कर रसूल के लिये लूटने का शब्द कहना उसकी निन्दा नहीं है? क्या ख़ुदा धोखेबाज़ है? यदि यह सब सत्य है तो कर्मों के फल और उन का आश्वासन आदि सब कुछ मिथ्या होंगे। कृपया इसे निकाल बाहिर कीजिये।

(नोट)—वास्तव में बात यह है कि मदीने के मुसलमानों पर जब कुरैशोंने आक्रमण किया और रसूलको इसकी सूचना मिली तो उन्होने अपने फुफेरे भाई अब्दुल्लाह इब्न हजश को

कुछ लोगों के साथ रवाना किया और ताकीद की कि किसी से लड़ाई न करना परन्तु हजश के बेटे अब्दुल्लाह ने रसूल की बात पर आचरण न किया और जो कुरैश मुनक्का ला रहे थे उनको लूट लिया जिस पर उन्होंने भी आत्मरक्षा करनी उचित समझी परन्तु इस लूट घसोट में एक कुरैश मारा गया। बस, बदर के युद्ध बल्कि तमाम कुरैशी लड़ाइयों की यही घटना मूल कारण बनी। देखो तारीख़ इस्लाम(मास्टर ज़ाकिर हुसैन देहलवी कृत)

आक्षेप नं० २४

रसूल ने फ़ज़ीख़ की मस्जिद में शराब पी थी

" इब्ने शैबह और इब्ने ज़बालह ने कहा कि अबू अय्यूब तथा उनके मित्र लोग फ़ज़ीख़ की मस्जिद में बैठे थे उनके पास मद्यकारी--शराब आदि चीज़ें रखी थीं और उनका पान कर रहे थे, जब मद्य का निषेध करने वाली आयत उतरी तो इसी जगह लोग शराब खींचा करते थे इसी कारण इस का नाम ही फ़ज़ीख़ पड़ गया। इमाम अहमद ने अपनी पुस्तक मस्नद में लिखा है कि 'इब्ने उमर ने कहा कि इसी स्थान पर हज़रत मुहम्मद ने भट्टी से शराब का प्याला लेकर पिया था इसी लिए इस स्थान को फ़ज़ीख़ कहते हैं। इत्यादि " ज़ज़्बुल् क़ुलूब (शेख़ अब्दुल् हक़ मुहद्दिस देहलवी कृत) बाब ६। छापा कलकत्ता, हिजरी सन १२६२) सफ़ा १६१।

सुहाह की पुस्तकों से भी यही सिद्ध होता है कि जब शराब के निषेध की आज्ञा सुन कर सहाबह ने प्याले तोड़े थे तो उनमें फ़ज़ीख की शराब ही थी और उन दिनों इस शराब

के पीने की ऐसी प्रथा थी कि उस समय शराब के बहने से मदीने की गलियों मे कीचड हो गई थी ?

क्यो मुसलमानों ! क्या तुम्हारे रसूल शराबी थे? यदि थे तो तुम्हारे लिये भी हलाल बल्कि माता के दूध के समान हलाल। अगर तुम हन्फ़ी हो तो चुपडी और दो २ वाला बात है अर्थात् रसूल का उसे पीना और इमाम आअज़म का उसे हलाल कहना-इमाम आअज़म के मन मे अंगूरी शराब ही हराम है बाकी विस्की रमजिन उर्रा, भग, सेंधी, ताडी आदि सब हलाल है। जैसा कि मोलबी नूरुल् हक़्क़ ने बुखारी की व्याख्या करते हुए लिखा है कि—

" इमाम अज़लअबू हनीफ़ ने शराब का शब्द केवल अंगूर के पानी के लिये ही प्रयुक्त किया है विशेष कर उस अवस्था मे जबकि उसमे उबाल आकर झाग सो आने लगे। यह सर्वथा अपवित्र नहीहै और नाही इसे हराम कहा जासकताहै क्योकि इस के हराम होने मे कोरी दलीलें ही है, यथार्थता नहीं। यदि अंगूरी शराब से भिन्न कोई और शराब हो और उससे नशा न हो तो नमाज़ मे दिल लगाने के लिये उसको पीया जा सकता है अन्यथा नशा के विचार से किसी और कर्म के लिये पीना तो हराम ही है। इत्यादि " तैसीरुल् क़ारी (शरह बुखारी) किताबुत्तफ़सीर बाब लैस अलल्लज़ीन आमिनू, सफ़ा ३६३।

शौक़ से पीजिये बल्कि नमाज़ और इबादत के लिये तो हलाल ही समझिये क्योंकि कुरान की—मा ख़लक़्तुल् जिन्न वल् उन्स इल्ला लियाबिदून—हम ने जिन्नो और मनुष्यो को इबादत के लिये ही पैदा किया है। इस अयत के अनुसार आप इसी लिये पैदा किये गए है। और शराब के पीने से खुदा और

मनुष्य दोनों के उद्देश्य पूरे होते हैं ? लाहौल वला कु़व्वत ! खु़दा उन लोगों को दण्ड दे जिन्होंने अपने पलाव कुर्मे उड़ाने और उन्मार्गगामी ख़लीफ़ों की खु़शामद में ऐसी २ हदीसें बना डालीं जिनसे रसूलल्लाह का ठट्ठा और इस्लाम की निन्दा होती है।

क्या मुसलमानों की बुद्धि यह मानती है कि रसूलल्लाह ने शराब पी होगी या इमाम आअज़म ने शराबको हलाल बताया होगा ? सरासर झूंठा दोष ! कई हदीसोंसे सिद्ध है कि रसूल के समय में शराब पीने वालों को जूता, लकड़ी और घूंसा मुक्का से पीटा जाता था। ऐसी अवस्था में बुद्धि स्वीकार नहीं करती कि जो व्यक्ति शराब पीने वालों को दण्ड देता हो वह स्वयं शराब पीता हो। बिलकुल झूंठ ! उचित तो यह है कि ऐसे सारे पुलन्दे को दियासलाई दिखाई जावे।

आक्षेप नं---२५

रसूलने काफ़िरके जनाज़ेकी नमाज़ पढ़ी और ह० उमर ने उनको रोका

"इब्ने उमर ने कहा कि जब अब्दुल्लाह इब्ने अबी (जोकि मुनाफ़िक़ था) मर गया तो उस का बेटा हज़रत के पास आया और कहने लगा कि आप अपना कुरता प्रदान करें ताकि मैं अपने पिता को उसी का कफ़न दूं, रसूल ने यह सुन कर अपना कुरता दे दिया। जब जनाज़ह तैयार हो गया तो अब्दुल्लाह ने फिर निवेदन किया कि रसूलल्लाह, आप जनाज़ह की नमाज़ पढ़ दीजिये ! बस, हज़रत ने उठकर नमाज़ पढ़ाना आरम्भ कर दी इतनेमें हज़रत उमर ने रसूल का कपड़ा घसीटा और कहा कि आप इस

(मुनाफ़िक़--बेईमान) पर नमाज़ पढ़ते हैं! खु़दा ने तो आप को ऐसे लोगों के जनाज़े की नमाज़ पढ़ने से मना किया हुआ है। तब रसूल ने यह कहा कि खु़दा ने मुझे मना नहीं किया किन्तु यह (अधिकार दिया है कि चाहूं तो पढ़ूं और ना चाहूं तो ना पढ़ूं), अन्त में रसूल ने इब्ने अबी के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और ह० उमर का पक्ष समर्थन करने में यह आयत उतरी कि-"लातसिल् अला अहदिन् मिन्हुम् मात अबद ाअला क़ब्रही-अर्थात् ऐसे लोगों की नमाज़ न पढ़ बल्कि वह मर जायें तो उनकी कबर पर भी मत खड़ा हो। इत्यादि" बुखारी किताबु-त्तफ़सीर। बाब क़ौल अस्तग़फ़िर्लहुम् औलातस्तग़फ़िरलहुम्।

यह हदीस, बुखारी की किताबुल्लिबास बाब लबसुल् क़मीस में भी है और उसमें भी 'उमर उठा और रसूल का कपड़ा खींचा, यह वाक्य पाया जाता है। अब हम मुसलमानों से पूछते हैं कि क्या यह बात बुद्धि में आ सकती है कि जिस राजा का शासन बड़े अच्छे नियमों से चल रहा हो और प्रत्येक अपराधी को उसके किये का दण्ड मिलता हो उस का एक छोटा सा सेवक अपने महाराज को कपड़े से पकड़ कर घसीटे और वह इस ढीठ को किसी प्रकार का दण्ड न दे। अथवा जो रसूल को सच्चा रसूल मानता हो वह उसका ऐसा अपमान करे। हमारे विचार में तो इसमें रसूलल्लाह की निन्दा और ह० उमर का ईमानदार न होना सिद्ध होता है। खुदा बचाये! वास्तव में यह हदीस ह० उमर के विषय में बड़ा भारी आक्षेप है इसलिए निकाल डालने के योग्य है।

विचार का स्थान है कि यह कैसा रसूल है कि जो खुदा का हुक्म भी भूल जाता है और जो कोई याद भी कराये तो

मानता नहीं। इस पर फिर यह और आश्चर्य कि पैग़म्बर के विरुद्ध एक साधारण व्यक्ति की इच्छानुसार कुरान की आयतें उतरती हैं। इसका तो यह तात्पर्य हुआ कि खुदा एक सामान्य मनुष्य से रसूल को लज्जित कराता है। खुदा भी कैसा मूर्ख है कि एक निर्बुद्धि मतिहीन व्यक्ति को बड़े बड़े विद्वानों पर शासक और गुरु बनाता है। यह हदीसें नहीं पागलों की बकवास हैं।

आक्षेप नं० २६

सहाबह रसूल की खिल्ली उड़ाया करते थे।

"ज़ैद बिन ख़ालिद जेहनी ने कहा कि एक आदमी (अमीर या बलाल या जारूद) ने गिरी हुई चीज़ के विषय में पूछा तो रसूल ने कहा कि उसकी थैली या बर्तन पहचान रखना चाहिये और एक वर्ष तक लोगों से पूछता रह (कि किसी की कोई चीज़ गिरी तो नहीं) उसके बाद उस चीज़ को अपने काम में लावो और यदि एक वर्ष के बाद भी उस चीज़ का स्वामी आ जाये तो तुम उसको उसकी चीज़ वापिस दे दो। प्रश्नकर्ता ने कहा कि यदि भूला भटका ऊँट मिल जावे तो? यह सुनकर रसूल को इतना क्रोध आया कि उनका मुँह मारे क्रोध के लाल हो गया०। इत्यादि।" बुख़ारी किताबुल् इल्म बाबुल् ग़ज़ब फ़िल् मुवअज़्तिव०।

ग़ज़ब खु़दा का! सहाबह रसूल से मज़ाक करें। बड़ा भारी पाप, क्योंकि रसूलल्लाह की वह शान न थी कि एक बार कुछ मित्र और अनुयायी लोग तथा कअब बिन मालिक तबौक की लड़ाई में सम्मिलित नहीं हुये तो रसूलल्लाह ने उनपर बड़ा क्रोध किया और हुक्म दिया कि कोई उन लोगों से बात न करे। परिणाम यह हुआ कि ५१ दिन तक उन॰ किसी इष्ट मित्र और बन्धु बान्धव तथा स्त्री तक ने उनसे बात नहीं की। जब ये दुःखी लोग अपने क्लेशों को बन्धु जनों से वर्णन करते तो कुछ उत्तर न मिलता। हज़रत अबू आलिया ने तीन दिन तक अपने आप को नबी की मस्जिद के खम्बों के साथ बाँधे रक्खा। जब खु़दा ने अपराध क्षमा करने के विषय में आयत भेजी तो अपने आप को स्वतन्त्र किया और बड़ी प्रसन्नता से बहुत सा दान भी किया (देखो बुखारी)। इस लिए जिस शासक का केवल पार्थिव सम्पत्ति और जायदाद पर ही नहीं अपितु हृदय और मस्तिष्क पर भी शासन हो, उस का आमने सामने मुंह पर कौन अपमान कर सकता है और किसकी मजाल है कि उसकी खिल्ली उड़ावे। अतएव यह हदीस नहीं बल्कि ऊंट का पाद—गन्दी हवा है। इसे बाहर फेंकना चाहिये!

"अबू मूसा अश्अरी ने कहा कि—लोगों ने रसूलल्लाह से ऐसे ऐसे गन्दे प्रश्न किए कि रसूल को क्रोध आ गया और

कहा कि पूछो जो पूछना है! पूछते क्यों नहीं हो! पूछो जो पूछना चाहते हो! इतने में एक आदमी ने पूछा कि या रसूलल्लाह! बताइये मेरे पिता का क्या नाम है? उत्तर दिया हज़ाफ़ह। दूसरे ने पूछा मेरा पिता कौन है? रसूल ने कहा शैबह का ग़ुलाम। इतने में ह० उमर ने देखा कि रसूलल्लाह का मुखारविन्द मारे क्रोध के लाल हो रहा है। बस, ह० उमर ने कहा कि हम अल्लाह के द्वार पर तोबह (पश्चात्ताप) करते हैं अर्थात् आप हमें क्षमा करें, इत्यादि" बुख़ारी किताबुल् इल्म, बाबुल् ग़ज़ब वल् मुआज़।

"अनस बिन मालिक ने कहा कि जब रसूलल्लाह आये तो हज़ाफ़ह का पुत्र अब्दुल्लाह खड़ा हुआ और पूछने लगा कि मेरा पिता कौन है? हज़रत ने कहा हज़ाफ़ह। फिर बार बार हज़रत कहने लगे पूछो मुझसे, पूछो! पूछो मुझ से पूछो! अन्त मे ह० उमर ने रसूल को क्रोधातुर देखकर घुटने टेक लिए और नम्रता से बोले कि हम अल्लाह से प्रसन्न हैं, इस्लाम को धर्म मानते हैं और मुहम्मद को नबी समझते हैं।" बुख़ारी किताबुल् इल्म, बाब मन् बरक अला रुकबतेही।

"हज़रत अनस ने कहा कि सहाबह ने इतने अधिक अनर्गल प्रश्न किये कि हज़रत क्रोध से लाल हो उठे और मम्बर (मञ्च) पर चढ़कर उपदेश में यह कहा कि तुम कोई बात ऐसी नहीं पूछोगे जिसका उत्तर मैं न दे सकूं। यह सुनकर

प्रश्न करने वाले सहाबह अपनी २ चादर में बनोवटी रोना रोने लगे। वहां एक व्यक्ति ऐसा भी था जिसको लोग अज्ञात वंश का पुत्र कह कर पुकारा करते थे। बस, वह व्यक्ति उठा और कहने लगा कि या रसूलल्लाह ! बताइये मेरे पिता का क्या नाम है ! फिर क्या था रसूल को क्रोध आ गया। तब ह० उमर खड़े हुए और क्षमा मांगी और यह कहा कि भविष्य में हम लोग कदापि ऐसा न करेंगे।" बुख़ारी किताबुल् फ़ितन, बाबुत्तऊज़ो मिनल् फ़ितने।

सहीह मुस्लिम में लिखा है कि :—

"अबी क़तादह ने कहा कि एक आदमी आया और रसूल से कहने लगा कि तूने रोज़ा क्यों रक्खा। यह सुनकर रसूल बुरी तरह बिगड़े। तब हज़रत उमर ने कहा कि हमें क्षमा करो भविष्य में ऐसा नहीं होगा।" अश्अतुल्लिम्आत (हदोस मिश्कात की व्याख्या) बाबुस्सौम्, फ़सल १।

" हज़रत अन्सने कहा कि रसूल ने ऐसा उत्तम उपदेश दिया कि हमने पहिले कभी न सुना था। हज़रत ने अपने उपदेश में यह भी कहा कि जो बातें मुझे मालूम हैं यदि वह तुम को भी मालूम हो जावें तो तुम हंसोगे थोड़ा लेकिन रोवोगे अधिक। यह सुनकर सहाबह अपना २ मुंह ढांक कर टीं, टीं कर बनावटी रोना रोने लगे। अन्दर ही अन्दर हंसते भी जाते थे। इत्यादि" बुख़ारी-किताबुत्तफ़सीर, बाब क़ौलहू लातस्अलू०

इसी के अनुसार मौ० नूरुल्हक्क़ ने अपनी शरह बुख़ारी में लिखा है कि—

"एक आदमी ने हज़रत से कहा-मेरा पिता कौन है। बोले, अमुक नाम वाला! दूसरे ने पूछा मैं मरने के बाद कहां जाऊंगा, उत्तर दिया दोज़ख़ (नरक) में। यह सुन ह० उमर उठे और क्षमा मांगीं और कहा कि हम खुदा पर खु.श हैं इस्लाम को धर्म मानते हैं और मुहम्मद को नबी जानते हैं तथा कुरान को इमाम समझते हैं। इत्यादि"

देखिये, हदीस का कैसा अच्छा समर्थन हो रहा है और कैसे परिश्रमसे दुर्लभ हदीसों का संग्रह किया जा रहा हैं और इनके द्वारा रसूल और सहाबह के उत्तमोत्तम गुणों की कैसे रक्षा की जा रही है, रसूलल्लाह को अपमानित और सहाबह को दूषित बल्कि इस्लाम से निकाल बाहर किया जा रहा है और विचित्रता यह है कि क्षमा मांगने वाले सब हदीसों में हज़रत उमर ही हैं। ईमान से बोलो, क्या रसूलल्लाह ऐसे ही थे जैसाकि इन उपरोक्त हदीसों से सिद्ध हो रहा है? क्या हज़रत उमर का रसूल के साथ ऐसा ही बर्ताव था! शरम! शरम! शरम! और यदि ये हदीसें ठीक और सच्ची हैं तो शीया लोगों का हज़रत उमर से घृणा और शत्रुता करना सत्य ही है फिर उन (शीया लोगों) को काफ़िर कहने और मानने वाले आप कौन हैं? देखो कुरान में लिखा है कि—

"व्लक़दिस्तह्ज़िग बिरुसुलिन् मिन् क़ब्लिक" अर्थात् हे मुहम्मद! यह निश्चय से ठीक है कि तुम से पहिले रसूलो की हंसी हुई थी और ठट्ठा उड़ाया गया था।" क़ुरान सूरत अनआम रुकूअ १।

"व मा यातीहिम् मिन् रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन—अर्थात् हे मुहम्मद! एक रसूल भी उनके पास नहीं गया जिसकी उन लोगों ने हंसी न उड़ाई हो।" क़ुरान सूरत हजर-रुकूअ १।

तो अब बताओ, कि पैगम्बरो की हंसी कौन उड़ाते थे-मुसलमान या काफ़िर? यदि काफ़िर लोग ही रसूलों की हंसी उड़ाते थे तो आप के मत पर कोई आक्षेप नहीं परन्तु यदि सहाबह हंसी उड़ाने वाले थे तो बोलो उनको किस शब्द से याद करोगे और जिन हदीस लेखकों ने ऐसी हदीसों का प्रचार किया है उनका क्या कहोगे-राफ़ज़ी या काफ़िर! अधिक क्या इस प्रकार की हदीसों का प्रचार करने वालों के लिये जो भी कहते हो स्पष्टतया प्रकट कर दो, परन्तु ख़ुदा की क़सम, आप कभी ऐसा नहीं कर सकेंगे। इसलिए यही ठीक है कि इस तूफ़ान को अपनी पुस्तकों से निकाल बाहिर किया जावे। यदि ऐसा भी नहीं करोगे तो इस का यह मतलब होगा कि इस विषय में शीआ लोग जो कुछ सहाबह (ह० उमर आदि) के लिए भला बुरा कहते हैं वह अक्षरशः सत्य है। उन (शीया)

का कथन आप की प्रामाणिक पुस्तकों के आधार पर है इस लिये आपको शीया के हाथ पर तोबह करनी और क्षमा माँगनी चाहिए।

रसूलल्लाह की बड़ाई पर आलोचना

यह तो प्रत्यक्ष सिद्ध है कि रसूलल्लाह किसी समय में भी भूखे नंगे न थे बल्कि वंश परम्परा से धन सम्पद् के स्वामी थे और रसूल बन चुकने के बाद तो मुहाजिरों (शहर छोड़ कर चले जाने वालों) को उनकी इच्छानुसार घर बार और खानपान के सामान आदि सब कुछ देते थे जैसा कि बुखारी की किताबुल् मगाज़ी बाब गुज़्वह खै़बर में लिखा है कि—जब रसूलल्लाह ने हिजरत की, अर्थात् शहर छोड़ा तो वहां भी सहाबह और दूसरे अनुयायी साथियों को खाना दाना मिलता था और किसी प्रकार की कमी नहीं थी" यही बात कु़रान में भी पाई जाती है, जैसा कि सूरत अहज़ाब के ७ वें रुकूअ़ में लिखा है कि—

"या अय्युहल्लज़ीन आमनू ला तद्खुलू बुयूतन्नबिय्यि इल्ला अंयूज़न लकुम् इला तआमिन् गै़र नाज़िरीन।" अर्थात् हे ईमान वालो (मुसलमानों)! पैग़म्बर के घरों में बिना आज्ञा के मत जावो। नाही हंडिया घूरने के लिये जा बैठो। हां, जब बुलायें तो जावो और खाना खाते ही वहां से चल दो

और वहाँ बैठे बातें न बनाया करो।" कु़रान सूरत अहज़ाब रुकूअ ७।

ये लोग तो वह हैं जो सदा भोजन करते थे परन्तु इन से भिन्न कई एक दूर देशों और अन्य जातियों के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी आते हो रहते थे और बहुत से गरीबों तथा अपाहजों को भी वृत्ति सहित खाना मिला करता था परन्तु जब बड़ी २ उद्दण्ड जातियें गुलाम-दास बनने लगीं तो उस समय की महिमा का क्या ठिकाना। पैलिस्टाईन और शाम देश के कई प्रान्त तथा यमन का प्रधान भाग और हजाज़ का पूरा देश हज़रत के वैभव से जीता जा चुका था, बस आपकी दृष्टि जिस पर पड़ी उसकी कई कुलें तर गईं—सोने से लद गया और जिसपर रुष्ट हो गये उसका दीन दुनियां में कहीं ठिकाना न रहा। हज़रत इब्ने अब्बास इसी विस्तृत राज्य को रोते थे।

हिजरत के दूसरे ही वर्ष बाद जब कि इस्लामी राज्य की आधार शिला भी न धरी गई थी बद्र की युद्ध समाप्ति पर अल् सफ़रा के स्थान में लूट का माल बाँटा गया और उसी जगह हज़रत अली को आज्ञा दी गई कि 'नज़र बिन हारिस' और 'अक़्बह बिन् अबीमुईत' (ह० उमर के श्वसुर) को क़त्ल करें। जिसपर उन लोगों का तत्काल बध किया गया। (मोस्टर ज़ाकिरहुसैन कृत) तारीखे़ इस्लाम जिल्द २।

सन् ३५ हिजरी मे रसूल की आज्ञा से कअब बिन अश्रफ़ और राफ़ अ़ बिन हकीक़ को क़त्ल किया गया। यह दोनो खै़बर के इर्द गिर्द के रहने वाले थे। इनका अपराध यह था कि ये लोगों को रसूल के विरुद्ध भड़काते रहते थे और काफ़िरों को युद्ध करने के लिए उद्यत किया करते थे। इसी प्रकार जो लोग अरब देश की प्रथानुसार अपनी माता से निकाह (विवाह) कर लेते थे अथवा व्यभिचार या चोरी और शराब पीते थे उनको भी इस्लाम के कानून के अनुसार दण्ड मिलता था। दण्ड देते समय चाहे कोई रुस्तम खां हो अथवा उससे भी बड़ा, किसी का पक्ष नहीं किया जाता था। इस विषय मे एक विशेष वृत्तान्त हज़रत उमर के सम्बन्ध मे लिखा जाता है जिससे मालूम हो जावेगा कि रसूल का ठट्ठा उड़ाने वाली हदीसे कहां तक सत्य है और रसूलल्लाह का प्रभाव और वैभव कैसा अद्भुत था तथा ह० उमर किस प्रकार के थे इत्यादि। जैसा कि लिखा है कि—

‘ शराब के विषय मे खुदा ने तीन आयतें भेजीं। पहली आयत उतरने के बाद कुछ सहाबह - रसूल का मान्य मित्र मण्डल शराब पीता रहा और कई एक ने छोड़ दी। एक व्यक्ति ने शराब पीकर नमाज़ में पागलपन का बकवास किया जिस पर फिर आयत आई कि, हे मुसलमानो! जब तुम नशे की हालत में हो तो नमाज़ मे न आया करो। इस पर भी कई एक (सहाबह पीते ही रहे बल्कि एक दिन हज़रत उमर ने शराब

पी और ऊंट की हड्डी से ह० अब्दुर्रहमान बिन औफ़ का सिर फोड़ा इसके बाद उन कुरैशों का जो कि मुसलमानों के हाथों मारे गये थे नौहा (मृत्यु का रोना) रोने लगे। यह नौहा वह प्रसिद्ध गीत था जो अस्वद बिन याफ़र (काफ़िर) ने अपने साथियों की मृत्यु पर बनाया था जो कि बद्र की लड़ाई में मारे गये थे। नौहा यह है—

"बद्र के क़लीब नामी कूए में, कितने प्रतिष्ठित अरबी नव युवक गिराये गये ? अरे इब्ने कबशह (मुहम्मद) ! हम को क्या डराता है कि-हम दोबारा जीवित किये जावेंगे ? भला जब शरीर मुरदा हो जावेगा और खोपड़ियां चूरा चूरा हो जावेंगी तब वह जीवित कैसे होंगीं ? क्या तेरे में सामर्थ्य है कि हमारी मृत्यु को रोक दे ? क्या तुझ में यह शक्ति है कि जब हमारी हड्डियां गल सड़ जावें तो तू उनको जीवित करदे ?

अरे ! कोई है जो खु़दा तक यह पहुंचा दे कि हम रमज़ान के रोजे छोड़ते हैं। उ ा, कह दे खु़दा से कि हमारा भोजन बन्द कर दे !"

जब हज़रत उमर के ऐसा बोलने और शराब पीने की सूचना रसूल को मिली तो आप अत्यन्त क्रोधित हो महल से बाहिर निकले। उस समय उनकी चादर भूमि पर लटकती थी और आप उसको खींचते जाते थे और चलते जाते थे। जब

वहां पहुंचे तो रसूल ने उस चीज़ को उठा लिया जो हाथ में थी और उसी से ह० उमर को मारा। तब उमर बोले कि मैं खु.दा और रसूल के क्रोध से डरता हूं और शरण में आता हूं। उस समय तीसरी आयत उतरी और ह० उमर ने कहा कि हम बाज़ आये अर्थात् भविष्य में ऐसा कभी न करेंगे० इत्यादि।" मुस्ततरफ़ जिल्द २, बाब ७४, सफ़ा २०५ (छापा मैमनीया मिश्र)

देखा आपने कि रसूलल्लाह ने इस्लामी धर्मशास्त्र के विरुद्ध आचरण करने वाले अपने पूज्य और माननीय श्वसुर अर्थात् हज़रत उमर को जो कि जाति के माननीय नेता थे ठोक ही दिया और उमर जैसे मान्य व्यक्ति को क्षमा मांगनी पड़ी। वास्तव में रसूल और मुसलमानों का दिगन्तव्यापी प्रभाव था कि कोई काफ़िर अपनी कविता में रसूल के निन्दापरक शब्दों को नहीं लिख सकता था। तब किसी की क्या मजाल थी कि रसूलल्लाह की खिल्ली उड़ाता? इस लिये विश्वास करना चाहिये कि इन यहूदी और ईसाइयों ने तथा काफ़िर कुरैशों की सन्तानों ने अपने द्वेष और शत्रुता की भड़ास निकालने के लिए उपरोक्त किस्से कहानी और हदीसों की रचना रची जो कि बुखारी से उद्धृत की गई है। इन सब का प्रयोजन यह था कि बनी हातिम की दुर्गति हो। इसलिए इन सभी को निकाल बाहर कीजिये।

आक्षेप नं० २८

रसूल बनने से पहले हज़रत काफ़िर थे ।

"बहुत से विद्वान् जान चुके हैं कि मुहम्मद जब तक रसूल नहीं बने थे तबतक काफ़िर थे, फिर अल्लाह ने हिदायत-शिक्षा दी तो नबी बनाया। इमाम कलबीने कहा हैकि--'वजदकज़ाल्लन् अर्थात् पाया तुझको अत्यन्त कुमार्गगामी, इस क़ुरान के वचन का तात्पर्य यहहै कि हज़रत गुमराह अर्थात् कुपथगामी (काफ़िर) थे इसीलिए खु़दा ने तौहीद – खु़दा के एक होने की शिक्षा दी। इमाम सद्दी कहते हैं कि—हज़रत मुहम्मद ४० वर्ष की आयु तक कुरैश जाति के मत पर रहे अर्थात् काफ़िर रहे० इत्यादि।" तफ़सीर कबीर जिल्द ८। सूरत वल्ज़ुहा सफ़ा ४२५। (छापा मिश्र)

"वजदक ज़ाल्लन्० इस वाक्यका मतलब यह है कि खु़दा ने फ़र्माया कि हे पैग़म्बर (मुहम्मद) हमने तुझे काफ़िर पाया क्योंकि तू निश्चय से काफ़िर था। यदि कोई ऐसा कहे तो उसका उत्तर यह है कि पैग़म्बर का गुमराह या काफ़िर होना नबी बनने से पहिले का है जिसपर आक्षेप नहीं हो सकता।" शरह मवाक़फ़ (छापा नवल किशोर) सफ़ा ६८६।

देखिये, खु़दा का ऐसा प्रबन्ध कि अभी आदम की सन्तान उत्पन्न भी न हुई थी कि उसने आदम को पैग़म्बर

बना कर भेज दिया और इन मुसलमानों का यह सिद्धांत कि अपनेमें सैकड़ों काफ़िर होने पर भी रसूलको पैग़म्बर नहीं होने देते बल्कि चालीस वर्ष की आयु तक उस ख़ुदा तक पहुंचे हुए को कुफ़्र और शिर्क अर्थात् पाप और नास्तिकताकी कैद-कोठरीमें कैद रखना चाहते हैं,जो कि उनकी प्रामाणिक पुस्तकों के भी विरुद्ध है इस लिये इस झूंठी बात को भी निकाल बाहिर कीजिये।

तफ़सीर कबीर और 'शरह मवाक़फ़, इत्यादि की ऊंट पटांग बातें विश्वास योग्य नहीं हैं और ना ही उनको सत्य समझना चाहिए, क्योंकि ज़ाल के अर्थ अरबी कोश में २० से कम नहीं है जैसा कि 'ज़ालु का एक अर्थ ' गुप्त रक्षित भी है अरबोंकी बोल चालमें 'ज़ल्लल् माओ फ़िलल्बने-दूधमें पानी छिप गया,बस इसी युक्ति से आयत- वजदक ज़ाल्लन् फ़हदा,का अर्थ यह हुआ कि हमने तुम्हारी भलाइयों और बड़ाइयों को छुपा हुआ पाया और लोगोंको उसका मार्ग दिखाया अर्थात् तुम्हारी बड़ाई की बातें प्रकाशित कर दी और लोग तुम्हारी तरफ़ आ गये। कहां तो पैग़म्बरकी आभ्यन्तरिक शक्तियों का गुप्त होना और कहां पैग़म्बरको गुमराह या काफ़िर कहना!(ख़ुदा बचाये) बड़ाई की आयत को बुराई की क्यों समझा गया, इसका उत्तर केवल यही हैकि-मूर्खता और शत्रुता से ! या जैसा उनके बड़ों बूढ़ों ने समझाया उसी को सच समझ बैठे।

यदि इमाम सद्दी और कलबी के विचारानुसार पैग़म्बर को चालीस साल की आयु तक कुफ़्र और शिर्क के गड्ढे में फंसा हुआ मान लिया जावे तो क्या ऐसा आदमी इस धूमधाम से अनीश्वर पूजा को छुड़ा सकता है? क्या कोई कुमार्ग गामी धर्मशिक्षा दे तो वह ऐसी प्रभावशाली हो सकती है? शेख़ सादी ने क्या ही अच्छा कहा है कि 'ऐ ख़ुश्तन गुमस्त कि राहबरी कुनद' अर्थात् जो स्वयं पतित है या भूला भटका है वह दूसरों को कैसे सुधार सकता या सीधा मार्ग बता सकता है--कदापि नहीं। कदापि नहीं। वास्तव में जिन लोगों ने अरबी की विद्वत्ता के बल पर 'ज़ाल, का अर्थ गुमराह या काफ़िर किया है वह स्वयं गुमराह और काफ़िर हैं बल्कि पैग़म्बर के शत्रु हैं। प्रायः मुसलमानों ने इस पर विचार नहीं किया कि यदि अरबी भाषा का ज्ञान लेना क़ुरान के समझ सकने के लिये पर्याप्त होता तो पैग़म्बर इस नियम को कभी न बनाते कि शिष्य परम्परा से युक्त होकर क़ुरान को सीखो क्योंकि सहाबह में से कुछ एक को छोड़ कर शेष सभी अरब के रहने वाले थे परन्तु 'हदीसे तलक़ीन' ने सिद्ध कर दिया कि अरबी का जानना क़ुरान के समझने के लिये पर्याप्त नहीं है विशेष कर उस अवस्था में जब तक कि क़ुरान के अर्थ और व्याख्यायें रसूल के शिष्यत्व से प्राप्त हुई हों! अधिक क्या, रसूलल्लाह के बाद मुसलमानों के इस्लामी विचार इतने ख़राब

हो गये कि सूरतुज़्ज़ुहा की प्रशंसापरक आयत को निन्दा परक समझ लिया गया।

नोट—इस स्थान पर नबी की पारिवारिक निर्दोषता पर विचार करना आवश्यक नहीं अन्यथा बहुतसी आयतों विशेष कर सूरत अन्आम के १० वें रुकूअ़ से स्पष्ट सिद्ध होता है कि जब साधारण नबी और वली लोगों के भाई बन्धु तथा माता पिता निर्दोष और धर्मात्मा कहलाते हैं तो हमारे पैग़म्बर की जिनको कि सब पैग़म्बरों से उत्तम माना जाता है सन्तान अवश्य निर्दोष होनी चाहिए अन्यथा पैग़म्बरों को सब रसूलों और नबियों से घटिया मानना होगा। दूसरी बात यह है कि जो २ कष्ट और दुःख हज़रत आदम्, नूह, ख़लील, याक़ूब, यूसुफ़ अय्यूब, यूनिस, ज़िकर्यह, यह्या और ईसा ने उठाये है उनमें से एक भी वैसा कष्ट रसूलल्लाह पर नहीं आया फिर रसूलों में सब से उत्तम होने का क्या मतलब ? परन्तु पैग़म्बर की सन्तान पैग़म्बर के समान थी, वह सब कष्ट जैसे दूसरे नबियों पर आये थे वैसे ही सब क्लेशों का संग्रह करबला के शहीद और करबला के बीमार पर आ गया और इन दोनों ने ईश्वर की इच्छा से मुंह न मोड़ा, बस-हुसैनो मिन्नी व आना मिनल् हुसैने—अर्थात् हुसैन मुझ से और मैं हुसैन से सम्बद्ध हूं – इस हदीस का यही भाव और यही उद्देश्य था।

आक्षेप नं० २६

रसूल मुर्तिद(काफ़िर) हो गये थे।

" इब्ने अब्बास और मुहम्मद बिन कअ्ब अल् क़रज़ी आदि भाष्यकारों ने लिखा है कि 'वमा अर्सल्ना मिन् क़ब्लक मिन् रसूलिन् वला नबिय्यन् इल्ला इज़ा तमन्ना अल् क़शैतानो फ़ी उम्नियतिही०(१)यह आयत उस समय उतरी जिस समय रसूलल्लाह ने जान लिया कि कुरैश लोग मुझ से बिगड़े हुए हैं और शत्रुता के कारण परे परे रहते हैं। हज़रत की इच्छा थी कि कुरैश लोग मुसलमान हो जावें। बस एक दिन कुरैशों की सभा में ही सूरतुन्नजम उतरी और हज़रत उसको पढ़ने लगे, यहाँ तक कि यह आयत आ गई-अफ़र ऐतुमुल्लात वल् उज़्ज़ा व मनातस्सालिसतुल् उख़्रा (२) यह

---

(१)हे मुहम्मद ! तुझसे पहिले कोई नबी और रसूल ऐसा नहीं हुआ जिसके विचारो मे शैतान ने मिलावट न कर दी हो। क़ुरान सूरतुल् हज्ज रुकूअ ७।

(२) क्या तुम देखते नहीं हो लात व उज़्ज़ा को और तीसरी देवी मनात को ? कुरान सूरतुन्नजम रूकूअ् १। लात उज़्ज़ा और मनात ये तीन बड़ी भारी मूर्तियें थीं जिनको कुरैश लोग पूजते थे। (अनुवादक

पढ़ने ही आप की ज़बान पर शैतान ने यह वाक्य रख दिए कि—तिलकल् इग़्ज़ा यन्तुल् अला व इन्न शफ़ाअतुहुन्न लितुर्जहा—अर्थात् यह महापुरुषों की मूर्तियां पूजा के योग्य हैं और इनसे शफ़ाअत की आशा रखनी चाहिये (इन मूर्तियों में इच्छा पूर्ण करने की शक्ति है) ।" मुआलिमुत्तन्ज़ील सूरतुल्-हज्ज, रुकूअ् ७ ।

शोक है कि पं० लेखराम आर्यमुसाफ़िर ने 'तकज़ीबे बुराहीने अहमदियह, की दूसरी जिल्द में अहले सुन्नत की बड़ी २ तफ़सीरों में से खोजकर यह भयङ्कर किस्सा उद्धृत किया है जिससे हरएक मुसल्मान को लज्जित होना पड़ता है ।

ईमान से बोलो, क्या शिर्क—अनीश्वर पूजा से बढ़कर भी इस्लाम में कोई पाप है ? क्या तुम्हारे पैग़म्बर से रसूल बन जाने पर भी शिर्क जैसा अपराध हो जाता था ? क्या रसूलल्लाह पर शैतान का वशित्व प्राप्त हो जाता था और वह भी ऐसा कि जैसा शैतान चाहे वैसा ही रसूल से कहलवाले ? तब तो इस का मतलब यह हुआ कि शैतान बड़ा बलवान् था और रसूलल्लाह पर उसका खूब प्रभाव था । परिणाम यह हुआ कि अल्लाह ने जो सूरतुल् अम्बिया में यह कहा है कि—अन्न इबादी लैस लक अलैहिम् सुल्तानुन् - अर्थात् हे शैतान ! तू

मेरे विशेष भक्त पर अधिकार न कर सकेगा - इसके अनुसार मुहम्मद रसूलल्लाह खु.दा के भक्त सिद्ध नहीं होते क्योंकि उन पर शैतान ने अधिकार जमा लिया था। खु.दा बचाये ! सार यह निकला कि रसूल खु.दा के भेजे हुये न थे तथा इस स्थान के अतिरिक्त और न जाने किस किस स्थान पर शैतान ने मिलावट की हो और वह मिलावट हटाई गई है या नहीं—यह भी सोचने योग्य बात है। कृपया इस गड़बड़ को हटाइये क्योंकि इसके सत्य होने से पैगम्बर और कु.रान पर विश्वास नहीं रह सकता।

आक्षेप नं० ३०

खुदा का हुकुम पहुंचाने में रसूल ने भूल की।

"तुम उस आदमी की बात कभी मत सुनो जो यह कहता है कि नबी या रसूल लोग खुदा के हुकम पहुंचाने में भूल नहीं कर सकते। क्योंकि उनका कहना तो सचमुच "शैतान का वचन" है। राफ़ज़ी और सुन्नी जो कि बुराइयों को उखेड़ने वाले हैं (खु.दा उन की उन्नति करे) यह लोग नबियों के विषय में हुकम पहुंचाने में भूल कर जाना ठीक मानते हैं। जैसा कि रसूल-

ल्लाह ने बद्र की लड़ाई में कैदियों के विषय में भूलें की थीं (उन्हें ख़ुदा मुआफ़ करे)

शरह मुसल्लिमुस्सबूत - अस्ल १ ।

बाबुन्नस्ख़ - सफ़ा ३५६ ।

(छापा नवलकिशोर)

देखिये, यह नई तरह के बुराई के खण्डनकर्त्ता हैं जिनपर विचित्र अभिमान किसी नये कारख़ाने का ढला हुआ है। अर्थात्—जो सम्प्रदाय रसूलल्लाह को निर्भ्रान्त (भूल न करने वाला) मानता है वह बुरा और धिक्कार के योग्य है और आप जो बद्र के मरे हुये काफ़िरों के लिये रसूल के सिर से पगड़ी घसीट रहे हैं सो आप निरे सत्यवादी और रसूल भक्त यही नहीं बल्कि बुराई के एक मात्र खण्डनकर्त्ता भी हैं, यह तो वही बात हुई कि चुपड़ी और दो दो ! या अल्लाह ! क्या उलटी गंगा बहाई ! स्पष्ट है कि जब रसूलल्लाह ख़ुदा के हुक्म पहुंचाने में भूलें करते थे तो भ्रान्त ही थे और यह सर्वसम्मत है कि जो भ्रान्त है — भूलें करने वाला है वह निर्दोष नहीं हो सकता और जो निर्दोष नहीं वह अनुकरणीय नहीं और जो अनुकरण करने योग्य नहीं वह

मूर्खता, अज्ञान और कुफ्र आदि पापों में अवश्य फंसा हुआ है। चलो, .खूब पीछा छूटा – छुट्टी हुई !

इमाम सड़ी और इमाम कलवी ने तो रसूल को जन्म से लेकर ४० वर्ष की अवस्था तक (अहले सुन्नत के सिद्धान्त के विरुद्ध) कुफ्र और शिर्क क जेलखाने में क़ैद रक्खा था। परन्तु उनके उत्तराधिकारियों ने रसूल बन चुकने के बाद भी कुफ्र और शिर्क में टिकाये रक्खा। वाह भई, रसूलल्लाह के साथ क्या अच्छा सम्बन्ध जोड़ा है ! इसके साथ ही दूसरा परिणाम यह निकला कि जिस खुदा का भेजा हुआ खलीफा (रसूल) अनुकरण के योग्य नहीं वह खुदा भी बेसमझ और बुद्धू है। सुना करते थे कि जवान मुसलमान को मरने के बाद शरियत के झगड़ों से स्वतन्त्रता मिलती है – लीजिये आप को जाते जी ही मिल गई किसी ने कहा है — मेरे घर नहीं मुझे किसी का डर नहीं।

मौलवी 'अब्दुल् अली बहरुल् उलूम' ने बड़ा उपकार किया कि ह० आदम की उत्पत्ति से लेकर जो बात आज तक छिपी हुई थी वह प्रकट करदी अर्थात् रसूल और खुदा की दासता से स्वतन्त्र तथा निरपेक्ष कर दिया। अब क्या है, क्योंकि शरीअत के कष्टों को स्वीकार करने का कारण खु.दा को खु.श

करके बहिश्त में पहुंचाना है। मौ० अब्दुलअली के सिद्धान्त से पैग़म्बर भूलने वाला भुलक्कड़ और ख़ुदा-मूर्ख सिद्ध होता है और यह निश्चित हैं कि भुलक्कड़ और मूर्ख पर विश्वास करके सन्तुष्ट नहीं रहा जा सकता और ना ही उसकी बातों पर विश्वास किया जा सकता है। कृपया इस मिथ्यावाद को निकालिये।

पहली युक्ति—हमारे पैग़म्बर कदापि ऐसे न थे जैसा कि इस प्रकरण के आदि से अब तक की उद्धृत हदीसों और कथाओं से सिद्ध होता है, और यदि ऐसे ही--स्त्री लम्पट, विषय लोलुप, अज्ञानी, बुद्धिहीन तथा भुलक्कड़ ही होते तो उनके शिष्य हजरत अली महान विद्वान् और ख़ुदाई बातों के जानने वाले ज्ञानी न होते जैसा कि ह० अली के इस--सलूनी क़ब्लो अन् तफ़क़दूनी—अर्थात् जो कुछ पूछना हो मेरे मरने से पहिले २ पूछ लो-इस वाक्य से प्रकट है। यह ऐसी प्रतिज्ञा है कि जिसको न तों बड़े से बड़े विद्वान् ने किया, न किसी नबी और रसूल ने और ना ही ख़ुदा के पास बैठने वाले फ़रिश्तों ने ! बस यह सब उच्चतायें रसूल की शिक्षा और उपदेश से ही हज़रत अली को प्राप्त हुई थीं और उनसे उन की सन्तान को प्राप्त हुईं।

इसी प्रकार उन (अली) के शिष्य वर्ग—ह० सुलैमान फ़ारसी, ह० अबूज़र, अम्मार यासर, मक़दाद इब्ने अस्वद, हज़ीफ़ह बिन अलैमान, अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद, अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास, अबू असूद वबेलो, ख़ालिद बिन सईद बिन आस, बरीदा अस्लमी, अबो बिन कअब, हज़ीमह बिन साबित, अबुलमैसम बिन अलतिहान, सहल बिन हनोफ़ तथा अबू अयूब अंसारी और औयुस क़िरनो, आदि २ बड़े करामाती महापुरुष हुए हैं जिनमें से हर एक इस्लाम का सूर्य कहा जाता था, ये सब लोग ह० अली को पहिले तीनों ख़लीफ़ों के शासन काल में अपना नेता और गुरु मानते थे। तब जिस पवित्रात्मा को जागने की अवस्था में शरीर के साथ आकाश गमन (मैराज) और ख़ुदा के पास तक पहुंचना प्राप्त हुआ हो और जिसके शिष्य (अली) के लिये सूर्य को निस्तेज कर दिया गया हो, वही शुद्धान्तःकरण (मुहम्मद) ४० चालीस वर्ष तक काफ़िर रहे, ख़ुदा के हुक्मों को पहुंचाने में भूलें करे अथवा मूर्ख अज्ञानी होकर विषय लम्पट कामी, शराबी और भोग विलास चाहने वाला हो-ऐसा हो नहीं सकता। केवल मिथ्या और दोष है!

दूसरी युक्ति—पूर्वोक्त सभी हदीसों और कथाओं

के झूंठ और बनावटी होने में यह भी एक प्रबल प्रमाण है कि यदि यह हदीसें सच्चा होतीं तो सुन्नियों की तरह शीओं की पुस्तकों मे भी अवश्य पाई जातीं और इमामों ने भी स्वीकार किया होता, क्योंकि घर की बातें घर वाले अधिक जाना करते है परन्तु शोक कि किसी इमाम या शीया विद्वान् ने इन हदीसों को उद्धृत नहीं किया। जिस प्रकार सुन्नी विद्वानोंको पैगम्बर के वृत्तान्त एकत्रित करने का उत्साह रहा है वैसा ही कई एक शीओं ने भी किया है और उसी धुन में आयु व्यतीत कर डाली है, इसी प्रकार तफसीरों, फिक़ह, हदीस, और रिजाल तथा अक़ायद के ग्रन्थों की रचना का समय भी आपके यहांके रचनाकाल से पीछे नहीं है बल्कि कई एक शरीअत के सिद्धांत तो आपके यहां से भी पहिले के हैं और वह आपके शिष्यत्व स्वीकार कर चुकने के बाद पहुंचे जिनके गिनाने का समय औ स्थान इस समय नहीं है,तथा शरई सिद्धांतों की पुस्तकों की संख्या भी आपकी पुस्तकों की अपेक्षा कम नहीं है इसलिये इन सच्ची घटनाओं के आधार पर विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि रसूलल्लाह की निन्दा परक जो हदीसें और कथायें वर्णन की जाती हैं वह सब झूठी और बनावटी है तथा

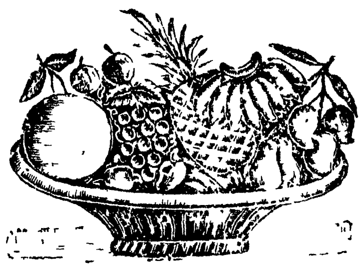
रसूल के शत्रुओं की घड़ी हुई हैं-चाहे वह कैसे ही प्रभावशाली ढंग से लिखी गई हों।

वास्तव में काफ़िर, कुरैशों और कई एक यहूदियों ने इस्लाम में घुसकर अपने २ मन्दिरों और जागीरों के छीने जाने तथा मेले और कुर्बानियों के बन्द कर दिये जाने, घर लूटे जाने और युद्धों में मारे गये सम्बन्धियों का बदला लेने के लिये ऐसी २ हदीसें बनाईं जिनसे रसूलल्लाह के संगी साथियों को खूब बदनाम होना पड़ा तथा खिलाफ़त का विरोध देखकर रसूल की मान प्रतिष्ठा पर खूब हाथ साफ़ किये और जिधर दाव देखा मिट्टी में मिलाने से न हिचकचाये। दूरदर्शी शत्रुओं और उनके पिठ्ठुओं ने पैसे के ज़ोर पर अपनी महिमा पहिले से ही मनवा रक्खी थी। महिमा गाने वाले और इनकी बड़ाईका ढोल पीटने वाले भी उनके क्रीतदास थे। बस, जब दाव लगा अपनी महत्ता की आड़ में काम किया और छिप गये। अज्ञानियों ने उसीको ठीक समझा और इसी प्रकार उनकी सन्तानों ने भी किया। तब सदियों-सैकड़ों वर्षों की बात और कोसों के हाल कौन समझे--किस को झूठ और किस को सच कहे, कौन अन्वेषण का कष्ट उठावे क्योंकि न जज़िया मिलने की आशा न दान मिलने का समय और न लूट का लालच, फिर भला कौन

परिश्रम करके सत्य की खोज करे ? अधिक क्या। जब आशा के सब साधन बन्द हो गये तो रसूलल्लाह का साथ कौन दे और किस बल बूते पर दे ? यदि उनके पक्ष में कहे तो खाये क्या, और रहे कहां ? रसूल के अपमान की कथायें जब पुरानी होकर ईमान का प्रधान अंग बन गईं और उनको आधारशिला बना कर बड़ी २ महल माड़ियें तैयार हो गईं, तब इन ही अनर्थकारी बातों के प्रचार के लिये पाठशालायें स्थापित हुईं और बड़े २ वेतनों पर मौलवी लोग तैयार हो गये। वास्तव में ऐसी सच बोलने की मूर्खता राफ़ज़ी लोगों के सिर ही मंढी रहने दो पिछले जिस पथ पर चल गये उसी पर उनके पीछे २ चले चलो, पाप पुण्य उनकी गर्दन पर, मुर्दा दोज़ख़ में जावे या बहिश्त में—अपने हलवे माँडे से काम रक्खो।

पहला प्रकरण समाप्त हुआ।

———:o:———



दूसरा प्रकरण

रसूल की स्त्रियों पर दोषारोपण

यद्यपि इस प्रकरण में लिखी हुई हदीसें रसूल की स्त्रियों के विषय में हैं परन्तु कई एक रंगीले शौक़ीनों ने इस स्थान पर रसूलल्लाह की ही निन्दा की है इस लिये उनके नमूने पृथक् संग्रह करने उचित प्रतीत हुए जो कि इस प्रकरण में लिखे गये हैं।

संसार की प्रत्येक जाति में यह उत्तम नियम पाया जाता है कि अपने मित्रों और प्रेमी सज्जनों की स्त्रियों की गुप्त बातें और विशेष कर स्त्री-पुरुषों के गुह्य रहस्य तो क्या बल्कि उन स्त्रियों के रूप रंग और सौन्दर्य तथा हावभाव और शृङ्गार को भी ज़बान पर नहीं लाते-और अपने मान्य विद्वानों के स्त्री पुरुष सम्बन्धी गुप्त रहस्यों की ओर तो ध्यान भी नहीं जाने देते। अपने मत प्रवर्तक के गुप्त सम्बन्धों के विषय में तो कहाही क्या जावे परन्तु हमारे कई सुन्नी विद्वान ऐसे प्रतिभा वाले और आवश्यकता से अधिक विश्वास रखने वाले थे कि उन्हों ने बिना सोचे समझे अपने मत प्रवर्तक (मुहम्मद) की स्त्रियों के विषय में ऐसी ऐसी बातें लिख डालीं और अपनी पुस्तकों में संगृहीत करदी कि जिन से कुत्ते और कव्वे भी घृणा करें, विशेष कर वह गन्दे विचार जो कि रसूल की प्यारी बीबी आयशा के सम्बन्ध में प्रसिद्ध किये गये हैं वह तो बिल्कुल ही झूठ और पापमय हैं क्योंकि यह प्रत्यक्ष सिद्ध है कि ऐसी निर्लज्जता की बातें औरतें आपस की औरतों से भी नहीं करतीं फिर वह बातें पुरुषों के कान तक कैसे पहुँचा

सकती है। इस पर तुर्रा यह कि ह० आयशा स्वयं अपनी जिह्वा से वह बातें पुरुषों को खुले शब्दों में सुनावें-और ग़ज़ब ख़ुदा का-उन अश्लील और गन्दी बातों को सभ्य कहलाने वाले मौलवी पढ़ावें और नवयुवक विद्यार्थियों को सुनावें। शोक ! हज़ार बार शोक !

मुसलमान कहलाने वाले मौलवियों ने यहूदी और ईसाईयों की बनाई हुई इन गन्दी हदीसों से ही कई धार्मिक विषयों और सिद्धान्तों का निश्चय किया है और उन झूठी हदीसों और गन्दी कहानियों को प्रसिद्ध कर रक्खा है जिस से कोई बुद्धिमान् मुसलमान इन कपट कहानियों और दूषित बातों से इन्कार भी नहीं कर सकता। इस लिये इस प्रकार का कुछ एक हदीसों का नमूना इस प्रकरण में दिया जाता है ताकि हमारे सोच समझ वाले मुसलमान भाई उन हदीसों को तथा उन जैसी अन्य गन्दी कथाओं को जिस जिस पुस्तक के जिस जिस स्थान पर पावें तत्काल लेखिनी फेर कर उनके पास यह लिखदें कि 'यह बातें यहूदी और ईसाईयों ने मिलाई हैं'।

आक्षेप नं०—१

> रसूलल्लाह एक बार में ही अपनी सारी स्त्रियों से मैथुन कर लिया करते थे।

"ऐसे व्यक्ति के विषय में यह हदीसे हैं जो स्नान करने से पहिले अपनी सारी स्त्रियों से मैथुन कर ले, हज़रत अंस ने कहा कि रसूलल्लाह अपनी सभी औरतों से मैथुन कर चुकने के पश्चात् स्नान किया करते थे"। इब्ने माजह। बाब-सारी स्त्रियों से मैथुन करने के बाद स्नान करने वाला। (छापा निज़ामी दिल्ली)

"हज़रत अंस ने कहा कि खैबर की लड़ाई से लौटते समय मक्का और मदीना के बीच में रसूलल्लाह-हया की बेटी सफ़ियह में तीन दिन तक   करते रहे और मैं ने ही मुसलमानों को इस शादी का खाना खाने के लिये बुलवाया। इत्यादि"। बुखारी-किताबुन्निकाह बाबुन्निसाए फ़िस्सफ़रे।

देखिये! हदीसलिखने वालों ने रसूल का क्या सभ्यता पूर्ण (?) इतिहास और दिन चर्या तैयार की है? हाय अफ़सोस! यह स्वाभाविक और प्राकृतिक कर्म कौन नहीं जानता कि स्त्री पुरुषों में हुआ करते हैं परन्तु उनका कोई ढण्डोरा नहीं पीटा करता। आप किसी मत प्रवर्त्तक की ऐसी विचित्र महिमा और उसकी स्त्रियों की ऐसी दुर्दशा सिवाय अहले सुन्नत के कहीं न पायेंगे। तोबह! तोबह! कृपया इसे निकाल डालिये और विश्वास कीजिये कि इन झूठी बातों के न होने से आपके मत में कोई क्षति न हो जावेगी और ना ही इस्लाम पर कोई धब्बा लगेगा!

आक्षेप नं०—२

हु० आयशा और रसूलल्लाह ने खतना मिलाकर स्नान किया।

"हु० आयशा ने कहा कि जब दो खतनें मिल जावें अर्थात् खतना खतने से मिल जावे तो स्नान करना कर्तव्य हो जाता है, मैंने और हज़रत ने ऐसा करने के बाद स्नान किया है।" इत्यादि। इब्ने माजह-बाब-माजाआ फ़ी वजबल् गुस्ले० (छापा निज़ामी) सफ़ा ४५।

लेखक की दुर्वृत्ति पर दृष्टि डालो कि ऐसी गन्दी बात कहने में नाम भी उसका लिया है जिसको मुसलमान अपनी मां मानते हैं। हम कहते हैं जब स्नान के कर्तव्य तक बात समाप्त

हो चुकी थी और उसके आगे किसी वाक्य की आवश्यकता नहीं थी फिर रसूल और आयशा का क्यों व्यर्थ में वर्णन किया ? परन्तु रसूल और ह० आयशा से शत्रुता थी इसलिये यह वाक्य बढ़ा दिया कि–रसूल ने और मैंने　　किया था इसलिये स्नान भी किया। सच तो यह है कि निर्लज्जता से भी आगे बढ़ गये। कृपया इसे निकाल डालिये।

आक्षेप नं०—३

रोज़े में भी रसूलल्लाह बोसे लेते और मैथुन किया करते थे।

"ह० आयशा ने कहा कि रसूलल्लाह रोज़ा रखकर भी मेरा मुंह चूमते और मेरे साथ मैथुन करते थे। परन्तु वह अपनी गुप्त इन्द्रिय पर तुमसे अधिक वश रखते थे।" बुखारी–किताबुस्सौम बाबुल् मुबाशिरते लिल्साएम।

इस विषय की हदीसों के बाहुल्य से यह प्रतीत होता है कि कुरान के—ला तबाशिरू हुन्न—रोज़े में बैथुन मत करो. इस हुक्म के विरुद्ध इस्लाम का यह सिद्धान्त है कि रोज़े में बोसे लेना और मैथुन करना आवश्यक है अन्यथा रसूलपना काफ़ूर होता है क्योंकि खुदा की भक्ति में जब तक विषय भोग की चाशनी न लगे तब तक उसमें कुछ आनन्द नहीं आता और यह भी सम्भव है कि रोज़ा भी स्वीकार न हो। धिक्कार !

निर्लज्ज लेखक बोसे के बाद मुबाशिरत का शब्द लाया है जिसका आशय स्पष्टतया 'मैथुन' ही है जो कि रोज़े में हराम-सर्वथा निषिद्ध है। हमारे विचार में किसी सम्प्रदाय का मुसलमान खुदा के पैग़म्बर और उनकी स्त्री आयशा के विषय में मैथुन

कर्म का वास्तविक अर्थ खोलकर नहीं बता सकता और ना ही उसकी व्याख्या कर सकता है परन्तु हदीस के लिये क्या किया जावे!

आयशा ने कहा कि हज़रत रोज़ा रखकर अपनी कई एक स्त्रियों का मुंह चूम लेते थे-इतना कह कर आयशा हंस पड़ा॰" बुखारी किताबुस्सौम बाबुल् कुब्लतो लिल् साइम (छापामिश्र) सफा २११।

आप समझ सकते हैं कि हदीस लेखक ने हा॰ आयशा को क्या बनाया है? और अब माता आयशा के योग्य पुत्र कर्मानी की निर्लज्जता पर भी विचार करो कि वह 'सुम्म ज़हक्त' अर्थात् फिर हंस पड़ी, की व्याख्या में लिखते हैं कि हम मुसलमानों की माता इस लिये हंसीं कि उनको वह समय स्मरण हो आया जो उनका रसूलल्लाह के जीवन में प्राप्त था।

विचार करो कि सुम्म ज़हक्त' से कौनसा सिद्धान्त मालूम हुआ कि जो इस बकवास को लिख दिया और इस पर कर्मानी की सभ्यता है कि उसने मुसलमानों की माता के लिये वह गन्दी बात लिखदी जो कोई साधारण बुद्धि वाला भी अपने माननीय महापुरुष की स्त्री के सम्बन्ध मे नहीं कह सकता। हाय ग़ज़ब! इन झूठी बातों का इस्लामी पुस्तकों से निकाल डालना ही वास्तव में इस्लाम है और उनको रहने देना कुफ्र और द्वेष का कारण है परन्तु यह प्रार्थना रसूल के प्यारों से है अहले सुन्नत से नहीं।

आक्षेप नं—४

आयशा रोज़े रखने में कष्ट मानती थीं

"अबी सलमह ने कहा कि मुझसे हज़रत आयशा ने कहा कि मुझे रोज़े रखते हुए थोड़े दिन होते थे कि मैं फिर

रोज़ न रख सकती थी यहां तक कि शअबान का महीना (आठवां) आ जाता था। यह्या ने कहा कि आयशा ग्यारह मास तक रसूल-ल्लाह से लगी रहती थीं या रसूलल्लाह के साथ लगी रहती थीं" इत्यादि। फतहुल् बारी—किताबुस्सौम बाब मन् यक़ज़ा क़ज़ाए रमज़ान।

पहली बात तो यह है कि बुख़ारी ने लाखों हदीसें तो फेंक दीं परन्तु इस निर्लज्जता से भरी हुई हदीस को नहीं फेंका। दूसरी बात यह है कि इब्ने हजर अस्क़लानी ने ऐसे गन्दे और निर्लज्ज व्याख्याकार का वाक्य अपनी पुस्तक में क्यों उद्धृत किया? परंतु यह सब उपद्रव बुख़ारी का है इसी कारण इमाम मुस्लिम ने जो उनको 'मु·तहल्लुल् हदीस' अर्थात् हदीस चोर कहा सो ठीक ही कहा क्योंकि यह्या के वाक्य के मिलाने से सिद्ध हो गया कि इमाम मुस्लिम का कहना यथार्थ है। अच्छा क्या यह सम्भव न था कि जहां लाखों हदीसें त्याग दीं थीं वहां इसको भी त्याग परे फेंकते? परन्तु रसूल का अपमान करना तो बुख़ारी का परम धर्म था। इसीलिये तो संसार पर प्रकट किया है कि रसूलल्लाह अन्यायी थे—रात दिन बीबी आयशा के यहां पड़े रहते थे और दूसरी स्त्रियें मुंह ताकती रह जाती थीं।

यदि किसी (यह्या) का कथन न लिखा जाता तो बात पूरी हो चुकी थी अर्थात् रोज़ों की समाप्ति का अन्तिम समय शअ-बान मास समझा जाता लेकिन जब तक आयशा का ठट्ठा न उड़ाया जाता तब तक स्वाद ही क्या आता और जामेअ बुख़ारी बहारे ऐश तथा तुहफ़तुल् मजानीन आदि पुस्तकें क्योंकर बनतीं। सम्भव है कि हज़रत आयशा किसी (स्त्रियों के गुप्त) रोग के कारण शअबान तक रोज़े न रख सकती हों या युवा-

वस्था की प्रबल क्षुधा के कारण सर्दियों के दिनों की प्रतीक्षा करती हों परन्तु वहां तो आयशा का अपमान करना ही प्रयोजन था इसीलिये तो यह लिखा कि— रसूलल्लाह से लगी रहती थीं या रसूलल्लाह के साथ लगी रहती थीं।' कृपया इसे निकाल डालिये।

स्त्रियें अपने आवश्यक प्रतिरोध के कारण रोज़ों की समाप्ति प्रायः शव्वाल के महीने में कर लेती हैं जिसके कारण वह रोज़े 'सित्तह शव्वाल' के नाम से प्रसिद्ध हैं परन्तु बहुत से सुन्नी पुरुष भी रमज़ान के कुल रोज़े रख कर भी सित्तह शव्वाल के रोज़े रख लिया करते हैं आश्चर्य है कि ऐसा क्यों किया जाता है !

नोट—जब हम ने खोज की तो अच्छी तरह से मालूम हो गया कि कई एक पिछले समय के सुधारकों का यदि दिल चाहता था कि हमारा यह काम सब मुसलमानों का कर्तव्य माना जावे तो वह किसी विश्वस्त सहाबी (हज़रत के साथी) आदि का नाम लेकर प्रमाणित करने के लिये रसूलल्लाह के साथ उस कर्म को जोड़ दिया करते थे जैसा कि इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण के 'सहीह बुखारी के रहस्यों की समालोचना' से सिद्ध होगा। वही दशा सित्तह शव्वाल की है कि इसको भी रसूलल्लाह के नाम के साथ जोड़ दिया है, अन्यथा यह प्रथा तो कअब अहबार यहूदी की है जो हज़रत उमर के समय में सहाबह (रसूल के साथियों) को डंके की चोट से मदीने में तौरात की शिक्षा इबरानी भाषा से अरबी में देता था और स्वयं इस्लामी बातें मुसलमानों से सीखता था। कई एक हदीसों से यह भी सिद्ध होता है कि हज़रत उमर अपने राज्य काल में यहूदियों की पाठशाला में जाया करते थे, बहुत सम्भव है कि यह पाठशाला कअब अहबार की ही

हो। कहा जाता है कि वह किसी वंशानुगत विचार से अथवा शारीरिक स्वास्थ्य के विचार से शव्वाल में रोज़े रखता था उसे खिलाफत की कृपा से और शिक्षा देने के पुरस्कार में उसके तरीके को सुन्नते रसूल अर्थात् रसूल का तरीक़ा प्रसिद्ध करने के लिये कोई हदीस घड़ दी जो उनके बायें हाथ का दाव था। फिर वह धीरे २ समय पाने पर प्रामाणिक पुस्तकों में घुस गई परन्तु यह कोई न लिख सका कि यह सुन्नत कअब अहबार अर्थात् यहूदी का चलाया हुआ रिवाज है। इसके सिवाय और भी कई ऐसी सुन्नतें हैं जो बाद में घड़ी गई हैं और रसूलल्लाह के नाम से प्रसिद्ध हैं यथा—नमाज़ में बिस्मिल्लाह को ऊँचे स्वर से न बोलना, नमाज़ में हाथों को घुटनों तक न पहुँचाना, नमाज़ की समाप्ति पर प्रार्थना के बाद तकबीर-अल्लाहो अकबर कहना और नमाज़ के आसन-मुसल्ला का न रखना इत्यादि २।

आक्षेप नं०—

रसूलल्लाह रजस्वला स्त्री से भी चिमट जाया करते थे।

"जमीअ इब्ने अमीर ने कहा कि—मैं अपनी माता और मौसी के साथ हज़रत आयशा के पास गया। मेरी माता और मौसी ने उनसे पूछा कि रसूलल्लाह अपनी रजस्वला स्त्रियों के साथ क्या किया करते थे? तो ह० अयशा ने उत्तर दिया कि जब हममें से किसी को रजोधर्म आता तो रसूलल्लाह उसको अच्छे बड़े तहबन्द बान्धने की आज्ञा करते थे और फिर उस बीबी की छातियों से चिमट जाते थे इत्यादि" निसाई जिल्द १ बाब मुबाशिरतुल् हाइज़ह। सफ़ा १०३।

देखिए, विषय तहबन्द बान्धने तक समाप्त हो चुका था और यदि स्त्रियों के दूसरे अङ्ग (छाती आदि) शुद्ध ही सिद्ध

करने थे तो उसके लिये और बहुत से शब्द प्रयुक्त किये जासकते थे परन्तु हदीस वाले को तो रसूलल्लाह और उनकी बीबियों से अपनी शत्रुता सिद्ध करनी थी तथा सामयिक धनियों और खलीफों को प्रसन्न करना अभिप्रेत था इसीलिये तो बड़े तहबन्द बांधने की आज्ञा लिखने के बाद 'उसकी छातियां से चिमट जाते थे' ऐसा और बढ़ा दिया। कृपया इसे दूर कीजिये? सम्भव है कि अन्य स्त्रियों के आधीन घर के काम काज हों और ह० आयशा को यही काम सौंपा हो कि सर्वसाधारण स्त्रियों को शरई मसअले अर्थात् इस्लामी सिद्धान्तों की शिक्षा दिया करें। तभी तो ह० आयशा के नाम से ही सभी गन्दी हदीसें लिखी हुई हैं अन्यथा किसी और स्त्री की ओर से भी होतीं परन्तु ऐसा नहीं। इस प्रकार के मसलों का वर्णन स्त्रियों से होता न कि पुरुषों से इसके साथ यह भी है कि बिना आवश्यकता के अधिक वाक्य योजना का क्या प्रयोजन? इनसे सिद्ध होता है कि यह कहानी ही मनघड़न्त है।

आक्षेप नं० ६

ह. आयशा ने कहा कि मुझे किसी पुरुष ने हाथ नहीं लगाया

"हज़रत आयशा ने कहा कि— मैंने हज़रत से कहा कि या रसूलल्लाह यह बताइये कि यदि आप किसी जंगल में हों और वहां ऐसा वृक्ष देखें जिस को ऊंटों ने चर लिया हो और साथ ही एक ऐसा हरा भरा वृक्ष भी देखें जिसे किसी ऊंट आदि ने न चरा हो तो बताइये कि आप किस वृक्ष से अपने ऊंट को चरायेंगे? हज़रत ने कहा—उस वृक्ष से जिसे किसी ने न चरा हो (हदीस वाला कहता है कि) आयशा के कथन का यह

तात्पर्य है कि मुझे किसी पुरुष ने हाथ नहीं लगाया और दूसरी स्त्रियां सब की सब दुहाजू अर्थात् पुरुषों के पास रह आई हुई हैं" बुखारी--किताबुन्निकाह। बाबुन्निकाहुल् अब्कार। छापा मिश्र सफा १४५।

इस हदीस का सार यह है कि मेरे सिवाय और किसी बीवी के पास न जाया कीजिये ! इलाही तोबह ! स्त्री और अपने पति से ऐसी गन्द कहे—लाहौलवला कुव्वत० सरासर झूठ ! कहां रसूलल्लाह और कहां यह किस्से कहानियां ! रसूलल्लाह लाखों आवश्यक कामों में फंसे हुए थे कहीं काफिरों से बदला लेना, कहीं इस्लाम के शत्रुओं पर प्रभाव डालना, कहीं मुसलमानों को सुधारने का प्रयत्न करना कहीं गरीबों का ध्यान और कहीं निराश्रयों को आश्रय देना आदि कामों से ही दम लेने का अवकाश नहीं। जब इनसे छूटे तो कुरान पढ़ाना इस्लाम को फैलाना और खुदा की इबादत (भक्ति) आदि में लग गये बस, ऐसे कार्य-परायण का इतना खाली समय और यह निकम्मी बातें ? सर्वथा झूठ और निरी गप्प।

आक्षेप नं० -९

आयशा बनाव सिंगार में लगी रहती थी

"ह० आयशा ने कहा कि-मैंने अबू हुरैरह को बुला पूछा कि हे अबू हुरैरह ! यह कैसी हदीसें हैं जो हम को पहुँची हैं और तुम उनको रसूलल्लाह से सम्बन्ध रखने वाली कहते हो और सच यह है कि तुमने वही देखा जो हमने देखा और हमने वही सुना जो तुमने सुना। हज़रत अबू हुरैरह ने कहा कि हे अम्मा जान ! आप को तो शीशा सुरमादानी और बनाव सिंगार से ही समय न मिलता था जो कि आप रसूलल्लाह के

लिये किया करती थीं और वह कर्म आपको हदीसें सुनने से वञ्चित रखता था और ख़ुदा की कसम मुझे रसूल की हदीसें सुनने से कोई बात मना नहीं करती थीं.. । मुसद्दरक हाकिम जिल्द२ । बाबुलमनाक़िब अबू हुरैरह । सफ़ा २४१ ।

आयशा और हफ़सह की महिमा पर आलोचना।

"हज़रत अबू हुरैरह पहिले बहुत ही छोटे दरजे के (कमीन) आदमी थे अर्थात् गधे चराते २ किसी अरबी के पास ऊंट चराने पर नौकर हो गये परन्तु न सिर पर चादर थी और न पांव में जूता । बस, जब देखा कि इस्लाम की हवा चल रही है तो सन् ७ हिज्री में ख़ैबर पर चढ़ाई करने वाली सेना के साथ हो लिये और मुसलमान हो कर सूफ़ी (फ़कीर) से बन गये और मदीने में जा डेरा डाला । रसूलल्लाह की तरफ़ से जहां और फ़कीरों को रोटी दाना मिलता था वहां इन को भी मिलने लगा कुछ काल के बाद रसूलल्लाह ने इन पर प्रसन्न हो कर ज़ुल ख़ल-सह में कुछ भूमि भी प्रदान की थी" । अक़दुल फ़रीद-जिल्द १ (छापा मिश्र) सफ़ा १४ ।

इसी प्रकार अन्य हदीसों से सिद्ध होता है कि रसूल के समय में इन (अबू हुरैरह) की कोई मान प्रतिष्ठा न थी और ना ही अबू बकर आदि ख़लीफ़ों के समय में ही कुछ आदर सत्कार था जैसा कि इज़ालतुल ख़फ़ा और अल् फ़ारूक़ (शिब्ली कृत) की जिल्द २ के सफ़ा २२४ में है कि—कई बार हज़रत उमर ने अपनी नीति के विरुद्ध हदीस बयान करने पर इन अबूहुरैरह को टोंक दिया और जब उन्हों ने बहरीन का कमिश्नर बन कर माल चुराया तो

हज़रत उमर ने ख़ूब ही पीटा। इस लिये ऐसे कम दरजे का (कमीना) आदमी रसूल की बीबियों के सम्बन्ध में अनधिकार चेष्टा करे कि 'आयशा रसूलल्लाह के लिये बनाव सिंगार किया करती थीं और उसी में लगी रहती थीं, न जाने इस खुले अपमान पर बेचारे अबू हुरैरह पर क्या बन जाती क्योंकि आयशा और हफ़सह जैसी स्त्रियां अरब के ख़लीफ़ों और राजाओं की पुत्रियां थीं उनके सामने रसूल की सन्तान भी ऐसी बड़ी चीज़ न थी जैसा कि—"इमाम आज़म के शिष्य इमाम अबू यूसुफ़ की पुस्तक 'किताबुल ख़िराज, के अधार पर इज़ालतुल ख़फ़ा के मक़सद २ (छापा सदीक़ी बरेली) में लिखा है कि "हसन हुसैन को हररोज़ ५ पांच हज़ार रुपया हज़रत उमर ने देना स्वीकार किया था और हज़रत आयशा और हफ़सह को बारह बारह हज़ार रुपया रोज मिलता था अन्य किसी स्त्री को इस से अधिक नहीं मिलता था। इन ही दोनों (रसूल की बीवियों) को हाकिम और अमीर लोग जो नज़राने भेंट करते थे वह अनगिनत थे अर्थात् शामके अधिकारी की तरफ़ से भेंटें पृथक् आती थीं और मिश्र कोफ़ह तथा बसरह आदि स्थानों के अधिकारियों और धनी मानी लोगों की तरफ़ से जो आता था वह जुदा और मदीना आदि के लोग जो देते थे वह अलग। जैसा कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने आयशा वा हफ़सह को एक टुकड़ा भूमि दी थी जो कि चालीस हज़ार को बिकी थी तथा इन ही दोनों स्त्रियों को हज़रत इब्ने औफ़ ने एक बाग़ दिया था जो कि ४ लाख रुपये में बिका था" देखो तख़्वीसुस्सहाह जिल्द ५ सफ़ा ३०१।

परन्तु रसूलल्लाह के बाद दूसरी स्त्रियों तथा हसन हुसैन को तीनों ख़लीफ़ों (अबू बकर, उस्मान और अली) और अन्य धनप-

तयों की तरफ से भेंट आदि मिलना किसी पुस्तक से सिद्ध नहीं होता इन आमदनियों के सिवाय खैबर प्रान्त के ग्राम गावह की सब चश्मों वाली जिमीनें (जिन में पानी लगता था) अपनी सब बीबियों का प्रदान कर दी थीं जो कि हज़रत उमर के राज्य में ज़ब्त हो गई थीं और उनका थोड़ा सा मूल्य दे दिया गया था। परन्तु इन दोनों (आयशा और हफ़सह) की ज़िमीनें ज़ब्त नहीं हुई थीं बल्कि उनके अधिकार में ही रहीं और उनकी मृत्यु के बाद उनके सम्बन्धियों को मिलीं। हज़रत उमर ने खैबर प्रान्त का गांव-समग भी जो कि रसूल को मिला था अपनी सन्तान के नाम पर लगा दिया अर्थात् हफ़सह को उसका अधिकारी बना दिया और उनके बाद प्रत्येक बड़े कुल का वारिस--अधिकारी होना लिखा (देखो सुहाह)। अभिप्राय यह है कि हज़रत आयशा अपने आप में ऐसी बड़ी विभूति वाली थी कि तीसरे खलीफ़ा हज़रत उस्मान और शाम देश के अमीर तक को धमका डालती थीं और कोई राज्य तथा शासन उनकी कुछ न कर सकता था। इस लिये ऐसा मालदार और प्रभाव शाली स्त्री का अपमान अबू हुरैरह जैसा व्यक्ति करे और वह भी खुल्लम खुल्ला, यह सर्वथा झूठ और प्रत्यक्ष के विरुद्ध है। क्योंकि इस हदीस से हज़रत आयशा की निर्लज्जता और रसूलल्लाह की विषयासक्ति सिद्ध होती है इस लिये यह हदीस निकाल डालने के योग्य है।

आक्षेप नं—८

रसूल की सभी स्त्रियां कामातुर रहती थीं और रसूलका उन पर प्रभाव नहीं था।

"हज़रत अन्स ने कहा कि रसूलल्लाह की नौ बीबियां थी जब हज़रत ने हर एक की बारी निश्चित करदी ता जिस बीबी के पास एक रात्रि बिलास करते फिर उसकी बारी दसवें दिन

आती थीं और जिस तारीख को जिस घर में रहते थे वहां पर रात के समय सभी बीबियें आजाती थीं; एक रात क्या हुआ कि हज़रत आयशा की बारी थी और रसूलल्लाह वहां पहुँचे हुए थे कि ज़ैनब आगई उनको देखकर हज़रत ने ज़ैनब की तरफ़ हाथ बढ़ाया. यह देख आयशा ने कहा कि यह ज़ैनब हैं अर्थात् आज इनकी बारी नहीं मेरी है ! जिसपर हज़रत ने अपना हाथ रोक लिया। बस, इसपर ज़ैनब और आयशा की लड़ाई आरम्भ होगई और खूब गुल गपाड़ा हुआ यहां तक कि प्रातःकाल की नमाज़ का समय आ पहुँचा। इतने में हज़रत अबू-बकर भी इस तरफ़ आ निकले तब उन्होंने इन दोनों की तकरार सुनी और पुकार कर ऊंचे स्वर से कहा कि या रसूलल्लाह ! इनके मुंह में खाक (मिट्टी) डालिये और नमाज़ के लिये बाहिर आइये () इत्यादि,, मुस्लिम-जिल्द १ किताबुर्रिज़ाअ बाबुल्क़िसम बैन ज़ौजात । छापा मुजतिबाई दिल्ली सफ़ा २७२ ।

इस हदीस से हदीस लेखक ने दोनों माताओं का (आयशा और ज़ैनब) का कामान्ध होना तथा लड़ाकी और असभ्य होना प्रकट किया है और साथ ही रसूलल्लाह को बुद्धि हीन, मति मन्द और बिना प्रभाव वाला सिद्ध किया है और यह दिखाया है कि जब रसूलल्लाह घर के प्रबन्ध में ऐसे अयोग्य थे तो अपने आधीन बड़े २ प्रान्तों के राज्यों का प्रबन्ध कैसे कर सकते होंगे इस लिये शैख़ैन (हज़रत अबूकर और ह० उमर) का भला मनाओ कि वह हर तरह से रसूलल्लाह की सहायता करते रहते थे उन्हों ने दीन और राज्य की बागडोर सम्भाले रक्खी थी अन्यथा रसूलल्लाह में रक्खा ही क्या था और अली बच्चे थे तथा बनी हाशिम में कोई योग्य पुरुष ही न था (मुंह में मिट्टी डालो)

दूसरा परिणाम यह निकलता है कि आयशा का गुलगपाड़ा करना उचित था क्योंकि यह उन की बारी का दिन था और रसूलल्लाह ज़ैनब की तरफ़ हाथ बढ़ाकर आयशा से अन्याय करना चाहते थे इस लिये रसूलल्लाह अन्यायी थे। खुदा बचाये !

क्यों मुसलमानो ! ऐसी निर्लज्ज बातें इतने ज़ोर शोर से और वह भी रात भर ! भला बताओ तो यह असभ्यता किन जातियों की स्त्रियों में हुआ करती हैं और ऐसे गुलगपाड़ों और अश्लील व्यवहारों को कौन पुरुष सहन किया करते हैं ! ज़रा भारत वर्ष की जातियों पर ही दृष्टि डालो और उन जातियों का नाम बताओ ? शरम ! शरम ! लज्जा का स्थान है ! हज़रत ज़ैनब और रसूलल्लाह बनी हाशम से सम्बन्ध रखते थे और हज़रत आयशा बनी यतम के माननीय नेता (हज़रत अबू बकर) की प्यारी पुत्री थीं। इन लोगों में ऐसी असभ्यता ? सर्वथा झूठ और निरी गप्प। कृपया इसे निकाल डालिये।

सब मुसलमानों के लिये तहज्जुद अर्थात् आधीरात की नमाज़ पढ़ना अनुकरणीय है और रसूल के लिये कर्तव्य थी परन्तु इस गुल गपाड़े की रात में उपरोक्त हदीस से नमाज़ पढ़ना नहीं पाया जाता जिस से सिद्ध होता है कि उस व्यर्थ काम में रसूलल्लाह ने नमाज़ जैसे कर्तव्य को त्याग दिया। लाहौल वला कुव्वत०।

आक्षेप नं०—९

आयशा ने रसूल के सिर के बाल खींचे और अपनी कामान्धता प्रकट की

"ह० आयशा ने कहा मैंने रसूलल्लाह के सिर को स्पर्श किया अपना हाथ उनके बालों की तरफ़ दौड़ाया। हज़रत बोले कि क्या तेरे पास तेरा शैतान आया है ? मैंने कहा--क्या आप

के लिये शैतान नहीं ? हज़रत बोले—हां, ख़ुदा की क़सम, है ! परन्तु अल्लाह ने मुझे उस पर ऐसा अधिकार दिया है वह मुसलमान हो गया है"। निसाई—जिल्द २। किताब मुआशिरतुन्निसा बाबुल् ग़ैरत। सफ़ा ७९।

क्या कहूं और किस मुंह से कहूं। अच्छा सुनिये। देखिये, क़द् जायक शैतानुक-क्या तेरे पास तेरा शैतान आया है. इस वाक्य का सम्बन्ध पुकार पुकार कर कह रहा है कि ह० आयशा ने रसूलल्लाह के झूंतरे (सिर के लम्बे २ बाल) नोंचे थे क्योंकि केवल बालों तक हाथ पहुँचाने के लिये हदीस का क्रम' यह नहीं कहता कि इतने मात्र पर यह कहा हो कि-'क्या तेरा शैतान तेरे पास आगया है। और फिर किसी स्त्री के विषय में शैतान आने का संकेत करना तो परले दर्जे का अपमान है जिस को कोई मुसलमान अपनी ज़ुबान से नहीं निकाल सकता। फिर इस उद्दण्डता के बाद आयशा का ख़ुदाये मजाज़ी अर्थात् सामयिक ईश्वर (मुहम्मद) से अभिमान से कड़क कर कहना कि तुम्हारे लिये शैतान नहीं है, इसके बाद रसूलल्लाह का अपने शैतान को मुसलमान करलेना ही कहना परन्तु उद्दण्डता का दण्ड न देना। हाय शोक ! ऐसा अपमान तो कोई नपुंसक भी सहन नहीं कर सकता। कहां शूरों में शूर बड़े शूर रसूलल्लाह कि जिन में चालीस मरदों की　　　शक्ति !

सच तो यह है कि इस हदीस के बहुत भयंकर परिणाम हैं जो कि एक मुसलमान की ज़ुबान से नहीं निकल सकते। कृपा कर इस गन्द को निकाल डालिये।

आक्षेप नं०—१०

आयशा के नंगी होने से जिब्राइल को शरम आगई

"ह० आयशा ने कहा कि मेरी बारी के दिन हज़रत ने करवट ली और जूतियां अपने पांव के पास रखीं और चादर उठाकर अपना तहबन्द बिछौने पर बिछाया और कुछ देर ठहरे। जब उन्होंने समझा कि मैं सो गई हूं तो धीरे से अपनी जूतियां पहिनी और चादर उठाकर धीरे से दरवाजा खोल कर और फिर चुपके से बन्द कर बाहिर गये। मैं भी चुपके से अपनी ओढ़नी ओढ़ और पाजामा पहिन उनके पीछे हो ली। जब हज़रत बक़ी से लौटने लगे तो मैं उनसे पहिले दौड़कर घर पहुँची। ह० ने मेरा सांस फूला हुआ देखकर कहा कि तू मेरे चले जाने पर यह समझी कि खुदा और रसूल तुझ पर अत्याचार करेंगे? अर्थात् तेरी बारी के दिन हम किसी और स्त्री के पास चले जायेंगे। मैं ने कहा लोग कहां तक छिपायेंगे, अल्लाह ने आपको बतादिया। हज़रत ने कहा कि जिब्राईल मेरे पास उस समय आये जिस समय तू ने देखा परन्तु तेरे पास न आये क्योंकि तू उस समय नंगी थी बस, जिब्राईल ने मुझे आवाज दी और तुझ से छिपे रहे इसलिये मैंने उनको उत्तर दिया और उनको तुझ से छिपाये रक्खा० इत्यादि,, निसाई—जिल्द २ बाबुल् ग़ैरत। तरजुमा नवाब वक़ार निवाज़ जंग सफ़ा १०३।

हदीस लेखक ने रसूलल्लाह से विचित्र हास्य किया है अर्थात् - रसूलल्लाह आयशा के इतने आधीन थे कि ख़ुदा की आज्ञा पालनी भी उनके लिये कठिन थी और जो समय लुक छिपकर मिल जाता तो भयभीत हो चुपके से घर से निकल पड़ते और बीबी

जी ताक में रहती कि मेरी बारी के दिन कहीं और न जाने पावें ईर्षा लिये तो सिर पर ओढ़नी ओढ़ और पाजामा पहिन रसूलल्लाह के पीछे २ हो लेतीं इन बातों से मालूम होता है कि आयशा हज़रत को अन्यायी और धोखेबाज समझती थी अर्थात् उनके विचार में रसूलल्लाह का कुछ भी मान न था।

हदीस वाले की निर्लज्जता देखने योग्य है--जो स्वभाव नीच जाति की स्त्रियों का होता है कि वह नंगी होकर पतियों के साथ सो जाती हैं वही दशा मुसलमानों की माता (आयशा) के सम्बन्ध में वर्णन की जाती है। हदीस वाले ने एक बात महत्व की भी कही है ताकि जो कुछ कृपा और अनुग्रह ऊपर वर्णन की गई है वह कहीं बरबाद न हो जावे तथा प्रलय तक महत्व ही समझते रहें और व्यर्थ में नष्ट न कर डालें परन्तु महिमा भी ऐसी वर्णन की है कि जो आयशा के अनुकूल नहीं है और वह यह कि ह० जिब्राईल आयशा के पास आये। लेकिन वह निर्दोष के सिवाय किसी के पास आते नहीं परन्तु आयशा निश्चय से निर्दोष नहीं बल्कि भ्रान्ति से युक्त थी इसलिये वह महिमा मिथ्या होगई। दूसरा झूठ यह है कि आयशा को नंगी देखकर जिब्राईल पास न गये जिससे मालूम होता है कि जिब्राईल में भी लज्जा की मात्रा थी तभी तो आयशा के नंगे होने से शरम खाकर न गए। तीसरा झूठ यह है कि रसूल ने ह० जिब्राईल को छिपाया और छिपाया भी उसको जो क्षण भर में आकाश पाताल के विस्तार को नाप लेता हो। हदीस क्या है, अच्छी खासी दीवाने की बड़ अर्थात् पागल की बकवास है। न जाने हदीस वाला किस नशे में था और इमाम निसाई किस धुन में! कृपया इस गड़बड़ को दूर करिये।

आक्षेप नं० ११

आयशा को मैथुन की इच्छा लगी रहती थी ।

ह० आयशा ने कहा कि जमअह की बेटी सौदह जब बूढ़ी हो गई तो रसूलल्लाह ने उनको तलाक (त्याग) देना चाहा तब सौदह ने कहा मुझे तलाक न दीजिये, मुझे पुरुष की आवश्यकता नहीं । फिर ह० सौदह ने अपनी बारी का दिन मुझे दान कर दिया और रसूल ने सौदह को तलाक न दी बल्कि अन्य स्त्रियों जैसा लेन देन बना रहने दिया'' इब्ने माजह जिल्द २ किताबु न्निकाह । बाबुल् मिअंत । सफा ५०

विचार कीजिये कि सौदह के तलाक की बात समाप्त हो जाने से आयशा को यह कहने की क्या आवश्यकता थी कि उन्होंने अपनी बारी का दिन मुझे दान कर दिया और यह भी कहा तो अपनी जबान से ! हाय ग़ज़ब ! हाय ग़ज़ब ! क्या बीबियां (पवित्र देवियां) ऐसी बातें पर पुरुषों के सामने ज़ुबान से भी निकाल सकती हैं ? कदापि नहीं ! और कहां इसका ढिण्डोरा पीटना, बिलकुल प्रत्यक्ष के विरुद्ध । इसलिये इसे निकाल बाहिर कीजिये !

इसी प्रकार की एक और हदीस उपरोक्त पुस्तक के उसी प्रकरण में लिखी हुई है यथा

''आयशा ने कहा कि एक दिन हया की बेटी सफियह से रसूलल्लाह रुष्ट हो गये तब सफ़ियह ने मुझ से कहा कि यदि तुम हमारा समझौता करा दो तो मैं अपनी बारी का दिन तुमको भेंट करुंगी । बस, मैं बन ठन कर और अतर फुलेल लगा कर हज़रत के पहलू में जा बैठी जिस पर हज़रत बोले कि-चल परे हट-आज तेरी बारी का दिन नहीं । यह सुनकर मैंने कहा कि-सफियह ने इस

प्रकार से कहा है, तब हज़रत ने उनका अपराध क्षमा किया। इत्यादि,, इब्नेमाजह सफ़ा ५०।

देखिये हदीस वाले ने ह० आयशा को क्या महफ़ल की चीज़ बनाया और सौदह से एक दिन बारी का दिलाया था तो एक सफ़ियह से मेहनताने का दिलाया। क्या यह बातें किताबों में लिखने योग्य थीं? क्या इस प्रकार के वर्णन के सिवाय किसी दूसरे प्रकार से यह दान प्रदान का वर्णन नहीं हो सकता था? हो तो सकता था परन्तु कपटी मौलवियों को तो मुसलमानों की माता के अपमानित करने के सिवाय मज़ा नहीं आता था इसी लिये तो यह मिथ्या वाद घड़ा गया। सम्भव था कि हदीस वाला यह कहता कि आयशा अपनी सौकनों में सबसे छोटी आयु की थी तिस पर भी वह दूसरों से अच्छा बर्ताव करती थी और उनके झगड़े अपने पति से सुलझा दिया करती थी परन्तु इस उत्तम बर्ताव के पुरस्कार में मिठाई या कोई और चीज़ देना न लिख कर बारी के दिन देना लिख दिया। जिस से हदीस लिखने वाला निर्लज्ज और ह० आयशा का शत्रु सिद्ध होता है। इस लिये यह हदीस निकालने के योग्य है।

रसूल के घरेलू प्रबन्ध की आलोचना।

सुहाह आदि में ऐसी हदीसें प्रायः बहुत सी हैं जो आयशा से कही गई हैं और उनमें यह लिखा है कि हमारे घर बारह मास तक चूल्हा न जलता था-केवल पानी और खजूर पर निर्वाह होता था। कई एक हदीसों में यह लिखा है कि रसूलल्लाह को कई २ दिनों तक उपवास ही करना पड़ता था कई एक सहाबह अर्थात् रसूल के साथियों के पेट से एक २ पत्थर बन्धा होता तो रसूल के पेट से दो दो पत्थर

बंधे होते थे। तात्पर्य यह है कि जब रसूल की यह अवस्था थी तो उनकी स्त्रियों पर क्या न बीतता होगा? कई एक हदीसों में यह लिखा है कि- रसूलल्लाह के जीवन के अन्तिम दिनों में उन की चादर एक यहूदी के पास रखी गई तो 'जौ, मिल सके थे। और कई एक में कहा है कि जब रसूलल्लाह की मृत्यु हुई तो आयशा कहती है कि मेरे घर कुछ थोड़े से जौ पड़े हुए थे जिन को मैं कुछ दिनों तक खाती रही। कईयों ने कहा है कि रसूल-ल्लाह के पास कुछ भी न था तो वसीयत क्या करते अर्थात् किसी के नाम कुछ भी वसीयत नहीं की—मतलब यह कि कुरान के विरुद्ध रसूल ने कर्तव्य का त्याग किया। देखो कुरान की इस आयत को—

कुतिब अलैकुम इज़ा हज़र अहदकुमुल्
मौत इन तरक खैरानिल् वसिय्युत लिल्वालिदीने
वल् अक्रबीन बिल्मारूफ़ हक्क़न अलल् मुत्तक़ीन।*

अधिक क्या ऐसी बीसीयों झूठी कहानियां सुहाह आदि पुस्तकों में प्रायः आयशा के नाम से लिखी हुई हैं जिन के संग्रह से मालूम होता है कि न तो रसूलल्लाह धनी मानी थे ना ही प्रबन्धक, बल्कि कंजूस कि--इतनी बड़ी माया के जब तक कुछ रहन न रखे कोई एक पैसे का विश्वास न करता था। इस पर भी परले

---

*मुसलमानो! तुमको कहा जाता है कि जब तुम में से किसी के सामने मौत आये और वह कुछ माल रखता हो तो अपने माता पिता या सम्बन्धियों के लिये अवश्य ही वसीयत करे क्योंकि उन पर उनके अपनों का यह एक अधिकार है। सूरत बकर रुकू २२। (अनुवादक)

दरजे के कामी कि—घर में खाने को नहीं और बुढ़ापे में भी औ-रतों की भरती किये जाते हैं। उधर लाखों शत्रुओं से आये दि-न की लड़ाइयां, बड़े २ राज्यों से संघर्ष, इस्लाम का बाईकाट, सामयिक महाराजों से इस्लाम स्वीकार न करने पर युद्ध घोषणा इस पर कोश पर दृष्टि नहीं और घर में खाने तक नहीं, इसके साथ ही जज़िये ज़कात लूट के माल, दान, भेंट, सेवायें, महसूल और अपना विशेष भाग तथा जुर्माना ख़ज़ाने आदि बीसियों प्रकार के काम होने पर भी ऐसी फ़ज़ूल ख़र्ची—अपव्यय कि घर की बीबियां भूखें मरें। अल्लाह राह कहे कि व्यर्थ व्यय करने वालों को ख़ुदा प्यार नहीं करता और रसूल उस की आज्ञा के विरुद्ध फ़ज़ूल ख़र्ची करें! अल्लाह कहे लातू तुस्सफ़हा* और रसूलल्लाह एक न माने! अल्लाह-ला तजअल यदक॰† कहे और पैग़म्बर ध्यान में भी न लावें। सन्देह होता है कि रसूल-ख़ुदा के रसूल अर्थात् भेजे हुए दूत थे या बराबर के दूसरे ख़ुदा। इस लिये यह सब प्र-पञ्च इस लिये घड़ी गई हैं कि रसूलल्लाह का अपमान और आयशा की निन्दा हो जो कि सिर से पैर तक झूठ है और निकाल डालने के योग्य हैं।

विचार का स्थान है कि रसूलल्लह की शादी २४ चौबीस वर्ष की आयु में ख़दीजतुल् कुब्रा‡ के साथ हुई और वह २५ वर्ष

---

*अपने धन को बुद्धिहीन अनाथों को मत दो सूरत निसा रू. १

†न तो कंजूस बनो और नाही फ़जूल खर्चा करो बनी इस्राईल

‡ख़दीजह बड़ी अमीर विधवा थी रसूल से शादी के समय इसकी आयु ४० वर्ष की थी इसीलिये इसे कुब्रा अर्थात् बड़ी कहते हैं। (अनुवादक)

तक हज़रत के निकाह में जीवित रहीं। रसूल का युवावस्था का यौवन वेग एक बीबी पर समाप्त हुआ। जब वह मर गई तो उनकी मृत्यु के एक मास पश्चात् रसूलल्लाह ने जमअह की बेटी सौदह से निकाह किया जो कि खदीजह की सेविका थी। इस निकाह के बाद रसूल ने जितने भी निकाह किये वह किसी न किसी आवश्यक हेतु को लेकर किये गये थे किसी का उद्देश्य राजकीय नीति से सम्बन्ध रखता था किसी का व्यापारिक आदि था परन्तु उनमेंसे कोई ऐसा निकाह न था जो काम इच्छा को तृप्त करने के लिये किया गया हो बल्कि यह सम्बन्ध उन ही महान् पुरुषों के साथ स्थिर किये गए थे जिनसे उपद्रव का भय था या इस्लाम के विरोध की आशंका थी। इनमें से कई बीबियों के पिता बड़े उद्दण्ड और उपद्रवी थे और कई एक कट्टर शत्रु और इस्लाम के नाश में सर्वस्व अर्पण करने वाले थे इसलिये ऐसे सम्बन्ध से प्राप्त हुई स्त्रियों और ऐसे माता पिता की पुत्रियों को हज़रत का भूखे मरना समझ में नहीं आता।

जिस नंगी हदीसों के सार पेश किये गये हैं वह यदि सच्ची हैं तो उपवास अपनी इच्छा से किये जाते थे अथवा विवश होकर? यदि वह अपनी इच्छा से थे तो उनका प्रभाव रसूलल्लाह तक या अली, फ़ात्मा या हसन हुसैन तक परिमित होना चाहिये था क्योंकि वह खुदा की भक्ति में प्रसन्न रहते थे और उनका पेट खुदा के नाम से भर जाता था परन्तु बीबियों, दासियों, गुलामों घोड़े, ऊंट, बकरी, तथा फ़क़ीर, मुसाफ़िर और यतीम, अनाथ अतिथि आदि ऐसे न थे कि उन बेचारों को भूखे मारा जाता उनको भूखा रखने से रसूलल्लाह की बड़ी भारी भूल और अदूरदर्शिता सिद्ध होती है। इसके सिवाय आये दिन की सेनाओं

की तैयारी, दूतों को भेजने का कार्य, शस्त्र अस्त्र और अन्य सामान तथा डेरे तम्बू आदि का प्रबन्ध और फिर अरब जैसे देश में न पानी है न घास, वहां सब प्रकार का प्रबन्ध करना बिना द्रव्य के सम्पन्न नहीं हो सकता। इसलिये इतने बड़े महान् कार्य को सिद्ध करने और बड़ी २ सेनाओं के खाने पीने आदि के प्रबन्ध में उपवास और भूखे रहना बिना अपनी इच्छा के स्वीकार नहीं की जा सकती इसलिये रसूल की दरिद्रता और निर्धनता की जितनी गप्पें घड़ी गयी हैं वह किसी न किसी उद्देश्य को लेकर ही बनाई गई हैं परन्तु अब वह समय नहीं इसलिये इनको निकाल बाहिर कीजिये।

उपरोक्त हदीसों के मन घड़न्त होने में यह भी युक्तियें हैं—

१—रसूलल्लाह ने बीबियों को बड़ी भारी सम्पत्ति दी हुई थी खाने पीने की चीजों का अन्त न था वस्त्र और भूषण भी पर्याप्त दे रखे थे देखो--सहीह मुस्लिम किताबुल् अमारत।

२—सभी बीबियों को ज़मीनें और खाने पीने की चीज़ें आदि दी हुई थीं बाग बगीचे भी दिये हुये थे। रसूलल्लाह के पास ६२ गुलाम और २२ घोड़े तथा ३६ ऊंट १० दूध देने वाले जानवर (गाय भैंस) ४ बकरियां इनके सिवाय दास दासियां और हज़रत अब्दुल्लाह बिनमसऊद; अन्स बिन मालिक यह सब रसूल के निजी व्यय से पलते थे और वेतन लेते थे। इसके साथ ही सैकड़ों अनाथों, बिधवाओं, गरीबों अतिथियों और फ़कीरों आदि को प्रतिदिन भोजन मिलता था। देखो तारीखे ख़मीस दयार बकरी।

इनके सिवाय और कई आगन्तुओं को भोजन वस्त्र मिलता था सो कहां से मिलता था? यदि इन सब के दोनों समय के

भोजन खाने और पकाने के बर्तनों पर विचार किया जावे तो सोचो कितने होंगे और पकाने परोसने वाले कितने होंगे ? क्योंकि था तो राज्य ही !

३—बुखारी की किताबुल् जिहाद् बाब गुज़वह उ०द में अन्स बिन मालिक ने कहा है कि आयशा के पांव में सोने की पाजेबें थीं बस. सोचो कि जब भूखे माता पिता की बेटियों के पांव में पाजेब हों तो क्या हाथ और गले का भूषण कुछ न होगा ? और फिर ऐसे बहुमूल्य भूषण के योग्य अच्छे २ वस्त्र भी होंगे ही. जैसा कि अभी पिछले दृष्टान्तों में स्वयं आयशा ने कहा है कि– मैं बन ठन कर अतर तेल लगाकर हज़रत के पास जा बैठी । भला जब उपवास परक आयशा की हदीसों के अनुसार रसूलल्लाह और बीबियां भूखी रहती थीं तो यह अतर फुलेल और अन्य अनावश्यक भण्डार तथा वस्त्रादि कहां से आया होगा। और फिर रसूलल्लाह के नौ महल पक्के (जिन में नौ बीबियां रहती थीं) और रसूलल्लाह जैसा समान व्यवहार करने वाला-जिसका आवश्यक परिणाम यह है कि सबको सबके बराबर ही मिलता होगा इसी लिये वही बात कहनी पड़ती है कि जो औरतें किसी विशेष राजनैतिक या व्यापारिक उद्देश्य से लाई गई हों उनको खाने पाने से भी तंग रखा जाये यह ठीक नहीं इसलिये इसे असत्य और अनुचित ही समझना चाहिये ।

अब रसूलल्लाह के निजि व्यय पर भी दृष्टि डाल लो-सब विद्वान् ऐतिहासिक इस विषय में सहमत हैं कि उनको सुगन्धित द्रव्यों और मिठाई से बहुत ही प्रेम था । प्रत्यक्ष है कि जिस आदमी को इन दोनों से प्रेम हो वह न तो बुरा खाना खा सकता है और नाहीं बुरा पहिन सकता है । 'इब्ने माजह' देखिये तो मालूम होगा

कि रसूल के लिये हर समय गरम हरीरह चूल्हे पर तय्यार रहता था। बुख़ारी में लिखा है कि रसूल के पीने का पानी दो पड़ाव (बैत सक़िया) से ऊंटों द्वारा आया करता था। इसलिये जिसके लिये पानी ३०-४० कोस से प्रति दिन आता हो और वह दानी भी हो, जो घरवालों तथा अभ्यागतों को पिलाकर पीता हो तो इससे समझ लो क्या कुछ व्यय होता होगा। परन्तु यह ध्यान में रहे कि क़ुरान की-'कुल् मिन् तैयिबाते मा रज़क़नाकुम् -जो हमने तुमको दिया है उसे अपने उपभोग में लाओ, इस आज्ञा के अनुसार रसूलल्लाह के लिये यह सब चीजें हलाल अर्थात् भोग्य थीं और रसूल उनको उचित प्रकार से अपने काम में लाते थे लम्पट और विषयी हो कर नहीं भोगते थे क्योंकि शासकीय आवश्यकता और सुन्दरता बनाये रखने के लिये ऐसी चीजें हराम अर्थात् निषिद्ध न थीं। इससे सिद्ध होता है कि बीबियों की दरिद्रता और निर्धनता की कथायें सर्वथा मिथ्या हैं और रसूलल्लाह के अपमान का कारण हैं इसलिये निकाल डालने के योग्य हैं।

रसूल का राज्य परिमाण और उनका निजी व्यय

इस विषय में हम ने 'अल् अतीयात' नामक पुस्तक लिखी थी जिस में रसूलल्लाह के हर प्रकार के दान और जागीरें, स्थान आदि के पूरे पते के साथ ब्योरे वार लिखी गई थीं, साथ ही यह भी लिखा था कि बीबियों के गुज़ारे के लिये कौन कौन गांव और कितनी २ आमदनी निर्धारित की हुई थी तथा रसूल के निजी व्यय के लिये कौन कौन गांव, बाग़ तथा अन्य चीज़ों का क्या २ प्रबन्ध था, उनका लिबास कैसा था —किस प्रकार रहते सहते थे इत्यादि सब बातों का अच्छे प्रकार लिख दिया था। परन्तु शोक है कि हैदराबाद (दक्षिण) के मुसल-

मानों की बेईमानी से सब के सब कागज़ जला दिये गये। जिस का हमें आज तक बड़ा भारी शोक है इस लिये अब अपने मस्तिष्क से ही जो कुछ कि स्मरण शक्ति में रखा है पुस्तकों के प्रमाणों से यत्किञ्चित् उद्धृत करते हैं।

रसूल का राज्य विस्तार-

†पूर्व में-यमन के पांच ज़िले (सूर, मस्कत, अमान, अल्कनान, अल्कारह,) पश्चिम में—हजाज़ के ११ ज़िले (मक्कह, मदीनह, मखह, जद्दह, निजरान, यादियं कुरा, खैबर, तकार, पेलह,) उत्तर में- हजाज़ के दो ज़िले (बनीअसद, बनीते) * दक्षिण में—हज़र मौत, महा, मुसीरह, जहीरह। मध्य अरब में—हजाज़ के चार ज़िले (ताइफ, यमामह, दराअह, आमीर) देखो -शिब्ली कृत अलफारूक़, नक़्शह मफ़्तूहाते रसूल।

ये चौबीस ज़िले रसूल के राज्य में थे इन में कई लाख मनुष्यों की आबादी थी और इन में १ लाख चौदह हज़ार आदमी रसूलल्लाह (मुहम्मद) के जीवन काल में ही मुसलमान बन चुके थे। इन प्रान्तों से लाखों की आमदनी होती थी और उसके सिवाय दान पुण्य, जुर्माना, जंगलात आदि की आमदनी जुदा थी और पैलिस्टाइन वा बैतुल् मुक़द्दस् जेरासलीम जो कि शाम प्रदेश के भाग हैं इनके कई ग्राम भी रसूल के शासन में थे जो कि शिब्ली साहिब ने 'मफ़्तूहाते रसूल' में नहीं लिखे बल्कि बड़ी कृपा

†—वर्तमान जुग्राफ़िया के अनुसार यह देश दक्षिण में हैं।
(अनुवादक)

*—वर्तमान जुग्राफ़िया के अनुसार यह प्रान्त पूर्व में हैं।
(अनुवादक)

की कि शाम देश के सभी प्रान्त हज़रत उमर के जीते देशों में लिखदिये-पर वास्तव में सत्य यह है कि रसूल ने कई सहाबह को पैलस्टाईन और जैरोसलीम की बहुत भूमियें जागीर में दे रखी थीं जैसा कि लखनौ के मौलवी अब्दुश्शकूर ने 'असदुल् ग़ाबह' के अनुवाद में लिखा है। इससे सिद्ध है कि उपरोक्त शाम आदि देशों के कई स्थान भी रसूलल्लाह के अधिकार में आये हुए थे जो कि शिबली से किसी कारण नहीं लिखे जा सके।

रसूल के निजी खर्च और जागीर के सम्बन्ध में अल्लामह सैय्यूती ने सूरत हश्र की आयत-मा अफ़ा अल्लाह() की व्याख्या में तथा इमाम नूदी ने हदीस मुस्लिम की व्याख्या में आयशा की हदीस पर विचार करते हुए लिखा है कि—

१—अन्सार ने शुष्क भूमियें हज़रत को दान में दी थीं।

२—अल्लामह मख़ीरीक़ बनी अल् नज़ीरी ने उहद की लड़ाई में मुसलमान होने के बाद सात बाग़ रसूल को दे दिये थे जिन के नाम यह हैं—मीसब, साफ़ियह, दलाल, हस्ना, बरक़ह, अवाफ़, उम्म इब्राहीम का चश्मा।

३—बनी अल् नज़ीर की भूमियें—जब यह लोग देश त्याग कर चलने लगे तो एक ऊँट सामान और आवश्यक वस्तुओं को लादकर शाम देश की तरफ़ चल दिये तत्पश्चात् उनके हथियार, सामान, घोड़ा खच्चर, ऊँट, मकान, भूमि आदि यह सब कुछ रसूलल्लाह के हाथ आया और उन्होंने कुछेक चीज़ें कई एक साथियों में भी बाटीं। जो उनके बाग़ बागीचे थे वह तथा जो भूमियें थीं उन में खेती कराके रसूलल्लाह अपना, अपनी स्त्रियों का तथा अपनी सन्तान का गुज़ारा करते थे।

४—ख़ैबर के क़िले और भूमियें--क़िला बर्तख़, क़िला सलालम, इनकी भूमियें तथा ग्राम कतबह, वजदह। यह युद्ध में संधि के नियमों के अनुसार प्राप्त हुए थे और शेष भूमियें तथा बाग़ रसूल ने अन्सार और देश त्यागने वालों को पुरस्कार में दे दिये थे जैसे--ग्राम समग़ हज़रत उमर को दिया था जो कि उन्हों ने अपनी ख़िलाफ़त में अपनी सन्तान के नाम लिख दिया था और हफ़सह को उसका मालिक बनाया था। चश्मों के पानी से सैराब होने वाली भूमियें अपनी स्त्रियों को दी थी परन्तु यह भूमियें आयशा और हफ़सह को ही मिलीं जो कि बाद में उनके सम्बन्धियों को मिलीं और शेष बीबियों की भूमियें हज़रत उमर ने उनसे लेलीं और उसके बदले में उनके निर्वाह के लिये कुछ रुपया निश्चित कर दिया था।

५—ख़ैबर की आमदनी—परगना ख़ैबर की सारी आमदनी जो कि कई हज़ार दीनार थी।

६ - वादिये कुरा—यहां के लोगों ने अपनी आमदनी का चौथा भाग देना निश्चय किया और रसूल से सन्धि कर ली थी।

देखो—शरह मुस्लिम नूदी। जिल्द २ किताबुल् जिहाद व-स्सैर बाब कैफ़ियत किस्मते ग़नीमत। रूफ़ा ९२ और दुर्रे मन्सूर सैय्यूती-जिल्द ६। सूरतुल् हश्र।

७--फ़दक के लोगों ने अपने प्रान्त के सब ग्रामों की आधी आमदनी देना स्वीकार करके हज़रत से संधि कर ली थी जो कि अबू दाऊद को किताबुल् ख़िराज के अनुसार ४० हज़ार दीनार वार्षिक थी। याक़ूत हम्वी ने 'मअजमुल बल्दान, में फ़दक के सम्बन्ध में लिखा है कि वहां चश्में बहुत हैं इसी लिये वहां के बाग़ प्रसिद्ध हैं और भूमियें बहुत उपजाउ हैं।

इस तरह यह सब भूमि और बाग़ तथा आमदनी रसूल की अपनी जागीर थी और उनके निजी खर्च के लिये निश्चित थी। इस सब को 'फ़ै' के नाम से पुकारा जाता है। इस निश्चित आय के अतिरिक्त भेंट पूजा और दक्षिणा आदि जुदा थीं जो कि समय २ पर भिन्न २ देशों के धनी मानी लोग दिया करते अथवा भेजा करते थे। कितना अन्धेर है कि जो इतने प्रदेशों का स्वामी हो और लाखों का आयव्यय रखता हो उसी की बीबियां भूखी रहें और उपवास रखने में विवश हों--बिल्कुल झूठ और निरा लाञ्छन!

हां, 'अमीर' के कथनानुसार तो जिन का उद्देश्य ही रसूल को नंगा, दरिद्र और निर्धन सिद्ध करने का है, तथा रसूल और उन की सन्तान संसार की आवश्यक वस्तुओं में नहीं फंसे और लोगों की प्रार्थना करने पर भी किसी को कुछ न दिया यहां तक कि बीबी सैयदह को एक दासी तक न रखदी। इस प्रकार की सब हदीसें जो कि बीबियों की निर्धनता के विषय में लिखी गई हैं--सब मिथ्या और कपोल कल्पित हैं।

आक्षेप नं०- १२

आयशा! मैथुन के विचार में मग्न रहती थी।

"आयशा ने कहा कि मैथुन कर चुकने के बाद स्नान करके भी रसूलल्लाह मेरे शरीर की गर्मी लेते रहते थे-चिपटे रहते थे परन्तु मेरा स्नान इसके बाद ही होता था०" इब्ने माजह--जिल्द १ बाब फिल् जनबे०

देखिये! हदीस वाले ने किस चक्कर से आयशा की निर्लज्जता दिखाई है और रसूलल्लाह पर भी शत्रुता का हाथ बढ़ाया है क्योंकि यह तो स्पष्ट ही है कि शरीर की गर्मी लेना बिना अच्छी

तरह चिमटने के हो ही नहीं सकती ! खुदा ही हदीस वाले से न्याय करे । हमें आश्चर्य है कि रसूल के महल में इतनी बीबियां और दासियां थी परन्तु किसी और के साथ रसूल का ऐसा बर्ताव न था, यदि था तो केवल आयशा से ! इससे मालूम होता है कि सारे अरब देश में आयशा के सिवाय और कोई बीबी न थी जो ऐसी बेशर्मी की बातें खोल २ कर कहा करती बल्कि यह समझना चाहिये कि ऐसा निर्लज्जतापूर्ण सुहाग भाग किसी और स्त्री के भाग्य में नहीं था । यदि हम यह स्वीकार करलें कि शायद इस प्रकार की हदीसें राफ़िज़ी लोगों ने घड़ी हैं और निर्लज्जता से लेखों में फैलाई और उनसे अहले सुन्नत ने सीखीं तो यह भी ठीक नहीं जचती अर्थात् एक तो इन हदीसों में रसूलल्लाह की निन्दा है जो कि राफ़िज़ी (शीआ) लोगों में हराम मानी गई है । दूसरे जब अहले सुन्नत आयशा के भक्त और आज्ञाकारी थे तो उन्होंने ऐसी अनिष्ट बातों को क्यों स्वीकार किया ? तीसरे यह कि जब यह हदीसें सत्य हैं तो इनका अस्तित्व शीआ की किताबों में भी मिलना चाहिये परन्तु उनके यहां सर्वथा नहीं । इस लिये सिद्ध हुआ कि ह० आयशा की शत्रुता के कारण ही हदीस बनाने वाले ने ऐसी कृपा की है । आशा है ईश्वर कृपा से हमारे अहले सुन्नत विद्वान् अन्य हदीसों का भी पता लगावेंगे ताकि उन झूठी हदीस बनाने वालों की अन्य हदीसें भी त्यागी जासकें ।

आक्षेप नं०—१३

रसूल आयशा के पीछे भागे ।

"आयशा ने कहा कि हज़रत मेरे पीछे भागे परन्तु मैं आगे निकल गई । सार--दूसरी हदीस में लिखा है कि जब आयशा भारी होगई तो दौड़ में हज़रत आगे निकल गये

और कहने लगे-हे आयशा ! यह पहिली दौड़ का बदला है'' इत्यादि। इब्ने माजह—जिल्द २ किताबुन्निकाह । बाब हुस्ने मुआशिरतु न्निसा सफ़ा ५२ । (अनुवाद बकार निवाज़)।

इस हदीस में पहिली बात यह विचारणीय है कि जब पिछली आलोचना में लिखी गई उपवास सम्बन्धी हदीसों की अधिकता से आयशा का भूखा रहना सत्य है तो भूखे पेट वाली मोटी कैसे हो गई ? जिससे सिद्ध हुआ कि रसूलल्लाह की निर्धनता और बीबियों का भूखा रहना बिल्कुल मिथ्या है और जो हदीसें यह सिद्ध कर रही हैं वह प्रामाणिक नहीं है। दूसरे यह कि इस सुहागभाग की अधिकता से परिणाम यह निकलता है कि रसूलल्लाह का पृथ्वी पर आना केवल आयशा को दिल्लगी के वास्ते ही था और आयशा को प्रसन्न रखना ही उनके रसूल बनने का मुख्य उद्देश्य था इस लिये रसूल की लड़ाइयां, सेनाओं के प्रबन्ध, विरोधियों से बदले, अपराधियों का दण्ड, साधु फ़कीरों वा अतिथियों का मान, तौहीद और इस्लाम का प्रचार तथा क़ुरान की शिक्षा और नमाज़ आदि आदि के वृत्तान्त सब मिथ्या और यह सुहाग भाग की हदीसें सच्ची। भला यह तो सोचिये कि इस हदीस से कौनसा सिद्धान्त मालूम हुआ ? और दूसरे यह कि यदि रसूलल्लाह और आयशा में ऐसी घटना हो भी गई हो तो यह बात लिखने के योग्य नहीं थी। बूढ़े रसूल को जवान बीबी के साथ दौड़ा कर क्या रसूल की शान—महिमा बढ़ी ? दिल में सोचो कि यह क्या करते हो, क्या चाहते हो ?

''आयशा ने कहा कि जब ख़ैबर की लड़ाई से हज़रत लौटकर आये तो वह दूल्हा—बनड़ा बने हुए थे और सफ़ियह को ब्याह कर लाये थे। उस समय मैं भी भेस बदल कर सफ़ियह

को देखने के लिये गई परन्तु हज़रत ने मेरी आंख से मुझे पहचान लिया तब मैं भाग खड़ी हुई। यह देख रसूलल्लाह भी मेरे पीछे दौड़े और दौड़ कर मुझे गोद में उठा लिया और कहने लगे तूने क्या देखा। मैंने कहा मुझे छोड़ दीजिये. वह (सफ़ियह) एक यहूदन है० इत्यादि। इब्नेमाजह। जिल्द २। सफ़ा० ८२।

साधारण दृष्टि से देखा जावे तो इस हदीस से न तो आयशा पर कोई आक्षेप आता है और ना ही उनकी कोई मान हानि प्रतीत होती है और ना ही रसूलल्लाह का अपमान। परन्तु ईमान की ऐनक से देखा जाय तो आयशा बड़ी उद्दण्ड मालूम होती हैं और रसूलल्लाह कुरान के शत्रु सिद्ध होते हैं। तात्पर्य यह कि आयशा ने कुरान की आज्ञा के विरुद्ध मुसलमान स्त्री को यहूदन कहा और रसूलल्लाह ने यहूदन से निकाह किया परन्तु कुरान में इसका स्पष्ट निषेध किया है जैसे—ला तन्किहुल् मुश्रिकाते अर्थात् मत निकाह करो गैर मुस्लिम स्त्री से।

यह सिद्ध है कि कई एक बड़े प्रसिद्ध सहाबह ने और अन्य कई उच्च कोटि के व्यक्तियों ने रसूलल्लाह की मृत्यु के बाद यहूदनों को अपने घरों में डाला और बिना मुसलमान किये अपनी बीबीयां बनाकर सन्तान पैदा करते रहे और कई एक की वंश-परम्परा तो उन्हीं यहूदनों की सन्तान से चली है, परन्तु यह बातें दिल दुखाने वाली हैं इसलिये हम उनके नाम नहीं बताते परन्तु हां, निवेदन करते हैं कि ऐसी सब मिथ्या कथाओं को इस्लामी पुस्तकों में से निकाल डालिये।

आक्षेप नं०—१४

यज़ीद ने चाहा कि आयशा के साथ निकाह कर लूं।

"नीच यज़ीद इब्ने मुआवियह ने इच्छा की कि आयशा को अपनी बीबी बना लूं इसलिये उसको कुरान की यह आयत सुनाई—

वलातन्किहु अज्वाजहु मिम्बादिही अबदन्।

अर्थात् रसूल की मृत्यु के बाद उसकी बीबियों से निकाह न करना। तब यह अपनी इस इच्छा से रुक गया इत्यादि" मिश्कात मुहब्बत जिल्द १ बाब १। सफा २२६।

हदीस लेखक ने यज़ीद का रसूलपर उपकार वर्णन किया है और आयशा को लज्जित तथा रसूलल्लाह को अपमानित किया है। हदीस वाले ने यह तो क्यों कहना था कि बनी उमैयह के खिलाफत काल में रसूलल्लाह का यही मान रह गया था कि रसूलल्लाह की बुढ़िया बीबी (आयशा) को भी रसूल का अपमान करने के विचार से एक छोकरे ने ताका। इतना कह कर भी यज़ीद की बड़ाई कर गया कि उसने कुरान की आज्ञा सुन लेने के बाद इस महान् पाप के करने का विचार छोड़ दिया। यज़ीद को जन्नत का अधिकारी सिद्ध करने के यह प्रयत्न किये गये हैं। इमाम बुखारी ने अपनी जामेअ में यज़ीद के लिये 'मग़फ़ूर'-क्षमा किया हुआ लिख ही दिया।

नोट—और देखिये बाब का उपक्रम तथा नामकरण क्या विचित्र किया है !(१)—सूरत अहज़ाब रुकू ७।

रसूल की महिमा परन्तु वास्तव में यजीद की महिमा की है और रसूल तथा आयशा की निन्दा की है। यही ढंग बहुत से हदीस लेखकों का है कि उपक्रम तो कुछ करते हैं और लिखते कुछ हैं इस प्रकार के लेखकों में इस्माईल का बेटा मुहम्मद 'बुखारी' सब से प्रथम है। सच तो यह है कि हदीस कहने वाले की बुद्धियें और हदीसें संगृहीत करने वालों का दिल बदल चुका था अच्छाई बुराई और खरे खोटे की पहिचान नहीं रही थी जो चाहा बक दिया। कृपया इसे निकाल दीजिये।

आक्षेप नं० १०

आयशा और हफसह ने रसूल का धोखा दिया।

जिन जिन स्त्रियों ने रसूलल्लाह के सम्भोग में आने से इन्कार किया और खुदा की दुहाई मचाई- अऊजा बिल्लाहे मिन्क, यह कहा उन स्त्रियों की कुल संख्या २० है। आयशा ने हफसह से कहा कि तू हिना बन्द कर और मैं सिर के बाल कंधे पर डालती हूं जब हजरत एकान्त में करना चाहें तो खुदा की दुहाई मचा दो। और अऊजो बिल्लहे मिन्क, कह दो० इत्यादि'' मदारिजुन्नबुव्वत जिल्द २० पैगम्बर की बीबियों का वर्णन। (शेख अब्दुलहक मुहद्दिस)

एक- २० स्त्रियों का दुहाई मचाकर रसूलल्लाह से पीछा छुड़ाना यह सिद्ध करता है कि रसूल साहिब अपनी असभ्यता के कारण काफी बदनाम थे जिससे कुरान का यह कथन मिथ्या या प्रक्षिप्त मालूम होता है कि--इन्नक लअला खुलक अजीम- अर्थात् तू सारी सृष्टि में अच्छा है। दूसरे--दो स्त्रियों का कपटी होना और तिस पर नबी के महल में रहकर रसूल की बीबियां कहलाना। इससे तो

रसूल और उनकी बीवियों का अपमान सिद्ध होता है। इसलिये निकाल डालने के योग्य है। एक और हदीस मे लिखा है कि

"आयशा ने कहा कि हज़रत जब यात्रा करते तो अपनी बीवियों के नाम पर कु़आं-काग़ज़ डालते थे। एक बार ऐसा हुआ कि काग़ज़ मेरे और हफ़सह के नाम पर निकला और हम दोनों रसूलल्लाह के साथ गईं। हज़रत का यह स्वभाव था कि यात्रा मे चलते २ मुझसे बात चीत करते। हफ़सह इसे सहन न कर सकी और एक दिन मुझ से बोली कि आज ऐसा करो कि तुम मेरे ऊंट पर सवार हो जाओ और मैं तुम्हारे ऊंट पर सवार हो जाऊं, फिर देखो क्या तमाशा होता है-ऐसा दृश्य देखोगी जो तुमने आज तक नहीं देखा और मैं भी ऐसा दृश्य देखूंगी जो मैंने भी कभी नहीं देखा। बस, इस बात को मैंने भी सहर्ष स्वीकार कर लिया और निश्चय के अनुसार एक पड़ाव पर एक दूसरे के ऊंट पर चढ़ गईं। मार्ग में हज़रत मेरे ऊंट के पास आए और सलाम किया परन्तु उस ऊंट पर तो हफ़सह सवार थीं तब मेरे ऊंट की तरफ़ न आकर हज़रत अपनी सवारी की तरफ़ चले गये जब प्रातःकाल पड़ाव पर पहुँचे तो मैं (आयशा) ने अपने दोनों पांव मिरचिया घास में डाल दिये और अपने आप को कोसने लगी कि हे खुदा! मुझे बिच्छू काटे या सांप डस जावे तो अच्छा हो ताकि मैं हज़रत से बात न कर सकूं" इत्यादि। बुख़ारी किताबुन्निकाह बाबुल् .कुर्अतु बैनन्निसाए।

हम तो अन्ध विश्वास से यह मानने को तैय्यार हैं कि आयशा ने काटने वाली घास में पैर डाल दिये जिसमें कि प्रायः बिच्छू और सांप रहते हैं जैसे चन्दन के वृक्षों और केवड़े के बनों में। इस पर भी आप को किसी विषैले जीव ने न काटा—यह

निश्चय से उनकी करामात थी। परन्तु जब यह देखते हैं कि दोनों बीबियां न केवल रसूल को चकमा देती थी बल्कि एक दूसरी के साथ भी चालें चलती रहती थीं और हर प्रकार से बहाना करके पति के पास रहना चाहती थी तथा उनको धोखा भी देती थीं तो उस समय सिवाय 'चुप' के और बात नहीं बनती इसलिये यह निकाल डालने योग्य है।

नोट—अहले सुन्नत के बहुत से तफसीर करने वाले विद्वानों का निश्चित मत है कि बीबियों को निर्दोष कहने वाली आयत रसूल के लिये आई है बल्कि रसूल की सन्तान का भी उसीसे पवित्र या निर्दोष होना सिद्ध होता है। बहुत अच्छा ! हम बिना तर्क किये इस मन्तव्य को मानने के लिये तैयार हैं परन्तु आपके माननीय ग्रन्थ जो दोषारोपण कर रहे हैं उसका निवारण कैसे हो सकता है ? हां ऐसी हदीसों के निकाल डालने के बाद यदि बीबियों को निर्दोष कहने वाली आयत रसूल की बीबियों के वास्ते पाई जाये तो ठीक हो—परन्तु वर्तमान अवस्था में तो यह कथन सर्वथा अनुचित और मिथ्या ही मालूम होता है क्योंकि जिनके विषय में खुदा निर्दोषता वर्णन करे वह अपनी कार्यसिद्धि के लिये इस प्रकार का निर्लज्जतापूर्ण व्यवहार नहीं कर सकते। तोबह !

अब सोचो कि जो स्त्रियां संसर्ग की रात से जुदा हो जाती हैं और धैर्य तथा संयम से बरसों बिता देती हैं बल्कि कई एक तो अपनी आयु लगा देती हैं और दम नहीं मारतीं तथा जो पिछले समयों में होती रहीं और आज भी मौजूद हैं—उनको किस श्रेणी में समझा जावेगा ? शोक है कि यह हदीस ईमान का

सत्यानाश करने वाली है और इसमें कोई सिद्धान्त भी नहीं निकलता इसलिये इसको दियासलाई (आग) दिखानी चाहिये।

आक्षेप नं० १६

रसूल ने सब बीबियों को तलाक़ देना चाहा था

आयशा ने कहा कि एक बार हज़रत ने सब बीबियों को त्याग देने की इच्छा की और सबसे पहिले मुझे ही कहा"। नसाई जिल्द २ सफ़ा १३४।

देखिये. कहां तो हज़रत का आयशा पर लट्टू होना और कहां यह उदासीनता कि सब से पहिले तलाक़ का अधिकार दिया भी तो उसी चाहती बीबी को! इस से सिद्ध है कि मामला इसके विरुद्ध है।

"हज़रत उमर ने कहा कि रसूल ने (मेरी बेटी) हफ़्सह को तलाक़ दी और फिर तोड़ दिया।" इब्ने माजह। जिल्द २। बाबुत्तलाक़—सफ़ा ७०।

इस हदीस पर विचार करो कि बीबियों की पवित्रता वाली आयत इन ही स्त्रियों के विषय में उतरी थी जिन्होंने रसूलल्लाह जैसे महात्मा और दयालु पति को ऐसा दुःखी किया हुआ था कि वह न केवल तलाक़ देने के लिये ही उद्यत हो गये बल्कि तलाक़ दे भी दिया। इस लिये जिस पति की महिमा में ख़ुदा ने भी यह कहा हो कि—तू सब सृष्टि में उत्तम है, वह असभ्य और निकृष्ट हो यह हो, हीं सकता परन्तु उनकी प्रतिष्ठा के यही योग्य है कि हम उनकी बीबियों की भी स्तुति सुने। इसलिये ऐसी हदीसों का चाहे वह लाख सत्य हों निकाल डालना ही उचित है।

आक्षेप नं०—१७

आयशा हज़रत को सच्चा रसूल नहीं मानती थीं।

'आयशा ने कहा कि मैं उन स्त्रियों से खंसाती थी जो अपना आप पुरुषों को दे दिया करती हैं अर्थात् जो स्त्रियें बिना कुछ रुपया पैसा लिये हज़रत को अपना आप दे देती थीं मैं उनके लिये अपने दिल में कहा करती थी कि- भला यह भी कोई बात है कि स्त्री अपने आपको पुरुष के आगे रख दे। इतने में सूरत अहज़ाब की यह आयत उतरी कि तुर्जी मन् तशाअ- जिसको चाहो पास रखो और जिसको चाहो अलग (तलाक) करदो मैं ने चौंककर हजरत से कहा कि यह क्या बात है कि जैसी आपकी इच्छा होती है वैसी ही खुदा आयत उतार देता है" इत्यादि। बुखारी कितावुत्तफसीर बाब कौलहु तुर्जी मन् तशाअ।

'उर्वह बिन हश्शाम ने कहा कि हकीम की बेटी खौलह उन स्त्रियों में से थी जिन्होंने अपने आप रसूलल्लाह को दान कर रखा था। एक बार ह० आयशा ने खौलह से कहा कि- ऐ औरत तुझे लज्जा नहीं आती कि तू अपने आपको किसी अन्य पुरुष के अर्पण किये बैठी है! इतने में आयत 'तुर्जी मन् तशाअ' उतरी और मैंने कहा या रसूलल्लहा! खुदा कितनी जलदी आपकी इच्छानुसार आयत भेज देता है,, बुखारीकिताबुन्निकाह बाब हल् लिल् मिअ ते०।

हम तो ऐसी हदीसों के विषय में यह कहने को तैयार हैं कि जो आदमी अपने आपको खुदा में लीन कर देता है उसकी प्रत्येक चेष्टा- खुदा की चेष्टा खुदाई काम हो जाती है इसी उद्देश्य से यह

आयत उतरी जिसकी सत्यता ह० आयशा ने स्वीकार की परन्तु विरोधी दूसरी ओर जाता है और कहता है कि आयशा ने इस क़ुरानी आयत को अपनी इच्छा के विरुद्ध पा कर रसूल को उपालम्भ दिया है कि जैसी आपकी इच्छा होती है खुदा भी झट वहीं आयत भेज देता है अर्थात् आपकी रिसालत झूठी है (झूठे रसूल हो) इसी लिये जो आप करना चाहते हैं खुदा के नाम से वैसी ही आयत घड़ लेते हैं।

देखिये, क़ुरान की गेन्द क्या गन्दी हो रही है इस हदीस में रसूलल्लाह की सम्मति के अनुकूल क़ुरान का उतरना सिद्ध होता है तथा मुनाफ़िक़ के जनाज़े की नमाज़ न पढ़ने में जो आयत उतरी उससे पैगम्बर पर आक्षेप और ह० उमर की इच्छा की अनुकूलता पाई जाती है। इसलिये ऐसी झूठी कहावतों से अल्लाह की मूर्खता का विश्वास दृढ़ होता है। हमें अपने अहले हदीस भाइयों से पूरी आशा है कि वे इसका कारण अवश्य बतावेंगे। शोक है कि क़ुरान को खुदा का कलाम कहा जाता है और हदीसों में 'पुरुषों की इच्छानुसार कहा गया' सिद्ध हो रहा है, फिर इस लंपट में ह० आयशा पर असभ्यता का दोष भी उपस्थित होता है। कृपया इन निकम्मी बातों को निकाल बाहिर कीजिये।

आक्षेप न० १८

रसूल की बीबियों ने कपट किया

"आयशा ने कहा कि रमज़ान के अन्तिम दिनों में हज़रत एकान्तवास किया करते थे। बस, उन दिनों हफ़सह ने तम्बू लगाने की मुझ से अनुमति मांगी और मैंने देदी। तब हफ़सह ने तम्बू खड़ा कर दिया परन्तु उनकी देखादेखी ज़ैनब ने भी तम्बू लगा दिया। जब प्रातःकाल हुआ और हज़रत अपने

तम्बू से बाहर निकले तो आपने देखा कि बहुत से तम्बू लगे हैं तब हजरत ने लोगों से पूछा कि यह क्या मामला है ? लोगों ने कहा कि- ऐसी २ बात है। तब हजरत ने कहा कि क्या ये तम्बू पुण्य के विचार से खड़े किये हैं या पाप अर्थात् जिद के विचार से खड़े किये मालूम होते हैं'' ? बुखारी किताबुस्सौम बाब एतिकाफुन्निसा।

''आयशा ने कहा कि हजरत ने एतिकाफ-एकान्त वास करने का निश्चय किया और वहां चले गये जहां एकान्त वास करना चाहते थे। जब बाहिर निकले तो देखा कि मेरे, हफ्सह और जैनब के तम्बू लगे हैं। हज़रत ने मित्रों से कहा कि क्या तुम समझते हो कि उन्होंने पुण्य के विचार से यह तम्बू लगाये हैं ? इत्यादि'' बुखारी, किताबुस्सौम, बाबुल अख्बीता फिल मस्जिदे।

सभी जानते हैं कि जिसप्रकार पुरुषों में अपनी स्त्री पर दृष्टि डालने वाले पुरुष से द्वेष स्वाभाविक होता है उसी प्रकार स्त्रियें स्वभाव से ही सौकन पने से जला करती हैं इसलिये यदि स्त्री होने के कारण रसूल की बीबियों से भी ऐसी भूलें होगई हों तो आश्चर्य ही क्या है इसलिये यह बात धिक्कार करने के योग्य भी नहीं है। परन्तु इतना अवश्य है कि यह रसूल जैसे महा पुरुष की बीबियां हैं जिन पर बगुला भक्ति भक्ति में कपट का दोष लगाना इस्लाम के लिये अच्छा नहीं है बल्कि ऐसे स्त्री निर्वाचन से तो रसूल की बे समझी पाई जाती है कि-क्यों ऐसी कपटी स्त्रियों को अपनी बीबी बनाया ! यदि बना भी लिया था तो तलाक त्याग क्यों नहीं दिया ? तात्पर्य यह है कि इन बीबियों की निन्दा से इस्लाम और इस्लाम के रसूल भी निन्दित हुए बिना नहीं रह

सकते। इसलिये यदि इन अनर्थ कारी बातों को निकाल दिया जावे तो अच्छा ही है।

आक्षेप नं० १९.

आयशा और हफ़सह ने रोज़े तोड़ दिये

"उर्वह ने कहा कि मुझ से इमाम जुहरी ने कहा कि मुझ से आयशा ने कहा कि मैं और हफ़सह रोज़े में था कि हमारी आंखों ने वह खाना देखा जो हमें बहुत अच्छा लगता था। बस हमने थोड़ा २ लेकर खा लिया इतने में हज़रत आ पहुँचे तो हफ़सह ने मुझ से पहिले ही जल्दी से पूछ लिया क्योंकि वह अपने पिता उमर की बहादुर लड़की थी। कहने लगी या रसूलल्लाह हम दोनों ने रोज़ा रखा था परन्तु हमारे सामने ऐसा खाना आगया जो हमें बहुत स्वादिष्ट लगता था इसलिये हमने वह खा लिया है। हज़रत बोले कि इसके बदले तुम दोनों एक २ रोज़ा रखलो इत्यादि" तिरमज़ी किताबुस्सोम बाब माजआ फ़ी ऐजाबल् क़ज़ा अलैहि।

सम्भव था कि हदीस घड़ने वाला बिना किसी का नाम लिये टूटे हुए रोज़े के प्रायश्चित्त के विषय में व्यवस्था दे देता परन्तु ऐसा करने से नबी की बीबियों पर दोष नहीं आता था और जब तक नबी की बीबियों पर दोष न लगा ले, इसको चैन कहां! इन ही हदीसों के आधार पर तो विरोधी लोग यह कहते हैं कि यह भूखे घरों की बेटियां भरे घर में आ पेट पर से दीन ईमान को कुर्बान कर दिया करती थीं। ऐसे छोटे दिलवाली स्त्रियों को बीबी बनाकर रसूल ने भारी भूल की। कृपया ऐसी भूलों को निकाल डालिये!

आक्षेप नं० २०

आयशा ने हज़रत उस्मान को मरवा दिया था।

"आयशा ने उस्मान के लिये यह कहा था कि धिक्कार है नासल पर. यह यहूदी निश्चय से काफ़िर है. इसे कत्ल करो। खुदा इसे मारे, इसने कुफ्र-पाप किया"। रौज़तुल् अहबाब। जिल्द ३। छापा अनवारे मुहम्मदी सफ़ा १२।

इसी पुस्तक के सफ़ा १५ पर आगे चलकर यह भी लिखा है कि-

"उम्मे सलमह ने कहा कि-- हे अबूबकर की बेटी (आयशा)! तू उस्मान की हत्या का विचार छोड़ दे, वह बड़ा अच्छा आदमी है और खलीफ़ा है तू व्यर्थ ही उस पर क्रोध और रोष कर रही है तथा उसको काफ़िर कह कर मरवाना चाहती है। मुझे बड़ा आश्चर्य है कि तू यह क्या करना चाहती है"।

ऐसा ही अन्य शब्दों में अरबी और फ़ारसी के इस्लामी इतिहासों में लिखा हुआ मिलता है जिनका तात्पर्य यह है कि 'जब जमल के युद्ध में आयशा ने उस्मान को मारने का संकल्प किया और इस काम के लिये सेना लेकर जाने लगीं तो उस समय यह रहस्य खुला कि पहिले तो आयशा-उस्मान के घातकों की पक्षपोषक थी और उनके विचार से सहमत थीं परन्तु बाद में बलवाई लोग जैसे २ उस्मान को काफ़िर समझने लगे वैसे ही वह भी कहने लगी और नासल यहूदी से खलीफ़ा उस्मान की उपमा देने लगीं तथा लानत-धिक्कार देती थी। लेकिन जब उस्मान के कत्ल से काम न चला अर्थात्—हज़रत ज़बीर बिनल अवाम

को खिलाफ़त न पहुँची बल्कि हज़रत अली ख़लीफ़ा हो गये तो पुरानी शत्रुता के कारण आप उन (अली) की हत्या करने का भी संकल्प कर बैठीं जिस पर उम्मसलमह तथा अन्य लोगों ने आपको समझाया भी परन्तु आपने एक न मानी और तलहह तथा ज़बीर आदि की सहायता से जमल का युद्ध छेड़ दिया जिस में आयशा को बुरा तरह हारना पड़ा और दोनों-तलहह तथा ज़बीर इस युद्ध में मारे गये। इस भयंकर युद्ध से इस्लाम में एक ऐसा घरेलू उपद्रव आरम्भ हुआ कि जिसका टालना असम्भव हो गया।

यह घटना अक्षरशः सत्य है जैसा कि जमालुद्दीन ने अपने रौज़तुल् अहबाब में तथा अन्य ऐतिहासिकों ने लिखा है। परन्तु इस समय न तो मारने वाला (आयशा) ही है और ना हो मारा जाने वाला (उस्मान)। इसलिये ऐसी घटना को दुहराने-स्मरण करने से कइयों के मन में शत्रुता और द्वेषादि पैदा हो सकते हैं अतएव समय को ध्यान में रखते हुए इसको भी निकाल बाहिर फेंकना चाहिये।

आक्षेप नं०—२१

आयशा, हज़रत अली की कट्टर शत्रु थी

"आयशा हज़रत अली की शत्रु थी और यहां तक कि उन (अली) का नाम लेना भी अच्छा नहीं समझती थी"। बुख़ारी किताबुल् वज़ू। बाबुल् ग़सल वल् बज़ू।

"हज़रत अली के मरने का समाचार सुनकर आयशा को बहुत प्रसन्नता हुई और इस ख़ुशी में एक लम्बी कविता भी उन्हों ने की"। हयातुल् हैवान (दमीरी रचित)।

यह कविता अप्रासंगिक होने तथा पुस्तक वृद्धि के भय से हमने यहां नहीं लिखी। इन सब बातों से बढ़ कर मुहम्मद बिन इस्हाक ने लिखा है जैसा कि उनकी प्रसिद्ध पुस्तक मग़ाज़िउल् रसूल में पाया जाता है कि-

"इमाम मस्रूक ताबई ने कहा कि—एक दिन मैं हज़रत आयशा की सेवा में उपस्थित हुआ तो उन्होंने अपने गुलाम अब्दुर्रहमान हबशी को बुलाया। जब वह आगया तो मुझसे कहने लगीं कि हे मास्रूक! तुम जानते हो कि मैंने इस गुलाम हबशी का नाम अब्दुर्रहमान क्यों रखा है? मैंने कहा नहीं! उन्होंने कहा अली को कत्ल करने वाले का नाम अब्दुर्रहमान था इसलिये मैंने यही नाम रखना अच्छा समझा" इत्यादि। मग़ाज़िउर्रसूल।

कौन नहीं जानता कि यह घटनायें सर्वथा सच्ची हैं। यथा—आयशा का हज़रत ज़ुबैर को खलीफ़ा बनाने का प्रयत्न करना और अपनी असफलता पर हज़रत उस्मान से शत्रुता तथा उनके घातकों की सहायता करना परन्तु इतनी बड़ी क्रान्ति कर चुकने पर हज़रत ज़ुबैर खलीफ़ा न बन सके तो जमल के युद्ध क्षेत्र में हज़रत अली से झगड़ा करना और हसन हुसैन को मरवाने की चालें चलना इत्यादि तथा और हदीसें भी जो इसी प्रकार के अनर्थ को सिद्ध करती हैं यह सब ऐसे वृत्तान्त हैं जिन के सत्य होने में सन्देह का लेश भी नहीं है। परन्तु इनसे मुस्लिम जाति में द्वेष फैलता है इसलिये इस प्रकार की सभी हदीसों को निकाल बाहिर कीजिये।

आक्षेप नं०—२२

उपद्रव का मूल आयशा है और उसके घर में शैतान के सींग हैं

"उमर के बेटे अब्दुल्लाह ने कहा कि एक बार हज़रत ख़ुतबह--धर्मोपदेश सुनाने खड़े हुए और आयशा के घरकी तरफ़ संकेत करके यह कहा कि--उपद्रव इसी स्थान से उठेगा यही फ़िसाद की जड़ है, यहीं से झगड़े उठेंगे। 'इसी तरफ से शैतान का सींग निकलेगा' 'यह भी तीन बार कहा० इत्यादि" बुख़ारी किताबुल् जिहाद बाबुल मस्जिद इन्द बाब उम्म सलमह।

यदि रसूलल्लाह की यह भविष्यवाणी सत्य है तो इस की यथार्थता को प्रमाणित करने के लिये निम्न लिखित घटनायें उद्धृत की जा सकती हैं यथा-रसूलको ज़हर खिलाना, रसूल की बेटी फ़ातमा का घर जलाना, हज़रत मुहसन का कत्ल करना रसूल की जायदाद का एक मात्र अधिकारी बन बैठना, यह कहना कि रसूल ने मरते समय कोई वसीअत नहीं की, हज़रत उस्मान को मरवाना और जमल में हज़रत अली से युद्ध करना, इत्यादि आयशा के विषय में आक्षेप जनक दोष कहे जासकते हैं परन्तु इनसे लाभ क्या? यद्यपि कुछ शताब्दि पहिले तो ऐसी बातों से राज्य फैलाने में सहायता मिल सकती थी और बड़ा भारी साधन भी समझा जाता था तथापि इस समय यह खोटे पैसे के समान भी मूल्य नहीं रखते, अबतो यही उचित है कि इन चिन-गारियों को बुद्धिमत्ता से बुझादिया जावे।

आक्षेप नं० २३—

इस्लाम को हानि पहुँचाने में नबी की बीबियों ने बढ़कर हाथ दिखाये।

"जैद ने कहा कि एक बार हजरत ने कहा कि---मैंने अपने बाद के लिये बीबियों से बढ़कर और कोई चीज नहीं छोड़ी जो हानि पहुंचाने में उन से बढ़कर हो" इत्यादि। बुखारी। किताबन्निकाह बाब मा यत्की।

हदीस के शब्दों से रसूल का आशय यह मालूम होता है कि सर्व साधारण की स्त्रियों के उपद्रव से बढ़कर और कोई उपद्रव नहीं हो सकता जिसमें काफिर, मुशरिक और मुसलमान सभी सम्मिलित हैं परन्तु खुदा के रसूल का कथन ऐसा नहीं हुआ करता कि जो हजरत आदम से लेकर ह० मुहम्मद तक लाखों और करोड़ों उपद्रव हो चुके हैं और कयामत (प्रलय) तक कई स्त्रियों के उपद्रवों की आशा भी निश्चत है तो ऐसे सामान्य उपद्रवों की विशेषता अपने अनुयायी दल से करना रसूल की बुद्धि और उसकी विचार शक्ति से बहुत दूर की बात है। बल्कि बहुत सम्भव है कि इस हदीस में उन उपद्रवों से तात्पर्य हो जो कि कई एक रसूल की बीबियों द्वारा चलाये गए थे जैसाकि इस हदीस से पहिले लिखे जा चुके हैं। इसलिये आवश्यक है कि सब से पहले हदीस व्याख्याकारों ने आयशा आदि के उपद्रवों के विषय में स्पष्ट शब्दों का प्रयोग किया होगा परन्तु उनके बाद के विद्वानों ने समय संकट देख इस्लाम की रक्षा के उद्देश्य से हदीसो के कई एक वाक्य और शब्दों को बदल दिया और इस प्रकार रसूल के कथन को मिथ्या बना डाला परन्तु उचित तो यह था

कि हदीस को बदलने के स्थान में हदीस को निकाल ही डालते इसलिये अब हम निवेदन करते हैं कि इसे निकाल डालिये।

आक्षेप नं० २४—

आयशा का निकाह १२) रुपये के बदले में हुआ।

कई एक सैर की किताबों में लिखा है कि हज़रत की बीबियों में से हर एक का मेहर-निकाह का मूल्य पांच सौ दिरहम था जैसा कि इब्ने माजह की दूसरी जिल्द के अब्वाबुन्निकाह बाब सदा़कुन्निसा में आयशा ने कहा है। कई एक में यह भी लिखा है कि अबू सफियान की बेटी उम्मे हबीबह का मेहर चार सौ दीनार बांधा गया था जो कि हबश के राजा अस्मह ने अपने राजकीय कोश से उसी समय दे दिया था। परन्तु इसी इब्ने माजह ने यह भी लिखा है कि— "अबू सईद खिज़री ने कहा कि जब हज़रत ने आयशा से निकाह किया तो मेहर में घर का सब सामान रख दिया जिस का सारा मूल्य पचास दिरम थे इत्यादि,, । इब्ने माजह जिल्द २। अब्वाबुन्निकाह । बाब सदा़कुन्निसा सफ़ा १३७। छापा दिल्ली)

नवाब साहिब अनुवादक इब्ने माजह ने इस हदीस की टिप्पणी में लिखा है कि पचास दिरम अंग्रेज़ी सिक्के १२) या तेरह रूपये के बराबर होते हैं। हम को इस हदीस के लिखने की आवश्यकता न थी क्योंकि न तो स्पष्टतया इसमें आयशा की निन्दा है और ना ही कोई निर्लज्जता की बात है। परन्तु हदीस घड़ने वाले की शत्रुता पर विचार करो कि जब पांच सौ दिरहम वाली हदीस लिखी हुई थी तो घर के सामान पर निकाह होने का क्या

अर्थ है। क्या रसूलल्लाह उन दिनों ऐसे दरिद्र थे और क्या अबू बकर ऐसे नीचे दर्जे के आदमी थे कि १२ तेरह रुपयों पर ही बेटी को बिदा कर दिया? शोक है कि अहलेसुन्नत वालों को आयशा के भक्त होने पर तो अभिमान है परन्तु बातें ऐसी लिखते हैं जिनसे आयशा पर दोषारोपण हो। हमारी सम्मति में इसे निकाल दिया जावे तो अच्छा है।

नोट :—आग़ा सफ़दर अली ने एक लेख जिसमें मुताअ भी प्रमाणित किया है हमारे पास भेजा है जो कि नीचे प्रकाशित किया जाता है। उस के बाद हमने शीआ को चुप कराने के लिये मुताअ के झूठा होने को स्पष्ट किया है और शेष युक्तियों के उत्तर बहुत लम्बे हैं इस लिये उनको मुज्तहिदों के आगे रखा जाता है उनका कर्तव्य है कि वह इस ऋण को उतार कर उऋण हों या न हों।

अक्षेप नं० २१—

शीआ लोग कहते हैं कि रसूल ने आयशा से मुताअ किया था।

हमारा विश्वास है कि हज़रत आयशा का रसूलल्लाह के साथ मुताअ हुआ था--निकाह नहीं हुआ था। कोष में निकाह का ठीक अर्थ-मैथुन है और वैसे शादी को भी मुताअ कहते हैं इसी लिये लोग आयशा को मनकूहह अर्थात् शादी शुदा या विवाहिता कहने लगे परन्तु वास्तव में ममतूअ--मुताअ की गई प्रसिद्ध होना चाहिये था। यद्यपि फ़िक़ह, हदीस और सहीह मुस्लिम के अनुसार मुताअ भी निकाह ही कहलाता है तथापि इस विशेष बात का खोलना हदीस कहने तथा व्याख्या करने वालों पर निर्भर था। अहलेसुन्नत ने बिना कारण मुताअ को आयशा का अपमान समझ कर छिपाये रखा जो कि सत्य व्यवहार के प्रतिकूल है, क्योंकि ख़ुदा ने रसूल

और उस की उम्मत—अनुयायी वर्ग को इस आयत में आज्ञा दे दी हुई है कि मुताअ करलो जैसा कि कुरान की सूरतुन्निसा में लिखा है कि—फमस्तमत्तअतुम् बिही० इस लिये जब इस आयत के द्वारा मुताअ हलाल-कर्तव्य सिद्ध है तो वह न तो आयशा के लिये घृणित है और ना ही रसूलअल्लाह के लिये। दूसरी बात यह है कि मुताअ करने कराने की अरब वालों में पुरानी रीति थी। तीसरे- हज़रत अबू बकर की बड़ी लड़की अस्मा का मुताअ अवाम के बेटे हज़रत ज़बीर के साथ हुआ था जैसा कि तारीख़ यह अल् अन्साब की क़बायलुल् अरब हिस्सा १ बहस निकाह और मुताअ के सफ़ा १६ में लिखा है। इस के सिवाय इब्ने अबी हदीद मुअत़ज़ली की प्रसिद्ध पुस्तक शरह नहजुल् बलाग़ह में नासी त्ति ग्री के प्रमाण से लिखा है कि—

अब्दुल्लाह बिन ज़बीर को जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन इब्ने अब्बास से यह मालूम हुआ कि उनके माता पिता (अस्मा और ज़बीर) ने मुताअ करके उसे उत्पन्न किया था तो वह बहुत दुःखी हुए और शस्त्र हाथ में लेकर माता के पास पहुँचे और कड़क कर बोले कि तू मुझे औसजह की दो चादरों वाला मामला बता नहीं तो तुझे जान से मार डालूंगा। अस्मा ने कहा-दम ले अर्थात् थोड़ी देर ठहर, अभी बताती हूं। बात यह थी कि एक दिन तेरा पिता रसूलल्लाह के साथ था कि एक आदमी ने दो चादरें भेंट कीं जिन को औसजह कहते थे। हज़रत ने वह दोनों चादरें तेरे पिता को दीं और उन्हों ने उन चादरों के बदले मुझ से मुताअ किया जिससे मुझे गर्भ रह गया और तू मुताअ से पैदा हुआ० इत्यादि,

शरह नहजुल् बलाग़ह। सफ़ा ४७८।

रसूल की सभी बीवियों के मिहर के विरुद्ध आयशा का मेहर रसूल का घरेलू सामान (लोटा, कटोरा, पलंग, पीढ़ा आदि) निश्चित हुआ था जो कि बारह तेरह रुपए का माल था जैसा कि इब्ने माजह की हदीस अबू सईद खिदरी से सिद्ध है। और औसजह की चादरों के मूल्य से आयशा के मेहर का धन मिलता जुलता ही है इससे मालूम होता है कि रसूलल्लाह ने आयशा से मुतआ ही किया था। इसके अतिरिक्त एक और भी उत्तम प्रमाण है जो कि प्रसिद्ध ऐतिहासिक अल्लामह मसऊदी ने जो कि इमाम बुखारी के समकालीन थे अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में लिखा है कि-

"ज़बीर के बेटे अब्दुल्लाह ने खुतबह-धर्मोपदेश देते हुए कहा- कि लोगों को क्या होगया है कि मुतआ को हलाल कहते हैं और रसूल के साथी (मेरे पिता अबीर) तथा रसूल की बीबी आयशा को मुतआ करने पर बदनाम करते हैं उनको क्या होगया है कि जिनके दिलों को उनकी आंखों के समान खुदा ने अन्धा कर दिया है (यह संकेत इब्ने अब्बास की ओर है जो उस समय अन्धे होगये थे) इब्ने अब्बास ने कहा कि अरे ओ छोकरे! तूने मुझे बड़ा दुखी किया है। अरे अबीर के बच्चे! यदि तुझे अपने माता पिता के मुतआ करने से इन्कार है तो जा अपनी मां से पूछले वह तुझे बता देगी कि इस्लाम में मुतआ की रोशनी सबसे पहले तेरे माता पिता से ही फैली है०। इत्यादि" तारीखे मुरव्विजुज़्ज़हब जिल्द २। ज़िक्र मुआवियह बिन यज़ीद सफ़ा ८१ (छापा मिश्र)।

यह सब घटनायें विश्वास दिलाती हैं कि आयशा से रसूलल्लाह ने मुतआ ही किया था यह भी बहुत सी हदीसों से सिद्ध है कि हर निकाह के बाद वलीमह करने की रसूल आज्ञा दिया करते

थे। परन्तु यदि आयशा से निकाह ही किया होता तो उसके बाद बलीमह करना भी किसी न किसी प्रामाणिक पुस्तक में पाया जाता जो कि कहीं नहीं पाया जाता। जैसा कि मदारिजुन्नबुव्वत में देहली के शेख अब्दुलहक़ मुहद्दिस ने लिखा है कि

"आयशा ने कहा कि घर के लोग बाहिर गये और हज़रत ने मुझसे ज़ुफ़ाफ़—पहला मैथुन संसर्ग किया और कोई ऊँट या बकरा बलि न चढ़ाया तथा शादी का खाना जिसे बलीमह कहते हैं वह एक प्याला दूध था जो सअद बिन अबादह के घर से आया था। उस समय मैं केवल नौ वर्ष की थी। अर्सीम की बेटी अस्मा ने कहा कि—मैं आयशा की विदा में मौजूद थी खुदा की सौगन्द उस दिन किसी प्रकार का बलीमह मौजूद न था हां, एक प्याला दूध था जिसमें थोड़ा सा हजरत ने पिया और फिर आयशा को दिया इत्यादि" मदारिजुन्नबुव्वत जिल्द २ सफ़ा ८९।

इसलिये यदि आयशा के साथ निकाह होता तो जैसे खदीजह ज़ैनब, सफ़ियह आदि के निकाहों के बाद बलीमह (शादी का खाना) की धूमधाम पुस्तकों में पाई जाती है वैसे ही आयशा के ज़ुफ़ाफ़ के बाद भी बलीमह की धूमधाम अवश्य होती! इसीसे सिद्ध होता है कि मुताअ ही हुआ था जिसके लिये बलीमह की आवश्यकता नहीं समझी गई दूसरी बात यह है कि—आयशा ने जो बर्ताव रसूल के साथ अपना प्रकट किया है जैसा कि—मैथुन के बाद उनका गन्दा तहबन्द या पाजामा धोना, यह भी यही सिद्ध करता है कि उनका मुताअ ही हुआ था क्योंकि निकाह वाली अन्य किसी बीबी ने यह काम नहीं किया था देखो बुख़ारी किताबुल् वज़ू, बाब वीर्य लगे का धोना और बुख़ारी किताबुल् एतिकाफ़ बाब एतिकाफ़ या डेरा लगाना। इनके सिवाय एकान्त

मैथुन के रहस्य मासिक धर्म और स्नान रोज़े में मैथुन आदि के सुहाग भाग जिनसे प्रामाणिक पुस्तकें भरी हुई हैं—इनमें ऐसी २ गन्दी और निर्लज्जतापूर्ण बातें भरी हुई हैं जिन्हें कोई निर्लज्ज अपने मुंह से भी न कहे परन्तु ह० आयशा की कही हुई हैं। तीसरा प्रमाण और है और वह यह कि

"अबू तल्हा अन्सारी, ज़ैद बिन हारिस उसामा-उम्मे ऐमन और सौदह (रसूल की बीबी) इन लोगों में से किसी से भी रसूलल्लाह ने पानी नहीं भरवाया। परन्तु उहद के युद्ध में अन्सार और मुहाजिरों (हिजरत करने वालों) को पानी पिलाने पर यदि नियुक्त भी किया तो आयशा को जो कि अनस की माता उम्मे सलीम के साथ जा जा कर अपनी पीठ पर मशकें लाद लाद कर लातीं और पानी पिला पिला कर वापिस जाती थीं। इत्यादि,

बुखारी-किताबुल् मग़ाज़ी बाब ग़ुज़्वतुन्निसा।

इस लिये इस बर्ताव और इस नीच सेवा से पाया जाता है कि आयशा निकाह के योग्य नहीं समझी गई थी इसी कारण से रसूल ने इन से मरदाने में-खुले मुंह पानी भरवाया।

हजाज़ में धन सम्पत्ति और राज काज के विचार से बनी हाशम का वंश बड़ा विख्यात था इस लिये उस वंश के किसी व्यक्ति का अपने से छोटे किसी कुल में विवाहित होना घृणाजनक था। यदि रसूलल्लाह ह० आयशा से निकाह करते तो सारे देश में और विशेष कर बनी हाशम के वंश की दृष्टि में अवश्य गिर जाते क्योंकि ह० अबू बकर के कई निकट सम्बन्धी ऐसे कर्म करते थे जो कि बहुत ही नीच समझे जाते हैं जैसे—

'ह० तलहह के पिता अबीदुल्लाह, मखन्नसपेशा अर्थात् खुसरों या नपुंसकों का काम कर पेट पालते थे तथा ह० तलहह की माता

सावह, अनुचित कर्म करने वाली प्रसिद्ध थी-याद रहे कि तलहह के पिता अबीदुल्लाह, ह० अबू बकर के चचेरे भाई थे तंज़ीहुल् अम्बाव। हिस्सा २ हद्दशाम का चरित।

'ह० अबू बकर के जमाई अर्थात् बिन अवाम कसाई का काम करते थे.. हैयातुल् हैवान दमीरी।

''और अबू कहाफ़ह, फ़ाख़्ता-घुंघियाँ पकड़ कर अपना जीवन निर्वाह करते थे.. तंज़ीहुल अम्बाव हिस्सा १। बाब १। फ़सल् २।

बस, ऐसे कर्मकारी लोगों के घर में बनी हाशम जैसे उच्च कुलीनों का निकाह विवाह होना सर्वथा बुद्धि के विरुद्ध है। इससे सिद्ध होता है कि रसूलल्लाह ने आयशा से मुताअ ही किया था-निकाह नहीं? इसके सिवाय आयशा के माता पिता की भी ऐसी ही दशा थी कि जिन के हां रसूलल्लाह का निकाह करना स्वाभाविकतया घृणित और बुद्धि के विरुद्ध था क्योंकि आयशा की माता उम्मे रूमान का निकाह पहिले मसऊद ग़ुलाम से हुआ था जिस से सिद्ध होता है कि वह किसी की ग़ुलाम दासी होगी जैसा कि उनके आचार व्यवहार से पाया जाता है—

'आयशा ने कहा कि मेरी माता मुझे मोटा करने का प्रयत्न किया करती थी ताकि मुझे बहुत शीघ्र रसूलल्लाह की सेवा में पेश करें-इसी लिये मुझे ककड़ी के साथ खजूरें खिलाया करती थीं जिससे मैं शीघ्र मोटी हो गई० इत्यादि., इब्ने माजह-जिल्द ३। बाबुल् कमावलरत्ब सफ़ा० ६१-६२। (अनुवाद नवाब वकार निवाज़)।

आयशा के माता पिता की शीघ्रता भी यही सिद्ध करती है कि रसूलल्लाह से आयशा का मुताअ ही हुआ था।

यदि इन सब बातों को थोड़ी देर के लिये छोड़ भी दिया जावे और यह मान लिया जावे कि मित्रता और दरिद्रता की दृष्टि से शायद रसूलल्लाह ने अबू बकर के घर निकाह कर लिया था तो यह भी ठीक नहीं क्योंकि इसका पता भी किसी हदीस और प्रामाणिक पुस्तक से नहीं मिलता बल्कि इसका निषेध ही पाया जाता है जैसा कि हर सुहाह और गैर सहाह के बाब फ़ज़ायल अबू बकर में यह हदीस मौजूद है कि--

'हज़रत ने कहा कि यदि मैं किसी को मित्र बनाता तो अबू बकर को ही बनाता।'

इस से सिद्ध हुआ कि अबू बकर में मित्र होने की योग्यता तो थी परन्तु योग्यता होने पर भी (किसी कारणवश) मित्र नहीं बनाया। इस लिये जब रसूलल्लाह ने उनको मित्र बनाने में ही संकोच किया तो पूज्य ससुर कैसे बनाया होगा? इस से भी मालूम होता है कि मुताअ ही हुआ था।

संसार की मित्रता पर दृष्टि डाली जावे तो मालूम होगा कि मित्रता तीन ही प्रकार की होती है-व्यवहारिक मैत्री आचार विषयक मैत्री और धर्म सम्बन्धी मैत्री। परन्तु इन में से कोई भी मित्रता अबू बकर के विषय में सिद्ध नहीं होती। इस लिये हम विस्तार के साथ इस की पुष्टि करते हुए अहले सुन्नत से प्रार्थना करते हैं कि यदि इस के विरुद्ध किसी सुहाह या प्रामाणिक पुस्तक में से अबू बकर की मित्रता का क्रियात्मक उदाहरण दिखावें और हमें भी उसकी सूचना दें तो कृतज्ञता होगी।

रसूलल्लाह और अबूबकर में मित्रता न थी।

(१) रसूल बन चुकने के बाद ह० मुहम्मद तीन वर्ष तक अबी तालिब के पहाड़ों में छिपे फिरते रहे और कुरैश लोगों ने उनका पूरा बाइकाट किये रखा तथा रसूलल्लाह को नमक, पानी, लकड़ी और अनाज आदि बड़ी कठिनता से प्राप्त होता था। उन दिनों में बताओ तुम्हारी कौन सी प्रामाणिक पुस्तक में लिखा है कि अबूबकर ने नमक की कंकड़ी या कटोरह भर पानी ही कभी रसूलल्लाह के पास पहुँचाया हो ?

नोट: याद रहे कि अबूबकर इस्लाम में साबिकुल इस्लाम कहलाते हैं और अबी तालिब के शअब (पहाड़ी दर्रा) में रसूल का छिपनेका सन ७ है साथ ही ह० अबूबकर बनी यतम के सरदार प्रसिद्ध थे और कुरैशों में बनी यतम से बढ़कर कोई जाति बलवाली और बहुत अधिक संख्या वाली न थी। इसलिये ऐसे प्रभावशाली और मानी पुरुष का इस्लाम स्वीकार करने के बाद रसूलल्लाह की सहायता न करना शत्रुता पर ही निर्भर होगा न कि मित्रता पर !

(२) जब कुरैशों ने चादर के पेच डालकर रसूलल्लाह का गला घूंटा था ह० अबूबकर अलग दूर खड़े छाती कूट कर यही कहते रहे कि क्या तुम उसको कत्ल करते हो जो यह कहता है कि मेरा रब्ब पालनकर्त्ता अल्लाह है ! देखो, इज़ालतुल् खफ़ा (शाह वली अल्लाह) परन्तु कदम बढ़ा कर शत्रुओं के फन्दे से रसूल को छुड़ाना किसी किताब में नहीं लिखा। इसलिये कैसे माना जावे कि वे रसूल के मित्र थे ?

(३) जब अबू जिहल ने रसूल को मक्के में नमाज़ का सजदह

करने की अवस्था में उनकी पीठ पर ऊंट का बोझा रख दिया और न जाने उस गन्दे बोझे के नीचे कबतक रसूलल्लाह दबे पड़े रहे तो उस समय किसी सहाबी ने विशेषकर ह० अबूबकर ने उस दुःख को दूर नहीं किया। अन्त में सैयदह ने किसी की सहायता लेकर उनकी पीठपर से उतरवाया (बुखारी) और यदि मान भी लिया जावे कि उस समय अबूबकर वहां मौजूद न थे तो उसके बाद ही उनको चाहिये था कि समय मिलने पर इस दुःस-माचार पर खेद प्रकट करते परन्तु किसी पुस्तक में उनका खेद प्रकट करना भी नहीं मिलता। सच है---

दोस्त आं बाशद कि गीरद दस्ते दोस्त
दर परेशां हालि ओ दर मान्दगी।

अर्थात्-मित्र वह है जो मित्र का दुःख-दरिद्रता में हाथ पकड़े इसलिये अबूबकर की मित्रता निरा झूठ !

(४) 'मदारिजुन्नबुव्वत' बयाने हिजरत में लिखा है कि अबूबकर ने रसूलल्लाह से दो सौ रु० के ऊंट का मूल्य नौ सौ रु० वसूल किया था परन्तु इसके साथ ही मक्के में १३ वर्ष के लंबे निवास में इस्लामी आवश्यकताओं पर धन व्यय करना किसी पुस्तक में नहीं लिखा मिलता और यह प्रत्यक्ष है कि जो आदमी अपने जमाई से सात सौ रुपया अधिक वसूल करे उससे यह आशा कैसे की जा सकती है कि उसने जमाई की एक पैसे की भी सहायता की होगी।

नोट: इन चारों प्रमाणों से सिद्ध है कि ह० अबूबकर ने न तो व्यावहारिक मैत्री दिखाई और न सामाजिक और नाहीं धार्मिक। यह तो रहा मक्के में रहते हुए. परन्तु जब हिजरत के बाद मदीने

में दस वर्ष रहे तो इस समय शायद कोई समझ बैठे कि अनुग्रह कर ने दान पुण्य ज़ाजियह, पांचवां भाग और लूट मार के बहाने से ही रसूल की कुछ सहायता की होगी या इस्लाम के प्रचार में दान देकर मित्रता निभाई होगी तो ईश्वर की कृपा से यहां भी शून्य ही है। जिससे सिद्ध होता है कि अबू सफ़ियान की तरह अबूबकर भी रसूलल्लाह से दूर २ ही रहते थे और जो मित्रता के समाचार घड़े गए हैं वह उन के खलीफ़ा बन चुकने के बाद के हैं। रसूल के जीवन काल में नहीं।

(५) इस्लाम की रक्षा के उद्देश्य से ह० अबूबकर ने किसी युद्ध में किसी काफ़िर को न तो पकड़ा न क़त्ल किया न स्वयं चोट खाई और न किसी काफ़िर को ज़ख्मी किया। इन प्रत्यक्ष बातों से सिद्ध है कि अबू बकर मक्का आदि के काफ़िरों से घनिष्ठ मित्रता रखते थे इसी लिये तो जब जोखम का समय आया तो रसूल-ल्लाह को शत्रुओं के फन्दे में फंसा छोड़ कर आप चल दिये (देखो तफ़सीरे कबीर और तारीखुल खुलफ़ा आदि)। और विशेष कर उहद के युद्ध में जो भागे तो तीसरे दिन रसूलल्लाह को आ शकल दिखाई (देखो रौज़तुस्सुफ़ा) और सहीह मुस्लिम में लिखा है कि जब खन्दक़ के युद्ध में विरोधी सेना का हाल जानने के लिये रसुलल्लाह ने इन को भेजना चाहा तो खुले शब्दों में इनकार कर दिया तिस पर भी जब रसूलल्लाह ने आपका नाम लेकर कहा कि वहां जाओ तो 'अस्तग़फ़िरुल्लाह व रसूलहु' कह कर जान बचाई जिस पर रसूल ने शोक किया परन्तु ह० अबूबकर यह सब सुन कर भी अबू सफ़ियान की सेना का समाचार लाने न गये। देखो दुर्रे मन्सूर सैय्यूती।

(६) अबू बकर ने न तो किसी देव मूर्ति को तोड़ा न मन्दिरों

को जलाया. ना पारसियों के अग्नि कुण्ड को ठण्डा किया और न ईसाईयों का गिरजा ढाया. न अल्लाह के सिवाय किसी और के नाम से की गई कुरबानी को रोका तथा ना ही मदीना या उसके इर्द गिर्द किसी नगर में इस्लाम का प्रचार ही किया।

(७) ह० अबूबकर ने न तो किसी युद्ध में सम्मिलित हो कर लूट मार की और ना लूट का माल रसूल के आगे ला कर रखा, ना ही कोई गाँव विजय करके इस्लामी राज्य में मिलाया. यदि किया है तो बताओ किस प्रमाणित पुस्तक में ऐसा लिखा है।

(८) रसूल के जीवन काल में ह० अबू बकर अपनी इच्छा से या रसूल की आज्ञा से इस्लाम के प्रचार करने या इस्लाम के स्थापित करने अथवा मुसलमानों के साथ दूसरों की सन्धि कराने कहीं और कभी नहीं भेजे गये। यदि कहीं भेजे गये हों तो बताओ किस माननीय पुस्तक में ऐसा लिखा है ?

(९) रसूलल्लाह ने धनी और प्रभाव वाले व्यक्तियों के पास मुसलमानी मत स्वीकार करने के लिये जो पत्र लिखे उन पत्रों के साथ कभी अबूबकर को नहीं भेजा। यदि भेजा है तो बताओ किस विश्वस्त पुस्तक में लिखा है ?

आश्चर्य है कि अनुयायी श्रद्धालु लोग अबूबकर को नबियों के बाद मनुष्य श्रेष्ठ मानते और हर जुम्मे तथा ईद के खुत्बों में पढ़ते हैं परन्तु इस्लाम की आवश्यक सेवाओं से शून्य होने के कारण सिद्ध हैं कि यह बादशाह तो थे परन्तु रसूल के खलीफा-प्रतिनिधि न थे।

(१०) कुरान की रक्षा के लिये भी रसूल के जीवन काल में ह० अबूबकर को कहीं नहीं भेजा गया और ना ही मदीने में किसी मित्रों या अनुयाइयों की मण्डली को कुरान पढ़ाने के लिये

नियुक्त हुए परन्तु समय न होने पर भी कई स्वाध्याय प्रेमियों को रसूल स्वयं कुरान पढ़ाने और दूसरों को पढ़ाने की आज्ञा करते थे।

(११) हज़रत अबूबकर रसूल के जीवन काल में किसी जाति या मण्डली के इमाम सलात (नमाज़ पढ़ाने वाला मौलवी) नहीं बनाये गए और ना ही किसी जाति या गांव अथवा परगने के शासक! लेकिन बद्र के युद्ध के समय रसूलल्लाह ने मअशीर इब्ने अब्दुल मुअर को मदीना का हाकिम शासक बनाया था और मस्तलक की लड़ाई पर जाने के समय जआल ज़र्मारी को मदीना का शासक नियुक्त किया था और दस वर्ष के भीतर २ हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मक्तूम को १३ बार मदीना का हाकिम और इमाम सलात बनाया था और कई एक जाते हुए स्थानों में बहुत से लोग इमाम सलात हाकिम और काज़ी (न्यायाधीश-जज) बनाये गए थे परन्तु इस सूची में भी ह० अबूबकर या उनके किसी अभिन्न हृदय मित्र का नाम नहीं मिलता। इससे सिद्ध है कि उन में ऐसे कामों के करने की योग्यता नहीं थी अथवा रसूलल्लाह को उनके ईमान या चरित्र पर विश्वास न था। यदि हमारा यह कहना झूठ है तो अपनी प्रमाण पुस्तकों में दिखाओ कि रसूलल्लाह ने अपने जीवन काल में ह० अबूबकर को किस स्थान का अधिकारी, शासक, न्यायाधीश या नमाज़ का इमाम बनाया था? मात्र यह है कि इन इस्लामी और विश्वसनीय कार्यों में ह० अबूबकर की गति नहीं थी। कई एक लोगों ने तो इतना ही लिखा है कि कुरान की एक सूरत काफिरों को सुनाने गए थे कि रास्ते से ही लौट आये और कहने लगे कि खुदा ने ऐसा करने से मना कर दिया है। जैसा कि तिरमज़ी मस्नदे अहमद और कन्ज़ुल

अअमाल' इत्यादि में लिखा है। परिणाम यह हुआ कि धार्मिक मित्रता भी नहीं थी।

व्यावहारिक और आचार विषयक मित्रता की कसौटी

ह० अबूबकर रसूलल्लाह के सम्बन्धी निम्नलिखित १२ व्यक्तियों में से किसी की मृत्यु में भी सम्मिलित नहीं हुए और नाहीं किसी के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी, न उन में से किसी की मृत्यु शय्या को कन्धा दिया और ना आकर शोक प्रकट किया, न अरबों की पुरानी रीति के अनुसार हाज़िरी भेजी और ना ही उनकी घर की स्त्रियां रसूलल्लाह के यहां गई जैसा कि अन्सार की स्त्रियां हर्ष व शोक के समय रसूल के घर इकट्ठी हो जाती थीं। मृत व्यक्तियों के नाम ये हैं— क़ासिम, तय्यब ज़ाहिर, ख़दीजह, अबू तालिब, फ़ातमह, बन्ते असद, और क़ियह की स्त्री ज़ैनब, ज़ैनब, उम्मे कल्सूम (ख़दीजह के पहिले दो पतियों और ख़दीजह की बहिन उम्मे हालह की लड़की थी जिसका निकाह ह० उस्मान से हुआ था) ह० इब्राहीम (जो कि ह० मुहम्मद के बेटे थे) हम्ज़ह (रसूल के चचा और जअफ़र तैयार जो कि रसूल के भाई थे। बस, इन सब मौतों के शोक जनक कार्यों में सम्मिलित न होने से सिद्ध होता है कि ह० अबूबकर रसूलल्लाह के व्यावहारिक मित्र भी न थे।

नोटः—विचारणीय बात है कि जिस समय अबूबकर, उमर और उस्मान की मृत्यु हुई तो ह० अली उस समय मदीना में मौजूद थे परन्तु उन्हों ने इन तीनों ख़लीफ़ों के जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ी और ना ही उनकी सन्तान को कन्धा दिया, न हाज़िरी भेजी, न मृत्यु स्नान और कफ़न और दफ़न (दबाना) में सम्मिलित हुए और न सैयदह के कफ़न, दफ़न में इन को सम्मिलित

होने दिया। भाव यह है कि जैसा इन लोगों का बर्ताव रसूल के साथ था वैसा ही बर्ताव हज़रत अली ने इनके साथ किया। इन सच्ची घटनाओं से सिद्ध है कि ह०अली की दृष्टि में इन लोगों का इस्लाम-ईमान ठीक नहीं था इसी लिये उन्हों ने इन तीनों ख़लीफ़ों में से किसी का अनुसरण नहीं किया न उन के पीछे नमाज़ पढ़ी और ना ही कोई इस्लामी सिद्धान्त पूछा। इन्हीं प्रकार की सम्बन्ध हीनता अली की सन्तान-हसन हुसैन की भी इनके साथ पाई जाती है-- जैसे अली इन लोगों से बेलाग रहे वैसे ही उनकी सन्तान भी इस लोगों से परे परे--दूर ही रही और उन्हों ने भी इन को मुसलमान नहीं समझा। बस, यदि ह०अली इन अबू बकर आदि का अनुयायी होना स्वीकार कर लेते तो उनके जना़जे की नमाज़ अवश्य पढ़ते और इमाम हुसैन भी शिष्यों के समान यज़ीद के पीछे २ चलते।

(१३) रसूल की बीबियां अबू बकर के घर हर्ष शोकादि के समय भी कभी नहीं गई और अबू बकर के घर की स्त्रियां कोई सिद्धान्तीय बात समझने के लिये रसूलल्लाह के घर आई जैसे कि अन्सार की स्त्रियें रसूल के हां आया करती थीं। यदि आती थीं तो बताओ तुम्हारी कौन सी प्रसिद्ध हदीस में ऐसा लिखा है?

(१४) ह०अबू बकर कभी अपने घर रसूलल्लाह को नहीं लेगये जैसेकि अन्सार नमाज़ का स्थान निश्चत कराने के लिये रसूल को अपने घर लेजाया करते थे और अबू बकर का घर भी मुहल्ला सनह अर्थात् बनी हारिस के इलाके में था जो कि मदीने की आबादी से बहुत दूर पर था जिस के कारण प्रतिदिन का आना कठिन प्रतीत होता होगा। ना ही किसी पुस्तक से यह सिद्ध होता है कि हिजरत के बाद रसूलल्लाह ह०अबू बकर के हां गये।

(१५) किसी किताब में भी यह सिद्ध नहीं होता कि ह०अबू बकर ने रसूलल्लाह को जिआफ़त (भोजन का निमन्त्रण) दिया था ना ही रसूल के हां अबू बकर का भोजनार्थ पधारना ही सिद्ध होता है। इस लिये रसूल और अबू बकर के इस प्रकार के बर्ताव कुल गोत्र सभ्यता और धर्म ईमान के विषय में बहुत से सन्देह और संशय उत्पन्न करते हैं जिनका इस स्थान पर लिखना उचित प्रतीत नहीं होता।

यह जो लिखा है कि हिजरत के शुरु के दिनों में ह०अबू बकर के हां से खाना बनकर आता था— यह भी ठीक नहीं क्योंकि कई एक अहले सुन्नत की पुस्तक में लिखा है कि वह खाना ह०अली के प्रबन्ध से बन कर सौर की गुफ़ा में पहुँचा करता था।

(१६) हिजरत के दस वर्ष बाद तक अबू बकर ने खाने या उपभोग में लाने वाली कोई वस्तु रसूलल्लाह की सेवा में भेंट नहीं की और बिना कष्ट उठाये लूट का माल प्राप्त करते रहे और सारी बुखारी में केवल एक हदीस में यह लिखा है कि अतिथियों की महिमा से जो खाना बढ़ गया था वह रसूलल्लाह को दिखाने के लिये ह०अबू बकर ने भेजा था। परन्तु वह भेंट नहीं कहा जा सकता बल्कि उसे अभिमान प्रदर्शन समझा जावेगा।

तात्पर्य यह है कि इन सोलह युक्तियों से जिनके अन्दर बहुत से भागान्तर हैं अबूबकर की रसूलल्लाह के साथ न तो व्यावहारिक मित्रता ही सिद्ध होती है और ना ही आचार विषयक और धार्मिक ! बल्कि इस के विरुद्ध अहले सुन्नत की पुस्तकों विशेष कर बुखारी से तो अबूबकर और उनकी सुपुत्री आयशा की रसूल से शत्रुता पाई जाती है कि रसूलल्लाह को जहर से मार कर निश्चिन्त हो गये और खलीफ़ा बन बैठे (देखो बुखारी किताब

त्तिब्ब बाबुल् लदुद्) इसलिये तारीखे बिलाज़री के सफ़ा ६४ पर जो यह लिखा है कि बनी अल् नज़ीर की जायदाद में से रसूल-लुल्लाह ने अबूबकर और अब्दुल्रहमान बिन औफ़ आदि को जागीरें दी थी ऐसी सभी बातें निरी गप्प हैं--इनमें सत्यता का कुछ भी अंश नहीं है। इसलिये इन विरोध और असम्बन्धों से सिद्ध हो गया कि रसूलल्लाह ने शान्ति और जातीय सुधार के विचार से आयशा के साथ मुताअ ही किया था।

नोट:-अबूबकर को इस्लाम फैलाने की जो धूम धाम है वह इसलिये सत्य है कि उन्होंने अपने राज्यकाल में बड़े जोर शोर से इस्लाम फैलाया जैसाकि पहिले रसूल की बेटी को मुस-लमान बनाने के लिये ह० उमर को गारद के साथ भेजा था। जब उसने नहीं माना तो उसके घर को आग लगाने की धमकी दी गई जब इसपर भी न मानी तो ऐसी चोट लगाई कि बेचारी का गर्भपात हो गया जिससे कुछ दिनों के बाद उसकी मृत्यु होगई (देखो अल्मलल वन्नहल) परन्तु जब गर्भपात की चोट से भी न मानी और इनका इस्लाम स्वीकार न किया तो जज़ियह लगा दिया जिसके बदले उनकी कुल जायदाद और रसूल के दिये १५ गांव- खम्से खैबर तथा परगना फ़िदक आदि सब कुछ छीन लिया। इसीतरह ह० अली को भी मुसलमान बनाने का काम शुरू हुआ परन्तु जब उन्होंने भी इनके इस्लाम को स्वीकार न किया तो बेचारों की मुश्कें कसी गई और ह० अबूबकर के दरबार में पहुँचाया गया साथ ही कत्ल की धमकियां दी गई (देखो, इमा-मत वल् सियासत इब्ने कतीबह और अन्साबे समआनी) परन्तु जब इसपर भी न माने तो जज़िया लगाकर खैबर और खमस खैबर सब कुछ छीन लिया गया और इसके साथ ही मान पत्र

और उपाधियां भी जब्त कर ली इसी प्रकार इन की खिलाफत के विरोधी १३ अरबी जातियों को तलवार के घाट उतार कर हज़रत अबूबकर और उसके उत्तराधिकारियों ने इस्लाम को फैलाया।

जिनाब आगा मफदर अली।

आयशा से मुताअ होने का खण्डन
—लेखक

(१) इस्लाम ने मूर्खयुग की सब बुराइयां नष्ट करदीं और रसूलल्लाह केवल तौहीद (ईश्वर की एकता) और सदाचार की शिक्षा फैलाने के लिये ही भेजे गए थे मुताअ की रीति मूर्खयुग का चिन्ह थी जिसे अन्त में सहाबह ने भी मालदार होने के बाद स्वयमेव त्याग दिया था। जैसा कि इज़ालतुल् खफा के प्रमाण से तश्रीहुल् अन्साब हिस्सा १ बहस मुताअ में हज़रत उमर का कथन लिखा है परन्तु यह नहीं लिखा कि रसूल और अल्लाह ने हराम कहा है। साथ ही यह भी विचारने योग्य बात है कि रसूलल्लाह को अपने जीवन काल में कभी ऐसी आवश्यकता नहीं हुई कि वह मुताअ करें इसलिये रसूलल्लाह का मुताअ करना झूठ।

(२) खुदा के समीप धर्मात्मा और उत्तम पुरुष वही है जो सदाचारी और उत्तम नियमों पर चलने वाला हो जैसा कि सूरत मुहम्मद की इस आयत में सिद्ध है कि—अन्न अक्रमकुम इन्दिल्लाहे अत्तक़ाकुम्-अर्थात् खुदाके समीप वही बड़े हैं जो परहेज़गार (सदाचारी) हैं। हज़रत अबू बकर के सभ्य और सदाचारी होनेमें संदेह नहीं है चाहे वह किसी जाति, पेशे और दरजे के क्यों न हों। इस्लाम की पुस्तकों से उनका दुराचार और शराबी होना तथा नीच जाति से होना सिद्ध नहीं होता। इस

लिये ऐसी अवस्था में ह० आयशा का रसूलल्लाह से निकाह होना स्वीकार कर लिया जावे तो बनी हाशम के किसी सदस्य के लिये न तो लाञ्छन है और न ही जातीय अपराध !

(३) यह सभी जानते हैं कि मुसलमानों में भ्रातृत्व का सम्बन्ध इस्लाम से है यदि इस्लाम न हो तो वंश सम्बन्ध पर्याप्त नहीं है कि केवल उसके आधार पर मीरास —मरने के बाद जायदाद का अधिकार मिले। चाहे कितना भी घनिष्ट सम्बन्ध क्यों न हो बिना इस्लाम के उस पर अधिकार नहीं हो सकता। बल्कि किसी और वंश वाले ही मुसलमान हों तो उनको मिल जावेगी। शीआ और सुन्नी दोनों की पुस्तकों में लिखा है कि ह० अबू बकर ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था इसलिये उनकी लड़की से रसूलल्लाह का निकाह होना मान लिया जावे तो यह इस्लाम के किसी सिद्धान्त के विरुद्ध नहीं है।

(४) आयशा के अनियमित और नियमित काल तक निकाह के विषय में वादी प्रतिवादी दोनों के पास पर्याप्त प्रमाण हैं और अल्लामह मसऊदी की पुस्तक 'मुरव्वजुज़्ज़हब, के सिवाय किसी अहले सुन्नत की पुस्तक में आयशा के साथ रसूल के मुताअ होने में प्रमाण नहीं मिलता इस लिये ऐसी हदीसें और ख़बरें विश्वास करने के योग्य नहीं हैं तथा मुताअ को सिद्ध करने के लिये जो युक्तियें दी गई हैं वह सुन्नी मौलवियों की अदूर दर्शिता से असत्य मिश्रित हैं। इस लिये बड़े भारी हदीसों के संग्रह के विरोध में ऐसी घृणित और अनुचित चेष्टा सभ्यता के विरुद्ध है बल्कि कुफ़ है।

(५) दोनों (शीआ, सुन्नी) की किताबों से सिद्ध है कि जिस समय ह० आयशा का निकाह रसूलल्लाह से हुआ था उस समय

आयशा की आयु छः वर्ष की थी और जुफ़ाफ़-पहले मैथुन के समय नौ वर्ष की आयु थी। मुताअ उन दो में होता है जिन को युवावस्था प्राप्त हो चुकी हो-परन्तु आयशा दोनों समय-निकाह और जुफ़ाफ़ में बालिग़ (जवान) न थी क्योंकि मुताअ में स्त्री की इच्छा प्रबल होनी आवश्यक है सो वह आयशा में (६ या ९ वर्ष की आयु में) नहीं था। इस लिये मुताअ नहीं माना जा सकता। हां, छोटी आयु में निकाह होना तो स्वीकार किया जा सकता है। इस लिये शीआ लोगों के सभी अनुमान झूठे और थोथे हैं।

नोटः—शीआ सज्जनों से अत्यन्त विनीत भाव से प्रार्थना है कि अब वह ऐसी मिथ्या बातें और दिल तोड़ने वाली हदीसों का अस्तित्व अपनी पुस्तकों से मिटा दें तो बड़ी कृपा होगी।

बुखारी के आधार पर रसूल और उसकी बीबियों पर आर्यों के आक्षेप

इस प्रवाह में केवल वही दो हदीसें लिखते हैं जिनके विषय में रामसिंह साहब बी० ए० आर्य मुसाफ़िर से कई दिन तक शास्त्रार्थ होता रहा और जब उनके बहुत बीमार हो जाने के कारण शास्त्रार्थ बन्द हो गया तो उन्होंने बुखारी-किताबुत्तलाक़-बाबुत्तलाक़ वाली* हदीसों के सम्बन्ध में सूचनाएं भेजीं जिन में से एक हदीस तो उर्दू हफ़्वातुल् मुस्लिमीन के प्रथम संस्करण के समय प्राप्त होगई थी जो कि उसमें प्रकाशित भी करदी गई थी परन्तु उन (रामसिंह जी) के दो पत्र रद्दी में गुम होगये थे जो कि अब मिल गये हैं और इस द्वितीय संस्करण (उर्दू) में सम्मिलित कर दिये हैं। सच तो यह है कि इन दोनों लेखों ने भी मेरे दिल पर तलवार

* देखो-प्रकरण एक--आक्षेप नम्बर ४।

का काम किया है। मुसलमानों को चाहिये कि वह यह न देखें कि किसने लिखा है बल्कि यह देखें कि लिखा क्या है?

नोटः—पहिले हम असल हदीस नकल (उद्धृत) करते हैं उसके बाद रामसिंह जी के आक्षेप उनके अपने शब्दों में शीर्षक देकर उद्धृत करेंगे।

'आयशा ने कहा कि—वही (या इल्हाम) सच्चे स्वप्नों के रूप मे आनी आरम्भ हुई फिर मुहम्मद साहिब एकान्त वास को पसंद करने लगे और रातों को वहीं भक्ति आदि करने लगे तथा खाने पीने की सामग्री भी साथ ही रखने लगे। उन्ही दिनों हिरा की गुफा में फ़रिश्ता आया और उसने मुहम्मद से कहा—पढ़! मुहम्मद साहिब ने कहा—मैं पढ़ा हुआ नहीं। जिसपर फ़रिश्ते ने मुहम्मद को खूब भींचा इतना दबाया कि उनको कष्ट होने लगा। फिर मुहम्मद साहब को छोड़कर उनसे कहा कि पढ़! परन्तु फिर भी मुहम्मद ने यही उत्तर दिया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं। फिर फरिश्ते ने कहा पढ़—इक़्रअ बइस्मे रब्बिकल्लज़ी ख़लक़० । इसके बाद मुहम्मद साहिब घर चले गये। जब वहा पहुँचे तो उनका दिल कांप रहा था। अपनी स्त्री ख़दीजह से बोले—ज़म्मिलूनी, ज़म्मिलूनी अर्थात् मुझे कम्बल उढ़ाओ कम्बल। बस उढ़ाया गया कम्बल! जब कुछ देर के बाद भय और कंपकंपी दूर हुई तो मुहम्मद साहिब ने सारी बात अपनी बीबी (ख़दीजह) से दुहराई और कहा कि मुझे अपनी जान (जीवन) का ख़ौफ़ (भय) है। बीबी ख़दीजह ने कहा कि—हरगिज नहीं! खुदा की कसम, अल्लाह ताला आपको हरगिज़ ज़ायह (नष्ट) नहीं करेगा क्योंकि आपका दयालु स्वभाव है-गरीबों को भोजन देते हैं, अतिथियों का सत्कार करते हैं और दूसरों का ऋण चुकाते हैं इत्यादि। इसके बाद बीबी

खदीजह अपने चचेरे भाई वरकह बिन नौफ़ल के पास उनको लेगयी जो कि मूर्खता के युग में ईसाई हो गये थे और इब्रानी भाषा में इंजील लिखा करते थे परन्तु अब अंधे--चक्षुहीन हो गये थे। खदीजह ने उनसे कहा--भाई! अपने भाई के बेटे मुहम्मद का हाल सुनिये। वरकह ने कहा--मेरे भतीजे! सुनाओ क्या बात है? बस, जो हुआ था मुहम्मद साहिब ने कह दिया। वरकह ने कहा--यह वही फ़रिश्ता है जो मूसा के पास गया था। क्या ही अच्छा होता यदि मैं उस समय तक जीवित रहता जब कि तुम्हारी जाति तुमको निकाल देगी? मुहम्मद साहिब ने बड़े आश्चर्य से पूछा कि--क्या मेरी जाति मुझे निकाल देगी। वरकह ने कहा हां, क्योंकि कोई नबी ऐसा नहीं हुआ जिसके साथ उसकी जाति ने ऐसा न किया हो यदि मैं उस समय तक जीवित रहता तो तुम्हारी अच्छी तरह सहायता करता। इत्यादि"। बुखारी बाब १ प्रकरण वही कैसे आना शुरू हुई।

जनाब चिश्ती साहिब! आपकी बुखारी की आरम्भ से यह तीसरी हदीस है। धर्म से कहिये कि आपकी इस सहीह (शुद्ध) हदीस से मुहम्मद साहिब क्या खुदा की तरफ़ से संसार को उपदेश देने वाले बनकर आए हुए (रसूलल्लाह) सिद्ध होते हैं? क्या आपके सहधर्मियों को इसी नबुव्वत-नबीपन पर अभिमान है और आर्यों पर आक्षेप है? विचार कीजिये कि जब वही (इलहाम) का प्रारम्भ स्वप्नों से हुआ तो स्पष्ट है कि आप के मुहम्मद साहिब को अपने नबी होने का सन्देह भी नहीं था। आपकी पुस्तकों में अधिकतया लिखा है कि--यदि खुदा मुहम्मद को उत्पन्न न करता तो संसार और संसार की वस्तुओं में से कुछ भी न होता। यह (मुहम्मद) कैसे रसूल थे कि चालीस वर्ष तक तो हमारे भाइयों में

रहे और इकतालिसवें के चढ़ते ही ऐसे हो गये कि--वह पैदा न होते तो कोई भी वस्तु न होता। क्या आप बतला सकते हैं कि मुहम्मद साहिब से पहिले जो नबी हो गुजरे हैं क्या वह नबी बनने से पहिले ३० या ४० वर्ष तक मूर्ति पूजक रहे थे और उसके बाद नबी बने? हमारे अवतारों में से कोई ऐसा नहीं हुआ जो पहिले किसी धर्म को मानता हो और फिर उसको छोड़ किसी और धर्म को मानने लगा हो और फिर अवतार बन गया हो। हमारे तो सभी अवतार जन्म से लेकर सारी आयु पर्यन्त अवतार और पूज्य रहे। परन्तु आपके मुहम्मद साहिब इस्लामी विद्वानों के कथनानुसार पहिले चालीस वर्ष तक काफ़िर रहे अर्थात् नबी नहीं थे और मरने के कुछ दिन पहिले भी नबी नहीं रहे थे--नबुव्वत सलब हो चुकी थी जैसा कि आपके 'मुजद्दिद अलिफ़ सानी ने 'रद्दे खाफ़िज़' में और शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी ने 'तुहफ़ह' में जो लिखा है उसको विचार पूर्वक पढ़िये—वह वाक़िअह किरतास और ह० उमर वा सहाबह के वचन-इन्नरजुलो लियह जरो हसब्ना किताबिल्लाह, की पुष्टि में लिखते हैं कि—मुहम्मद साहिब ने जो मरने समय वसीअत का पत्र लिखने के लिये सामान मांगा तो वह इल्हाम अर्थात् खुदा की तरफ़ से न था, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि ह० उमर का मुहम्मद साहिब को उन्मत्त (उन्माद ग्रस्त) कहना ठीक ही था इसी कारण सहाबह रसूल के कहने पर विश्वास नहीं किया और वसीयत लिखने का सामान (कागज़, कलम, दवात) नहीं दिया। बस, जब हज़रत का आदि और अन्त का समय इल्हाम से दूर है बल्कि गुमराही या पतन का समय है तो फिर ऐसे व्यक्ति को अवतार या रसूल मानने की क्या आवश्यकता है। न जाने वह (मुहम्मद) कितने दिन

से नबुव्वत से अलग थे--इलहाम के अयोग्य थे जिसका कि उन्होंने पता नहीं लगाने दिया परन्तु अंत में मुहम्मद साहिब के मित्र लोग ताड़ गये और उनके नबी न होने के कारण उनकी अन्तिम और आवश्यक आज्ञा को नहीं माना। यदि मुहम्मद साहिब खुदा की तरफ से नबी होते तो जैसे और नबी मरते दम तक नबी बने रहे वैसे ही यह भी नबी रहते। बात वास्तव में यह है कि उस ज़माने में अरबी लोग अमीरों धनियों और बादशाहों को नबी कहने लगे और यह (मुहम्मद) भी अमीर घराने के थे ही इस लिये यह भी नबी प्रसिद्ध होगये और कुरैश जाति के लोगों ने इनको नबी कहकर पुकारना आरम्भ कर दिया होगा। यदि खुदा के बनाए हुए नबी होते तो आदि से अन्त तक सारी आयु नबी—संसार के शिक्षक बने रहते!

अच्छा, अब हदीस के शब्दों के और तत्व भी सुनिये!—भक्ति के समय किसी अज्ञातनामा—जिस के नाम का पता नहीं फ़रिश्ते ने आकर मुहम्मद साहिब से कहा—पढ़। जिस का उत्तर मुहम्मद साहिब ने यह दिया कि--मैं पढ़ा हुआ नहीं। यद्यपि हदीस में फ़रिश्ते का लिखित पत्र आना नहीं लिखा तथापि मुहम्मद के उत्तर से प्रतीत होता है कि वह फ़रिश्ता कोई लेख पढ़वाना चाहता था जिस को पढ़ न सकने का कारण मुहम्मद साहिब ने अपनी अयोग्यता को स्वीकार किया। अन्यथा आपके मुहम्मद साहिब में बोलने और ज़बान हिलाने की शक्ति तो वर्तमान ही थी इस लिये फ़रिश्ते के उत्तर में यूं कहते कि—क्या पढ़ूं? यद्यपि आप के 'दारकुत्नी, साहिब को यह उत्तर सूझा जोकि हमने लिखा। परन्तु आपके इमाम बुख़ारी ने जो लिखा उससे मालूम हुआ कि भयभीत होने के कारण मुहम्मद साहिब के होश ठिकाने नहीं रहे थे जिससे

ठीक २ उत्तर देते। इसलिये यदि आपके मुहम्मद साहिब ख़ुदा की तरफ़ से रसूल होते तो फ़रिश्ते से कभी भयभीत न होते किंतु फ़रिश्ता उनसे डरता।

फिर आपके नबी के साथ फ़रिश्ते ने यह उद्दण्डता की कि तीन बार ऐसे ज़ोर २ से दबाया कि मुहम्मद साहिब पसीने २ हो गये और उनके होश ठिकाने न रहे। देखिये मुहम्मद साहिब से पहिले जितने भी नबी हुए उनमें से किसी के साथ भी नबुव्वत के आरम्भ में ऐसी धींगा धींगी नहीं हुई और ना ही किसी पैग़म्बर के साथ किसी फ़रिश्ते ने ऐसी उद्दण्डता की। शायद इमाम बुखारी के मतानुसार इस्लाम में नबुव्वत-नबी बनने की प्रारम्भिक शिक्षा का यही प्रकार होता होगा!

फिर नबुव्वत के प्रारम्भिक प्रभाव से भय खा कर मुहम्मद साहिब घर भागे और बीबी से कम्बल उढ़ाने को कहा और अपने जीवन के लिये नबुव्वत के चिन्हों को भयंकर भूत सी बुरी बला समझा। इससे स्पष्ट है कि आपके मुहम्मद साहिब ऊंच नीचे के मन्त्र पढ़ते थे. जब वह आया तो डर कर घर भाग गये। देखिये यदि मुहम्मद साहिब ख़ुदा की तरफ से नबी होते तो उनको अपने नबी होने का पूर्ण ज्ञान और विश्वास होना चाहिये था और नबु-व्वत के उपक्रम से डर कर भागना नहीं चाहिये था। यदि वह सचमुच ख़ुदा की तरफ से नबी हो कर आते तो फ़रिश्ता उनके आगे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता न कि गर्दन पर हाथ धर कर ज़ोर से भींचता और कष्ट देता।

देखिये. ख़ुदा के पाक बन्दे-ईश्वर के सच्चे भक्त और अव-तार सर्वथा निर्दोष होते हैं और वह सिवाय ख़ुदा के और किसी

कष्ट अथवा आकाश-पाताल की बला से नहीं डरा करते और ना ही नबुव्वत के लिये जो कि ईश्वर से विशेष प्रेम का नाम है किसी—दूषित व्यक्ति से प्रमाण नहीं पूछा करते। परन्तु आप के मुहम्मद साहिब ने दो ऐसे व्यक्तियों (बीबा खदीजह और वरक़ह बिन नौफ़ल) से आश्वासन लाभ किया जो निर्दोष या निष्पाप नहीं थे।

देखिये, नबी न होने में एक यह भी युक्ति है कि वरक़ह बिना नबी होते हुए केवल आस्मानी किताबों के अध्ययन के द्वारा यह जान गया कि वह फ़रिश्ता वही था जो मूसा के पास आया था परंतु नबी कहलाने वाले (मुहम्मद) यह न जान सके कि यह आने वाला फ़रिश्ता मूसा वाला था। फिर मुसलमानों में यह भी प्रसिद्ध है कि पैगम्बरों के पास खुदा की वही लाना जिब्राईल का काम था परन्तु जो मुहम्मद साहिब के पास फ़रिश्ता आया वह ऐसा था जिसके नाम का भी इनको पता नहीं। इस प्रकार उपरोक्त हदीस से यह मालूम होता है कि मुहम्मद साहिब खुदा की तरफ़ से नबी नहीं थे बल्कि सम्भव है कि हमारे आर्य भाइयों के सह धर्मी होंगे और उन के अनुयायियों तथा उत्तराधिकारियों ने मज़हब का कुछ का कुछ बना दिया और वास्तव में उन्होंने अपना मज़हब प्रचलित करके मुहम्मद साहब का मज़हब मिटा दिया। अन्यथा आप की और हमारी धार्मिक लड़ाइयां कभी न होतीं।

आपका शुभचिंतक—

रामसिंह बी. ए. आर्य मुसाफ़िर।

लेखक की प्रार्थना

वास्तव में इमाम बुखारी की हदीस ही ऐसे शब्दों और भावों में लिखी हुई है कि जिस पर रामसिंह जी के आक्षेप हुए हैं अन्यथा रसूल और नबी लोग नबुव्वत को प्राप्त करने में किसी मनुष्य या फ़रिश्ते के आधीन नहीं हुआ करते। भिन्न प्रकार के साधनों के द्वारा कभी कोई फ़रिश्ता या जिब्राईल भी खुदा का सन्देश पहुँचाते हैं नहीं तो खुदा के नबी और खुदा के काम बिना किसी तीसरे की सहायता के ही सम्पन्न हुआ करते हैं। यदि यही हदीस ऐसी होती जिससे सिद्ध होता कि—

"पैगम्बर को अपने नबी होने का ज्ञान तो पहिले ही था और अपनी उत्पत्ति से ही अपने को नबी समझते थे परन्तु उसका प्रकाश उस समय हुआ जबकि खुदा ने इस बात को सब लोगों पर खोलना चाहा। उस समय जिब्राईल के द्वारा हजरत के पास वही पहुँचने लगी। बीबी ख़दीजह ने देखा तो आश्चर्य चकित रहगई और उस नूरे नबुव्वत अर्थात् नबी बनने के चमत्कार के सम्बन्ध में पूछा कि यह कैसा नूर है तो पैगम्बर ने इसपर उसका पूरा २ भेद खोला और बीबी का तौहीद की ओर खींचा जिससे वह मुसलमान होगई। इस प्रसन्नता को (कि मेरे पति मुहम्मद नबी बने हैं) अपने चचेरे भाई वरक़ह बिन नौफ़ल पर प्रकाशित किया जो कि आस्मानी किताबों के अद्वितीयविद्वान् थे। उन्होंने किताबों के आधार पर उस नबुवत की घटना को सत्य प्रमाणित किया"।

बस, कहां तो सच्ची बात यह होगी जो हमने वर्णन की और कहां पैगम्बर का जिब्राईल और नूरे नबुव्वत से डर कर भागना और मूर्खों तथा दूषितान्तःकरणों से घटना को याथातथ्य कहना

और उनके कथनानुसार अपने को नबी जानना और भय को दूर करना इत्यादि इत्यादि । ला हौल वला कुव्वत ।

वास्तव में यह हदीस ही मिथ्या है और ह० आयशा पर निरा आक्षेप है क्योंकि वही आरम्भ होने की घटना आयशा के पैदा होने से भी पहिले की है और इस हदीस में यह भी नहीं कहा कि आयशा ने इस घटना का हाल पैगम्बर से सुना या अपने पिता से अथवा किसी और से सुना इसलिये यह आवश्यक है कि यह हदीस काफिरों की सन्तान ने घड़ी हो । कृपया इसे निकाल बाहिर कीजिये ।

नोटः—रामसिंह जी का दूसरा प्रबल आक्षेप भी देखने योग्य है । परन्तु ऐसे इस्लाम पर चोट करने वाले आक्रमण मुहद्दिसीन (हदीस के विद्वानों) की असावधानी और मूर्खता के फल हैं क्योंकि उन्होंने हदीस के सत्य होने का आधार हदीस कहने वाले के विश्वास पर ही रख दिया परन्तु यदि ऐसा न कर बुद्धि पूर्वक कार्य करते और बुद्धि तथा न्याय के आधार पर निश्चय करते तो हमको आर्यों के सामने वह बुरा दिन न देखना पड़ता ! देखो, शीर्षक और हदीस को उद्धृत करने के बाद कैसा प्रबल आक्षेप करते हैं और कैसा ग़ज़ब ढाते हैं—

आक्षेप नं०—२७

ह० अबूबकर और ह० उमर ने खलीफा बनने के लिये अपनी लड़कियों के हाथ से रसूल को ज़हर खिलाया। आर्यों का आक्षेप।

श्रीमान् मिर्ज़ा जी ! बुखारी की किताबुल् अश्रबह बाबुश्शर्ब मिन् कदह नबी—अर्थात् रसूल की पराई सुन्दर स्त्रियों को मंगवाने वाली हदीस जिसका प्रमाण और अनुमोदन—बुखारी किताबुत्तलाक बाब मन् तलक की जौनिया वाली हदीस से होता है जो कि पेश की गई थी और उसके साथ जो संदेह

और रहस्य निकलते थे वह भी आप के दृष्टि गोचर करने के लिये लिख भेजे थे परन्तु यह बातचीत अधूरी रह गई थी इसलिये प्रार्थना की थी कि ज़ौनया वाली हदीस की पुष्टि में बुखारी से ही मैं और प्रमाण भी उपस्थित करूंगा। वृद्ध तथा रोगी होने के कारण बहुत दिनों तक पुस्तकों को हाथ भी नहीं लगा सका। अब कुछ काल के पश्चात् आप का ऋण उतारना याद आया और किताबों में ढूंडना आरम्भ किया तो ईश्वर कृपा से वह हदीसें मिल गई हैं इसलिये उन को उद्धृत करता हुआ प्रार्थना करता हूं कि इसपर विचार कीजिये।

"बुखारी में लिखा है कि बीबी आयशा ने कहा कि ह० मुहम्मद ने अपनी मृत्यु शय्या पर लेटे हुए कहा कि--हे आयशा! मैं हर समय उस खाने का कष्ट पाता हूं जो कि मैंने ख़ैबर में खाया था और इस समय उस ज़हर से मेरी जान टूटती मालूम होता है इत्यादि" मिश्कातुल् अनवार बाब ३ सफ़ा ५१८।

देखिये, यह 'वहलह अव्वल' में ज़हर देने की हदीस है इसी से बीबी आयशा को ज़हर के स्वाद और हालत का पता लग चुका था। इसलिये यदि वह पहिला ज़हर भूल से भी दिया गया सम्भव समझा जावे तो अब दूसरी हदीस पेश करता हूं जिससे स्पष्ट सिद्ध है कि ज़हर जान बूझकर दिया गया था।

"इब्ने अब्बास ने कहा कि मुझसे बीबी आयशा ने कहा कि मैंने पैगम्बर के मुंह में दवा डाली परंतु वह दवा न डालने का संकेत करते रहे हमने यह समझा कि जैसे प्रत्येक रोगी दवा पाने से घृणा करता है वैसे ही आप भी करते होंगे। परन्तु जब उनको होश आया तो उन्होंने हमसे कहा कि मैंने तुमको दवा न देने का संकेत नहीं किया था? हमने कहा कि जैसे हर रोगी को दवा

पीने में घृणा होती है वैसे ही आपको भी होगी। बस, उन्होंने छूटते ही कहा कि जो २ घर में मौजूद हैं उन सबके मुंह में दवा डाली जाय! मैं देखता हूं (क्या होता है)। परन्तु अब्बास को न देना क्योंकि वे उस समय मौजूद न थे। इत्यादि" बुखारी, भाग ३ किताबुत्तिब्ब बाबुल्लदूद।

देखिये. बीबी आयशा के दवा देने पर कैसी सहानुभूति पाई जाती है और भोलापन भी बरसता है, परन्तु जब मुहम्मद साहब को होश आया और उन्होंने ताड़ कर यह कहा कि सबके मुंह में दवा डाली जावे तो क्या उस चाहिती बीबी ने यह दवा पी थी अथवा अपने पति का भ्रम मिटाया था? या हफ़सह या अन्य घरवालों में से किसी के मुंह में दवा डाली थी? निश्चय से उस दवा में ज़हर था और उन दोनों बीबियों को उस दवा के ज़हरीले होने का ज्ञान था। यदि स्वयं पीतीं तो मर जातीं, यदि किसी और को पिलातीं तो भेद भी खुल जाता और बद-नामी भी होती। यदि किसी हदीस या उसकी टीका में इतना भी होता कि बीमार पति को संतुष्ट करने के लिये आयशा या हफ़सह ने दवा का प्याला झूठ मूठ ही मुंह को लगा लिया था तो भी लाञ्छन और आक्षेप से बच जातीं। परन्तु स्वामी की इतनी प्रसन्नता भी प्राप्त न की गई। हदीस के शब्दों में ,कुल्ता (मैंने कहा) के स्थान में ,कुल्ना (हमने कहा) पाया जाता है जिस से अरबी के मुहाविरे के अनुसार कम से कम तीन व्यक्तियों का सम्मेलन सिद्ध होता है इसलिये बीबी हफ़सह अवश्यमेव शामिल हैं और बीबी सौदा भी इसी पार्टी की थीं. क्या आश्चर्य है कि वह भी सम्बन्ध त्यागे* जाने के क्लेश से हज़रत को ज़हर खिलाने

---

* बीबी सौदा से हज़रत ने समागम करना त्याग दिया था।
(अनुवादक)

में साथी हो गई हों ! क्या आप जानना चाहते हैं कि इन बीबियों ने पति की आज्ञा का अनुसरण क्यों नहीं किया ? सुनिये और अच्छी तरह सुनिये !

मुहम्मद साहिब की आज्ञा पर झूंठ मूंठ भी आचरण इस लिये नहीं किया कि यह दोनों बीबियां तबूक के युद्ध से लौटते समय अक्बह ज़ी फ़नक़ का समाचार सुन चुकी था कि-मुहम्मद साहिब को मार डालने के विचार से चौदह सहाबह ने उनके ऊंट को बिदका कर दूसरे स्थान पर ले जाने का प्रयत्न किया था। परन्तु असफल हो वापिस लौटे ! रौज़तुल् अहबाब में लिखा है कि वह सब सहाबह कबार (अबूबकर उमर आदि बड़े २लोग) थे। अब समझ लो कि जब आप सहाबह कबार और सग़ार को जानते हैं तो क्या यह बीबियां उनको न जानती होंगी अवश्य जानती थीं क्यों कि उनकी गोदियों में पली हुई थीं। इस घटना के थोड़े दिन बाद मुहम्मद साहिब की मृत्युशय्या में वसीयत लिखने का जो उपद्रव मचा और अपने पिता चचा और भाइयों के तेवर बदले देखे फिर उसामह के युद्ध पर जाते समय अन्य लोगों ने विशेष कर इन बीबियों के पिताओं ने जो रसूल की आज्ञा को भंग किया था वह भी उनको मालूम ही था। यद्यपि इन बड़े (अबूबकर और उमर आदि) लोगों ने हज़रत का विरोध अपने व्यक्तिगत द्वेष और राज्य लोभ के कारण भी किया था लेकिन जहरीली दवा के मुंह न लगाने से सिद्ध होता है कि मुहम्मद साहिब की ऐय्याशी--विलास प्रियता और आये दिन नित नई बीबी आजाने से उन बेचारियों का नाक में दम था और मुहम्मद साहिब के ऐसे चाल चलन से इन बीबियों के बन्धुवर्ग और माता पिता सब तंग थे और ऐसे पति के जीवन में ही अपनी लड़कि

को विधवा समान समझे हुए थे। और यह लड़कियां छोटी आयु की युवतियां थीं जो कि युवा पति के सहवास को बहुत चाहती थीं उन का ऐसा चाहना स्वाभाविक था। इसलिये इन लड़कियों की प्रसन्नता तथा सब की इच्छा से ज़हर दिया गया। ज़हर पिला कर अन्तिम विजय श्री लाभ करना आयशा के हाथों को प्राप्त हुआ था और बीबी हफ़सह दूसरे दरजे पर थीं कि उन्होंने केवल ज़हर मिलाया होगा इसलिये पहिला खलीफ़ा बनने का अधिकार आयशा के पिता (अबूबकर) का समझा गया और उनके बाद हफ़सह के पिता (उमर) का। चूंकि मुहम्मद साहिब के द्वारा ह० अबूबकर और ह० उमर लूट के माल और ज़कात खैरात-दान पुण्य की वस्तुओं और जागीर पुरस्कारादि प्राप्त करके बड़े भारी सम्पत्तिशाली धनिक बन चुके थे और हजाज़ में अपना प्रभाव जमा चुके थे! दूसरी बात यह है कि उन पर किसी काफ़िर की जान माल को हानि पहुँचाने तथा उनके मन्दिरों को तोड़ने फोड़ने और मूर्तियों वा अग्नि स्थानों के भ्रष्ट करने का अपराध वा आक्षेप न था। जिसके कारण उन्होंने अपनी अपूर्व बुद्धिमत्ता और परस्पर संगठित शक्ति से मुहम्मद साहिब के मित्रों और विशेष कर बनी हाशम को ऐसा दबाया कि ज़हर देने की बू भी फूटने न पाई और उनको ऐसी भयकंर आपत्ति में डाल दिया कि वह उसके रोने पीटने में फंस गए। इस प्रकार विशेष व्यक्तियों को छोड़ कर सर्व साधारण में ज़हर देने की चर्चा ही न चल सकी। और चूंकि यह दोनों (अबूबकर और उमर) शासन सम्बन्धि योग्यता और अपने थोड़े दिनों के शासन से मुहम्मद साहिब का रंग फीका कर चुके थे और राज्य शासन को ऐसे ढंग पर डाल चुके थे कि मुहम्मद साहिब की सन्तान को अधिकार न मिल सके

इसलिये उनके विचार सैकड़ों वर्ष तक चिरस्थायी बने रहे। अतः वही पुराना ढंग सर्व साधारण का निश्चित सिद्धान्त बन गया। इसी कारण हदीसों के व्याख्याकार सैकड़ों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी सर्वसाधारण के विरोध के भय से कुछ न लिख सके बल्कि सब लोगों पर अपना अहले सुन्नत होना प्रकट करने के लिये ह० अबूबकर वा ह० उमर तथा उनके इष्ट मित्रों और विशेष कर बीबी आयशा के वह २ विचित्र गुण निर्माण किये कि जिससे मुहम्मद साहिब तो अधम और ये लोग मुहम्मद साहिब से बढ़ चढ़ मालूम हों यही कारण है कि कोई इस्लामी पुस्तक इस्लामी रसूल की निन्दा से खाली नहीं और जिन शत्रुताओं या द्वेषों के छिपाने का प्रबन्ध वह कर गए थे टीकाकारों को भी विवश हो उसी पर चलना आवश्यक जान पड़ा।

यह स्पष्ट है कि जहर खिलाने के मामले में हदीस की टीका करने वालों का यह कर्तव्य था कि वह हदीसों की व्याख्या में इन बातों की जांच करते कि वह ज़हरीली दवाई किस हकीम के पास से आई? क्या हकीम ने अपने व्यक्तिगत द्वेष से जान बूझ कर ज़हर खिलाया या किसी के कहने से ऐसा किया? अथवा भूल से? यदि अपनी व्यक्तिगत शत्रुता के कारण या किसी के कहने से विष मिलाया तो उनकी शत्रुता या द्वेष का कारण क्या था? क्या घर में पहुँचकर वह दवाई ज़हरीली बनाई गयी थी? यदि ऐसा ही था तो किसने मिलाई और उसकी शत्रुता का क्या कारण था? क्या विष मिलाने वाले अली साहब या बीबी फ़ातिमह या बीबी आयशा वा हफ़सह अथवा और कोई साहिब थे? और वह ज़हर खानिज (संखिया आदि) या काष्ठादिक (मिट्ठा

तेलिया, कुचला आदि) या भोजन सम्बन्धी ? ज़हर से कैसे कैसे परिणाम हुए और ज़हर पहुँचने पर कितनी देर के बाद मौत हुई? आप देख जाइये कि किसी टीकाकार ने इनमें किसी बात पर भी प्रकाश नहीं डाला और यह उन के लिये खेद जनक बात है।

अब दूसरे प्रकार से विचार कीजिये कि—नहीं साहिब, मुहम्मद साहिब को किसी ने ज़हर नहीं दिया। रोग के प्रबल होने से मुँह का स्वाद बिगड़ जाना स्वाभाविक है। अथवा खैबर वाले ज़हर से उस दवा का स्वाद या बू मिलती जुलती होगी इसी कारण हज़रत को ज़हर का भ्रम हो गया। अथवा ह० उमर के कथनानुसार मुहम्मद साहिब पीड़ा के अत्यधिक होने के कारण उन्मत्त से हो गये थे और अच्छी खासी दवाई को ज़हर कहना शुरू कर दिया तथा सबके मुँह में डालने की आज्ञा कर दी। बहुत अच्छा ! हम इन बहानों को थोड़ी देर के लिये स्वीकार कर लेते हैं और आपसे पूछते हैं कि खैबर में हारिस यहूदी की लड़की- ज़ैनब ने जो ज़हर दिया था वह बकरे के मांस को भून कर उसमें मिला कर दिया था और रसूलल्लाह ने केवल चबा कर थूक दिया था और बशर बिन बरा ने एक ग्रास खाया तो वह मर गये। परन्तु याद रहे कि हदीस में 'दवा' का शब्द है और यह स्पष्ट है कि भोजन और दवा और उसके रूप रंग वा बू, स्वाद बिल्कुल जुदा २ होते हैं। कैसा ही बीमार हो होश ठिकाने होने पर उसमें पहचान कर सकता है और यदि आपके ही बहाने ठीक हैं तो हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने जोकि सभी टीका कारों में विद्वान् माने जाते हैं क्यों न लिखे और लिखने से क्या हानि होती थी ? परन्तु ईमानदारी की शान-इस्लाम का अभिमान और मज़हबी विश्वास या पक्षपात के कारण आप इस का उत्तर नहीं दे सकते।

मान लो कि वह दवा ज़हरीली न थी तो जब मुहम्मद साहिब ने होश में आकर बीबी आयशा से यह कहा कि मैंने तुम को दवा देने से मना किया था पर तुमने यह दवा देदी इसलिये अब उसी दवा को सब घर वालों के मुंह में डालो और मैं देखूं, चाचा अब्बास को न देना क्योंकि उनकी अनुपस्थिति में तुम ने अपना काम किया है। अब बताओ कि वह दवाई घर वालों में से किस के मुंह में डाली गई और जब कि वह दवा ज़हरीली नहीं थी तो बीबी आयशा वा हफ़सह ने क्यों नहीं पी ?

क्या आप किसी प्रामाणिक पुस्तक से दिखा सकते हैं कि बीबी आयशा वा हफ़सह ने बीमार पति का दिल रखने और ज़हर का भ्रम मिटाने के लिये उस दवा को चखा था अथवा झूंठे मूंठे ही मुंह से लगाया था ?

क्या आप किसी प्रामाणिक पुस्तक से दिखा सकते हैं कि मुहम्मद साहिब के मरने के दिन को छोड़ कर यह दोनों बीबियां कभी रोई भी थीं ?

क्या आप दिखा सकते हैं कि जैसे अपने पिता और चचा के मरने का रंज और समय समय पर शोक प्रकट किया है मुहम्मद साहिब के लिये भी कभी किया था ?

क्या आप दिखा सकते हैं कि इन दोनों बीबियों में से किसी एक ने भी मुहम्मद साहिब की बरसी, छः माही अथवा फ़ातिहह भी दिलवाई थी ?

हदीसों में इन बातों के न होने से सिद्ध है कि सिवाय बनी हाशम और कुछ मित्रों के किसी ने भी मुहम्मद साहिब की मृत्यु का शोक नहीं किया था।

हदीसों पर व्याख्या करने वालों का कर्तव्य था कि ज़हर खिलाने की घटना पर जो जांच हुआ करती है वैसी जांच पड़-ताल और खोज करके ठीक २ बातों का पता लगाते। परंतु टीका-कार कैसे खोज करते और किस से पूछ ताछ करते जबकि सर्व साधारण मुसलमान इसके विरुद्ध थे तथा राज्य और शासन कर्त्ता ऐसी जांच पड़ताल के कट्टर शत्रु थे! पुस्तकों में स्पष्टता न थी और ऐसे विषयों में संकेतों का प्रमाण स्वीकार नहीं होता। बस उन्होंने इन विवशताओं में रह कर भी अपनी जान और मान को बचा लिया तथा अपने बाल बच्चों पर दया की और कुछ न लिखा।

बुखारी पर टीका करने विद्वानों में सबसे प्रतिष्ठित विद्वान इब्ने हजर अस्कलानी माने जाते हैं उन्होंने अपनी व्याख्या 'फत-हुल् बारी' में उपरोक्त हदीसों की व्याख्या में जो लिखा है उसको 'खाक धूल बुकान के फूल' कहना ठीक है अर्थात् बुखारी किता-बुत्तिब बाबुल्लुदूद वाली हदीस की (जो कि ज़हर खिलाने को स्पष्ट करती है) व्याख्या में अस्कलानी महोदय ने मुहम्मद साहिब की आयु और नबी बनने का समय इत्यादि के सम्बन्ध में बहुत से वचन उद्धृत किये हैं जो उस हदीस की व्याख्या के लिये सर्वथा अप्रासंगिक हैं और वहीं यह भी प्रतिज्ञा की है कि इसकी व्याख्या बाब वफ़ातुन्नबी में लिखेंगे। परन्तु जब उस स्थान को तलाश करके निकाला और देखा तो वहाँ भी भैरों जी नाच रहे हैं, अर्थात् ज़हर के विषय में तो कुछ न लिखा और यदि लिखा भी तो किसी का यह वचन न लिख दिया कि मुहम्मद साहिब को अपना अन्तिम समय मालूम था, इसीलिये उन्होंने दवा देने को मना किया था। परंतु इस भले आदमी से कोई पूछे कि श्रीमान् जी '

जब मुहम्मद साहिब को अपनी मृत्यु का विश्वास हो चुका था तो बीबी आयशा का बहाना मान कर सबके मुंह में दवा डालने की आज्ञा क्यों दी थी? क्या मुहम्मद साहब मरते समय सबके मरने का तमाशा देखना चाहते थे और सबको अपने साथ यमपुर ले जाना चाहते थे? वास्तव में हज़रत को यह निश्चय होगया था कि मुझे ज़हर दिया गया है इसीलिये उन्होंने इस अपराध का दण्ड देना चाहा था परंतु मृत्यु के कठिन समय में उनकी आज्ञा पर आचरण नहीं हो सका।

दूसरी बात यह है कि बीबियों पर पति होने का प्रभाव तो मुहम्मद साहिब के चाल चलन ने पहिले से ही मिटा रखा था और मृत्यु के समय से न जाने कितने दिन पहिले ही (मुजद्दद अलिफ़ सानी के कथनानुसार) नबुव्वत से पतित हो चुके थे और वही न उतरने के कारण भय का प्रभाव भी न रहा था इसी कारण किसी बीबी ने भी रसूल का भ्रम न मिटाया। इस्कलानी ने भी अपनी प्रतिज्ञानुसार नबी के मृत्यु प्रकरण में कुछ न लिखा जब 'नबी के रोग' के प्रकरण को देखा तो वहां केवल यही पाया कि नबी को नमोनियां हो गया था और दवाई क़िस्त थी जो कि ज़ैतून के तेल में मिलाकर दी गई थी।

देखिये, बहुत से सुन्नी विद्वानों ने लिखा है कि पैगम्बर किसी अवस्था में भी उन्मत्त नहीं हुआ करते (ऐनी शरह बुख़ारी हदीस हिज़्याने पैगम्बर) शिआ विद्वान् कहते हैं कि निर्दोष को निमोनियां कभी नहीं होता क्योंकि यह शैतानी रोग है इससे सिद्ध होता है कि व्याख्याकार संसार मस्त थे। यद्यपि मैं यह सिद्ध कर सकता हूं कि अबूबकर, उमर, आयशा और हफसह. मुहम्मद साहिब के

शत्रु थे क्योंकि मुझे इस्लामी पुस्तकों के पाठ से यह पता लग चुका है कि--

(१) मृत्यु के बाद तीन दिन तक मुहम्मद साहिब का कफ़न दफ़न नहीं होने दिया बल्कि कुछ लोगों को यह सिखाकर तैयार किया कि वह इस विषय में अड़े रहें कि रसूल की मृत्यु नहीं हुई

(२) ज़हर के प्रभाव से लाश खराब हो जाने के कारण जनाज़ह न उठने दिया और पैगम्बर को अपनी बेटी (आयशा) के घर पर दफ़न कराके अपनी बेटी को कब्र की पुजारी बना दिया और बनी हाशिम को हज़रत की कब्र तक का अधिकार न मिलने दिया।

(३) रसूल की छोटी से बड़ी सभी चीजों (बरतन वस्त्र, इण्डा अतरदान आदि) को सहाबह (आपस) में बांट लिया परन्तु अरबों की प्रसिद्ध शत्रुता की तरह हज़रत के सम्बन्धियों को एक चीज़ भी न दी।

(४) रसूल की बेटी फ़ातिमा को भी कुछ न दिया बल्कि उल्टा जो रसूल ने उसको दिया हुआ था उसको भी छीन लिया और फ़दक वा खुम्से ख़ैबर पर अधिकार जमालिया। न केवल यही बल्कि रसूल की प्यारी पुत्री का घर जला डालने का संकल्प कर लिया और पर पुरुषों को फ़ातिमा के घर ले जाकर झगड़ा रचा दिया तथा रसूल की पुत्री को ऐसे जोर से लात मारी कि उसका गर्भ गिर गया और इसी कष्ट से वह बेचारी मर भी गई (अल्मिलल वन्नहल, अक़्द १२)

(५) इतना कर चुकने पर ह० अली की मुश्कें बांध कर दरबार में हाज़िर कराया और कहा कि हमारे हाथ पर मुसलमान

बनें परंतु जब उन्होंने इन्कार किया तो उनको मार डालने की धमकियां दी गई और उनकी उपाधियां छीन ली तथा जागीर जायदाद आदि सब पर अपना अधिकार कर लिया जिससे विवश हो ह० अली एकान्तवास स्वीकार कर कुरान के एकत्रित करने में लग गए और अन्याय के आगे उफ़ तक न की। (अल् आइमतो व सियासत-इब्ने कतीबह)।

(६) खलीफा बनकर अपनी इच्छा के अनुसार हदीसें प्रकाशित कराते रहे और बड़े २ हाफिज़ों को छोड़कर एक छोकरे 'ज़ैद बिन साबित' से अपनी स्वेच्छानुसार कुरान जमा कराया तथा अपने विरुद्ध बातों को कुरान से निकलवा दिया और किसी बनी हाशिम को किसी प्रकार का कोई अधिकार नहीं दिया। तज़ करतुल् हुफ्फाज़-इमाम ज़हबी और बुखारी।

ऐसी ऐसी बहुत सी बातें हैं जो इस्लामी पुस्तकों में लिखी हुई हैं। परन्तु यह सब बातें मुहम्मद साहिब और उनकी संतान पर क्यों संघटित हुई और अब भी क्यों जारी हैं कि हज़रत की सन्तान (अली, फातिमा-हसन हुसैन) के मानने वाले (शीआ लोग) अपनी इच्छा के अनुसार धार्मिक कृत्य निर्विघ्न नहीं कर सकते।

ये सब मुहम्मद साहिब के चालचलन के फलस्वरूप हैं जो आपकी परम प्रमाण-बुखारी तथा अन्य सुप्रसिद्ध पुस्तकों में ब्योरेवार—विवर्ण सहित लिखे हुए हैं। बस विश्वास कीजिये कि—आर्य समाज आपके इस्लाम या प्रवर्तक इस्लाम (मुहम्मद साहिब) के विषय में जो कुछ कहता वा लिखता है वह किसी दुर्भावना अथवा चिढ़ाने के विचार से नहीं है बल्कि उसका आशय तो यह है कि आप लोग भूल पर हैं। कोई समय था कि आप (मुसलमान)

हमारे प्यारे और प्रतिष्ठित भाई थे और अब भी मान जावें तो भारतवर्ष में शान्ति स्थापित हो सकती है तथा हम और आप परस्पर मिलकर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

आपका शुभचिन्तक—
रामसिंह बी० ए० आर्य मुसाफिर।

लेखक की प्रार्थना

क्यों मुसलमानों, क्या इच्छा है! रामसिंह जी ने जो कुछ लिखा है वह आपकी प्रामाणिक पुस्तकों के आधार पर ही लिखा है। हां वर्णन करने का ढंग और प्रकार उनका अपना-आर्यपन का है कि जहर खिलाने और उसके कारण जो बताये हैं वह झूठ हैं। शेष जो घटनायें हदीसों से वर्णन की हैं वह अक्षरशः सत्य हैं, मैं पूछता हूं कि ऐसी किताबों को लेकर किसी इस्लाम के विरोधी से क्या आप आंख मिला सकते हैं और क्या संसार में अभिमान से मुंह दिखा सिर ऊंचा रख सकते हैं? बल्कि अन्यान्य इस्लामी सम्प्रदायों में भी क्या प्रेम और मान की दृष्टि से देखे जा सकते हैं? कदापि नहीं! कदापि नहीं!!

ये असामयिक विरोध और भयंकर आक्रमण क्यों हो रहे हैं इन्हीं पुस्तकों के झूठे और घृणित वाक्यों की कृपा से! जिनमें इस्लामी विद्वानों के नाम से अपनी २ मन घड़न्त शामिल करके उनका नाम बदनाम प्रसिद्ध किया हुआ है जो कि बिलकुल झूठ है। क्या यह सम्भव है कि इस्लाम का प्रवर्तक और उसके प्रतिष्ठित मित्र ऐसी ओछी और नीच प्रकृति के हों और फिर वह लोगों में प्रतिष्ठा वा मान पा जावें? ऐसा कदापि नहीं हो सकता! ये सब गप्पाष्टक हैं।

विश्वास करो कि रसूल और उसकी बीवियों तथा रसूल के कुछ मित्रों के सम्बन्ध में जो झूठी बातें तथा अपमानकारी हदीसें बनाई गई हैं वह वास्तव में बनी उम्मियह, बनी तमीम, बनी अदी, बनी मखज़ूम, बनी ज़हरा, बनी हारिस, बनी अस्फान, बनी अलनज़ीर, बनी असद, बनी क़रीज़ह और ख़ैबरी के शेष बचे हुए पुराने उत्तराधिकारियों और उनकी सन्तानों ने अपने २ पिता भाई और निकट सम्बन्धी तथा जाति का बदला लिया है और हदीस संग्रह करने वालों ने पूरा २ प्रमाद किया है चाहे यह आलस्य किसी अच्छे विचार को मन में रख कर जान बूझ कर किया हो और चाहे किसी बुरी भावना या कपट से, इसे तो ईश्वर ही जानता है।

मतलब यह है कि—इस्लाम, इस्लाम प्रवर्तक, मुसलमानों और उनकी संतति पर दया करो और वह यही कि या तो इन घृणित और लज्जा जनक बातों को निकाल डालो या इस्लामी शान के अनुकूल बनाकर शब्दों को ठीक करो अथवा जब तक संशोधन न हो जावे तब तक सभी इस्लामी किताबों को इस्लाम से निकाल दो और उनका प्रमाण न मानो। यदि इनमें से एक काम भी नहीं कर सकते तो फिर इस्लाम को ही त्याग दो। फिर कोई झगड़ा नहीं और ना ही झगड़ा करने वाला। मज़े करो, आनन्द के नार बजाओ!

* दूसरा प्रकरण समाप्त

तीसरा प्रकरण

इस्लामी विद्वानों की भारी भूलें

इस विशेष प्रकरण में ऐसी हदीसें अधिकता से लिखी जा सकती हैं कि जिन को 'हदीस' के प्रतिष्ठित शब्द से विभूषित करना बुद्धि के सर्वथा विरुद्ध है और ना ही वह विद्वता की कसौटी पर खरी मालूम होती हैं परन्तु इस प्रकार की हदीसें भी इतनी अधिकता से हैं कि जिनका इस पुस्तक में समाना अत्यन्त कठिन है इस लिये ऐसी बुद्धि विरुद्ध हदीसों के कुछ नमूने केवल 'बुखारी' से ही पेश किये जाते हैं जिस (बुखारी) को कपटी मौलवियों ने असहुल्कुतब बाद किताबल्बारी अर्थात् क़ुरान से दूसरे दरजे पर शुद्ध और प्रामाण्य पुस्तक कह कर प्रसिद्ध किया है। इस लिये योग्य पाठक इसी से विश्वास कर लें कि अन्य पुस्तकों में भी ऐसी ही अनगिनत हदीसें भरी होंगी और उनसे ही यह भी पता लग जायगा कि हदीसें वर्णन करने वालों की बुद्धि कैसी थी और वह क्या समझे बैठे थे। देखिये-

आक्षेप नं० १—

ख़ुदा भी दोज़ख़ अर्थात् नरक में जावेगा

हज़रत अनस बिन मालिक ने कहा कि रसूलल्लाह ने फ़रमाया कि-जब दोज़ख़ी दोज़ख़ में डाले जायेंगे तो दोज़ख़ यही कहती रहेगी कि कुछ और! कुछ और!! (डालो)। अन्त में ख़ुदा अपना क़दम (पैर) डाल देगा उस समय वह

कहेगी-बस ! बस !!०.. बुखारी. किताबुत्तफ़्सीर सूरत क़ाफ़ बाब क़ौलहु व तक़ूलो हल् मन् मुज़ीद० बुखारी-किताबुल् ईमान वन्नज़र ।

मुसलमानों को दोज़ख (नरक कुण्ड) की लम्बाई चौड़ाई और गहराई तो मालूम ही थी कि उस का प्रत्येक भाग लाखों कोस का है । ख़ुदा साहिब ने भी अपने स्वरूप अनूप को इस पर्दे में छिपा रखा था कि पता ही न लगता था परन्तु हदीस वक्ता और इमाम बुखारी के पवित्र पुरुषार्थ से उसका भी पता लग गया-अर्थात् ख़ुदा की लम्बाई, चौड़ाई और मुटाई आदि सब कुछ मालूम होगया। इतने बड़े बरतन में जो टांग डाली जावेगी और लाखों बरस की भूखी दोज़ख़ जो उसमें तृप्त होगी तो अब समझलो कि जन्नत (स्वर्ग) की पली वह टांग कितनी मोटी और लम्बी होगी । बस अब कोई कठिनता नहीं रही. अच्छा है कि अमेरिका या जरमनी के ड्राइङ्ग स्कूल के एक विद्यार्थी को तार दे दिया जावे और अल्लाह के एक अंग अथवा टांग बतादी जावे । बस. वह उसी हिसाब पर अल्लाह साहिब की ठीक २ तस्वीर बना देगा । अब रहा रूप. रंग और छवि तथा नज़ाकत और तर्ज़ अन्दाज़ का झगड़ा- सो वह मैं बताये देता हूं । हदीस में लिखा है कि—अल्लाहो जमीलुन् व युहिब्बुल् जमाल अर्थात् अल्लाह स्वयं सुन्दर है और सुन्दर व्यक्तियों से प्रेम करता है । इसलिये सौन्दर्य के अनुरूप चौड़ा मस्तक. घनी भूरेखा, नरगसी आंखें. कतार सी नाक, पतले २ होंठ, गोरा रंग, छाती चौड़ी और लम्बा क़द । भाव यह कि अंग अच्छे ही अच्छे होंगे इस लिये वैसा ही बनवा लिया जावेगा। अन्वेषण विभाग के प्रसिद्ध पुरुषार्थी 'दाऊद अल् ज़ाहिरी' की पड़ताल के अनुसार दाढ़ी भी लगा दी जावेगी । यदि कोई कम्पनी

अल्लाह साहिब को तस्वीरों के कागज़ों का ठेका ले तो उसको दस अरब कागज़ों की आवश्यकता है ताकि सारी सृष्टि की प्रजा अपने पैदा करने वाले अल्लाह के दर्शनों से कृतकृत्य हो जावे। इसलिये हम मंहगी से मंहगी क़ीमत देकर खरीदने को तैयार हैं- इसका इश्तिहार (विज्ञापन) दिया जावे।

देखिये हिन्दू (जिनको कि काफ़िर कहा जाता है) वह तो खुदा को निराकार ज्योति स्वरूप मानते हैं और सर्व साधारण मुसलमान भी ये नमूद कहते हैं और इस्लामी विद्वान् तो कहते हैं कि मनुष्य के पास ऐसा साधन हो नहीं जो ईश्वर को जितला सके परन्तु इस हदीस ने सबको अन्धा कर दिया। हम भी हदीस वक्ता और इमाम बुखारी के कृतज्ञ हैं कि उन्होंने खुदा का एक अंग (पैर) जितला कर प्रकृति के नित्यानित्य होने के विवाद से निश्चिन्त कर दिया है, क्योंकि उपरोक्त हदीस से खुदा शरीर-वाला सिद्ध हुआ है और जितने भी शरीर हैं उन सबका अनित्य होना प्रत्येक को अभीष्ट है बस. अब आर्यों से मुसलमानों का मत समझौता हो जायगा—जीव को अनादि तथा नित्य स्वीकार कर लिया जावेगा।

देखिये, लोगों में प्रसिद्ध है कि खुदा शक्कर खाने वाले को शक्कर ही देता है अर्थात् जैसी महिमा वाली बुखारी है वैसे ही टीकाकार मिले हैं। देखो. फतहुल बारी में इसी हदीस की व्याख्या में एक व्यक्ति का वचन लिखा है कि—खुदा दोज़ख में अपना पैर डाल कर दोज़ख को लज्जित करेगा। सुबहानल्लाह. क्या पता लगाया है ! इसके साथ ही यदि दोज़ख का अपराध भी बतला दिया जाता तो अनर्थ ही हो जाता क्योंकि हदीस वक्ता की योग्यता का भाण्डा फूट जाता और खुदा में न्याय का

गुण सिद्ध हो जाना और शक्तिमत्ता छिन जाती ! वाह भई वाह ! इसी हदीस की व्याख्या में एक और अनुमर्त्री का बचन लिखा है कि—क़दम (पैर) एक पैदा शुदा वस्तु है जिसको ख़ुदा दोज़ख में डालेगा। देखिये, कितना अन्वेषण किया है और कैसा उत्तम योग्यता है। कुरबान् हैं ! परन्तु शोक है कि इसमें भी यह न बताया कि वह पैदा शुदा चीज़ हदीस वक्ता की जाति की होगी अथवा हदीस टीकाकार के प्रकार की ! क्या ही अच्छा होता अस्क़लानी या उनसे आगे पीछे के विद्वान इस बकवास को निकाल डालते तो इस्लाम के प्रवर्तक पर आक्षेप न आता परन्तु यदि अब भी निकाल दिया जावे तो भी उपकार ही है।

आक्षेप नं० २

दोज़ख और जन्नत का ख़ुदा से सम्वाद करना

"अबूहुरैरह ने कहा कि रसूल ने फ़रमाया कि दोज़ख और जन्नत का ख़ुदा के साथ सम्वाद हुआ।

दोज़ख—मुझ में वे लोग आवेंगे जो बड़े अभिमानी और उद्दण्ड होंगे।

(ख़ुदा)—तू मेरा क्रोध है तेरे कारण ही जिन लोगों को चाहूंगा क्लेश सागर में डुबाउंगा ! (वाह, क्या ख़ुदाई न्याय है कि बिना अच्छे बुरे का ख्याल किये और बिना न्याय नियमों का पालन किये किसी को दण्ड दिया जावेगा !) उनमें से हर एक की भरती होगी (क्या किसी ख़ुदा के शत्रु पर चढ़ाई होगी ?) दोज़ख सिमट जावेगी (मालूम होता है रबड़ की होगी) इत्यादि" बुख़ारी-किताबुत्तफ़सीर, बाब क़ौलहु व तक़ूलो०।

(जन्नत)—मालूम नहीं मुझमें ऐसे लोग क्यों आयेंगे जो परले दरजे के दीन और महादरिद्री और संसार की दृष्टि में

गिरे हुए होंगे ? (अरी ! इमाम बुखारी से पूछ लिया होता !)।

(खुदा)—तू मेरी दया है तेरे कारण ही जिन भक्तों को चाहूंगा उन पर दया करूंगा ! (बहुत खूब, परन्तु पैदा होने से पहिले जो प्रारब्ध लिखने का श्रीमान ने कष्ट उठाया उसका क्या परिणाम होगा ?)

नोटः—इस हदीस में खुदा का दोज़ख में अपना पैर डालना लिखा है।

देखिये, जड़ चीज़ों का बोलना और खुदा का उनसे बातचीत या सम्वाद करना यह सिद्ध करता है कि हदीस वक्ता ने अपनी श्रद्धा का पूरा २ दुरुपयोग किया है। यदि हदीस में हदीस वक्ता यह संकेत कर देता कि 'मानो कह रही हैं' तो लोग उनकी योग्यता से बञ्चित रह जाते और रसूल का व्यर्थ बोलने का महत्व भी छिपा रहता जिसके कारण हदीस वक्ता पर आवश्यक भाग के त्याग देने का आक्षेप लग जाता।

देखिये, दीन, हीन दरिद्री लोगों का जन्नत (स्वर्ग) में जाना तथा धनी मानी या राजा महाराजाओं का दोज़ख (नरक) में प्रविष्ट होना कैसा आश्चर्य चकित करने वाला है। क्योंकि इस्लाम से पहिले तथा बाद में बहुत से धनी, व्यापारी और बादशाह ऐसे हो चुके हैं जो खुदा के भक्त विशेष थे और उनमें से कई शहीद और नबी भी थे। बस, यदि यह हदीस ठीक है तो रसूलल्लाह की भी खबर नहीं क्योंकि वह भी बड़े मालदार थे। वाह रे हदीस वक्ता ! मुसलमान करने का रसूलल्लाह से खूब बदला लिया। इस हदीस के अनुसार तो अच्छे से अच्छा धार्मिक धनिक राजादि सभी मालदार लोग धनवान् होने के कारण नरक कुंड मे डाले जावेंगे और बड़े से बड़े काफ़िर दीन दशा के कारण जन्नत-स्वर्ग

में प्रविष्ट होंगे। क्या खूब, अच्छा मुसलमान मर कर भी घाटे में रहे और काफ़िर दोनों जगह मौज उड़ायें। हदीस में लिखा है कि—अल् दुनिया सिज्नल्मोमिनी व जन्नतुल् काफ़िरे-अर्थात् संसार मुसलमान के लिये दोज़ख (कैदखाना) है और काफ़िरों के लिये स्वर्ग है। सच है-रूप की रोये भाग की खाये! काफ़िरों से खुदा खुश और मुसलमानों से नाराज़। कृपया इस हदीस को निकाल डालिये क्योंकि इससे खुदा का अन्याय और अत्याचार सिद्ध होता है।

आक्षेप नं० ३

रिश्ते नाते का खुदा से सम्वाद

"अबू हुरैरह ने कहा कि रसूल ने कहा कि—जब अल्लाह सृष्टि उत्पन्न कर चुका तो उस के सामने रिश्ता नाता (सम्बन्ध) आ खड़ा हुआ और खुदा से कहने लगा कि—

(रिश्ता) यह उसकी जगह है जो नाता तोड़ने से तेरी शरण की इच्छा करे।

(खुदा)-बेशक! पर क्या तू इस बात पर खुश नहीं कि जो कोई तुझको जोड़े उससे मैं भी जोड़ूंगा जो कोई तुझ से तोड़े तो मैं भी उससे तोड़ दूंगा।

(रिश्ता)-श्री चरणों का धन्यवाद!

(खुदा)-बस जा तुझे यही दरजा प्रदान किया गया।

इसके बाद हज़रत ने फ़रमाया कि यदि तुम इस विषय में ज्ञान प्राप्त करना चाहो तो सूरह मुहम्मद की यह आयत देखो—"वह समय निकट है जब तुम पृथ्वी में हाकिम हो जाओगे तो नाते तोड़ दोगे"। बुखारी--किताबुल् अदब बाब मन् वसल०।

सूरत मोमिनून में लिखा है कि फतबारकल्लाहो असहनुल खालिक़ीन् अर्थात् प्रतिष्ठित किया अल्लाह ने उस व्यक्ति को जो कि सारे सृष्टि में उत्तम है। मालूम होता है इमाम बुखारी उन्हीं में से कोई है तभी तो शरीर न रखने वाले बौद्धिक विषयों को शरीर धारण करा खुदा से दो दो बातें करा हो दीं। वाह, क्या कहने हैं !

देखिए, हदीस के विचित्र मस्तिष्क वक्ता ने किस अढंग बढ़ङ्ग नीती जबरदंग से दया के परिणाम और फल की सम्भावना दर्शाई है और सोपद्रव मात्र को किस प्रकार छिपाया है आईये वह हम आपको सुनाते हैं---रसूलल्लाह के मृत्यु रोग के समय आयशा के संकेत से ह० अबूबकर इमाम सलात अर्थात् नमाज़ के पढ़ाने वाले बनकर कुरान का पाठ करने लगे यह देख ह० अब्बास और ह० अली के कन्धो पर हाथ धर कर रसूलल्लाह जैसे तैसे मस्जिद में पहुँचे परन्तु रसूल को आया देख हज़रत अबूबकर पीछे हट गये, तब रसूलल्लाह ने नमाज़ पढ़ाई और सूरह मुहम्मद की उपरोक्त आयत पढ़कर रसूल ने सहाबह को सम्बोधित किया। रसूल का इस आयत के कहने से यह मतलब था कि राज्य लोभी सहाबह जिस समय शासक हो जावेंगे तो उपद्रव भी करेंगे और रिश्ते नाते भी तोड़ डालेंगे। बस, अब स्वयं सोच लो कि यह हदीस कैसे उपद्रव की मूल है और मुसलमानों में लड़ाई झगड़ा कराने वाली है।

"अबू हुरैरह ने कहा कि हमारे मुहाजिर-हिजरत करने वाले घर त्यागी भाई बाज़ार में व्यापार वा लेन देन करने में लगे रहते थे और हमारे अन्सार भाई खेती बाड़ी के कामों में और मैं रसूल की सेवा शुश्रूषा में लगा रहता था। उन दिनों में मैं ने रसूलल्लाह से हदीसों के दो थैले सीखे हैं उन में से एक थैले की हदीसें

वर्णन कर देता हूं और यदि दूसरे थैले की भी हदीसें प्रकट करदूं तो लोग मेरा गला काट डालेंगे० इत्यादि। बुखारी--किताबुल् इल्म

बस, यह गला काट डालने वाले थैले की हदीसों में है इसकी हवा से बचना ! कृपया इसे दूर कीजिये !

आक्षेप नं०—४

हृ० अबूबकर और हृ० उमर के समय में हदीसों का नाश हुआ।

"हृ० अबूबकर ने खलीफ़ा बन जाने के बाद सहाबह को एकत्रित किया और कहा कि--तुम लोग ऐसी हदीसें कहते हो जिनका रसूल से सम्बन्ध जोड़ा जाता है परंतु उनमें परस्पर की मात्रा बहुत अधिक है जिससे तुम्हारे बाद आने वाले लोगों में और भी अधिक विरोध हो जाने की सम्भावना है इसलिये तुम रसूलल्लाह की हदीसों को कभी वर्णन न किया करो। यदि तुमसे कोई व्यक्ति किसी बात को पूछे भी तो कह दिया करो कि हमारे तुम्हारे बीच में (झगड़ा मिटाने वाला) कुरान है। बस, उसके हलाल को हलाल अर्थात् उचित और उसके हराम किये हुए को हराम अर्थात् अनुचित समझो० इत्यादि"। तज़किरतुल् खुलफ़ा ज़हीबी जिल्द १। सफा २। (छापा हैदराबाद दक्षिण)।

हृ० अबू बकर की यह भविष्यवाणी इतनी सच्ची निकली कि जिसका उत्तर नहीं हो सकता। फिर हृ० अबूबकर ने हदीसें त्यागने का लालच देने के लिये अपनी निजी एकत्रित की हुई पाञ्चसौ हदीसें भी जला दीं जैसा कि मुल्ला 'अली मुत्तकी, ने कन्ज़ुल् अअ्माल में और हाफ़िज़ अहमद बिन अब्दुल्लाह मुहिब्बुद्दीन अबुल् अब्बासतिबरी आदि ने लिखा है कि—

"आयशा ने कहा कि मेरे पिता रसूलल्लाह की पाञ्चसौ हदीसें

इकट्ठा की थीं। एक रात जो वह सोने के लिये लेटे तो बड़े बेचैन थे हम ने कहा आप क्यों इतने बेचैन-दुःखी हैं, क्या कोई कष्ट है अथवा कहीं से बुरा समाचार आया है ? परन्तु उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया। जब प्रातः काल हुआ तो हज़रत अबूबकर ने कहा कि–हे आयशा ! जाओ, उन हदीसों को लाओ जिन्हें हमने इकट्ठा किया था उसके बाद आग मंगाई और सब को जला दिया और कारण यह बताया कि सम्भव है उन में ऐसे आदमियों की भी हदीसें हमने इकट्ठी कर दी हों जो कि विश्वास के योग्य न थे और उन्होंने रसूल के कथन के अनुसार हदीसों का वर्णन न किया हो। इस लिये उन के मौजूद होने से उन पर आचरण करना भी आवश्यक है जो कि सर्वथा अनुचित है इस कारण हमने सभी को जला दिया है० इत्यादि..। -रियाजुन्नज़रह, फ़ज़ायल अबू बकर। तज़किरतुल ख़ुलफ़ा ज़हबी–जिल्द १–सफ़ा ५।

न हदीसें संसार में रहेंगी न मुसलमानों में विरोध होगा। इसलिये उपद्रव दूर करने के विचार से सभी हदीसों को फूंक दिया। उपद्रव दूर करने के विचार से महान् सत्यवादी (अबू बकर) का वचन और कर्म एक जैसे ही सिद्ध हुए इसलिये उनके लिये भी रसूल की निन्दा का निकाल डालना उचित प्रतीत हुआ। यद्यपि यह हदीस बनाने की बला रसूल के समय से ही फैलने लगी थी इसी कारण ह० अबू बकर ने हदीसें हटाने का प्रयत्न आरम्भ किया था परन्तु वह अपनी अल्पकालीन शासन स्थिति अर्थात् थोड़े दिन के राज करने के कारण अच्छी तरह सफल मनोरथ न हो सके इस कारण ह० उमर ने हदीस संशोधन का काम बहुत अच्छी तरह से किया था जिससे कोई भी सहाबी साल २ या दो दो साल तक उन (उमर) के राज्य में 'क़ाल रसूलल्लाह,

रसूलल्लाह ने कहा, ऐसा नहीं कह सकता था। यदि कहता था तो अपने किये का दण्ड पाता था जैसा कि लिखा है--

'मैंने ह० उमर को यह कहते हुए सुना कि ऐ अबू हुरैरह ! तुम रसूलल्लाह से रिवायत करनी छोड़ दो नहीं तो तुमको दौस के स्थान पर जलावतन कर दूंगा।,

"ऐ कअब ! तू हदीसें कहना छोड़दे नहीं तो तुझे बन्दरों की ज़मीन (अफ़रिका के जङ्गलों) में भेज दूंगा।" ,—तारीखे हाफ़िज़ इब्ने कसीर शामी। अल् उसूल शमसुल आयमा 'सरखसी,।

अबू हुरैरह ने कहा कि जब तक ह० उमर न मरे तब तक हम लोगों (सहाबह) की यह कहने की मजाल न थी कि--'रसूलल्लाह ने ऐसा फरमाया,। यही वचन इब्ने मसूऊद का है कि हम लोग साल २ भर तक उमर के राज्य में 'कहा रसूलल्लाह ने, ऐसा न कह सकते थे। अल्फ़ा रूक़ (शिबली कृत) सफ़ा २३३।

याद रहे कि 'बुख़ारी किताबुल् अदब, वाली हदीस ह० उमर के राज्य में अबू हुरैरह से नहीं कही गई और यह लोग उनके मरने के बाद हदीस बनाने में ख़ूब सिद्ध हस्त थे और दूसरे सहाबह भी इसी प्रकार नित नई हदीसें घड़ने लग गये थे इस लिये ऐसी सभी हदीसें निकाल डालने के योग्य हैं।

आक्षेप नं०- ५

रिश्ता (नाता) पहलवान की ख़ुदा से झपट हो गई।

"अबु हुरैरह ने कहा कि रसूल ने कहा कि--जब अल्लाह सृष्टि की उत्पत्ति से निश्चिन्त हो गया तो उस समय नाते पहलवान ने ख़ुदा को कमर से पकड़ लिया तब ख़ुदा उससे इस प्रकार बोला-

(ख़ुदा)-अबे ! यह क्या करता है ?

(नाता) -मैं तेरी शरण चाहता हूं क्योंकि ऐसा न हो कि लोग मुझे काट डालें।

(ख़ुदा)- क्या तू इस पर भी राज़ी नहीं कि जो कोई तुझसे जोड़े वह मुझसे जोड़े और जो कोई तुझसे तोड़े वह मुझसे तोड़े! (अच्छी धौंस दी ! अजी बड़े हज़रत, आप ऐसा भी नहीं कर सकते क्योंकि आप तो दयालु कृपालु हैं।)

(नाता पहलवान)--आपका धन्यवाद ! (अब इतनी सी बात पर ख़ुश हो गया कुछ और न मांगा !)

(ख़ुदा)--जाओ ! बस ऐसा ही होगा। (बहुत ख़ूब)।

अबुहुरैरह ने कहा कि यदि तुम चाहो तो इस हदीस को सूरत मुहम्मद की 'फहल् असैतुम० इस आयत से मिलालो० इत्यादि'। बुख़ारी-किताबुत्तफ़सीर सूरत मुहम्मद बाब व तक़ू अर्हामुकुम् ।

आपने देखा नाता पहलवान ने कैसी फुर्ती से दाव किया है। कमर में हाथ डाल झट पकड़ लिया अब चित्त करने में क्या कसर थी मगर अल्लाह जी ख़ूब सझले-समझ गये कि चढ़े का तोड़ नहीं झट प्रार्थना स्वीकार करली नहीं तो जाने क्या होता ! मालूम होता है कि नाता पहलवान इमाम बुख़ारी के अखाड़े का पट्ठा होगा। हदीस वक्ता का उद्देश्य यहां भी वही है जो नरक स्वर्ग के खुदा से सम्वाद कराने में है। निकालिये इसे भी !

आक्षेप नं०—६

क़यामत के दिन खुदा बहुरूपिया बनेगा।

"क़यामत के दिन पहले तो मुसलमान ख़ुदा को नहीं पहचानेंगे क्योंकि ख़ुदा किसी दूसरे रूप में होगा। जब ख़ुदा कहेगा कि मैं तुम्हारा ख़ुदा हूं तो वह कहेंगे अऊज़ोबिल्लाह मिन्क-दुहाई है। फिर खुदा अपने असली

- रूप को दिखलायेगा जिस रूप को कि मुसलमान देख चुके होंगे। बस. उस समय पहचान कर कहेंगे कि बेशक तू हमारा खुदा है० इत्यादि., बुखारी-किताबुत्तफ़सीर सूरतुन्निसा बाब कौलहु इन्नल्लाह ला यज़्लिमो०।

वास्तव में ऐसी हदीसों के समझने के लिये बड़ी भारी बुद्धिमानी की आवश्यकता है दूसरे सम्प्रदाय वाले विशेष कर राफ़िज़ी लोग तो क्या ही समझ सकते हैं जिन्होंने अपने खुदा को अप्राकृतिक और अनुपम मान रखा है। भला उनका खुदा कैसे रूप बदल सकता है और क्यों कर दर्शन दिखा सकता है? परन्तु अहले सुन्नत का ख़ुदा लम्बा चौड़ा और इसीलिये शरीर धारी है और अनित्य है इस लिये उनका ख़ुदा दर्शन भी देगा और रूप भी बदलेगा। जी हां, जितना ख़ुदा की तरफ़ बढ़ो उतना ही वह भी बढ़ता है। सच है-'मन कान फ़ी हाज़ ही अअ्मा व हुव फ़िल् आखिरते अअ्मा,* अर्थात् जो यहां अन्धा है वह कयामत में भी अन्धा होगा। बस, स्पष्ट है कि जब राफ़ज़ी को खुदा का दर्शन न होगा तो मुहम्मद भी उनकी शिफ़ाअत-सिफ़ारिश नहीं करेगा। और अहले सुन्नत जो कि बुराईयों के समुद्र हैं खुदा को देख लेते हैं जैसा कि बहुत सी पुस्तकों में लिखा है और कई एक ख़ुदा नुमा-अपने आप को खुदा कहने वाले सूफ़ी लोग कहते भी हैं। बस, कयामत में वह लोग उसी (सूफ़ी की) आकृति प्रकृति. रंग रूप, हवि छवि और चालढाल से ख़ुदा को पहचान लेंगे इस लिये उनके लिये ख़ुदा का दर्शन भी और मुहम्मद की सिफ़ारिश भी। वही बात हुई कि चुपड़ी भी और दो दो भी। जीहां रूप

*—कुरान। सूरत बनी इस्राईल रुकूअ १२।

की रोये भाग की खाये। राफ़ज़ी न अहले बैत का पल्ला छोड़ेंगे और न उनको यह दिन नसीब होगा। शोक! शोक!! हज़ार शोक!!!

देखिये, प्रसिद्ध तो यह है कि शीआ-सुन्नी में ख़लीफा और इमाम के सम्बन्ध में ही झगड़ा है शेष क़ुरान, रसूल और ख़ुदा सब एक, परन्तु इस हदीस से सिद्ध है कि मौलाना जी का ख़ुदा और है। बस, जब ख़ुदा और है तो उनका रसूल और क़ुरान भी एक नहीं हो सकते।

नोटः—इस शुद्ध हदीस में ख़ुदा का रूप बदलना स्पष्ट है जिस से सिद्ध है कि क़यामत में इस सिद्धान्त से आंखें तृप्त करने का अहले सुन्नत को अवकाश मिलेगा और ये लोग ख़ुदा के भिन्न २ प्रकार के रूपों के दर्शन करेंगे।

कृपया इस हदीस को निकालिये क्योंकि इस से ख़ुदा शरीरधारी और अनित्य सिद्ध होता है।

आक्षेप नं०—७

आदम और मूसा का सम्वाद

'अबु हुरैरह ने कहा कि रसूलल्लाह ने ह० आदम और ह० मूसा का परस्पर सम्वाद सुनाया जो कि इस प्रकार हुआ—'

(मूसा)-आदम! तुम वही आदम हो ना जिसने सब लोगों को ख़राबी में डाला और बहिश्त से निकलवाया? (ख़ूब निपटे)

(आदम)-तुम वही मूसा हो ना कि जिसको अल्लाह ने पैग़म्बरी के लिये चुना था और अपने दर्शन दिये थे तथा तौरेत उतारी थी! (अजी दादा होकर दब गये!)

(मूसा)-जी हां, वही हूं! कहो!

(आदम)--क्या तुमने तौरेत में नहीं देखा कि ख़ुदा ने मुझे पैदा करने से बहुत पहिले ही मेरी प्रारब्ध में यह पाप लिखा दिया था ! (वाह, बुड्ढ़ो ! क्या युक्ति दी है कि उत्तर ही नहीं)

(मूसा)--जी हां, यह तो तौरेत में है (फिर समझ कर क्यों नहीं बोलते थे)

(आदम)--फिर मेरा क्या अपराध ? (जी ! बिल्कुल ठीक आप का कोई दोष नहीं सारा दोष ख़ुदा का है जिसने आप की किस्मत लिखी ।)

रसूलल्लाह ने फ़रमाया कि ह० आदम इस सम्वाद में ह० मूसा से जीत गये" । (बेशक ठीक है) बुखारी-किताबुत्तफ़सीर सूरत तौए बाब-क़ौलहु व अस्तनअ् तुक लिनफ़सी ।

देखिये, दादा पोतों की यह सभ्यता पूर्ण बातचीत आस्मान पर ही हो सकती थी क्योंकि वहीं ख़ुदा था । यहां के लोग तो अनुचित स्थान का अड़ंगा लगाते ! हम कहते हैं कि जब हमारी उत्पत्ति से बहुत पहले ही हमारे हिस्से का भला बुरा लिखा रक्खा है तो सुख दुःख देने का नियम कैसा ? इस लिये हमारे खान बहादुर शेख़ 'अबू सफ़ियान बिन हरब (अमीर शाम के पिता) का कहना सच ही निकला कि-न दोज़ख़, न जन्नत न दुःख न सुख अर्थात् मुहम्मद साहिब का इन बातों से डराना केवल ढकोसला है और कुछ नहीं ! * बस-कर्तव्य चौपट, करना धरना-छू मन्तर और हलाल हराम-बारह पत्थर बाहिर अर्थात् क़ुरानी डरावे वा कष्ट सब व्यर्थ हैं जो चाहो करो और ख़ुदा पर धरो । यदि ख़ुदा न्याय कारी होता तो गड़बड़ भी कर लेते परन्तु अब क्या---मियां मेरे घर नहीं, मुझे किसी का डर नहीं ।

---

* देखो तारीखे आसम कौफ़ी--बयान ख़िलाफ़ते उस्मान १२ ।

इस हदीस से खुदा का न्याय रफू चक्कर हो रहा है और क़ुरान तथा शरिअत पर आचरण करने वालों पर लाञ्छन लगते हैं। इस लिये इसे भी निकालो !

आक्षेप नं०—८

प्रत्येक व्यक्ति व्यभिचारी है।

"अबू हुरैरह ने कहा कि रसूल ने फ़रमाया कि--अल्लाह ने हरएक आदमी की किस्मत में दुराचार का जो हिस्सा लिख दिया है वह उसमें अवश्यमेव फंसेगा० इत्यादि"। बुखारी किताबुल् क़द्र व हरा मुन् अला०।

देखिये, 'हरएक आदमी' कहने मे नबी, वली, आलिम और शहीद आदि सभी आजाते हैं इसलिये यह सब व्यभिचारी और पापी थे तथा हदीस वक्ता भी आदमी है इसलिये वह भी अवश्य व्यभिचारी हैं। शायद इसी भय से पैगम्बर ने हर भले बुरे के पीछे नमाज़ पढ़ने की आज्ञा कर दी (देखो बुखारी आदि)। नहीं तो आवश्यकता क्या थी कि राजा और प्रजा के बीच बचाव के लिये किसी योग्य और विद्वान् अनुभवी को वकील नियुक्त किया जावे ! खुदा और सृष्टि के बीच का साधन ऐसा निकम्मा कि हर किसी को इमाम बनालो, चाहे वह विद्वान् हो या मूर्ख, अच्छा हो या बुरा, कुलीन हो या नीच और मुसलमान हो या काफ़िर।

इमाम मालिक के गुरू इमाम जुहरी ने जो हीजड़े को इमाम बनाने के लिये अपनी सम्मति दी है (देखो, बुखारी किताबुल इज़ान बाब् इमामतुल् मफ़्तून) वह इसी आशय से है कि शीओं के नियमों के अनुकूल कोई योग्य इमाम मिलता ही नहीं था, बस, जैसे योग्य इमाम न मिलने से शीओं की मस्जिदें उजड़ी पड़ी रहती हैं वैसे ही

सुन्नियों की भी रहती और जैसे यह 'जमाअत' के पुण्य से बञ्चित हैं वैसे ही ये भी रहजाते ! (खूब बचे)

वह लोग बड़े दुष्ट और मूर्ख हैं जो कि किसी दुराचारी पुरुष को दुःख देने लग जाते हैं उनका चाहिये कि वे खुदा पर चोट करें और उस पर दोष डालें कि वह ऐसी किस्मतें लिखना छोड़ दे ! यदि खुदा पर आक्रमण करने की विधि सीखनी हो तो इमाम बुखारी की कबर से या हदीस कहने वाले रावी की कबर से पूछलो। बुखारी के अनुयायियों के लिये तो न ईमान का फल है न अपराध का दण्ड--जो चाहें करें और जो चाहें कहा करें। जो कोई अकल का अन्धा दुराचारादि अपराधों के दण्ड दिलाने के लिये फौजदारी का अभियोग चला दे तो दुराचार करने वाले का कर्तव्य है कि वह अपने डिफेन्स में अहले हदीस को बुखारी के साथ शहादत में पेश करदे--फौरन बरी हो जायेगा और कोई चूं तक न करने पायेगा।

नोटः—यह और ऊपर वाली हदीसें खुदा के अन्याय को सिद्ध करती हैं इस लिये निकाल डालने के योग्य है।

आक्षेप नं०—९

ह० मूसा ने ह० मुहम्मद से ईर्षा की

"मेराज की यात्रा में ह० मुहम्मद को जब ह० मूसा ने आस्मान पर देखा तो खुदा से बोले कि-ऐ खुदा ! मुझ से पीछे पैगम्बर बनने वाले—इस लड़के के अनुयायी, मेरे अनुयाइयों से बहुत अधिक में जन्नत (स्वर्ग) में दाखिल होंगे ? इत्यादि" बुखारी--किताब बदउल् खलक् बाब ज़िकरल् मलायकह।

देखिये, सब दुनिया की दृष्टि से पैगम्बरों की यह अद्भुत

महिमा छिपी हुई थी कि मौत हो जाने पर भी पैगम्बर महा पाप (ईर्षा) करने की शक्ति रखते हैं। इस महिमा के प्रकाशित करने के लिये इमाम बुखारी का अत्यन्त धन्यवाद देना चाहिये जिनकी कृपा और परिश्रम से यह रहस्य प्रकाशित हुआ।

नोट:—साधारण लोगों से नबी और रसूलों में यही एक विशेषता है कि वह जीने की दशा में तथा मृत्यु के बाद भी पाप करने की शक्ति रखते हैं और खुदा के समीप होने तथा ज्ञान में लीन रहने के कारण बड़े से बड़े पाप को भी धर्म और हलाल अर्थात् कर्तव्य कर्म समझा करते हैं और हम अनुयायी लोग घातयल और दोष दूषित होते हैं इस लिये हम लोग केवल जीते जी ही पाप कर सकते हैं (मरने के बाद नहीं)। हां साहिब ! सच है भलों का सभी कुछ भला ही लगता है।

यदि शरीअत देने वाले पैगम्बर की यह निन्दा पुस्तकों से निकाल दी जावे तो बड़ा उपकार होगा।

"सासअह के बेटे मालिक ने कहा कि रसूलल्लाह ने कहा कि जब मैं मेराज में ह० मूसा से मिलकर आगे जाने लगा तो वह रोने लग पड़े। मैंने पूछा क्या बात है--कोई कष्ट तो नहीं, आप क्यों रोते हैं ? तो हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि--यह लड़का जो मेरे बाद पगम्बर बना कर भेजा गया है इसके अनुयायी लोग मेरे अनुयाइयों से अधिक संख्या मे बहिश्त में जावेंगे० इत्यादि" बुखारी---किताबुल् मनाकिब बाबुल् मेराज।

शीओं का कहना है कि पैगम्बरों से कभी पाप ही नहीं होते क्योंकि उनमें पाप का बीज ही नहीं हुआ करता। ह० आदम का जो पाप कुरान से पेश किया है उसके उन्होंने दो उत्तर दिये हैं—एक तो यह कि आदम से जो हुआ वह पाप नहीं था दूसरे यह कि

पाप तो संसार में होता है बहिश्त में नहीं। ह० आदम बहिश्त में थे जैसा कि कुरान में लिखा है इसलिये इस हदीस से शीओं के दोनों कथन झूठ! हन्त तुम्हारी! मज़हब में और ऐसा झूठ! शीओं को चाहिये कि पश्चात्ताप करें।

हम भी हैरान थे कि सृष्टि में इतना पाप होता है फिर भी यह समाप्त क्यों नहीं होता और कहां से यह प्रवाह चला आता है लेकिन इमाम बुख़ारी की इस हदीस से सिद्ध हुआ कि जैसे ख़ुदा ने लोगों का खाना दाना आस्मानों पर जमा कर रखा है वैसे ही विविध प्रकार के पापों की भी वहां मण्डियां हैं और ईर्ष्या की भी एक मण्डी है बस. वहां के लोगों के ख़र्च से जो ईर्ष्या बच जाती है वह इस पृथ्वी पर आ जाती है वास्तव में इस खोज के लिये इमाम बुख़ारी का उपकार मानना चाहिये और हदीस को निकाल देना चाहिये।

आक्षेप नं०—१०

> ह० अय्यूब नंगे थे कि सोने की टिड्डियां उन पर गिरने लगीं

"अबूहुरैरह बोले—रसूल ने कहा कि ह० अय्यूब नंगे होकर स्नान कर रहे थे कि उन पर सोने की टिड्डियां गिरने लगीं और ह० अय्यूब उनको कपड़ों से पकड़ने लगे० इत्यादि"। बुख़ारी किताबुल् ग़ुसल बाब मन् अ़गतसल०।

देखिये, बुद्धि पूर्वक सृष्टि कर्ता का क्या विचित्र कर्म है कि मांस की टिड्डियां बना कर भेजने के स्थान में सोने की टिड्डियां भेजकर अपने अद्भुत कर्तृत्व का भी परिचय दे दिया और पुराना ऋण भी पूरा २ उतार दिया। वाह! सुबहानल्लाह!

सारी बुख़ारी में इस से अधिक कोई सच्ची हदीस नहीं क्योंकि इमाम बुख़ारी या हदीस वक्ता ने ख़ुदा और ह० अय्यूब

का बही खाता देख कर इसको लिखा है। जैसा कि वास्तविक घटना यह है कि—हज़रत अय्यूब से अपनी घरेलू काम के लिये ख़ुदा ने ऋण लिया था। अय्यूब बीमार हो गये इसी कारण ऋण का रुपया लेने के लिये ख़ुदा के पास न जा सके। हां, हज़रत जिब्राईल कभी आते तो उनके हाथ तक़ाज़ा कहला भेजते परन्तु वर्षों तक ख़ुदा ने सुनी अनसुनी किये रही अन्त में सोने की टिड्डियां बना कर भेज दीं जिससे अल्लाह जी भी कष्ट से बचे और ह० अय्यूब पर बहुत देर तक बीमार रहने से जो डाक्टरों की फीसें और दवा बेचने वालों की रकमें देना बाकी थीं वह भी चुक गईं। चलो ख़ूब हुआ, पाप कटा!

देखिये, यह वही कहानियां हैं जिन्हें सुनने के लिये रसूलल्लाह हुज़ूर जाया करते थे और यही वह पवित्र हदीसें हैं जिनके लिखने के लिये हर बार इमाम बुखारी पर हाथ पैर धोने और अर्ध स्नान करने का कष्ट उठाना पड़ता था। माशा अल्लाह-क्या कहने हैं! हमारी सम्मति में तो निकाल डाला तो अच्छा!

आक्षेप नं०—९१

बनी इस्राईल के लोग चूहे बनगये

"अबू हुरैरह बोले—रसूलल्लाह ने कहा कि बनी इस्राईल के कुछ लोग गुम हो गये थे न जाने उनसे क्या पाप हुआ था। मैं अनुमान करता हूं कि वह चूहे हो गये होंगे० इत्यादि"। बुखारी किताब बद्उल् ख़ल्क़ बाब ख़ैर मआलिल मुस्लिम।

देखिये, पैगम्बर पूर्ण विद्वान् हुआ करते हैं। उनसे ऐसी बातों का सम्बन्ध सर्वथा मिथ्या है बल्कि उन्होंने तो यह कहा होगा कि मेरी उम्मत के चूहे आदमी बनकर इस्लाम को कुतर कुतर कर सत्यानाश कर देंगे। बस, वह भविष्यवाणी पूरी हो कर

रही। परन्तु हदीस वक्ता ने मूर्खता से या किसी पुरस्कार के लालच से हदीस के भाव को अपने शब्दों में बदल दिया।

नोटः—इमाम बुखारी का उपकार है कि उन्होंने इस्लामी खोज में एक नये प्रकरण का समावेश किया है अर्थात् अभूतपूर्व-अनोखा सिद्धान्त (मनुष्यों का चूहा बन जाना) खोज निकाला है। शायद यह बातें अबु हुरैरह ने अपने गुरु कअबअहबार से ली हैं या शाम देश के यरमूक की लूट से। जो यहूदियों की पुस्तकें अब्दुल्लाह बिन अम्र् और आस के हाथ लगी थीं और उनसे छांट छांट कर दोनों पिता पुत्र रसूलल्लाह के नाम से सैकड़ों हदीसें सुनाया करते थे जिनकी संख्या अबु हुरैरह की कथन की हुई हदीसों से कहीं अधिक है। देखो मिआरुल् एति-दाल सफा १४'१ और दारह मुल्लाकारी। बस, अबुहुरैरह की हदीसें वह हैं जो यहूदियों की पुस्तकों से प्राप्त हुई हैं इसलिये उनका निकाल डालना ही उचित है।

आक्षेप नं०—१२

> ह० मूसा ने मलकुल् मौत की आंख फोड़ दी

"अबु हुरैरह बोले—रसूलल्लाह ने कहा कि मलकुल्मौत (यमराज) हज़रत के पास गये। जब वह पहुँचे तो ह० मूसा किसी काम में लगे हुए थे मलकुल् मौत ने शरीर छोड़ने के विषय में खुदा का हुक्म सुनाया परन्तु ह० मूसा ने मलकुल्मौत के एक ऐसा तमाचा मारा कि उनकी आंख फूट गई और वह जैसे तैसे खुदा तक पहुँचे और कहा—तूने ऐसे आदमी के पास भेजा जो अभी मरना नहीं चाहता। देख, उसने मेरा क्या हाल किया है। बस अल्लाह ने तुरन्त आंख ठीक की और वापिस लौटाया और कहा कि उससे कह दो कि यदि आप संसार में

और भी जीवित रहना चाहते हैं तो रहें लेकिन एक बैल पर हाथ रखो--बस आपके हाथ के नीचे जितने बाल आयेंगे उतने दिन आप और जायेंगे। फरिश्ता आया और उसने ह० मूसा से ऐसा ही कहा। मूसा ने पूछा—इसके बाद क्या होगा? मलकुल्मौत ने कहा—फिर मौत! मूसा ने कहा—बस तो अभी सही अर्थात् मार डाल। हज़रत मूसा ने खुदा से प्रार्थना की कि-ऐ खुदा! बैतुल्मुक़द्दस से १ पत्थर (मील) परे करदे! रसूलल्लाह बोले यदि मैं वहां होता तो तुमको ह० मूसा की क़बर बता देता-मार्ग में लाल टीले के पास है० इत्यादि"। बुखारी-किताबुल जनाइज़ बाब मन् उहिब्बुल् दफ़्नो फ़िल अरज़े।

ऊं हूं! रसूलल्लाह की मौत के समय मल्कुल मौत ने अन्दर आने की आज्ञा चाही थी वह शायद इसी भय से कि कहीं अरब का पैगम्बर दूसरी आंख न फोड़ दे। मलकुल्मौत का अनुमान ठीक भी था क्योंकि पैगम्बर की आत्मा को निकालने के समय अल्लाह मियां पैगम्बर को फुसला रहे थे कभी ह० आयशा के हाथ और कभी हथेलियां और कभी उनकी तस्वीर दिखाई जा रही थी जिसके कारण उसके आनन्द में मस्त थे बस, यदि उस सहवास की अवस्था में मलकुल्मौत वहां चले जाते तो आश्चर्य न था कि मारे ही जाते।

इमाम बुखारी की इस हदीस से हमको ह० मूसा का सामर्थ्य, मलकुल्मौत का अस्तित्व और खुदा की मूर्खता और प्रमाद इत्यादि बड़े गम्भीर रहस्य मालूम हुए हैं। इसलिये तदर्थ धन्यवाद!

आंख फोड़ टिड्डा सुना करते थे पर आंखफोड़ आदमी न सुना था अब पता लगा कि वह ह० मूसा थे। हमें बड़ी आवश्यकता थी कि अहले हदीस की दोनों फुडवादें ताकि हदीसों की

मिथ्या प्रसिद्धि का टंटा मिटे और मुसलमान झूठे तथा व्यर्थ के विश्वासों से बचें परंतु अब कहां !—न ह० मूसा हैं न हमारी इच्छा पूरी होगी !

बुखारी की विद्वानों ने इसलिये लम्बी चौड़ी प्रशंसा की है कि इस में अन्य हदीसों से अधिक सच्चे हदीस वक्ताओं की हदीसें हैं और इसके कहनेवाले सन्देहादि से परे थे। परंतु सत्य की जांच करने से यह निश्चय हुआ कि मामला उल्टा है अर्थात् संसार भर में जो बड़े से बड़े झूठे बकबासी मुसलमान हुए हैं वह सब 'बुखारी' के रावी-हदीस वक्ता थे। आइये, आपको इन रावियों के भी कुछ नमूने सुनायें, देखिये !—

सहीह बुखारी के रावियों के हालात पर आलोचना।

अबु हुरैरह 'बुखारी शरीफ़' के सब से विश्वस्त रावी अर्थात् हदीस वक्ता हैं परंतु इनके नाम से ही स्पष्ट है कि यह कैसे विषय प्रिय थे। इन अबु हुरैरह के सम्बन्ध में ऐसे २ घृणित आक्षेप हैं कि जो हर तरह से निन्दा के योग्य ठहराते हैं और यही कारण है कि प्रायः सभी विद्वान् उनको 'मत्रूकुल्हदीस' अर्थात् जिस की बातों का विश्वास न हो ऐसा मानते हैं जैसा कि निम्न लिखित प्रमाणों पर विचार करने से प्रतीत होता है—

(१) ह० अबूबकर और ह० उमर ने अबू हुरैरह को मालूम ही हो गया होगा कि ह० उमर ने अबू हुरैरह को रसूलल्लाह के नाम से हदीसें कहने से मना किया था।

(२) बशीर बिन सअद कहते थे कि खुदा से डरो और हदीस रक्षा करो। खुदा की कसम, हम एक दिन अबू हुरैरह की

सभा में थे हमने देखा कि अबू हुरैरह रसूलल्लाह की हदीस को कअब की कही बता रहे थे और कअब अहबार की कही हुई को रसूलल्लाह की कही हुई कहते थे। एक और ने कहा कि अबू हुरैरह कअब की बात को रसूलल्लाह की बात कह रहे थे और रसूल की बात को कअब अहबार की कह रहे थे इसलिये तुम खुदा से डरो और हदीस की रक्षा करो। (तारीखे इब्ने कसीर शामी)

(३) "मैंने इमाम शअबह को यह कहते सुना कि अबू हुरैरह गड़ बड़ करते थे अर्थात् रसूल के वचनों को कअब का और कअब की बात को रसूल की करते थे और यह स्पष्ट न करते थे कि यह वचन रसूलल्लाह का है और यह कअबका० इत्यादि" (तारीखे इब्ने कसीर शामी)

(४) "इब्राहीम ने कहा कि हमारे नेता लोग अबू हुरैरह की हदीसों को त्याज्य समझते थे इमाम अअमश ताबई ने भी इब्राहीम का यह वचन अपनी किताब में उद्धृत किया है। इमाम अबू सफ़ियान सूरी ने मन्सूर का वचन लिखा है जो कि उन्होंने इब्राहीम से सुना था कि-अबू हुरैरह की हदीसों में से जन्नत-स्वर्ग, नार-नरक, शुभ कर्मों की महिमा और कुरान से निषिद्ध कर्म केवल इन ही विषयों की हदीसें लेते थे (तारीखे इब्ने कसीर शामी)

अब कअब अहबार को समझ लो कि वह कौन महात्मा थे।

(१) यह 'कअब' यहूदी मत के प्रकाण्ड पण्डित थे और ह० अबू बकर के राज्य काल में मुसलमान हुए थे उनका रसूलल्लाह से मेल मिलाप नहीं हुआ था। ह० उमर के राज्य काल में यमन से मदीना आये थे और रसूल के साथियों को डंके की चोट से तौरात की शिक्षा दिया करते थे तथा उन से कुरान सीखा करते थे।

यह सिद्ध है कि तौरात की शिक्षा और उच्चारण से रसूलल्लाह नाराज़ हुआ करते थे।

"सहीब ह० उमर के उन गुलामों में से है कि जिन्हों ने उमर की वसीयत के अनुसार उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। कअब अहबार के नाम से अबू हुरैरह, मुआवियह तथा अन्य अनुयाइयों की भारी मण्डली नाम बदल कर हदीसें कहते हैं। कअब की हदीसों की सूचा में इब्ने अब्बास का नाम भी है परन्तु वह झूठ है। क्योंकि बहुत सी हदीसों से सिद्ध है कि वह ऐसे आदमी से हदीसें न लेते थे बल्कि अन्य सहाबह को 'यहूदी हदीसों, से बचने का आग्रह किया करते थे। यह कअब वही थे जो मुआवियह को हज़रत अली से युद्ध करने की पट्टी पढ़ाया करते थे। (ख़ुलासतु त्तहज़ीबुल् कमाल सफ़ा २७३) और (अअ़लम कोफ़ी-बयान उस्मान) जब कअब मर गये तो उसके सौतेले बेटे नौफ़ल् बकाली को उनके स्थान पर बिठाया गया जिनकी हदीसें भी बहुत से प्रसिद्ध व्यक्तियों ने स्वीकार कीं। इमाम बुख़ारी ने भी इसी कारण यह गोरख धन्धा लिख मारा कि—'बनी इस्राईल की हदीसें स्वीकार करने में कोई दोष नहीं, 'अहले किताब की बात को न तो सत्य समझो और ना ही झूठ। देखो मिआरुल् एतिदाल सफ़ा १४१, १४२।

बात यह है कि अबू हुरैरह कअब के शिष्य हैं और उनके कथन को रसूलल्लाह का कथन कह कर वर्णन करते हैं। और इब्राहीम वह विद्वान् हैं कि जिन की हदीसों को इमाम अअ़मश और अबू सफ़ियान सौरी प्रमाण मान कर उद्धृत करते हैं और उनके कथन की सत्यता पर विश्वास करते हैं। और इन दोनों अअ़मश, अबूसफ़ियान) की बातों का सभी सुहाह लेखक प्रमाण लेते और इन का इमाम मानते हैं।

अबू हुरैरह तथा और भी कई सहाबी ऐसे हैं जिन की हदीसें त्याज्य मानी गई हैं जैसा कि ज़न्द वबस्ती ने कहा है कि—

"अबू हनीफ़ह कौफ़ी ने कहा कि मैं अपना कथन तमाम सहाबह के कथनों के मुक़ाबिले में त्याग सकता हूं। परन्तु तीन सहाबह के मुकाबिले में नहीं छोड़ सकता और वह तीन अबू हुरैरह, अंस बिन मालिक और समरह बिन जन्दब हैं।

अबू जाफ़र हिंदवानी ने कहा कि अबू हनीफ़ह ने यह बात इस लिये कही है कि ये लोग झूठे थे और झूठी हदीसें कहा करते थे० इत्यादि,, गेज़तुल उलमा।

अबू जाफ़र का उपरोक्त कथन मिथ्या नहीं है जैसा कि वलीउद्दीन ने अहकामे ज़ैय्युनुद्दीन इराक़ी पर व्याख्या करते हुए लिखा है कि—

"जब हज़रत आयशा को यह ख़बर लगी कि अबू हुरैरह अपनी इस हदीस को रसूल की कही हुई बताते हैं कि--तीन चीज़ें अर्थात् घोड़ा, औरत और मकान में ख़राबी है तो उन्हीं (आयशा) ने किसी चीज़ का टुकड़ा आस्मान की तरफ़ फेंका और एक ज़मीन पर फेंका और कहा कि जिसने अबुल्क़ासिम (मुहम्मद) पर कुरान उतारा उसी की कसम है—ऐसा कहने वाला अर्थात् अबू हुरैरह झूठा है। उन्हीं मुहम्मद ने तो मूर्खता के समय की यह बात कही थी कि उस समय के लोग-औरत, घर और घोड़े को अशकुन मानते थे० इत्यादि,, अहकाम बज़ील-शरह हदीस अल्शूम फ़िस्सलासते०।

इस हदीस के सम्बन्ध में हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने लिखा है कि—"ह० आयशा ने अबू हुरैरह की जब यह हदीस सुनी तो उनको बड़ा क्रोध आया और कहने लगी कि रसूलल्लाह

ने हरगिज़ ऐसा नहीं कहा बल्कि उन्होंने तो मूर्खता के समय की यह बात कही थी कि उस समय लोग इन तीनों चीज़ों को बुरा समझकर तरह तरह के उपचार किया करते थे"

और भी किसी हदीस पर आलोचना करते हुए हमने अबू हुरैरह को आयशा के धमकाने की हदीस इसी पुस्तक के दूसरे प्रकरण में लिखी है।

इमाम अबू हनीफ़ह का उपरोक्त वचन कि हम सिवाय तीन के और किसी की हदीस का प्रमाण नहीं मानते स्पष्ट शब्दों में 'अल् अअ़लाम कुफ़्त्री, में भी लिखा है।

इनके सिवाय और भी कई बुख़ारी के रावी हैं जो बड़े मिथ्या वादी हुए हैं जैसा कि कहा है—

"अबू ईसा बिन आबान ताबई ने कहा कि मैं सभी सहाबह के वचनों का प्रमाण मानता हूं परन्तु तीन व्यक्तियों का नहीं--एक अबू हुरैरह दूसरा अबसह बिन मईद तीसरा अबू सनाबल बिन बअ़क ०,, रौज़तुल् उलमा ज़न्दवबस्ती।

अब समझ लो कि जो लोग सहाबह पर जान देते हों वही उनकी हदीसों को झूठा कहें और इमाम बुख़ारी उन झूठी हदीसों को अपनी सहीह (शुद्ध) बुख़ारी में संगृहीत करे इसी से सोच लो कि बुख़ारी के राग अलापने वाले किस दरजे के ईमान दार और बुद्धिमान् होंगे।

इन पांच रावियों से भिन्न छटवां रावी अकरमा बिन अबी-जिहल जो कि इस्लाम को छोड़ मुर्तिद हो गया था और जिसकी हत्या को रसूलल्लाह ने मक्का के विजयोत्सव में सर्वथा उचित ठहराया था।

७—अकरमह ग़ुलाम इब्ने अब्बास-जो कि प्रसिद्ध झूठा और

गप्पी था उसकी झूठी हदीसें देखो मीज़ानुल् एतिदाल फ़ी नक़द रिजाल में !

८—मुआवियह बिन अबू सफ़ियान—इसने कई बार अपने भाई बन्धु और पितादि के साथ सेना आदि को लेकर रसूलल्लाह पर चढ़ाई की थी और रसूल को क़त्ल कर डालने का निश्चय करके मदीना आदि स्थानों पर आये और मुहम्मद बिन अबूबकर को जीते जी गधे की खाल में डाल कर जला दिया। एक और में है कि ह० आयशा को भी कुएं में डालकर चूने से फूंक दिया और रसूल के सैकड़ों मित्रों और निरपराधों को अली के साथी होने के अपराध में कत्ल करा दिया। ह० अली से इस लिये लड़ा कि अपने बेटे यज़ीद को खलीफ़ा बनावे। हज़रत हसन को ज़हर देकर मरवाया और हज़ारों मुसलमानों का क़त्ल करवाया। देखो-तारीख़े कामिल इब्ने असीर।

९—उमरू बिन आस।

१०—अब्दुल्लाह बिन उमरू--यह यहूदियों की हदीसें मिलाने के कारण प्रसिद्ध है।

११—मरवान बिन अल्हकम-जिसने कुरान जलाया था और ह० उस्मान के समय में प्रधान मंत्री था।

१२—उमर इब्ने हत्तान--जो कि इब्ने मलजम का परम भक्त था।

१३—अबू इस्हाक सबीई।

१४—और इन सबके गुरू घण्टाल इमाम ज़ुहरी जो कि इमाम हुसैन को क़त्ल करने वालों के वचनों को प्रमाण मानने वाले अब्दुल मलक बिन मरवान के विशेष भक्त थे।

अधिक क्या इन सब के कच्चे चिट्ठे 'रिजाल' और 'सैर' आदि

की पुस्तकों में अच्छी तरह वर्णन किये हैं और यह सब बुखारी के विश्वस्त वक्ता रावी है बल्कि बुखारी ने इन मेसे कइयों को तो रसूल के कथन उद्धृत करके स्वर्ग का अधिकारी-जन्नती भी लिखा है विशेषकर मुआवियह और यज़ीद को। इसलिये मुसलमानों को धिक्कार है कि वह ऐसे बदनाम लोगों की बातों का 'दीन' के विषय में प्रमाण मानते हैं और पाठ्य पुस्तकों मे स्थान देकर पढ़ाते हैं। लज्जा का स्थान है। उचित है कि ऐसी पुस्तकों का ही त्याग दिया जावे।

आक्षेप नं०—१३

ह०मूसा के अंडकोश दिखाने में ख़ुदा ने सहायता दी।

"अबू हुरैरह बोले-रसूल ने कहा कि बनी इस्राईल नंगे होकर स्नान किया करते थे। बनी इस्राईल ने कहा कि खुदा की क़सम, मूसा जो हमारे साथ मिलकर नहीं स्नान करते इस का कारण यह है कि उनके अण्डकोश बहुत बढ़े हुए हैं। एक बार ऐसा हुआ कि ह० मूसा अपने कपड़े पत्थर पर रख कर स्नान करने लगे कि पत्थर (ख़ुदा की मरज़ी से) उनके कपड़े ले भागा। ह० मूसा उसके पीछे यह कहते हुए भागे-अबे पत्थर, ओबे पत्थर, अरे पत्थर! मेरा कपड़ा दे जा! तब ह० मूसा को बनी इस्राईल ने नंगे देख लिया और कहने लगे कि ख़ुदा की कसम, हम उलटा समझे वास्तव मे मूसा मे कोई रोग नहीं। तब पत्थर थम गया और ह० मूसा उस परसे अपना कपड़ा लेकर उसे मारने लगे।

अबू हुरैरह ने कहा--ख़ुदा की कसम पत्थर में छः सात चिन्ह ऐसे थे जो ह० मूसा की मार को सिद्ध करते थे०,, बुख़ारी-किताबुल् ग़स्ल बाब मन् अग़तसल उर्यानन्। अनुवाद-वक़ार निवाज़।

देखिये मूसा की जाति ने जब मूसा से कहा कि हमको इन आंखों से खुदा दिखा दो तो उन पर बिजली गिरी थी और जब बनी इस्राईल ने दर्शन पाने की प्रार्थना की तो ह० मूसा के अण्ड कोश दिखा दिये। वास्तव में इन बेचारों के लिये यह भी दुर्लभ थे क्योंकि यदि मूसा के कपड़े ले भागने के लिये ख़ुदा पत्थर को नियुक्त न करता तो बनी इस्राईल बिचारे इससे भी वञ्चित रह जाते। बला तो आई थी पर ख़ूब बचे।

मालूम होता है कि सौभाग्य शील रावी भी दूरबीन लिये तमाशा देख रहा था। यह प्रत्यक्ष है कि दूर की चीज़ों में पहिले ऊपर की चीज़ दिखाई देती हैं उसके बाद उससे नीचे वाली, इस लिये मालूम हुआ कि बनी इस्राईल को ह० मूसा के लिङ्ग और अण्ड कोश दोनों के दर्शन प्राप्त हुए थे और हदीस वक्ता भी इस दर्शन को प्राप्त कर अपने जन्म को सफल कर गये। ख़ुदा का शुक्र है!

कहां हैं हिंदुओं की धार्म्मिक गप्पों पर हंसने वाले और कहां हैं ईसाइयों के व्याख्यानों की खिल्ली उड़ाने वाले! वह आयें और 'असहुल् किताब बाद किताबुल् बारी' अर्थात् कुरान के बाद सच्ची किताब बुख़ारी की इस हदीस पर विचार करें कि—ख़ुदा के एक रसूल को इतना मूर्ख बनाया कि वह पत्थर के भागने को ख़ुदा का काम न समझे और यह मूर्खता की कि उसको पीटने भी लग पड़े। और दूसरे, रसूल की कही हुई कह कर उन (मुहम्मद) को भी व्यर्थ वादी बनाया और साथ ही अण्डकोशों के दर्शन कराने में अल्लाह को भी निर्लज्जता में शामिल किया। कृपया ऐसी हदीसों को निकालिये।

आक्षेप नं०—१४

अमरू ने बन्दरी को पत्थरों से मार डाला

"ह० अमरू बिन मैमून ने कहा कि मैंने मूर्खता के समय में एक बन्दरिया देखी जिसके इर्द गिर्द बहुत से बन्दर इकट्ठे हुए थे जिसका कारण यह था कि उस बन्दरिया ने व्यभिचार किया था। तब बन्दरों ने उसको रजम अर्थात् संगसार किया—पत्थरों से मारा। बस. मैं भी उनके साथ पत्थर मारने में शामिल हो गया"। बुख़ारी-किताबुल् मनाक़ब। बाब अय्याम जिहालत।

अरब की भूमि भी विचित्र है कि जहां बन्दर जैसे पशु भी मुहम्मदी शरीअत के पाबन्द हैं और व्यभिचार करने वाली बन्दरी को पत्थरों से मार डालते हैं। सुबहानल्लाह! इमाम बुख़ारी के पशु विद्या में निपुण होने से मुसलमानों के ज्ञान में अवश्य ही कुछ न कुछ बृद्धि होगी। तदर्थ धन्यवाद!

क्यों मुसलमानों! क्या आप लोग इस हदीस के बनाने का कारण भी समझे कि नहीं? यदि नहीं समझे तो आइये हम समझाये देते हैं—

रजम की आयत मन्सूख़ कर देने पर आलोचना

सिहाह की पुस्तकों में लिखा है कि यहूदियों को पत्थरों से मार डालना रसूल को किसी प्रकार अभीष्ट नहीं था और वह सदा ही इस का विरोध किया करते थे। बस इसीलिये इस हदीस को बनाकर यह सिद्ध किया गया है कि रजम बन्दरों की शरीअत है आदमियों के लिये खुदा ऐसी शरीअत पसन्द नहीं करता। और जो इस्लामी शरीअत में व्यभिचार का दण्ड-रजम या पत्थर मार कर

मारना लिखा है तो मुसलमान और ह० मुहम्मद भी रजम के योग्य हैं (खुदा बचाये)। यह निश्चित है कि लूटमार और जज़िया आदि के कारण व्यभिचार बहुत बढ़ गया था और धनपति यहूदी लोग बहुत दुःखी थे। इसलिये राज्य प्रबन्ध के विचार से 'रजम' की आयतें क़ुरान से निकाल डाली गईं-कई दिन तक तो पढ़ना ही बन्द किया और उसके बाद लिखना भी बन्द किया गया जिस से यहूदी लोग प्रसन्न हो गये।'कलाम बदलेंगे' वाली भविष्यवाणी पूरी हो गई। इस लिये इस हदीस को लिखने का यही कारण मालूम होता है। प्रमाण—

"ह० उमर ने अपने उपदेश में कहा कि रजम (पत्थर मार कर मारना) ठीक है, रसुल ने किया था। मगर मुसलमान लोग पशुओं के समान मैथुन करने लगे हैं अर्थात् चारों हाथ पाँव ज़मीन पर टिकवा कर गधों की तरह मैथुन करने लगे हैं"। दुर्रे मन्सूर-जिल्द ५। सूरह अहज़ाब. सफ़ा १८०। तअीहुल् अन्साब, हिस्सा १ सफ़ा ५६।

नोटः—यह स्पष्ट है कि ह० आदम से लेकर रजम की आयते उतरने तक कोई ऐसा खुदाई हुक्म नहीं पाया जाता जिससे उस आयत के लिखने पढ़ने का निषेध हो या इसे अपराध कहा गया हो अब रहा यह कि सूरत बक़र में खुदा ने आयतें मन्सूख़ करने को लिखा है कि—

'मा नन्सख़ मिन् आयतिन् औनुन्सिहानाते बि.खैरिन् मिन् हा औ मिस्लिहा,--अर्थात् हम तब तक किसी आयत को मन्सूख़ नहीं करते जब तक कि उससे अच्छी या उस जैसी दूसरी आयत न ले आवें। सो इसके विषय में दो विचार हैं—

(१) यहां आयत से आशय संसार के प्रबन्ध से है जो कि दिन रात बदलता रहता है और एक से बढ़कर दूसरा आता रहता है।

(२) कुरान के प्रकाण्ड विद्वान् कहते हैं कि कुरान की कोई आयत मन्सूख् नहीं हुई। हां, परिवर्तन अर्थात् अस्पष्ट को स्पष्ट करना तथा गुप्त को प्रकाशित करना और अपरिमित को परिमित करना तो निसंदेह कुरान में होता रहा है यथा--तलाक दी गयी स्त्री के तलाक (त्याग) की अवधि पहले एक वर्ष थी फिर कई मास की और उसके बाद साढ़े चार मास की हुई। इसी प्रकार नमाज़ में रुकू की संख्या पहिले दो थी फिर तीन और फिर चार हो गई तथा शराब के सम्बन्ध की आयतें। यह सब परिवर्तन हैं अर्थात् बिलकुल हटाया नहीं गया बल्कि यह समझना चाहिये कि ज्यूं ज्यूं मुसलमान आचार व्यवहार में उन्नत होते गये त्यूं त्यूं हुक्मों की कठिनाइयां भी बढ़ती गईं। इस शनैः शनैः नीति पर आचरण करने से मूर्खता के समय की बातें सारी बदल गईं। और उससे अच्छी बातों के आचार व्यवहार प्रचलित हो कर 'बि ख़ैरिन् मिन्हा' की भविष्य वाणी पूरी हो गई और यदि कुरान में आयतों का मन्सूख होना मानो तो बताओ कि रजम की आयत को मन्सूख करने के लिये खुदा ने कौन सी आयत उतारी। और यदि नहीं भेजी तो 'नाते बिख़ैरिन् मिन्हा--उससे अच्छी उतार देते हैं' का कथन मिथ्या ठहरता है जो कि इस्लाम को इष्ट नहीं। यदि यह कहो कि कुरान में बिलकुल ही परिवर्तन नहीं हुआ तो भी ठीक नहीं क्योंकि ऐसी दशा में खुदा का दीन को आसान करना और परोक्ष के हाल जानना इत्यादि खुदाई गुणों से इन्कार करना होगा जो कि सर्वथा झूठ और धर्म के विरुद्ध है। अब रही आयत—

यम्हुल्लाह मा यशा० की दलील, सो यह संसार की रचना से सम्बन्ध रखती है और आकाश पाताल की घटना के सम्बन्ध में कहा है। सर्वशक्तिमान् ने अपनी एक शक्तिमत्ता का प्रतिपादन किया है जिसका मुहम्मदी शराअत से सम्बन्ध नहीं है अधिक आप विचार कर लीजिये।

बुखारी के माहात्म्य पर आलोचना

बुखारी की महिमा बड़ी प्रसिद्ध है जिन लोगों ने इस महिमा का विचार किया है वह तो इसे 'खुदा की बरकत' समझने लगे और दूसरे लोगों ने भी देखा देखी इतना महिमा और बढ़ा दी कि---यदि कोई आदमी कसम खाकर यह कह दे कि रसूलल्लाह मेरे घर में बैठे हैं और बुखारी मेरे घर पड़ी है, तो वह अपराधी नहीं कहा जा सकता। परंतु किसी विवेकी पुरुष को यह अनुभव न हुआ कि बुखारी शरीफ की प्रशंसा करने से बड़े से बड़ा बुद्धिमान भी मूर्ख और बुद्धि हीन हो जाता है। चूंकि मुझ पर परमात्मा की कृपा से यह सच्चाई प्रकाशित हो गई है इसलिये धन्यवाद पूर्वक इसको प्रगट करता हूं -

बुखारी के व्याख्याकारों में हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्कलानी जो कि फतहुल् बारी के लेखक हैं सब से अधिक विद्वान माने जाते हैं इसलिये उनकी टीका के उद्धरण ही बुखारी के माहात्म्य खण्डन में पर्याप्त प्रमाण हैं और वही सिद्ध कर देंगे कि अन्य बुखारी की प्रशंसा करने वाले लोग विद्वान् हैं या बुद्धि हीन। देखिये-

"अबू अबीदह मअमर बिन अल्मस्ना की किताब अल्खील में लिखा है कि-एक बछेरा अपनी मां पर चढ़ने लगा तो रुक गया।

बस. मैंने उसको एक मकान में दाखिल करके घोड़े पर चादर डाल दी। तब बछेरा अपनी मां पर चढ़ा और जोड़ मिलाया। परन्तु जब उसने अपनी मां की बू सूंघी तो वह अपनी गुप्तेन्द्रिय की तरफ आकृष्ट हुआ और देखते २ उसने अपनी इन्द्रिय की जड़ काट डाली। (इब्ने हजर अस्क़लानी कहते हैं कि--) जब घोड़े में इतनी विचार शक्ति है तो बन्दर तो घोड़े से भी बहुत अधिक समझदार है। इसलिये यदि बन्दरों ने बन्दरिया को रजम-पत्थरों से मार डाला तो यह ठीक ही किया क्योंकि ऐसा करना उनके लिये उचित ही था० इत्यादि''। फ़तहुल् बारी पारा १५। सफ़ा ४३४, ४३५। (छापाखाना अन्सारी दिल्ली)।

देखिये, बुख़ारी शरीफ़ की प्रशंसा का यह परिणाम है कि इतना बड़ा प्रसिद्ध विद्वान् अल्लामह—पर निरा चारजामह ! हाय शोक !

बुख़ारी की प्रशंसा करने वालों को चाहिये कि पहिले वह परमात्मा की सृष्टि में इतनी लम्बी गर्दन वाले घोड़ों की तलाश करें कि जिनकी थोंथनी उनकी लिंगेन्द्रिय तक और उनके दान्त इन्द्रिय की जड़ तक पहुँचते हों परन्तु यदि अल्लाहमियां के घोड़ों में इतनी लम्बी गर्दन वाला मिलना असम्भव मालूम होता है तो मौलवियों में तलाश करें वहां अवश्य मिल जायेंगे। इस्लामी दीन की शिक्षा देने वाले विद्यालयों में जिनमें कि बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाई जाती है वहां बन्दरिया वाली हदीस की व्याख्या समझने के लिये ऐसे घोड़ों की भारी आवश्यकता है-जो ले जायेगा वह भारी कीमत के साथ इनाम भी पावेगा।

अहले हदीस लोग ज्ञान और विद्या के पृष्ठपोषक होकर ऐसी झूठी किताब और उसकी ऐसी विचित्र व्याख्या से दीन के

बारे में प्रमाण लेते हैं क्या 'धार्मिक-प्रामाणिक' लोगों से ऐसे ही रावी और शेखों का ग्रहण करना उचित है ? शरम ! शरम !! शरम !!!

'सहीह बुखारी पर बारों का अत्याचार, इस विषय में हमने कुछ एक बातों को हफ्तातुल् मुस्लिमीन मे दर्ज किया है हमारी इच्छा है कि यदि जीते रहे तो मुसलमानों के ज्ञान में वृद्धि करते रहें परन्तु हर बात पर ईश्वर को ही अधिकार है। हां, यदि मुसलमानों ने हमारे परिश्रम की कदर की और हार्दिक सहायता दी तो हम उसे यह समझ कर कि यह ईश्वर की कृपा का फल है, अपना काम आरम्भ कर देंगे। परमात्मा ऐसा ही करे।

॥ तीसरा प्रकरण समाप्त ॥

परिशिष्ट

इमाम बुख़ारी (मुहम्मद बिन इस्माईल) के गुणों की प्रशंसा

प्रथम संस्करण की समाप्ति पर जो हदीसों की खराबियां और प्रामाणिक हदीसों में मिलावटी हदीसों का मौजूद होना सिद्ध किया गया था इस दूसरे संस्करण में उसकी बिल्कुल ज़रूरत नहीं रही क्योंकि बहुत सी हदीसों की आलोचना करते समय इस उद्देश्य को अच्छी तरह सिद्ध कर दिया गया है। इस लिये उसे छोड़ अब हम इस परिशिष्ट में इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी के उन अद्भुत गुणों का वर्णन करते हैं जिन से साधारण जनता अपरिचित है और इस्लामी विद्वान् उनके विचित्र चरित्र से आंख छिपा कर तमाम मुसलमानों को इस विषय में कोरा रखना चाहते हैं। आइये विचार कीजिये!—

बुख़ारी की व्याख्या और आलोचना करने वाले लोगों ने सहीह बुख़ारी के आरम्भ में मंगलाचरण न होने के कारण बहुत ले दे की है। परन्तु यह किसी ने न लिखा कि ये रसूल और ख़ुदा से प्रसन्न न थे। इस्लामी राज्य के भय से उन्होंने बहुत सी ऐसी बातें भी लिख दीं कि जिससे मुसलमान उनके धार्मिक-अविश्वास का सन्देह न करें और हार्दिक भावों पर परदा भी पड़ा रहे। यथा--

(१) इमाम महोदय ने रसूलल्लाह के सम्बन्ध में 'रजल, शब्द का प्रयोग किया है जो अरबी के मुहाविरे में छोटी श्रेणि के लोगों के लिये बोला जाता है। देखिये-किताबुल् अदब में एक

विषय का शीर्षक-कौल्हुर्रजलो लिल् रजल रखा है। पहिले 'रजल' में रसूलल्लाह का है दूसरे से इब्ने मियाद का और इसी पुस्तक के बाब कौल्हुर्रजला मरहबा, बाब मा जाअ फी कौल्हुर्रजुला वैल्हुक और बाब कौल्हुर्रजलो लिल् शैइन लैस बिशैइन्-इन सब प्रकरणों के शीर्षकों में 'रजल' से रसूलल्लाह का आशय है (इसके मुंह में मिट्टी डालो) । बस, अब समझलो कि जो पुरुष रसूलल्लाह की निन्दा लिखे उसको रसूल की प्रशंसा से क्या लाभ ?" किताबुल् जिरह अलल् बुखारी सफा ६० ।

(२ इमाम महोदय की अरबी की योग्यता भी छोटी श्रेणी के विद्यार्थियों के बराबर भी नहीं थी जैसा कि उन्होंने एक प्रकरण का शीर्षक---'बाब ईजाबुत्तकबीर व इफ्तताहुस्सलवात, ऐसा लिखा है परंतु वजुबत्तकबीर लिखना चाहिये था क्योंकि तकबीर में स्वयं 'वजूब' (औचित्य) का गुण पाया जाता है । न कि यह कि नमाज़ पढ़ने वाला तकबीर (अल्लाहु अकबर) अपने ऊपर आप वाजिब करे । किताबुल जिरह ।

(३) इमाम महोदय ने किताब के शीर्षक ऐसे स्थिर किये हैं कि जिनसे उनकी कई एक हदीसों को सम्बन्ध ही नहीं जैसा कि—बुखारी--किताबुस्सलात में बाब फज़ल सलातुल् फजर' बाब फी कम तक़सरस्सलात, किताबुल् तहज्जुद, में बाब तूलुल क़याम फिस्सलात । किताबुल् ईदैन में बाब इज़ फातिल् ईदुल् मुसल्ला रकअतैन । किताबुल् जनाइज़ में बाब या यक्रह मिनल्न खाज़ल् मस्जिद अलल् क़बूर, बाबुल् सलातुल् जनाइज़ बिल् मुसल्ला वल् मस्जिदो । किताबुल् सलात में बाब कराहियते तअरी फिल् सलात्. बाबुत्तकबीर लिल् ईद और किताब बदउल खल्क़ में

बाब ख़ैरे माल्उल मुस्लिम० इत्यादि। तात्पर्य यह है कि जामेअ़ बुख़ारी मे बहुत से ऐसे प्रकरण हैं कि जिनके शीर्षकों के साथ उनकी हदीसों का सम्बन्ध नहीं है। यदि पुस्तक के विस्तृत हो जाने का भय न होता तो हम अवश्य ही हर एक प्रकरण की हदीस भी उपरोक्त शीर्षकों के साथ ही लिख देते परन्तु जिज्ञासु का कर्तव्य है कि असल पुस्तक मे देखकर सत्यासत्य की परीक्षा करें। वर्षों परेशान रहे कि सिहाह और सिहाह से भिन्न किसी किताब मे ऐसा बेतुकापन नहीं कि प्रकरण और शीर्षक के विरुद्ध हदीसें दर्ज हों और एक एक हदीस मे दो २ तीन २ हदीसें घुसी हुई हों तथा एक एक हदीस के पड़खच्चे उड़ा २ कर भिन्न २ प्रकरणों वा शीर्षकों में उनके टुकड़े ठूंसे हों और इस प्रकार पुनरुक्त हदीसों की संख्या हज़ारों से ऊपर हो गई हो तथा परस्पर विरुद्ध हदीसों का संग्रह हो गया हो। परन्तु यह सत्य है कि जिन ढूंढा तिन पाया—खुदा की शान, कि सहीह मुस्लिम की भूमिका से मालूम हुआ कि इमाम मुस्लिम जो कि इमाम बुख़ारी के मुख्य शिष्य प्रसिद्ध थे, वह कहते हैं कि इमाम बुख़ारी 'मुन्तहलुल् हदीस' अर्थात् बनावटी हदीसें घड़ने वाले थे। यही कारण है कि इमाम मुस्लिम ने इमाम बुख़ारी की कोई हदीस प्रमाणित नहीं मानी! न केवल मुस्लिम बल्कि अबू ईसा तिरमज़ी के सिवाय और किसी सिहाह वाले ने भी इमाम बुख़ारी की कोई हदीस प्रमाणित स्वीकार नहीं की। इससे सिद्ध हुआ कि इमाम बुख़ारी के शिष्यों की नामावली में जो कई 'सिहाह' वालों का नाम लिखा है वह बिल्कुल शेख़ी तथा निरा झूठ है तथापि ऐसी पक्की बातें मालूम होने के बाद भी जामेअ़ बुख़ारी के बेतुकेपन का रहस्य सन्तोषजनक प्रतीत न हुआ और इसी धुन में बहुत काल

व्यतीत हो गया। अब ख़ुदा ख़ुदा करके मालूम हुआ कि इमाम बुख़ारी साहिब प्रकाण्ड विद्वान होने के सिवाये बड़े हज़रत भी थे तभी तो अपने गुरू अली बिन मदीनी की किताब चुराकर मुहद्दिस—हदीस विद्या के आचार्य बन बैठे। बस, अब इमाम मुस्लिम का बुख़ारी साहिब को हदीस चोर या झूठी हदीस कहने वाला कहना सत्य सिद्ध हो गया। जैसा कि मुसलमह बिन क़ासिम ने अपने इतिहास में लिखा है कि—

"सहीह बुख़ारी के रचेजाने का यह कारण है कि अली इब्ने मदीनी ने एक किताब 'अल् अलिल्' नामक लिखी थी। उसकी उत्तमता और अद्वितीयता के कारण वह इस पुस्तक को किसी को न दिखाते थे। पुस्तक की विशेषताओं के कारण बड़े भारी लाभ तथा हानि की सम्भावना थी। एक दिन किसी आवश्यकता के कारण अली इब्ने मदीनी ने यात्रा की। बुख़ारी को पता लगा तो वह दौड़ा २ मदीनी के घर आया और उसके लड़के को १०० दीनार (पौण्ड) दिये तथा उसकी माता से विनय अनुनय किया। जिसपर वह पुस्तक बुख़ारी को मिल गई परन्तु शर्त यह ठहरी कि पुस्तक को तीन दिन तक पढ़ कर शीघ्र वापिस कर देना होगा। बुख़ारी ने इस शर्त को सहर्ष स्वीकार कर लिया और पुस्तक ले अपने घर आये। बस, घर पहुँचते ही इमाम बुख़ारी ने सौ लेखकों को बुलाया और एक एक लेखक को एक २ दीनार देकर कहा कि रात दिन लगा कर एक एक फ़ारम को शुद्धताई से लिख डालो और संशोधन करके शीघ्र मेरे पास लावो। सारी पुस्तक के सौ फ़ारम थे, सौ लेखकों ने झटपट लिख दिये। जब सारी पुस्तक लिखी गई तो इमाम बुख़ारी ने अस्ली किताब अली इब्ने मदीनी के लड़के को वापिस करदी और कहा कि मैंने केवल इसे

देखा ही था। इसके बाद बुख़ारी ने कई मास इस पुस्तक के कण्ठ-स्थ करने में लगा दिये। जब अली इब्ने मदीनी यात्रा से लौट कर अपने घर आये तो उनको इस बात का कुछ भी पता न था। उन का नियम था कि हदीस के जानकारों के लिये एक सत्संग सभा निर्धारित किया करते थे जिसमें हदीसों के भिन्न २ विषयों पर वाद विवाद हुआ करता था। बहुत दिन के बाद इमाम बुख़ारी भी आये। उनको देख इमाम मदीनी ने पूछा कि इतने दिनों तक न आने का क्या कारण है ? बुख़ारी ने कहा कि मुझे एक आवश्यक कार्य था। इमाम मदीनी ने सभा के कार्य क्रम के अनुसार उप-स्थित जनता से हदीसों के भिन्न२ विषयों पर प्रश्न किये जिस पर इमाम बुख़ारी ने बिल्कुल वही उत्तर दिये जो कि इब्ने मदीनी ने अपनी पुस्तक 'अल् अलिल, में लिखे थे। इब्ने मदीनी उत्तर सुन कर आश्चर्य सागर में डूब गये। थोड़ी देर बाद बुख़ारी से पूछा कि तुम्हें ये बातें कहा से मालूम हुईं ? क्योंकि ये बातें तो सिवाय मेरे और किसी की कही हुई नहीं हैं ? ख़ुदा की कसम, अपने समय में सिवाय अपने और किसी को इस विद्या का जानने वाला नहीं पाता ! इसके बाद इब्ने मदीनी टूटे हुए दिल के साथ सभा से उठ कर अपने घर चले आये और आकर पूछा तो पता लगा कि मेरी स्त्री को धोखा देकर इमाम बुख़ारी ने पुस्तक प्राप्त करली और उसकी नकल उतार ली। इस कपट छल के पता लगने पर इब्ने मदीनी को बड़ा भारी दुःख हुआ और कुछ दिनों के बाद इसी शोक के कारण उनकी मृत्यु हो गई और इमाम बुख़ारी साहिब इस पुस्तक के कारण इब्ने मदीनी की सेवा और 'फ़िक़ह' विद्या की प्राप्ति से वञ्चित हो गये। इसी किताब से उदर-पूर्ति करते हुए उनहों ने जामेअ बुख़ारी और तारीख़े बुख़ारी

लिखीं जिनके कारण इमाम बुख़ारी को यह मान प्रतिष्ठा प्राप्त हुई० इत्यादि., तारीख़ मुसलमह बिन क़ासिम ।

पाठक वृन्द ! आप यह न कहिये कि मुसलमह बिन क़ासिम कोई अप्रसिद्ध व्यक्ति है जिसको बड़े २ विद्वान् भी नहीं जानते। यह वह विद्वान् है जिस के विषय में हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़ालानी ने लिखा है कि—

"सहीह मुस्लिम के प्रशंसकों में से 'मुसलमह बिन क़ासिम अल् क़र्तबी, का भी ऐसा ही वचन है जो कि उसने अपनी प्रसिद्ध तारीख में लिखा है कि—'सहीह मुस्लिम' जैसी कोई किताब नहीं'। यह विद्वान् हाफ़िज़ अबुल् हसन दारक़ुतनी का समकालीन हुआ है० इत्यादि" फ़तहुल्बारी--भूमिका ज़िक्र फ़ज़ाइलत सहीह मुस्लिम ।

चूंकि दारक़ुतनी की मृत्यु ३८५ हिज्री में हुई और इमाम बुख़ारी का शरीरान्त भी इसी शताब्दि में हुआ है इसलिये काल की समीपता के कारण बुखारी रचना के सम्बन्ध में जो विचार मुसलमह बिन कासिम ने प्रकट किये हैं वह यथार्थ ही प्रतीत होते हैं। दूसरी बात यह है कि अबुल् हसन दारक़ुतनी ने भी अपनी किताब 'अल् इस्तद्राकातो वल् तत्तओ अलल् बुख़ारी व मुस्लिम' में बुख़ारी और मुस्लिम की दो सौ हदीसों पर आक्षेप किये हैं। देखो—मौलवी सैयद याक़ूब पटनवी कृत किताबुल् जिरह अलल् बुखारी सफ़ा २२।

इसी तरह 'बाजे नामी मालिकी' ने भी बुखारी की हदीसों पर आक्षेपात्मिक एक पुस्तक लिखी है जिसका नाम 'अल् तअदीलो वत्तख़रीज है। यह मालिकी महाशय भी इमाम बुख़ारी के निकट

वर्ती समय में हुए हैं इनका देहान्त ४७४ हिज्री में हुआ था। इसी तरह भिन्न २ समयों में भिन्न २ स्थानों पर बहुत से बुखारी पर आक्षेप करने वाले विद्वान् पैदा होते रहे हैं और व्याख्याकारों में से बहुत से व्याख्याकार ऐसे हैं जिनकी व्याख्या से सिद्ध होता है कि इमाम बुखारी थोड़ी बुद्धि के आदमी थे तथा सत्यासत्य की परीक्षा नहीं किया करते थे।

इबादत (भक्ति) और अमल (कर्म) के विषय में भी बहुत सी हदीसें हैं और इतिहास सम्बन्ध हदीसों की भी कमी नहीं है। इमाम बुखारी के बारे में प्रसिद्ध है कि ग्यारह या सात लाख हदीसों में से चुनकर चार हजार से अधिक हदीसें छांटी और उनको अपनी जामेअ् बुखारी में लिखा। परंतु इमाम महोदय ने ऐतिहासिक हदीसों में भी ऐसी स्पष्ट भूलें की हैं कि जिनसे सिद्ध होता है कि उन लाखों और हजारों तो क्या सैकड़ों हदीसें भी मालूम नहीं थी जैसा कि 'बाब मा ज़िक्र फ़िल् अस्वाक़, में अबू हुरैरह से रिवायत है कि—

"रसूलल्लाह बाज़ार क़ीनक़ाअ में पधारे और वहां बीबी फ़ातिमा के सिहन खाने में बैठकर फ़र्माया कि यहां 'हसन' लड़का है० इत्यादि" किताबुल जिरह-नम्बर ३०। सफ़ा ६३।

कहां बाज़ार कीनक़ाअ और कहां बीबी फ़ातिमा का मकान? इसी प्रकार की और भी कई एक ऐतिहासिक भूलें सहीह बुख़ारी में है जो पुस्तक के विस्तार भय के कारण लिखी नहीं जा सकी हैं। बस, विचार करो कि जिस व्यक्ति को ऐसी प्रसिद्ध और स्पष्ट बात भी मालूम न हो उसे मुहद्दिस तो क्या साधारण मौलवी भी कैसे कहा जा सकता है?

इमाम बुखारी की शरीअत घरों में बैठने वाली बड़ी बूढ़ियों

से किसी तरह कम न थी जैसा कि नकायह वा फ़तहुल्क़दीर बाबुल् रज़ाअत में लिखा है कि—

"जिन दिनों इमाम अबू हफ़्स कबीर हाईकोर्ट के जज्ज थे उन दिनों इमाम बुख़ारी ने व्यवस्था देनी शुरू करदी जिसपर जज्ज महोदय ने हुक्म दिया कि व्यवस्था देना बन्द करदो, क्योंकि आप फ़तवा या व्यवस्था देने के सर्वथा अयोग्य हैं। परंतु इमाम बुख़ारी बड़े भारी धनवान् थे इस कारण जज्ज की कुछ न सुनी और बराबर फ़तवे देते रहे। अकस्मात् इमाम बुख़ारी के दरबार में यह प्रश्न आया कि यदि दो लड़कों ने बाल्य काल में बकरी या गाय का दूध पीकर पोषण प्राप्त किया हो तो उनके लिये क्या हुक्म है? इमाम बुख़ारी ने कहा है कि--इससे पोषण का हराम होना सिद्ध होता है। बस, जब लोगों ने इमाम बुख़ारी का ऐसा विद्वत्तामय तथा शरीअत और तफ़सीरों में डूबी हुई व्यवस्था सुनी तो बड़ा उपद्रव मचाया। जिसका परिणाम यह हुआ कि श्रीमान् जी बड़ी धूमधाम के साथ बुख़ारा से निकाले गये। फ़तुहुल् क़दीर बाबुल् रज़ाअत।

नोटः—इमाम बुख़ारी लेन देन और व्यापार की आमदनी से बहुत बड़े मालदार माने जाते थे। कई पुस्तकों में लिखा है कि उन की मासिक आय सात हज़ार सावर्ण (पौण्ड) थी। उनके पास भोजन वस्त्र पर बहुत से शिष्य इकट्ठे हो गये थे और सामयिक धनवान् भी उनके हर प्रकार से अनुकूल रहते थे। बस, इमाम बुख़ारी के बाद नमक हलाल शिष्यों ने राज्य शासन में घुस घुस कर अपने इमाम का ऋण उतारना आरम्भ किया अर्थात् बुख़ारी के पढ़ाने के लिये पाठशालाएं खोल दी गईं। राजाओं, धनवानों और अधिकारियों से हर प्रकार की सहायता मिलने के कारण ख़ूब

समय से लाभ उठाया गया और सामयिक अधिकारियों की अनुकूलता को प्राप्त कर हनफ़ी, मालिकी और शाफ़ई सम्प्रदायों के समान जामेअ् तिरमज़ी की शिक्षा भी फैलने लगी और दिन प्रति दिन बढ़ने लगी यहां तक बढ़ी कि छठी शताब्दी (हिज्री) में इब्नुस्सलाह ने बिना सोचे समझे जामेअ् बुख़ारी को 'असह्हुल् कुतब बादे किताबुल् बारी, अर्थात् ख़ुदा की किताब (कुरान) के बाद सब किताबों से अच्छी और निर्दोष किताब, ऐसा लिख दिया। इस के आगे जैसे जैसे समय बीतता गया वैसे वैसे ही बुख़ारी की महिमा भी बढ़ती गई और जबसे अहले हदीस या वहाबी सम्प्रदाय का जन्म हुआ है तबसे तो बुख़ारी को और भी चार चान्द लग गये हैं। अधिक क्या, आदि से अन्त तक बुख़ारी में जो कुछ सच-झूठ था हमने आप के आगे रख दिया है इस लिये सबका धार्मिक कर्तव्य है कि ऐसी इस्लामी प्रामाणिक पुस्तक का अवश्यमेव संशोधन किया जावे जिससे भविष्य में कोई इस्लाम का विरोधी इस्लाम और इस्लाम प्रवर्तक(ह०मुहम्मद) के सम्बन्ध में ऐसे दोष प्रकट न करे कि जिनको निकाल डालने की हमने प्रार्थना की है।

मैंने सब कुछ आपके आगे रख दिया है। इसकी न्यूनाधिकता को आप स्वयं समझ लीजिये।

शुभ चिन्तक—
मीर्ज़ा अहमद सुलतान मुस्तफ़वी चिश्ती
तिराहा बहराम खां—गली मुफ़्तियां-दिल्ली।

* पुस्तक समाप्त *

* विषय-सूची *

दूसरा प्रकरण

तीसरा प्रकरण

आवश्यक सूचना

—:*:—

मूल पुस्तक "हफवातुल् मुस्लमीन" का यह हिंदी अनुवाद किताब के मालिक और मुसन्निफ शाहज़ादा मिर्ज़ा अहमद सुल्तान साहब मुस्तफवी चिस्ती खावर गुरगानवी हाल वासिन्दे तिरा ;ा बैरमखां देहली की तहरीरी इजाजत और इकरारनामा मुवर्रिखा यकुम अक्टूबर सन् १९२७ ई० के अनुसार भारतीय हिंदू शुद्धि सभा' ने छापकर प्रकाशित किया है। इस पुस्तक को छापने या छपवाने का कानूनी अधिकार सभा को ही हासिल है और हमेशा रहेगा।

—प्रधान-मंत्री,
भारतीय हिंदू-शुद्धि-सभा देहली।